

आचार्य श्री प्रवचन

(31.10.2017 से 09.01.2018 तक)

भाग-8

गुरुवर की वाणी,
बने सबकी कल्याणी

अन्य भाग हेतु : aagamdata.blogspot.in

50-60 शिक्षक उपस्थित

साकोली कॉलेज 31-10-17 "आओ भौतायें इतिहास" प्रातः 9.20

आज शिक्षक और शिक्षिकाओं पर बच्चों का भविष्य पुरा का पुरा आधारित है। अच्छे - अच्छे लोग भी अपनी संतान को शिक्षा हेतु कहाँ भेजा जाय इस पर विचार करते हैं। उनको अपने भविष्य के बारे में जागरूक करने तथा देश - समाज का विकास कैसे करना आदि विषय आप ही लोगों पर आधारित हैं। आप ही को सब कुछ मानकर माता - पिता अपने बच्चों को आपके पास भेज देते हैं। अब आप लोगो का यह कर्तव्य है कि जैसा वे चाहते हैं वैसा ही बने और बच्चे के विकास के साथहीसाथ राष्ट्र की अखण्डता - राष्ट्र की समृद्धि आप कर सकें।

ये सारी की सारी जिम्मेदारी, प्रण - प्रतिष्ठा आप लोगो पर आधारित है। आप अपने कर्तव्य को इस प्रकार करेंगे तो आपकी यह तपस्या अनुठी मानी जायेगी। संसार में बहुत कुछ देखने और पाने के लिए होते हुए भी उसका महत्व नहीं जो महत्व इसका है। बच्चों को समर्पण भाव से शिक्षा देने का आप सभी का यह दायित्व अपूर्व है। इसका हम शब्दो से वर्णन कर ही नही सकते। मात्र भाव के रूप में दिया जा रहा है। भाव तो भाव होते हैं। जो आप कर रहें हैं/करेंगे। हमने सोचा इसी प्रकार सेवा के रूप में देश में शासन है और सेना है। उसी का अंश ये बच्चे हैं। वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही कमियाँ आ गयी है और केवल पढ़ना - लिखना ही जीवन समझते हैं।

दायित्व के बारे में बहुत सारी कमियाँ आ गयी है जो संस्कृति और इतिहास पढने से वे जान सकते हैं। इसी के माध्यम से आप उन्हें वापस लौटाने में संभव हो सकते हैं। भारतीय शिक्षा पद्धति अद्वितीय थी

विश्व के कौने-कौने छात्र-छात्रायें यहाँ आकर यहाँ की शिक्षा से प्रभावित होते थे। आज हम अपनी उस प्राचीन शिक्षा प्रणाली का वर्णन तक नही करते केवल जो वर्णित है उसी से ज्ञात होता है। उसी को पूर्ण करने का साहस आप लोगो में होना चाहिए।

आज शिक्षा के क्षेत्र में कोई भी काम करने को तैयार होता है तो सर्वप्रथम यह जानना चाहता है मुझे मिलेगा? मैं कहता हूं- इससे तो वो मिलेगा जिसका आप उपभोग ही नहीं कर पाओगे। अर्थ को ही सर्वस्व मानकर चल रहा है। श्रम की ओर भारतीय शिक्षा प्रणाली आना चाहिए। जब उत्पादन नहीं होगा तो उन उपभोग्य पदार्थों को कहाँ से लाओगे? देश में तो है नहीं विदेश से मंगायेंगे। विदेश से आयेगा तो वह क्या है, कैसे बना है कोई मालुम नहीं। बच्चों के सामने श्रम को रखा जाय। रखने का प्रयास कर रहे हैं। कुछ समय पूर्व कुछ पत्रिकायें मेरे हाथ लगी- लर्निंग कर्व" के बारे में 10-20 पत्रिकायें उनको बच्चों के सामने रखा जाय। उत्कृष्ट होगा बच्चों के सामने वाचन किया जाये जिससे उन्हें देश - संस्कृति, घर- परिवार के प्रति मेरा क्या कर्त्तव्य है, यह ज्ञात हो जायेगा।

एक बहुत अच्छा लेख बोस जी (सुभाषचंद्रबोस) का हमें मिला था उसका प्रत्येक विद्यार्थी को वितरण किया जाय। स्वतंत्रता के विषय में क्या योगदान रहा ये जानने पर बच्चे कभी अपने दायित्व से विमुख नहीं होंगे। भारत का क्या इतिहास था इस हेतु चम्पत राय की 10 पुस्तकें बच्चों को अवश्य बतायें। आज हर बात में विदेश को ही देखते हैं। उन्होंने इस पर गहन शोध किया। "विज्ञान और तंत्र ज्ञान" इस शीर्षक पर

18वीं शताब्दी में यह कार्य किया। जो साहित्य मिला है उसका भी अवलोकन किया जाये।

बच्चों को यह बताया जाये की विज्ञान का आधार भारत है। आज उसका चिन्ह नहीं मिलता। 10 भागों में यह लिखा मात्र एक व्यक्ति का योगदान रहा। एक प्रसंग सुनाकर अपनी बात को स्पष्ट करता हूँ। एक बैठक जिसमें अंग्रेज आप जिसे ब्रिटीश कहते हैं वो भी थे भारत की तरफ से गांधी जी थे ही। उन्होंने (ब्रिटीश अधिकारी) कहा - जब से अंग्रेज लोग भारत में आये हैं तब से भारतीय शिक्षा पद्धति में काफी सुधार हुआ है। वह अपनी बात पूर्ण कर भी नहीं पाया था कि गांधी जी बीच में ही बोल पड़े। उसने कहा - क्या है? गांधी जी - हाँ, मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूँ। "जब से अंग्रेज लोग भारत में आये हैं तब से भारतीय शिक्षा पद्धति का पतन प्रारम्भ हो गया है।"

ये वाक्य भारतीय नागरिक के रूप में भारत के एक नेता ने जब उनके सामने रखे तो वह अवाक् रह गया। उसने कहा - क्या आप सिद्ध कर सकते है। गांधी जी ने कहा - हां! कोई भी बात को सिद्ध करने के लिए समय अपेक्षित होता है। साहित्य के बिना वह संभव नहीं। धर्मपाल नाम के एक व्यक्ति ने गांधी जी से प्रेरित होकर यह दायित्व अपने कंधो पर ले लिया। लगभग 35 वर्षों से अथक परिश्रम से उसने विदेशो के समस्त पुस्तकालयों में इसकी खोज की। विदेशो के प्रमुख लोगों का उन्हीं के शब्दो में भारतीय शिक्षा प्रणाली क्या है इसको विस्तार पूर्वक निकाला। अभी 10 भाग निकाले है। 20,000 पृष्ठीय अभी शेष रह गया है।

यह शब्द 18वीं

शताब्दी की बात है, ज्यादा दूर नहीं जाना है। भारतीय तंत्रज्ञान और विज्ञान प्रत्येक व्यक्ति को पढ़ना चाहिए जिससे हमारा इतिहास क्या था जान जाओगे। हमारे यहाँ हर वस्तु का उत्पादन होता था / निर्यात होता था। निर्यात में भारत अग्रणी / प्रथम श्रेणी में आता था। कौनसी वस्तु नहीं जाती थी यह बताना ही कठीन था। फिर लाया क्या जाता था?

भारत में सब उत्पादन होता था / लाया जाता था= सोना - चाँदी, हीरा - जवाहरात आदि ही लाते थे। आज धान के लिए भी हाथ युँ (फैला) कर रहे हैं। बच्चों को इस इतिहास के बारे में बताया जाये ताकि पुराना भारत पुनः लौट सके। इन्हीं शब्दों के साथ!

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

संस्मरण -

(1) भक्ति में शक्ति → प्रतिष्ठाचार्य जयकुमार शास्त्री ने गुरुवर से पिच्छी अपने सिर पर रखवा ही ली। दीक्षा कल्याणक को मूल नायक अजितनाथ भगवान के संस्कारोपरान्त खुशी से आंखों में पानी पण्डित जी के आ गया। प्रथम गुरुवर के चरणों में नमोऽस्तु किया और पिच्छी सिर पर रखवा कर ही चरण छोड़े।

(2) निर्णयकला → पण्डित जी ने कहा आज हम गुरुजी से शान्तिधारा करवाकर ही मानेंगे। बोली अच्छी हुयी। गुरुजी ने णमोकार मंत्र पढ़ा शेष शान्तिधारा पण्डित जी ने स्वयं बोली। काम भी हो गया= विरोध भी नहीं किया।

(3) करते है मेरे गुरुजी - जब सुखोनी राम सिंह जी आये। मजरथ फेरी उपरान्त आरती का सटीक एवं मार्मिक वो भी कम समय में प्रवचन हुआ। कक्ष में प्रसादसागर जी ने कहा आपको तुरंत उदाहरण आदि कैसे याद आ जाते हैं, आरती ने तुरन्त कहा - मैं थोड़े बोलता हूँ, गुरुजी जो कहते हैं बस वही बोल देता हूँ।

डोंगरगाँव प्रवेश

4-11-17 "समाप्त हुयी प्रतिक्षा की घड़ियाँ" प्रातः 9.20

ऐसा लग रहा था पूरी प्रशंसा यहीं पर आकर इकट्ठी हो गयी। प्रत्येक व्यक्ति के मुख पर और कुछ नहीं झलक रहा था भीतर समुद्र की लहरे बाहर को उमड़ रही थी। होता भी ऐसा ही है और होना भी चाहिए। इन लोगो ने मध्याह्न में आने की योजना बनायी थी। हमने सोचा मध्याह्न की जगह सुबह ही क्यों न चलें। आज 5-6 घण्टे डोंगरगाँव के लिए ज्यादा मिल गये। 6 घण्टे की कटौती शुरुआत में ही कटौती क्यों करें हम।

बहुत अच्छा। यहाँ की जनता का उत्साह देखकर ऐसा लगता है जिनका आज परोक्ष अथवा साक्षात् दर्शन नहीं ऐसे भगवान के समोशरण में भी प्रतिक्षा की घड़ी बढ़ रही है। जल्दी-जल्दी आप सब को भी वह प्रतिक्षा की घड़ी प्राप्त हो जाये इन्हीं भावनाओं के साथ इस छोटे से वक्तव्य को विराम देता हूँ

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

"रविवार"

5-11-17 "आओं बचायें समय" प्रातः 9.20

आज मध्याह्न के अवसर पर आप लोगो में से इस महामहोत्सव के पात्र के रूप में चयनित करना है। हम तो नहीं करेंगे, हम तो देखेंगे। हजारो लोग आयेंगे आपको देखेंगे। करना आपको है ताकि सानन्द सम्पन्न हो सके। कई लोग आशिर्वाद लेने आये- निर्विघ्न सम्पन्न हो सके। मैं कहता हूँ- विघ्न की बात ही क्यों करते हो, ऐसा आशिर्वाद माँगो की- सानंद सम्पन्न हो।

विघ्न को भी विघ्न क्यों पहुँचायें। सानंद सम्पन्न हो। ऐसे महोत्सव पुरे जीवन काल में एक-आध बार ही होते हैं। पूर्वजों के द्वारा प्रदत्त इस जिनालय को विस्तार देने

का शुभ संकल्प आज पूर्ण होने जा रहा है। आगे के लिए भी इस प्रकार के जिनालय का आलम्बन ही अपावन से पावन बनने की प्रेरणा देते रहेंगे।

इसी के माध्यम से हम जीवतत्व को/आत्म तत्त्व को समझेंगे। मुख्य रूप से जीव तत्त्व को समझेंगे। जीवतत्व एवं आत्म तत्त्व में अन्तर यही है जीव तत्त्व व्यापक है जब की आत्म तत्त्व अपने उद्धार की बात करता है। आज मध्याह्न में कौनसा कार्य होना है, आप सब कुछ बचाते हैं किंतु समय की चिंता नहीं करते हैं। सब कुछ से ज्यादा महत्त्वपूर्ण समय है। हम उस महत्त्वपूर्ण को बचाने की चिंता करते हैं जिसे समय बोलते हैं (आप लोग भी उसे बचाने का प्रयास करेंगे.

इन्हीं भावों के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

"पात्रचयन" [आचार्य पदारोहण दिवस]

5-11-17 "महापात्र चयन के दिन हुआ पात्र चयन" मध्याह्न 4:45

आप लोग दीर्घकाल से एक ही आसन में बैठे हैं। आज का यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। ज्यादा समय तो नहीं लिया। गाँठ खुलना बहुत कठीन होता है। समय पर अच्छा किया किया है। आगे के लिए जो भी यहाँ से निर्देश दिया जाये उसी अनुरूप पालन करते जाना है। किसी की भी प्रतिक्षा नहीं करना है, स्वयं प्रतिक्षित होंगे। पंचकल्याणक को एवं प्रत्येक कार्य को उत्साहित होकर सम्पन्न करेंगे ऐसा हमारा भाव है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

संस्मरण -

सात बच्चे दक्षिण के अशोकनगर हथकरघा सिखने हेतु जा रहे थे। आ० श्री की वैयावृत्ति की। एक को हिन्दी आती थी शेष को नहीं। बहुत घबरा रहे थे। आ० श्री ने कन्नड़ में कुछ बात की कहा बस एक के साथ सब रहना कोई हानि नहीं होगी लाभ ही लाभ होगा। यही है गुरुवर की एकता का सिद्धान्त।

6-11-17 नदी की महानता प्रातः 9.20

आप लोग पानी को लाते हैं। कौन-कौन से स्थान से लाया जाता है पानी? कुएं से खेंचकर पानी लाते हैं। कुएं में पानी कहाँ से आता है? ऊपर से तो वर्षा होती है, नीचे से फिर होती है। कुएं में फिर से पानी आता है। और कहाँ से लाते हो पानी? तालाब से लाते हो। तालाब में कहाँ से पानी आता है? तालाब में बहकर पानी आता है। तालाब सूख जाये पर कुआँ कभी सूखता नहीं। कुआँ भी कभी सूख जाये पर नदी कभी सूखती नहीं। गर्मी के दिनों में भले ही वह सूखी दिखे पर थोड़ा बिच में जाओ और एक-डेढ़ (1-1½) फीट भीतर पानी आपको उपलब्ध हो जायेगा।

इस प्रकार पानी के तीन स्त्रोतों का उदाहरण आपके सामने रखा। नदी का जल मीठा होता है, कुयें का, तालाब का जल कह नहीं सकते। नदी जहाँ रहती है वहाँ आसपास के कुओं का जल स्तर भी बना रहता है, मीठा रहता है। एक-दूसरे से नदीयाँ यदि मिल जाये तो फिर जल की समस्या ही दूर हो जायेगी। उत्तर को दक्षिण से जोड़ दिया जाये तो जलप्रबंधन भी तथा अपने के रिश्ते भी मधुर हो जायेंगे। अपने आप ही आत्मा के भाव उज्जवल हो जाते हैं। भगवान आँखो में झूलने लगते हैं। इस प्रकार हम नदी-तालाब-कुयें से पाठ ले सकते हैं। इसी तरह फिर के साथ रहो, नदी की तरह बहते रहो तालाब से ये काम नहीं हो सकते। उज्जवल रहना चाहते हो तो वात्सल्य/प्रेम भावना से कार्यरत। बिना काम किये बैठना नहीं चाहिए सबको लाभ मिलेगा। हम तो बहते रहते हैं जिससे सभी को लाभ मिलता रहे, इसी के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

7-11-17 "धन का ध्यान नहीं धर्म-ध्यान करो" प्रातः 9:२०

एक बड़े सेठ जी हैं और जीवन पर्यन्त धर्म-ध्यान किया है। दान-पुण्य किया, दया धर्म को अपने हृदय में रखा। यह बात सब लोग जानते हैं। जब वे मरणासन्न हो गये दूर-दूर से लोग सहानुभूति के साथ चर्चा कर रहे हैं, वे करते भी जा रहे हैं। आप सुन रहे हैं? हम। उन सेठ जी के निमित्त से आपको पाठ लेना है। ज्यों ही सेठ जी के प्राण परेवरु उड़ गये, अब क्या हुआ? परिवार वाले जो अब तक उनका चरण-स्पर्श करते थे अब कह रहे हैं- छुओ नहीं।

अब तो जल्दी-जल्दी ले चलो। जो कुछ भी संस्कार करना है जल्दी करके आ जाओ और अग्नि द्वंग से एड़ी से चोटी तक धारा छोड़ शुद्ध हो जाओ। ये क्या है? जब तक इस पिंजड़े/पिंजरे/शरीर में जीव रूपी पंछी है तब तक सब है। ये छुट गया फिर कुछ भी शेष नहीं रहता। इसे देखकर भेद-विज्ञान करो। आपके सामने-सामने जन्म हुआ, आपके सामने ही मरण हुआ तब घटना आपके सामने घटी। जो इसके साथ घटित हुआ आपके साथ भी घटित होगा, इसे स्वीकार करो। जब तक जीवन है कुछ करो।

बाद में रवाना होना है। नहीं भी चाहेंगे तो ये सब मिलकर करा देंगे। अपने को शरीर रूप मत मानो/शरीर में आप विद्यमान हैं। इसका उपयोग करो। समय रहते धर्म ध्यान कर लो। आप लोगों से मैं यही कहना चाहता हूँ धन का ध्यान मत करो धर्मध्यान करो।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

8-11-17 "चमत्कार भावों का" प्रातः 9.20

एक पूजक पूजन करके / निष्ठापन करके हमारे पास आया और उसके हाथ में दो छोटी-छोटी कलशी हैं और वह कहता है - महाराज ! ये गन्धोदक है। गंधोदक लेओ। हमने कहा - पहले तो आया नहीं। पूजन करके आया है, महाराज के लिए गंधोदक लाया है। मैं पुछना ये चाहता हूँ गंधोदक किसका नाम है? एक कलशी में जल और गंध अर्थात चन्दन घोल दिया, शीतल भी है। मानोगे उसे गन्धोदक अथवा जलोदक। गंध मिश्रित जल का नाम गंधोदक नहीं हुआ करता है, अपितु बिम्ब का अभिषेक से स्पर्श किया हुआ जल ही गन्धोदक होता है।

यह गन्धोदक पाप नाशक होगा, पुण्यवर्धक होगा / अपनी आस्था को मजबूत करते हो तब जाकर गन्धोदक होता है, ऐसे ही गन्धोदक नहीं होता। सौधर्म इन्द्र क्षीर सागर से जल का कलश भरकर अपने परिवार को लाकर कहे ये गन्धोदक है कोई नहीं मानेगा। जब प्रभु का मस्तकाभिषेक अथवा चरणाभिषेक करोगे तभी गंधोदक होगा (~~साथ~~ साथ बिम्ब का स्पर्श कर धारा आयी हो तभी गंधोदक होगा। ऐसे ही सीधे - सीधे ले आओ तो नहीं। हमें गंधोदक तो लगता है पर फिर भी पुछताछ की आवश्यकता होती है।

मन्त्र का उच्चारण,

इसके साथ ही गुणों का स्मरण आस्था से करते हैं। अब वह समय आ गया है। भावों की कलशी बनाकर आस्था के साथ वह गन्धोदक भरना है जिससे जन्म-जरा-मृत्यु का विनाश हो। दक्षिण में इन्हें तापत्रय कहते हैं। इस संसार में ये तीनों ताप - संताप पैदा करने वाले होते हैं। इनसे

कर्मों का बंध होता है, उसी का हम फल भोगते हैं। सीधे ही ले आओ ऐसा नहीं होता है।

अभी प्रतिष्ठाचार्य जी भी आप लोगों को कह रहे थे। गुणों की स्थिरता हो, नमस्कार के साथ, भावों के साथ, दवाह के साथ जो अर्पित करेंगे उसी अनुसार फल मिलेगा। सब एक ही साथ क्रिया करेंगे किन्तु सबको एक जैसा फल नहीं मिलेगा। आप लोग अपने-अपने भावों को बढ़ाइये। ये लोग तो बोली बढ़ाते हैं, हम भावों को बढ़ाते हैं। बोली भी बिना भावों के नहीं बढ़ती हैं।

भाव ही चमत्कार दिखाते हैं। उसी से इस महा अपार संसार से पार होंगे। इन्हीं भावों द्वारा अनंत सिद्ध परमेष्ठी बनकर सिद्धालय में विराजमान हो गये। आज भी हम उन्हें नमन करते हैं। धन्य है आप! आपकी कृपा से हमें ज्ञात हो गया। भावों को बढ़ाओ कार्य निश्चित होगा, कोई रोक नहीं सकता है। भाव बढ़ाने में कोई दिक्कत भी नहीं है। बढ़ाते जाओ-बढ़ाते जाओ। कोई आपको रोक नहीं सकता।

ये तो आपकी अपनी श्रद्धा (आस्था पर आधारित है। निश्चित ही वह घड़ी आने वाली है। जन्म-जरा-मृत्यु का क्षय करने के भाव हो। गंधोदक के साथ इन तीनों का नाश हो, इसी आस्था से आप सिर पर लगाते हैं। मात्र सुगंधित जल को गन्धोदक नहीं कह सकते। इतना ही।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

केशलोंच उपरान्त प्रवचन

9-11-17 "महिमा काल और पुरुषार्थ की" प्रातः 9.20

आप लोगों के पास हजारों तरह के वाहन होते हैं। किसी के पास तेज गति से चलने वाले तो किसी के पास धीमी गति वाले वाहन हैं। ऐसे भी वाहन जो तेज गति से जाकर वापस मुकाम तक कुछ ही घण्टों में काम करके आ जाते हैं। इन दूरियों को कम भी किया जा सकता है वाहनों के माध्यम से नहीं, पाँव - पाँव पहुँच जाता है। एक और दूरी है उसे कोई व्यक्ति लाँघ नहीं सकता/तीव्र गति के वाहन भी नहीं। न ही कम किया जा सकता है (वह काल की दूरी होती है। इस काल में न ही वृद्धि न ही आगे - पीछे किया जा सकता है।

यह प्रतिक्षा की घड़ी, घड़ी नहीं तपस्या है। अरिहंत को भी प्रतिक्षा करनी होती है उस काल की। आप लोग हार रहे हैं। यह किसी भी वाहन से तय नहीं की जा सकती, अपितु साहस की तपस्या है। काल की प्रतिक्षा को आप लाँघ नहीं सकते। वस्तु का परिणमन किसी के आधीन नहीं है। काल के आधीन होता है, उसमें दूसरे की आवश्यकता नहीं।

कर्मों का क्षय होना अलग वस्तु एवं दूरी तय करना अलग वस्तु है। कितना भी कर लो हो नहीं सकता। ये प्रत्येक वस्तु के स्वरूप को दिखाने में सहायक है। यहाँ के लोगों ने काफी प्रतिक्षा की आखिर वह घड़ी - आ ही गयी। और समय माँग रहे हो। धैरव लो। अब तो अभ्यास हो गया है। मुर्ति भी विराजमान हो गयी। योग्य करते जाओ। "कब तक" ये मत पूछो। काल वस्तु को कार्य दिखा देता है।

अनंत काल भटकते हुये हो गये। बड़ी कोई वस्तु नहीं होती। जो विभाव के रूप में हो रहा है उसे स्वभाव के रूप में कर दे। अपने परिणामों को स्वभाव के रूप में करते ही प्रतिक्षा की कोई आश्यकता नहीं, चुटकी बजाते - बजाते प्राप्त कर सकते हैं।

चुटकी में जो कार्य भव - भव में भी नहीं कर सके उसे कर सकते हैं, अपने हाथ में है। कर्मों का बाँधना और कर्मों का काटना। कर्म काटने के लिए दूरियों बात नहीं, सब दूरियों की समाप्ति की आवश्यकता है। आप वही कर रहे हैं। अपने स्वभाव को नहीं भूलते हुये कार्य करते रहो अपने पद के अनुरूप कर्तव्य - निष्ठा के साथ इस आयोजन को सम्पन्न करना है। अभी मध्याह्न में आज बाजार लगना है। आप लोगों को समय पर उपस्थित होना है। योग से एक नहीं - दो नहीं बहुत सारे प्रतिष्ठाचार्य, पुरी मण्डली की मण्डली आ गयी है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

दोंगरगाँव पंचकल्याणक (9 से 15 नवम्बर)

9-11-17, ध्वजारोहण" "गंधवाही बनने का फार्मूला" मध्याह्न 4.00

आज यह मांगलिक कार्यक्रम समय के अनुरूप सानंद सम्पन्न होने जा रहा है। पहली मंगल शान्तिधारा भी शुद्ध मंत्रोच्चारण द्वारा सम्पन्न हुयी। प्रतिष्ठाचार्य जी बड़ी कुशलता से भिन्न - भिन्न व्यक्तियों द्वारा पता भी नहीं चलने देते कौन परिवर्तन हो रहा है। भिन्न-भिन्न ध्वनि के साथ मंत्र उच्चारण हुआ। संस्कृत भाषा जो कर्णप्रिय ही नहीं कर्ण पवित्र करती है। सभी प्रतिष्ठाचार्य मोरा जी आदि से निकल कर आये हैं। इस आदिवासी इलाके में अपनी सेवायें देने आये हैं। आदिवासीयों

के बिच आदिनाथ की आराधना करने जा रहे हैं। इसे यत्र-तत्र-सर्वत्र अहिंसा का ही बोलबाला होगा। हो इसी भावना के साथ मैं यह कहने जा रहा हूँ कि माँ गर्भस्थ शिशु का पालन करती है। मंगलमय वातावरण की भावना भाती रहती है। दिन मे दो बार शुद्ध शाकाहार का सेवन गर्भस्थ बालक की अभिवृद्धि की शुभ भावना से करती है।

इसका प्रभाव उस शिशु पर अवश्य पड़ता है। भावों का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। हठात् कुछ नहीं 9 महिने तक यह चलता है। कल एक ऐसे ही बालक का जन्म होने जा रहा है। जो गर्भ में आने वाला है वह अपने द्वारा सबको चमकृत करने वाला है। उनसे लगवो ही नहीं समस्त लोक प्रभावित होता है। स्वर्ग के इन्द्र लोग भी उनकी सेवा में तत्पर रहता है। आप धरती के पूत कहलाते हो फिर भी स्वर्ग की ओर देख रहे हो। वे स्वयं धरती पर उतरकर आ रहे हैं। यहाँ के जो पूत पवित्रता लिये हुये रहते हैं वो ही वहाँ तक गये हैं। कैसे? यहीं से भटक कर गये हैं। हाँ पवित्र भाव रख कर गये हैं। अभी भी पवित्र भाव रखते है इसी हेतु भगवान के पंचकल्याणक में उपस्थित हो अपने आप को धन्य मानते हैं। कल से आप यहाँ उसी भव्य पंचकल्याणक को साकार रूप देने जा रहे हैं।

आज ध्वजारोहण हुआ। ध्वजा बंधन मुक्त हुयी। मुक्त होकर वह नीचे की ओर होती है। ध्वजा में सक्रियता तब जब हवा का माध्यम मिला। उस वायु जिसे सदागति कहा है उसका होना जरूरी है। मुनि के लिए भी सदागति शब्द का उपयोग होता है। प्रतिष्ठाचार्य जी भी सुने मात्र सुनाये ही नहीं। शब्दों में बड़ा गुढ अर्थ छिपा रहता है। उस वायु जो सोये हुए को भी जागृत कर

देती है, थका हुआ भी थकान दूर कर लेता है। उसी हवा से जो सुगंध पुष्प के पास है चारों ओर फैला देता है। वह पुष्प पहले सोचता है कि मैं अपनी गंध कैसे वितरण करूंगा? इसलिए वायु को गंधवाहक कहा है। वितरण से ही उपयोग होता है।

लक्ष्मी की पूजा गाड़कर नहीं वितरण से ही हो सकती है। जहाँ-जहाँ आवश्यकता पड़ती है वहाँ-वहाँ उसका वितरण आवश्यक है - गंधवाहक की तरह। गंध का सेवन कौन करेगा यह नहीं सोचता वह तो हवा से कह देता है - लेकर भाग जाओ / गंधवाही है। संस्कृत में एक शब्द आता है "गंधमुद्वह" पर यह चुराने के अर्थ में नहीं लिया गया है। साधुओं एवं श्रावकों द्वारा धर्म चलाने से चलता है। गंध की भाँति कोई चलाता नहीं। यथायोग्य वितरण जब होता है तो नासिका भी उस गंध के माध्यम से तृप्त हो जायेगी। एक व्यक्ति तैयार हो जाता है (हथकड़ा) अन्य को भी वह तैयार कर देगा। तैयार होते जायेंगे। इस हेतु कुछ उसे कहने की जरूरत ही नहीं होगी।

युगों बाद इस धरती पर अहिंसा की यह क्रान्ति हो रही है। इसके लिए महीनों - वर्षों की जरूरत नहीं। सभी राज्यों में अब जागृति आती जा रही है। उ० प्र० में तो ऐसी घोषणा यदि हमारी सरकार बनती है तो हम यह कार्य तुरन्त सत्ता में आते ही करेंगे। योग से उन्हीं की सरकार बनी - कुर्सी पर बैठते ही ५ मीनिट में ३५० अवैध कत्लखाने बंद हो गये। यह शासन है - जिनशासन है। जिन किसी व्यक्ति अथवा कौम का नाम नहीं। "जयति इति जिनः" किसको जीतना है? जो अपनी इन्द्रियों एवं मन को जीतता है, वह

जिन है।

जिन की उपासना करने वाले जैन कहलाते हैं। गुणों की उपासना की जाती है। यह मात्र जाति विशेष नहीं है। अभी ब्रह्मचारी जी ने कहा ये वस्त्र अहिंसक माध्यम से आये हैं। प्रतिष्ठाचार्य, इन्द्र-इन्द्राणी सभी इन अहिंसक वस्त्रों को पहने हुए हैं। इन्द्राणी जी विधियों में डूबी रहती है वह भी कह रही थी- महाराज हमने भी हथकरघा से बनी साड़ी पहन रखी है। बाहर निकालते ही नहीं कि छीना-झपटी करके ले जाते हैं।

आज हजारों की संख्या में युवक-युवतियाँ जुट रहे हैं। हम भी जब सुनते हैं तो प्रसन्नता का अनुभव होता है। गुरुजी नेल्लकरा था आज वह देखकर बहुत प्रसन्नता होती है। यह सब आप लोगों की सक्रियता का ही प्रभाव है, इसलिए गंधवाही की तरह बनो। आज का यह सांगलिक कार्य समय पर पूरा हो गया। इतना ही, मैं अपने इस छोटे से वक्तव्य को यहीं विराम देता हूँ।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

गर्भ कल्याणक (पूर्वाह्न)

10-11-17 "एक सहारा बस तेरे नाम का" प्रातः 9.20

एक व्यक्ति जो सूर्य के अनन्यो भक्तों में से एक था। और संध्या के समय पर वह विशाल शुद्ध जल से भरे तालाब के किनारे खड़ा था। वह सरोवर जैसे जल से सबसब भरा था वैसे ही कमलों से भी भरा था। उसने देखा दिनभर तो सारे के सारे कमल खिले थे। अभी आकर देखता है सारे के सारे कमलों के मुख बंद हैं। जैसे अभी पण्डित जी कह रहे थे- सभी हाथ उठाओ। हाथ उठाये पर मात्र उठाना ही नहीं है उन्हें जोड़ना भी है। जैसे सारे के सारे कमल बंद

थे। क्यों? साहित्य में इसे करबद्ध बोलते हैं। सूर्यनारायण थे तब तक तो हम खिले थे अब करबद्ध किये हुये हैं। कल नहीं परसों कहा था, यहाँ के लोग प्रतिक्षा कर रहे थे। जिसकी प्रतिक्षा कर रहे थे, उसका एक दिन निकल गया। वह संध्या के समय सारे के सारे कमल करबद्ध (बंद) है, अब वे सुबह सूर्य-नारायण के दर्शन पर ही खिलेंगे। अभी तो करबद्ध है। भगवान तैयार है अर्थात पूर्व भूमिका में हैं। भक्तो का कर्तव्य है पूर्व भूमिका बना लें। जिस भगवान का आप सभी दर्शन करना चाहते है, उस योग्य भूमिका तो बनाना ही चाहिए। आपको विनय पूर्वक, मस्तक झुकाकर, वाणी को गदगद होते हुए उसी आलोक पुंज को देखने का भाव सदैव रखें। इस हेतु भक्त सभी विषयों को गौण करते हैं। हमारा कर्त्तव्य है कि जब तक भगवान न बनें भगवान का नामस्मरण अवश्य करते रहें। अपने-अपने नियम के अनुसार कार्य करते रहें, उन्हीं की जाप करते रहें जिससे जीवन सार्थक हो। आचार्यो ने कहा आप सारे के सारे दिन भगवान की स्तुति-जाप-पाठ आदि करते रहते हो। आखिर आप क्या चाहते हो? इस तपस्या का फल क्या चाहते हो? चाहुँगा। जब से आपकी भक्ति प्रारम्भ की आज तक चलती हुयी आयी है अब जब तक प्राण उड़ जायेंगे तब उस समय तक जो भी लाभ अभी तक मिला, अंत में भी मिलें। हे भगवन्! अन्तिम श्वास रहें उस समय भी आपका नामोच्चारण करता रहूँ।

आप लोग दूसरे लोक की चिंता करते रहते हो। शब्द लिखा है - "कण्ठोस्कुण्ठोमम" अर्थात अंतिम समय में मेरा कण्ठ अवरुद्ध न हो। बस आपके नाम की जाप होता रहूँ।

पूज्यपाद आचार्य महोदय ने भक्तिपाठ के अंत में इसे जोड़ा है। कितनी अनासक्ति से रहते थे हमारे आचार्य। ऐसे ही आचार्य कुन्दकुन्द ने भी सभी भगवान की अलग-अलग एवं सभी को एक साथ अपने ग्रन्थों के आदि में मंगलाचरण किया है। भगवन् आपका सौभाग्य हमें कुछ भी नहीं चाहिए मात्र भगवन् भक्ति चाहिए।

यदि ऐसा नहीं तो हमने इस काया को मात्र मिट्टी में मिलाया। मिट्टी में नहीं मिलाना है। इस कंचन काया को सोने की बनाना है। जैसे आज सोलहकारण भावना एवं तीर्थंकर प्रकृति का बंध किया। देवता भी पंक्तिबद्ध होकर उनकी सेवा में तत्पर रहते है, क्यों की वह देवों का वैभव भी क्षणिक है। अक्षय अनंत सुख तो आत्म वैभव में ही है। उस आत्म वैभव की प्राप्ति हमें भी हो। इसीलिए भगवान बनने की यह प्रक्रिया 5-6 दिन के लिए आपको उपलब्ध हुयी है।

5-6 दिन बाद यह दृश्य नहीं, सब कुछ विघटित हो जायेगा। मात्र स्मरण में रह जायेगा। अतः हमारिका घपवाने की बजाय मन में संजोये रखो। जब चाहें स्मरण कर इन क्षणों को सार्थक बनाये रखेंगे। बनायें इसी भावना से आज का यह वक्तव्य समाप्त करता हूँ।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नुँ

10-11-17 "संस्कार बनायें भगवान" मध्याह्न 3.00

आज यह प्रथम दिन है। गर्भ कल्याणक के लिए दो दिन दिये गये है। पूर्वार्द्ध में संस्कार चलेंगे उत्तरार्द्ध में जो कुछ भी गति विधीयाँ है, सम्पन्न होगी। इस प्रकार से यह गर्भ कल्याणक होता है। संस्कार, परिष्कार, आकार, प्रकार, उपकार, अपकार आदि अनेक प्रकार के शब्द इस 'कृ' धातु से उत्पन्न होते है। इसी से उत्पन्न संस्कार की बात करते है। क्या है

संस्कार ये समझना है। पूर्व में संस्कार क्या था, ये संस्कार कब डले। आन्तिम दाह संस्कार होता है। उन्नति के साथ कब विकास होता है, इतिहास को देखने की आवश्यकता है। आज हम अपना इतिहास भूल गये हैं। इतिहास को भूलने वाला संस्कारों को पकड़ नहीं सकता / वस्तुतः संस्कार क्या वस्तु है तो इतिहास है।

चौबीस भगवान में पांच भगवान बाल ब्रह्मचारी है, लोग उन्हें महत्वपूर्ण दृष्टि से देखते हैं। चौबीस के चौबीस भगवानों के संस्कार हमारे लिए अनिवार्य तत्व के रूप में आ जाते हैं, किसी को भी गौण नहीं कर सकते हैं। जैसे खेत में बीजों का वपन होता है कुछ समय बाद ऊपर आ जाते है। अब भीतर क्या था ये आप नहीं जानेंगे / कहाँ से ले आये ? पैसे दे देंगे और आम खरीद लेंगे / आम के नाम से पैसे ही खा लो / सोना पहनकर बैठे हो फिर सोना ही खा लो, पानी में घोलकर पी लो / कभी भी नहीं करोगे।

हमारे यहाँ सर्वप्रथम कहा - जीवन के लिए उपयोगी क्या है ? उसका उत्पादन पहले करो / सोना - चांदी आदि तो शौकीनों के लिए है। किसान कब मुद्रिका आदि पहनेगा - कुछ नहीं। ये तो आप लोगों के लिए है उसके लिए नहीं। हाँ उसकी चमक से आप पर चमक है। देख लो। अभी भजन के समय क्या चढ़ाते हो। क्षुधा रोग निवारणाय कहा। तीर्थंकर भी क्यों न हो इसके बिना ध्यान नहीं लगेगा। पेट खाली होने के उपरान्त चाहे रत्नत्रयधारी भी क्यों न हो, फिर चाहे कोठी मिले या कुटिया वे आहार हेतु निकलते हैं। यहाँ भी आप देखना। राजा श्रेयांस आयेंगे और आहार करायेंगे / इस अपेक्षा केवलज्ञान कराने वाले हावड़ होते हैं। सामान्य मुनिराज

को तो बिना आहार केवलज्ञान हो सकता है किन्तु तीर्थंकर को तो आहार पर अवश्य निकलना पड़ेगा। मैं पूछना चाहता हूँ उस अन्न का क्या महत्व है - कौन उत्पन्न करेगा / किसान ही उत्पन्न करेगा बनिया नहीं। कई लोगों के प्रवचन सुने जैनियों के यहाँ खेती नहीं होती है? सुनकर पीड़ा होती है।

इतिहास मालूम नहीं है। वह स्वयं कभी सुखी हो नहीं सकता न ही किसी को सुखी बना सकता है। समयसार मय होता जा रहा है। प्रश्न चिन्ह है क्या है समयसार और क्या है रत्नकरण्ड श्रावकाचार? मालूम चलेगा समन्तभद्र स्वामी क्या कह रहे हैं। संस्कारों की उपेक्षा का यह प्रभाव है। उन्हें महत्व न देने से ये हो रहा है। पढ़ना - लिखना ही शिक्षा हो गया। जब की यही मात्र शिक्षा नहीं आज यही हो रहा है। इसीलिए संस्कारों का अभाव हो रहा है। जो प्रयोग करता है वही साक्षर है। पढ़ लिखकर तैयार हो रहे हैं किन्तु उत्पादन से दूर होते जा रहे हैं। उन्हें पैसों के ढेर पर भी रखो तो भी सुखी नहीं हो सकते। आप को सोच लेना चाहिए। आज बस बेटा पढ़ना - पढ़ना / लोन लेकर पढ़ो। हर काम में लोन आ गया / सलोना ही रखायेगा अलोना कोई नहीं। शिक्षा के कारण हर काम में ये हो गया।

आज शिक्षा में तो पास हो गया किन्तु अनुभव नहीं है। किसी भी विद्यालय में अनुभव नहीं दिया जाता है। अनुभव के अभाव में शिक्षा कोई मूल्य नहीं रखती है। एक - आध महिने के बाद ही कह दिया जाता है / आप जा सकते हैं, हमारी कम्पनी में आपके लिए कोई स्थान नहीं हैं। विद्यालय में अनुभव नहीं तो वह विद्यालय ही नहीं माना जायेगा / किसान विद्यालय ही नही विश्वविद्यालय से बढ़कर है - प्रयोग करके दिखा देता है। वह कहता है - वर्षा होगी समय पर धरती में

बीज बोयेंगे हजार गुणीत होगा।

आज सब गलत हो रहा है। आप कहते हैं- "बीज राख फल भोगवें - ज्यों किसान जग माहीं" किसान कहा है बनिया नहीं - बोलो। ऐसे ही चक्रवर्ती जो धर्म को बिसारे नहीं। आप भोग - भोगते रहते हैं अथवा धर्म को कोट की भांति उतारकर खूंटी पर लटका देते हैं। महाराज आते हैं तो धर्म-कर्म कर लेते हैं अन्यथा दुकान के अलावा कुछ नहीं दिखता। किसान कभी सोयेगा नहीं, आप भले ही सो जायें क्यों की वह संस्कारवान होता है। अनेक को तैयार कर देता है। और यह प्रक्रिया आज तक बंद नहीं हुई। भले ही इसमें कुछ कुरीतियाँ आ गयी हो। यह शून्य नहीं है। क्यों की अभी यह पंचमकाल के अन्त तक चलने वाला है। लगभग 18 हजार वर्ष ग्रन्थों के आधार पर अभी शेष है इस काल में कृषि करेगी। किसान छोड़ देगा तो कुछ भी शेष नहीं रहेगा।

इसी प्रकार जैसे कृषि जरूरी वैसे ही अग्नि का संस्कार भी आवश्यक है। बीज उत्पन्न होगा किन्तु उसे अग्नि के माध्यम से संस्कारित करके ही काम में ले सकते हैं। जानवर की तरह कच्चे रूप में फोंकी नहीं ले सकते। अग्नि-संस्कार के बिना न ही रोटी बन सकती है, न ही सब्जी - बिना संस्कार के उपयोग ले सकते हो। भिन्न - भिन्न रूप हो सकता है। साक्षात् नहीं हो कम है अग्नि संस्कार का। इसका अभाव हो गया तो स्वास्थ्य से भी नीचे चले जाओगे। आज Fast food आ रहा है। सब कुछ Fast हो गया है। आना भी Fast तो जाना भी Fast हो गया रुकने का नाम ही नहीं। इसका अध्ययन तो करो। भारत क्या था इसका अध्ययन करो। मात्र दो शताब्दी पूर्व जाने की जरूरत है। ज्यादा दूर जाने की जरूरत नहीं। 200 वर्ष पूर्व जाओ। अभी 21 वीं शताब्दी है। 18 वीं शताब्दी का इतिहास देख लो, हमारा इतिहास क्या था? विदेशों ने भारत के बारे में

क्या-क्या लिखा।

जो वस्तुस्थिति थी वह उन्होंने लिखी। बस दादा जी - पड़दादा जी तक का इतिहास देखलो/वापस संस्कार लौट आयेंगे। आज लग रहा है कि अब भारत पुनः लौट रहा है। लौभ ये ही भारत को आगे बढ़ना है। पीछे मुड़कर देखोगे तो मृगमरिचिका में फंसोगे नहीं। इसके समान कोई देश था नहीं, न ही हैं। उसे बंद कर दिया गया है इतिहास के पन्नो में। वर्तमान में जो इतिहास पढ़ाया जा रहा है वह दिपा-पोती के अलावा कुछ नहीं। आज History का कोई उपयोग नहीं। पहले से ही यह समझाया जाता है। अण्डा शाकाहार है और दूध मांसाहार है। आप सब राम की संतान है बोलो क्या है ये। संस्कार कैसे छोड़ देंगे। उत्तर पुराण पढ़ो २५ में से २३/२२ तीर्थंकरो ने क्षीरान्न का सेवन किया।

आपको कौनसा दूध मिलता है। कमलगट्टा का, डब्बे का जो युरिया के माध्यम से बनता है। सिन्थेटिक दूध आ गया है। भाग्यहीन होने के कारण गोरस से वंचित हो गये हैं। चाय पी रहे हैं। गैय्या नहीं - दूध नहीं अब शराब की दुकाने आ गयी हैं। उठा नहीं सकोगे, फेंक नहीं सकोगे। इन संस्कारों को बच्चों को दुहराओ क्यों की "पुत्र कुपुत्र तो का धन संचय और पुत्र सुपुत्र तो का धन संचय।" अन्तर क्या है दोनों वाक्यों में लगाते जाओ। नाती के नाम से बचने वाला नहीं हैं। संस्कार हीन के लिए परिश्रम भी काम का नहीं। अच्छे संस्कार डालो तभी अच्छे राजा, अच्छे नेता, सेठ, साहूकार बन सके। कर्म के उदय से इस ओर लाने वाला होगा। पैरो पर खड़ा कर देगा, फिर स्वर्ग में भी राम का नाम होगा। वे हमसे भी दो कदम आगे हैं। पूर्व में क्या करतेथे दादा - पड़दादा वहाँ तक आप जा ही नहीं पाओगे। इधर

से एक बार मुख मोड़ोगे - सुगंधी जरूर आयेगी। इसी का नाम संस्कार है।

आज का दिन वही है। वह जो धरती का पूत बनने वाला है था - स्वर्गों में देवों को इस तीर्थंकर प्रकृति का बंध नहीं, नरकों में नहीं, तिर्यञ्च को नहीं मात्र मनुष्य गति में ही इसका बंध प्रारम्भ कर सकते हैं। आज संस्कारहीन होते जा रहे हैं। अच्छे-अच्छे व्यक्ति भी तीर्थंकर प्रकृति का बंध नहीं कर सकते और सामान्य व्यक्ति भी बंध कर सकता है। मात्र सम्यग्दर्शन होना ही पर्याप्त नहीं है। दर्शनविशुद्धि का होना अनिवार्य है। ये नहीं तो कैसा आधार बनेगा? इसका कैसे उद्धार होगा, इसका कष्ट कैसे दूर होगा इसी का नाम दर्शनविशुद्धि है। दर्शन विशुद्धि का नाम सम्यग्दर्शन नहीं। आगम में क्षायिक सम्यग्दर्शन नहीं भी है, उपशम सम्यग्दर्शन भी नहीं है, क्षायोपशमिक सम्यग्दर्शन है जो वृद्ध की लाठी की भांति है वह तीर्थंकर प्रकृतिका बंध कर सकता है। शर्त है दर्शन-विशुद्धि। रहस्य समझ लो।

इसी को संस्कारित सम्यग्दर्शन कह सकते हैं। दूसरे का दुःख दूर करने की सोचो। कुछ लोग रोते हैं। हे! भगवन्! मैंने इतना कमाया किन्तु अपने पड़ोसी को सुखी नहीं बना सका। ऐसी भावना करना। संस्कारित जीवन इसी का नाम है। हम निर्णायक के रूप में कुछ नहीं कह रहे किन्तु आचार्य उमास्वामी, आचार्य पूज्यपाद, आचार्य अकलंक देव हों या श्लोक वार्तिक के रचियता आचार्य विद्यानंद महोदय हो, बिच में दो-तीन टीका और कहीं भी यह निर्णायक रूप में नहीं मिलता कि पंचमकाल में तीर्थंकर प्रकृति का बंध नहीं होता। हाँ एक प्रकरण यह आता है कि, तीर्थंकर प्रकृति का बंध तीर्थंकर, केवली अथवा श्रुतकेवली के पादमूल में होता है। व्रत है, त्याग है, परोपकार है ये सभी होना जरूरी है। लोग रोते हुये भी दूसरों की आंखों का पानी पोंछना

चाहते हैं। अपनी पीड़ा को भूलकर दूसरों की पीड़ा को शोध बनाओ। पण्डित जी अभी कह रहे थे। पर पीड़ा को विषय बनाओ।

पर की पीड़ा को समझना मैत्री भाव होता है। ऐसी अनुकम्पा मैत्री भाव आये तो धर्म है। इसी का नाम सक्रिय सम्यग्दर्शन है। अभी पिछले 2-3 वर्षों से इसी सक्रिय सम्यग्दर्शन की चर्चा हम कर रहे हैं। इसका आकार प्रकार, इसकी सुगंधी देखकर सामने वाला हैरान हो जायेगा। इसके साथ चारित्र होता है ये सिद्ध करने की जरूरत नहीं है। उसके दुःख को देख आँखों में पानी आ जायेगा। इसी को अनुकम्पा कहते हैं। कंप जाये दूसरे के दुःख को देखकर। समय हो रहा है आपका अभी यागमंडल विधान भी शेष होगा। (नहीं) पण्डित जी से भी पूर्वार्ध का महत्व बताओ इन्हें। किसान जमीन में बीज बोता है वह कभी भी आषाढ़ में सोता नहीं है और बनिया लोग, उस समय सोयेंगे। फिर जब 4 की फसल आयेगी उसे 40 रुपये बेचेगा। ये बनियाओं का चमत्कार है।

यदि किसान मेहनत नहीं करेगा तो धान कहाँ से आयेगा। चमत्कार कहाँ से करोगे बताओ ये महत्व है। उसी भव में वज्रवृषभनाराच संहनन वाला होता है। फिर भी भूख लगती है तब श्रावक कहता है अन्नो-अन्नो, तिट्ठो-तिट्ठो संस्कृत शब्द अन्न-अन्न, तिष्ठ-तिष्ठ है। पण्डित जी ये बुन्देलखण्ड है अन्नो-अन्नो, तिट्ठो-तिट्ठो, दीर्घ बनाये बिना महाराज सुनेंगे नहीं। आप लोग शिकायत करते हैं, देख तो लिया करो। अब महाराज नीचे देखें या ऊपर देखें आप ही बताओ। नीचे देखे बिना इर्यापथ शुद्धि नहीं पलेगी। नीचे देखेंगे तो आप गायब हो जायेंगे। एक-आध दुबिट तो झेल दिया करो अच्छा लगता है। बस, महाराज तो सीधे हमारे ही ओर आ रहे हैं विश्वास रखते हैं। आँगन पार हो जाता है तो चले गये। अब मैं क्या करूं। वैसे हमारे सभी महाराज दिगम्बर मुनिराज हैं। ऐलक-क्षुल्लक-आर्यिका ये सब कुछ नहीं। सभी नभोऽम्बु वाले हैं।

नाम न भी आये तो बस मुनिन्द्राय बोल सकते हैं।

पहली भावना ऐसी रखो - कहीं भी हो बस निरन्तराय आहार हो। हमारे इतें ही हो यह दूसरे नम्बर पर भावना हो। तुम्हारे यहाँ न हो ऐसा भाव नहीं होना चाहिए। संस्कार विधी होने से ही तीर्थंकर प्रकृति का बंध होता है यही इतिहास है। यह माता-पिता को नहीं पुत्र को ही मिलेगा। हाँ 2-3 भव में माता-पिता को भी मुक्ति मिलेगी ऐसा आगम का उल्लेख है। यह लौकिक नहीं अलौकिक है। ऐसे संस्कार लाखों में एक जैसे सूर्य तदेव पूर्व दिशा से ही आता है। अभी से संस्कार चालु हो गये जब की अभी वे स्वर्ग में हैं। आपको कुछ ज्ञात ही नहीं किन्तु इन्द्रों में mob पर ज्ञान तुम चले जाओ और पता लगते ही उस गर्भ की शुद्धि करने अष्टकुमारी देवियाँ आ जाती है।

दीवाली के दिन तो आपलोगों ने यहाँ दीवाली नहीं मनी। न जाने क्या होगा और पंचमी को दिपक घर-घर जल गये। जब जागे तभी सवेरा। कोई न कोई कर्म आड़े आ जाता है। नहीं हो सकता तो नहीं ही हो सकता। ऐसे कर्म बांधो की यह निर्विघ्न हो। धार्मिक व्यक्तियों पर भी विघ्न आते हैं। गृहस्थ आश्रम में रहकर भी राम को 14 वर्ष का वनवास, सीता ने कैसे काटे होंगे। राम तो गृहस्थ थे हमारे लिए भी कह रहे हैं। हमने कहा - आज विहार करना है। पिच्छी परिवर्तन करना है/हम सामायिक करते हैं सब व्यवस्था हो जायेगी। पिच्छी परिवर्तन हो गया, सब हो गया। तार-फोन हो गया। क्या कह रहे हो। स्वप्न नहीं यह हकीकत है। विहार के उपरान्त अब महाराज किस दिशा में जाते हैं। ज्यों ही इधर मुड़े ताली बज गयी। शाम को 7 किमी. और सुबह 10-12 किमी. चले। समय पर आ गये - संस्कार पढ़ जाये। श्वांस श्वांस में आ गये सबको खुशी हो गयी। आप लोगों से कई गुनी खुशी हमें भी हो रही है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नुँ

11-11-17 "महिमा प्रभु की" प्रातः 9:20

एक प्रसंग है। देवों को सम्यग्दर्शन कब होता है। इस विषय में चुंकी जिनबिम्बो का दर्शन तो करते है / पूजन करते हैं किन्तु सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति के कारण में प्रधानता से स्वीकारता नहीं। फिर देवों में सम्यग्दर्शन कैसे? तो आगम में आता है जिनेन्द्र भगवान की महिमा को देखकर के देवो को सम्यग्दर्शन होता है। जो हमेशा इन्द्र को ही अपना स्वामी समझते थे वे आज तक इससे वंचित थे। जिनकी वंदना हम करते थे वे भी इन जिनेन्द्र प्रभु के चरणो में झुक रहे हैं, उनके गीत गा रहे हैं, ताण्डव-नृत्य कर रहे हैं, पूजन कर रहे हैं।

देवो की ये महिमा है जो देवाधिदेव को नमस्कार कर रहे हैं। भाव निक्षेप से समोशरण में बैठे ये भगवान है। अभी पण्डित जी भिन्न-भिन्न दानदातारों को भिन्न-भिन्न सामग्री चढाने में क्रम से बुला रहे थे। ये मुख्य वेदी वाले, ये आजु-बाजु वेदी वाले, ये मुख्य शिखर, ये आजु-बाजु शिखर वाले है। सबको संतुष्ट करते हुये समाज के सामने ले आये। वो भी नाचते हुये हर्षित भावों से आ रहे थे। आज साक्षात जिनेन्द्र भगवान न होने पर भी भाव निक्षेप उनके बिम्बों को प्रतिष्ठित मन्त्रो के माध्यम से एक-एक अंग की प्रतिष्ठा (अंकन्यास) किया जाता है। वह अवसर तभी प्राप्त होगा जब बार-बार भावना करोगे। मुन-वचन-काय, कृत-कारित-अनुमोदना, प्रत्यक्ष-परोक्ष, स्वप्न में भी आराधना करोगे तब कहीं जाकर साक्षात् उसका सौभाग्य मिलेगा अन्यथा नहीं।

क्षायिक सम्यग्दर्शन की अनुभूति इनके चरणों में इस प्रकार की विशुद्धि "तथैव" वही विशुद्धि प्राप्त होती है अन्यत्र नहीं होती है। परोक्ष में भी प्रत्यक्ष की भांति, अनुपलब्धि में भी उपलब्धि की भांति सब योग करके एक वो ही मात्र प्रधानता होना उज्जवलता का प्रतिक है। अपने स्वामी को झुकते हुये देखते हैं

तब समझ में आता है।

पहले ये कि आये नहीं आना पड़ा था / पर ऐसे मुकुटबद्ध राजा भी जिनके चरणों में झुकते हैं यह देख उनकी दृष्टि सम्यक् हो जाती है। प्रभु तो वितरागी है उनकी तो नासाग्र दृष्टि रहती है। जिनके दर्शन को हम आये हैं वे अपने में "सकल संघ शायक -निजानंद रसलीन" अपने आनन्द में हैं। लीन रहते हैं अपने में। शेय पर दृष्टि नहीं - आत्म दृष्टि को ही विषय वही सुयश है। आप लोगों को भी मान ध्येयभूत उसी शुद्धात्म तत्त्व को प्राप्त करना है। उसी को आदर्श माना/मानते आये हैं तभी प्राप्ति होगी। आज उत्तरार्द्ध जो शेष है सामने आने वाला है कल तो शोर होने वाली है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नैं

11-11-17 "गर्भकल्याणक की सार्थकता" मध्याह्न 3.15

आज का यह अवसर गर्भकल्याणक का यह उत्तरार्द्ध सम्पूर्ण विषय को समेटकर आपके सामने रखा जा रहा है। गर्भकल्याणक का अर्थ प्रासंगिक है किन्तु उसके साथ कल्याणक लगा है। माता - पिता के काम पुरुषार्थ द्वारा संसारी प्राणी गर्भ धारण करके जन्म लेता है। क्यों? संतान की क्या आवश्यकता है? एक लेख पढ़ा था जो बड़ा ही उत्प्रेरक था/इसमें लिखा था विवाह मत करो। क्यों? विवाह करने से संतान होगी। संतान होगी तो परिवार होगा। परिवार होगा तो समाज होगी इससे अनेक समस्यायें उत्पन्न होगी। तुम सुख -शान्ति चाहते हो इसलिए परम्परा कम से इसे जानो। इसके उपरान्त कहा गया कि विवाह बाद यदि संतान हो तो उसे अनाथ मानकर अनाथालय में छोड़ दो। आप अनाथालय बोलते हैं वो लोग इसे Convent बोलते हैं। आज सारे के सारे लोग उसमें भी विशेषकर जैन अपने बच्चों को Convent में भेजते हैं। प्रतिभास्थली की बात तो बहुत दूर है। किसके द्वारा क्या होगा इसे उपेक्षित करने से यह वातावरण होता जा रहा है।

संयुक्त परिवार जो भारत में रहता था आज विघटित हो खण्ड-खण्ड में बंटता जा रहा है। संबंध समाप्त होते जा रहे हैं। विदेश का रूप लेता जा रहा है। इसे व्यवस्थित करने का और कोई रास्ता नहीं है।

विवाह का उद्देश्य क्या है? इतिहास पढ़े ज्ञात होजायेगा। हजारों वर्ष पूर्व ही आदिनाथ भगवान के चारित्र को लिखने वाले आचार्य जिनसेन महाराज ने आदिनाथ पुराण में इसके बारे में बताया। इसमें साहित्यिक भाषा के साथ ही मानव सेवा का सुन्दर वर्णन, गर्भ से लेकर दाह संस्कार तक का पुरा वर्णन किया गया है। विवाह क्यों किया जाता है, क्या सार्थकता है? उसे इसमें पिरोया गया है। अध्ययन करेंगे तो ज्ञात होगा। जो भारत विघटित हो रहा है वह पुनः एक सूत्र में होगा। कितने पुरुषार्थ हैं, पढ़ने से ज्ञात होता है। कई लोगों को ज्ञान नहीं है कि आखिर विवाह का उद्देश्य क्या है? विदेशों में भी होता है/वहाँ की दशा यहाँ आने की है। यदि सचेत हो जाओगे तो यह गर्भकल्याणक होना सार्थक होजायेगा। अन्यथा यह एक नाटक/मनोरंजन का रूप ले लेगा। चलो-चलो पंचकल्याणक हो रहा है, देख आते हैं/आ जाते हैं। यहाँ के लोगों से कहना है एक-एक प्रसंग को बारीकी से अध्ययन करना है।

विवाह का उद्देश्य सत् संतान की प्राप्ति है। जिसके माध्यम से धर्म का प्रवाह आगे बढ़ेगा अथवा नहीं। बिना संतान के ऐसे सत् संस्कार नहीं। "विवाह मात्र वासना की पूर्ति नहीं धर्म उपासना के लिए अनिवार्य क्रम है।" इसी के द्वारा जन-जनार्दन-प्राणी मात्र के लिए लाभ होता जायेगा। इस परम्परा को छिन्न-भिन्न न करें। मन-वचन-काय से इसे स्वीकार कर काम पुरुषार्थ का रूप दें। विवाह होता है, भारतीय संस्कृति में इसे मांगलिक कहा है। इसीलिए

विवाह पूर्व कुंकुम पत्रिका / मांगलिक पत्रिका दी जाती है, उसमें अन्य बातें नहीं, आप सपरिवार उपस्थित हो। विवाह हुआ है या नहीं। सब जुटते हैं, बारात में सब लोग सम्मलित होते हैं। मांगलिक क्यों कहा गया है, मैं हमेशा सोचता हूँ। इतना तो आप भी सोचा करो।

बिना विवाह के धर्म प्रवाह चला ही नहीं सकते। सभी तीर्थंकरों समझाकर गये। उपदेश दिया बिना उपदेश के भी जनता का भला होता चला जाता है। गर्भस्थ अवस्था का नाम गर्भ कल्याणक उल्लेखित किया गया है। जब से गर्भ में आते हैं अलग ही वातावरण हो जाता है। वासना तो न जाने कहाँ चली जाती है। आप लोगो को वह माहौल चकित करने वाला होता है। सारी की सारी बातें सामने आती हैं क्या खाया? क्या पिया? क्या बोला? कैसे वातावरण बनाया जाता है। ये सारे के सारे देवी-देवता सम्पादित करते हैं। यदि इस आलेख के अनुसार विवाह नहीं होगा तो ये सब कुछ नहीं, इस ढंग से एकत्रित ही नहीं होंगे। बिना नाथ के अनाथ छोड़ दिया जाता है। माता-पिता भाई-बहन का पता ही नहीं अज्ञात होता है इसी को Convent पना माना जाता है।

माता-पिता की जगह मदर-फादर आ जाते हैं। साथ संभाल करने वालों के नाम आ जाते हैं। माता-पिता तो है ही नहीं / व्यवस्था को भूलने से मदर-फादर भाई (भ्राता) से बदर आ गये। भाषा तक इनके पास नहीं। प्रत्यय के माध्यम से संस्कृत से टूट-फूट कर भाषा के बिना शब्दों का निर्माण कर लिया यहाँ संधान करके बारीकी से अध्ययन कर संस्कार किया जाता है। माता का पालन-पोषण होने लगता है। गर्भ में आते ही माँ अध्यात्म की बड़ी-बड़ी बातें

करनी लगती है। आप लोग इधर-उधर की बातें करते हैं। वो माँ गर्भस्थ होते ही तीर्थ यात्रा की बात करती है। अध्यात्म मय दृष्टिकोण होता है।

आप लोगों का विपरित क्रम हो गया है। विदेश में तो इस प्रकार की गंध भी नहीं आयेगी जैसे स्वर्गों में संयमी ही होते हैं, संयम की गंध भी नहीं। विदेश में एक जीवन में ५० बार तक विवाह हो जाता है आप यहाँ पुरे जीवन में एक को ही नहीं समझ पाते। जो ५० को समझ लेता है उसका दिमाग कैसा होता होगा। वहाँ दायित्व की गंध भी नहीं। सुबह बात मध्याह्न में [विवाह] शादी शाम को तलाक हो जाता है। ऐसे में विश्वास आदि कुछ नहीं, प्रेम नहीं। एक-दूसरे का पूरक बनने की तो बात ही नहीं। वह इधर जाता है तो वो उधर चली जाती है। यहाँ घर में आते ही उसे गृह लक्ष्मी / गृह स्वामीनी कहा जाता है। तोरण द्वार पर आरती उतारते हैं। सर्वेसर्वा / पालनहारा बन जाती है। पैसे की बात तो छोड़ दो।

अब जहाँ से आयी है वहाँ के शोर और सूतक कुछ नहीं लगता। कल आपके यहाँ वह शोर लगने वाली है न। अब इस घर का सम्बन्ध है, वहाँ का कोई असर ही नहीं। इसलिए घर जो बसाया है / घर वहीं का वहीं रहे जो परम्परा चली आ रही है वही रहे। वह अन्त में सन्यास लेकर अपना कल्याण करती है। व्यवहार चलाना अलग और ध्येय बनाना अलग है। आज ये सब गड़बड़ियाँ हो गयी। संस्कार टूटने का यही कारण है। समझाया जाये तो पुनः संभव है किन्तु दृष्टि में ही नहीं लाते। प्रयोग में लाना आवश्यक है। आज समझाया जा रहा है। दृष्टि तो लाओ। आदिपुराण देखो ६ महिने पूर्व से ही क्या-क्या होता है फिर ९ महिने तक व्यवहार बताया गया है। जनम होने के उपरान्त क्या आहार आदि की व्यवस्था सब बताया। क्या जरूरत थी? एक बार पुत्र रत्न प्राप्ति दुबारा वासना ही जाग्रत नहीं होती। वासना के लिए उनका उद्देश्य था ही नहीं।

एक बार ऐसा बीज लगा दिया जिस वृक्ष पर लगने वाले फल सम्पूर्ण जगत के काम आने वाले हैं।

तीर्थंकर अपनी माता-पिता के एक ही होते हैं। हाँ! एक तीर्थंकर के भले ही कई संतान हो सकती है। वह एक ही ऐसा आकर्षण का केन्द्र होता है कि सब कुछ भूल जाते हैं। सुखमय वातावरण होता है। दिन दुनी-रात चौगुनी वृद्धि होती है। पूरा वातावरण अलग ही आनंदमयी बन जाता है। इसका कारण मात्र एक यही कि विवाह का उद्देश्य सत् संतान की उत्पत्ति होना चाहिए। कन्या हो तो भी इसी प्रकार उसे सत् कुमार के साथ सम्पादन करते हैं। दोनों कुलों का उत्थान करने वाली होने से उसे उभय कुल वर्द्धनी / उभय कुल हित कारणी कहा। ऐसी कन्या ही उस सत् सन्तान को उत्पन्न करती है। और यदि सन्यास ग्रहण कर ले तो उभय कुल वर्द्धनी ही नहीं त्रय वर्द्धनी, सबका कल्याण करने वाली हो जायेगी।

बाहर निकलने पर फिर वह वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना करती है। सम्पूर्ण विश्व को ही कुटुम्ब सोचने लगती है। आप अपने-अपने तक ही सोचते हैं। स्वार्थमय जीवन हो गया है, परमार्थ तो रहा ही नहीं। गृहस्थ के पास सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र कैसे होते हैं। उसमें सब आ जाते हैं। २४ तीर्थंकरों ने चारों पुरुषार्थ को कर के बताया तभी जीवन समग्र बनता है। वर्तमान काल में ५ तीर्थंकर बाल ब्रह्मचारी हुये यह हुण्डावसर्पिणी का दोष है। इस हुण्डावसर्पिणी काल के कारण कुछ अनहोनी जैसी हुयी है। यह बहुत ही विरल होता है। असंख्यात युग के बाद यह काल आता है, जिसमें उत्पातंग बातें होती हैं। चक्रवर्ती का नरक जाना, चक्रवर्ती का मान भंग होना आदि-आदि और भी बहुत सारी बातें हैं जो ठीक नहीं। ये सब बातें बुराई को लेकर ही होती है। अन्य युग अथवा विदेह आदि में ये बातें नहीं होती ऐसा आगम का उल्लेख है। संतान की प्राप्ति हेतु काम पुरुषार्थ रखा। तीनों को पुरुषार्थ संज्ञा दी। काम पुरुषार्थ और

काम वासना में जमीन आसमान का अन्तर है। सुन रहे हो। हाँ। दोनो सुने पति भी सुने - पत्नि भी सुने और दोनों मिलकर पुत्र के कान में भी फूंक देना तभी जीवन सार्थक माना जायेगा।

आपने अपने जीवन में अर्थ का संचय किया और अवसर पाकर उसका उपयोग किया तभी जब तीनों पुरुषार्थ समीचीन होंगे। पहले तो एक ही व्यक्ति पूरा पंचकल्याणक कराता था। आज सारे पंच मिलकर एक पंचकल्याणक सम्पन्न करते हैं। पुरा समाज मिल जाता है, यह उपयुक्त भी है क्यों की लोकतंत्र का जमाना है। यहाँ हर व्यक्ति यही सोचता है - मैं क्या कम हूँ। इस व्यवस्था से किसी के मन में अभिमान नहीं आता अभिमान चूर-चूर हो जाता है। प्रतिक्षा करके किया। अभिमान को दूर रखकर स्वाभिमान के साथ किया। संतान पर भी इसका प्रभाव डाल रहे हैं, निश्चित रूप से डालेगा। माता-पिता भी इसको जाने। हमें भी इस परम्परा का निर्वाह करना है। एक तो Stopdem होता है, इससे सिर दर्द होता है। क्यों? व्यवस्था हो गयी। बाढ की चपेट में अब आयेगा। किन्तु अभी सरकार ने बहुत अच्छा सोचा है। मैंने विचार किया यह तो बहुत अच्छा है - धार्मिक दृष्टि से भी - आर्थिक दृष्टि से भी - सामाजिक दृष्टि से भी सभी तरह से सुविधा होगा। नदियों को आपस में जोड दो। इससे बाढ नहीं आयेगी, खारा पानी मीठा हो जायेगा, जहाँ कम है वहाँ भी पूर्ति हो जायेगी। दक्षिण को उत्तर से जोड दिया जायेगा। उत्तर गंगा दक्षिण की कावेरी सब एक हो जायेंगी।

जल ही प्राण है, जल ही जीवन है इसतरह का अरण्य रुदन करने की जरूरत नहीं है।

यह नदियों को जोड़ने से सब समस्यायें हल हो जायेंगी। उन्होंने कहा - अब बाढ़ की नौबत नहीं और जल की कमी नहीं होगी। जल ही जीवन कहने की बात नहीं आयेगी। अब किसानों को आत्महत्या नहीं करना होगा।

महाराष्ट्र में एक वक्तव्य में कहा जो हमने सुना है - पढ़ा है कि 30 नदियों को जोड़ने का विकल्प आया है। यह प्रत्येक प्रान्तों के लिए बहुत लाभकारी होगा। किन्तु केन्द्र के बिना नहीं सहयोग देने की बात की है। यह लोकतंत्र के लिए अच्छा विकल्प होगा। इससे धर्म प्रवाह भी होगा, बहुत अच्छे से होगा। सत् पुरुषार्थ होगा। जल होगा उससे पशुओं का पालन होगा - कृषि होगी। पशु होंगे तभी जैविक खाद होगी फिर विदेशी खाद का कोई काम नहीं। विदेशी खाद से उपजाऊ जमीन में भी खारापन आ रहा है/रेत बनती जा रही है। जैविक खाद के प्रयोग होने से ये सब रुक जायेगा। जल की, दूध की, खेती बड़ी सब समस्यायें दूर होगी। गर्मी - ठण्डी समय पर होगी, अपना उग्र रूप धारण नहीं करेंगी। सुभिक्ष इसी को कहते हैं। यह सब राजा के अनुसार होता है।

लोक तंत्र में प्रत्येक प्रजा ही राजा मानी गयी है। दायित्व/कर्त्तव्य को सामने रखकर चलेंगे। टैक्स कैसे देंगे? सब ठीक होगा। निःशुल्क सारे के सारे काम होते चले जायेंगे। आप कहो या नहीं कहो। इस प्रकार इसका उपयोग कर लो मांगने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। वे आपके साथ हैं। (राजा) आपके यहाँ आते हैं तो कह देना। आप बोलते हैं सरकार मानती नहीं/स्वयं को मानना है। स्वयं दायित्व को अच्छे से पालन करेंगे तो यह गर्भकल्याणक सार्थक है। गर्भकल्याणक के लिए एक बात और कहूँ गर्भकल्याणक की बात करते हो और गर्भपात भी चल रहा है। सारे देशों ने रसे

महापाप के रूप में स्वीकारा है। आज स्वागत का रूप हो गया है। चीन जैसा देश भी अब सोच रहा है अब सोच रहा है, वंश के वृद्धाश्रम ही प्रौढ़ाश्रम हो गये इसलिए कहना पड़ा कि एक संतान नहीं अब दो संतान रख सकते हैं नहीं तो यांत्रिक सेना का निर्माण करना पड़ेगा।

सामाजिक व्यवस्था को हस्तक्षेप न करें। गर्भपात नहीं कराये पुरा का पुरा श्रेय आपको मिलेगा। मांगने की जरूरत नहीं सुभिक्ष होता चला जायेगा। ऐसा वातावरण तैयार होगा। आपको विचार में लाना चाहिए। सरकार ने जनसंख्या बढ़ जायेगी तो गलत हो जायेगा। दायित्व ही भंग हो जायेगा। ज्यादा पुत्र होने पर अयोग्य हो जायेगी। ये सब गलत शिक्षा प्रणाली से हो रहा है। आज ऐसे विद्यालय/महाविद्यालय धड़ल्ले से खोलते चले जा रहे हैं। इसमें बड़े-बड़े नेता भी सम्मलित हैं। युं-युं करते हैं। (हाथ फैलाते हैं) चिल्लर हो तो आवाज, चाँदी का रुपया-भैय्या और नोट कर-कर करते हैं। मुद्रा का क्या मूल्य हो गया है?

पढ़-लिखकर भी अयोग्य घोषित हो रहे हैं। आत्म-विश्वास है ही नहीं। आत्मविश्वास तो सही शिक्षा से ही आता है। सब चौपट हो रहा है। विदेशी शिक्षा के कारण सारे के सारे अयोग्य हो गये हैं क्यों कि जीवनोपयोगी शिक्षा नहीं है। असावधानी का यह परिणाम। प्रत्येक को दुःख का सामना करना पड़ रहा है। एक व्यक्ति ने नहीं सबने मिलकर किया। सरकार को ~~किसने~~ बनाया-नागरिकों ने ही बनाया।

अब शिक्षा निति में आमूल चूल परिवर्तन के द्वारा ही इसे बदल सकते है। बड़े-बड़े नेता भी इस ओर ध्यान दे रहे हैं। बैठके हो रही हैं। भारत में हलचली मचेगी।

सज्जनों के दिमाग में बात आयी है। जरूर प्राचीन इतिहास पुनः स्थापित होगा। इसमें सहयोग की बात है अन्यथा समय गुजर जाने के पश्चात् मात्र पश्चाताप ही हाथ लगेगा। आप सोचो? क्या होता था, क्या हो रहा है, क्या कमियाँ हैं यह सब इतिहास के पन्ने पलटाओगे तभी ज्ञात होगा।

विदेश की ओर देखोगे तो कुछ भी हाथ लगने वाला नहीं। वहां दवाई होती है, औषध होती ही नहीं। दवाई वह जो रोगों को दबा दे। उल्टे 10 रोग और खड़े कर देती है जब औषध जो शरीर का शोधन कर दे। दवाई से चिड़चिड़ापन हो जाता है। अर्धपागल पुरा पागल होना तो फिरभी अच्छा है। ऐसे अयोग्य घोषित हो रहे हैं। अकेले मध्य-प्रदेश में इंजिनियर के 70% महाविद्यालय खोलनी पड़ी है। 30% भर्तीकरण ला-लाकर कर रहे हैं। लोन ले ले कर पढ़ रहे हैं। हम अयोग्य हो गये, अब इलाज नहीं लाइलाज हो गये। भविष्य क्या होगा, जीवन कैसे चलेगा? बच्चों के लिए ऐसी शिक्षा देना प्रारम्भ कर दिजिये जो जीवनोपयोगी हो। पैरों पर अपने स्वयं ही खड़ा होना पड़ेगा। विदेशी तो निचोड़ देगा। अतः पर से नहीं स्वयं पर आधारित होने से होगा।

बीजों के बारें में भी कहूँ। आज विदेशी बीज भारत में आ गया है, इससे फसल तो अच्छी आयेगी क्यों की विदेशी बीज खरीदा है। फिर उन्हीं में से बीज रख लो। ऊँहूं (नहीं) वह बीज अंकुरित नहीं होगा। वे बस एक ही साल फलेंगे। दो-तीन साल में आप बीज रहीत हो जायेंगे और उन्हीं पर आधारित हो जाओगे। वो जो भी किमत कहेंगे, आप देंगे। हो ददा दे ही दो। ये नौबत कहां से आयी। हर क्षेत्र में यह हो रहा है। कुछ वर्ष बाद

भूमी की उपजाऊ क्षमता नष्ट हो जायेगी।

दूध कहाँ से आया? सो-लन दूध बिक रहा है। बस थोड़ा सा मिला दो, काम हो गया दूध तैयार। सुनते हैं उसमें युरिया मिला है। जमीन में तो डालते ही है इस जमीन में भी डाल दिया। और न जाने क्या-क्या मिला है निरमा-शम्पु-शम्पु ऑरेंज मिचर खरीद लिजिये और पी लिजिये। एक व्यक्ति ने कहा - एक युग था जब दूध की नदीयाँ बहती थी - आज तो समुद्र बह रहा है। उसे लगा इतना दूध आ कहाँ से रहा है? उसने जाँच पड़ताल शुरु की। 16 वीं बार में ज्ञात हुआ कि वह दूध कतई नहीं है एक जमाना था जब 16 वानी का सोने को कसा जाता था आज दूध का परीक्षण हो रहा है। तब जाकर पकड़ में आया यह दूध नहीं इसमें कुछ और मिला है। छोटे बच्चे को पिलाओगे क्या प्रभाव पड़ेगा? लिवर - तिली - आमाशय - पाचन तंत्र पर इसका क्या प्रभाव होगा? कभी सोचा आपने।

बुद्धि पर क्या प्रभाव होगा। बुद्धि हो तो सोच लो। इस प्रकार के दूध से क्या होगा। आप सोच रहे होंगे कि गर्भकल्याणक के दिन, ये क्या पुराण चालु कर दिया। आप लोगों को समय के अनुसार ये बताया। आपको जागना होगा। मात्र सुन लिया और बैठ गये उससे कुछ नहीं होगा। आप कर सकते हैं। यहाँ पर बैठे प्रत्येक युवक-युवती से मैं कहना चाहता हूँ कि सत् कार्य हेतु अपनी कमर कस लेना चाहिए।

एक उदाहरण दे देता हूँ जिससे मेरी बात आपको आसानी से समझ में आ जाये। दक्षिण से एक युवक आया जो रसोई बनाने में निपुण था। यहा-विसा वम अपने काम में दक्ष था। सब लोगों को उसने हथकरघा

का काम करते देखा। भोजन बनाने के बाद जो कुछ समय बचता अथवा समय बचाकर वह स्वयं भी हथकरघा का काम सीखता। कुछ ही समय में उसने हथकरघा का वह कार्य सीख लिए। स्वयं अच्छी क्वालिटी का 10-12 मीटर कपड़ा प्रतिदिन निकालने लगा। एक मीटर का 45-50 रु. मिलता है तो 10-12 मीटर का लगभग 600 रु. प्रतिदिन अर्थात 18 हजार महिने में वेतन प्राप्त करने लगा।

आप लोग स्वाभिमान से रहित हो गये। इसलिए आज ऐसा हो रहा है। ये इतनी ऊँची क्रेन पर रील घुम रही है और सोचते हो, वाह! क्या आनंद आ गया। पुछें तो कहेंगे वो तो महाराज हीजानें आज ये सब दिखावा हो गया। वो पढ़ा लिखा नहीं था तो भी 18 हजार-एक माह में आज दो इंजिनियर मिलकर भी इतना नहीं कमा पाते हैं। आप पढ़े लिखे हो अपना स्वाभिमान जागृत करो। आदर्श शिक्षक बनें। जयकुमार जैसे जो बुंदेलखण्ड छोड़कर आदिवासी इलाके में बच्चों को शिक्षा देते थें। ऐसे आदर्श शिक्षक बनना बहुत कठीन है। स्वयं पैरों पर खड़ा होना यह शिक्षा का मूल उद्देश्य होना चाहिए। जो खड़ा नहीं हो पा रहा है उसे सहयोग देना अपेक्षित है। किन्तु आज सब कुछ उलट गया है।

"पढ़ो-लिखो और बाबु बनो" ये हर शिक्षार्थी का ध्येय हो गया। वह जिसे आप गँवार कहते हैं पढ़ा-लिखा नहीं है फिर भी एक उद्योगपति बन सकता है। युवक-युवतियाँ तैयार हो जाये तो किस बात की कमी, कुछ भी कर सकते हैं। अर्थ पुरुषार्थ का अध्ययन कर लो। जो पहले था उसी को लौटाने की जरुरत है। आँखे खोलने की जरुरत है तभी संभव है जब स्वाभिमान की पुनः स्थापना होगी। इसके अलावा दूसरा कोई हेतु नहीं जो तुम्हे सुधार सके। दूसरे जो करके गये। उनके प्रति कृतज्ञता का भाव

रखो- कृतघ्नता का नहीं।

महिलायें इसमें अपना पुरा योगदान दे सकती हैं। वे अपने बच्चों को इसी प्रकार तैयार करें। शिक्षण की कोई आवश्यकता नहीं मात्र जागृत होने की आवश्यकता है। जीवनोपयोगी शिक्षा हो। सब यहीं उत्पादित होगा हमें किसी के आगे हाथ फैलाने की जरूरत नहीं। बल्कि निर्यात करेंगे। पहले प्रत्येक वस्तु विदेश वाले भारत से खरीदते थे। बदले में यहाँ क्या लाते थे। सब कुछ था इसलिए मात्र सोना-चांदी, हीरा-मोती भर-भरकर लाते थे। ये सब मैं नहीं कह रहा हूँ, उन्हीं विदेशी लोगों ने कहा है। ज्यादा दूर मत जाओ। सन् 1835 में लार्ड मैकाले नाम के व्यक्ति ने ब्रिटिश संसद में यह घोषणा की, कि शिक्षा प्रणाली को समाप्त किए बिना आप कभी भी भारत से आगे नहीं हो सकते।

इस प्रतिज्ञा को पूर्ण करने के लिए ही ईस्ट इण्डिया कम्पनी को भारत में भेजा। अब हमें बदला नहीं लेना- बदले में वो ही बात उनको देना है। यहाँ सब कुछ होता है। इस द्वारा पैसों सामान्य मनुष्य भी भगवान बन सकता है/बने हैं। वहाँ ये सब कुछ नहीं। सामाजिक व्यवस्था है ही नहीं। इस प्रकार की बुद्धि-विभाग नहीं है। समय-समय पर इस प्रकार के आयोजन करते हुए एक प्रकार से जीवन को सही दिशा में ले जा सकते हैं। अब टीका टिप्पणी जो मैं नहीं करना चाहता। आज कुछ अधिक ही हो गयी। समय भी कुछ ज्यादा हो गया। आप लोगों ने मुझे संबोधन हेतु निवेदन किया था। मैं तो वही बोलूंगा जो आपके हित में हो।

मीठा ही मीठा खिलाने से अनर्थ हो जायेगा। स्वास्थ्य के लिए कड़वा भी देना जरूरी है। पेट

मैंने डोज (मात्रा) को कम करके ही दिया है। हमारे यहाँ दवाई नहीं औषध दी जाती है जो रोग को दबाती नहीं- बढ़ाती नहीं, संशोधन कर देती है।

दवाई तो विदेशी नीति है। आहार को ही औषध समझकर सेवन करना है। प्रत्येक नागरिक इसे समझे। ये गर्भकल्याणक है - गर्भपात की बात भी आपके सामने रखी, इस कुकृत्य से बचे अन्यथा अगले जीवन में संतान होगी ही नहीं। इस जीवन में भी संतान विकलांग होगी। विवाह को अमंगलकारी नहीं- मंगलकारी कहा है। प्रबुद्ध वर्ग इस विषय पर जरूर चिंतन करेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

जन्म कल्याणक

12-11-17 "पर का वैभव - निज की प्राप्ति" प्रातः 9.20

तीनलोक का एक प्रकार से परम सौभाग्य है, जब होनहार सपुत का जन्म होता है। उनके जन्म लेने मात्र से असंख्यात जीवों का कल्याण संभव है। उसके उपरान्त भी भव-भव तक उनकी आरती उतारेंगे ऐसे अलौकिक गुण बालक में हैं। उस बालक में पालकों के भी सारे गुण विद्यमान है। उस बालक पर एक बार जिसका भी ध्यान गया, वह ऐसा समझने लगता है मानों संसार कुछ है ही नहीं। अभी आप देख रहे थे इन्द्र भी उस बालक की एक झलक देखने के लिए तरस रहा है और इन्द्राणी विशेष तरसा रही थी।

करें क्या पुरुष की अपनी कुछ मर्यादायें होती है। नीतियाँ कभी विराम नहीं लेती, कान पकड़ लेती है। कैसे जाना? क्या बोलना? कैसे रहना? ये तो सभी को ध्यान रखना अनिवार्य है। अभी भीतर नहीं जा सकते। नहीं जा सकता तो फिर मैं सौधर्म इन्द्र काहे का? अवधीज्ञान लगा

लो। उसने जैसे ही अवधिज्ञान लगाया / अहो! एक क्षण भी नहीं लगा / मैं नहीं जा सकता / प्रसूतिगृह (रनवास) में मैं नहीं जा सकता / उसने इन्द्राणी से कहा - आप बिना मैं तीर्थंकर बालक का दर्शन नहीं कर सकता /

देखो! अनादिकाल से पुत्रों का हरण होता आया है। हरण के बिना सौधर्म को भी यह सौभाग्य नहीं मिलता / नियति के विरुद्ध है। लेकिन कौन कहे? किससे कहे / जिसने जन्म लिया उससे पूछना पड़ेगा / बोलो / इन्द्राणी विद्या के माहात्म्य से माता को सुला देती है। मतलब समय - समय पर अपने - अपने पुण्य काम करते हैं / वह इन्द्राणी अपने उसी पुण्य के बलबूते तीर्थंकर माता को निद्रा में सुला देती है / अब एक काम और होता है / ये मायाचार के अन्तर्गत आता है किन्तु कार्य सिद्धि के लिए अनिवार्य है / मैं समर्थन नहीं कर रहा किन्तु स्वयं ही हो जाता है / समर्थन नहीं यह तो खुल्लम - खुल्ला चोरी है / वह उस बालक को हटाकर उसके स्थान पर दूसरे कृत्रिम बालक को सुला देती है।

मतलब वह अपने पुत्र की पहचान भी न कर पाये, इसीलिए ऐसा किया गया / इसमें तत् सम्बन्धी बंध तो होता है। जिन बिम्ब कुछ समय के लिए अन्यत्र कराने का फल 22 वर्ष तक भोगना पड़ा / (उद्देश्य) हम नहीं मानते / देश - काल से पुत्र को रखकर बेहोश करना / क्या है ये? जैसे ऑपरेशन होता है / बेहोश करने के लिए इंजेक्शन लगा देते हैं क्लोरम कर लेते हैं / वैसे ही इन्होंने सब करके आनंद ले लिया / ये तो हो गया /

उस बालक का अद्वितीय पुण्य का उदय, उसका फल परिवार को, देवी-देवता सबको होता रहता है।

उनके द्वारा वितरण की पद्धति प्रत्येक कल्याणक तक जारी रहेगी। असंख्यात जीव तर जायेंगे। अभी तक तर रहे हैं। ये सभी तीर्थंकरों के साथ घटित होता है। पंचकल्याणकों में अधिकतर वृषभनाथ भगवान को विधिनायक बनाकर क्रियायें करते हैं। इसलिए उसमें वैशद्य हेतु एक और निरांजना की आवश्यकता होती है। मूलनायक नेमीनाथ हो या अजितनाथ कल्याणक सब वृषभनाथ भगवान के अनुसार होते हैं। पाण्डुशिला में आज उन्हीं का जन्माभिषेक होगा।

इस पर बात करता हूँ।

जब बालक को सौधर्म इन्द्र हाथ में लेता है तो किंकर्त्तव्यमूढ़ होकर आँखों को मल लेता है। आनंद नहीं आ रहा है। आपको जब घुंघला दिखता है तो अपने उपनयन को कपड़े से बार-बार पोंछते हैं। आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने काव्य के माध्यम से उस दृश्य को रखा - "द्वयक्षः शक्रः सहस्राक्षो" दो आँख वाला वह इन्द्र भी हजार-हजार आँखें बना लेता है फिर भी तृप्त नहीं होता है। आप क्या करेंगे। वह तो अपनी क्षमता से हजार आंखें बना लिया। विस्मयकारी - आश्चर्य उत्पन्न करने वाली घटना घट गयी। क्या सोच रहे हो विचार करो।

ऐसा अवसर स्वर्ग के देवी-देवता को उपलब्ध नहीं; धरती के पूत को यह सौभाग्य मिला। क्या हो गया? तीर्थंकर प्रकृति का बंध जो उन्होंने किया उसी का फल है। अभी तो बाल्यावस्था/शुरुआत है। प्रभात नहीं हुआ फिर भी पूर्व दिशा में वह लाली फूट जाती है। उनके गुणगान की शक्ति काव्य-ख्याती में भी किसी दूसरे के पास नहीं। आचार्य उमास्वामी महाराज ने भी "तीर्थकरत्वं च" भिन्न रूप में कहा। इसके नाम को अलग से कहा क्यों कि पुण्य प्रकृति

भी यह सर्वश्रेष्ठ प्रकृति है।

सभी प्रशस्त/पुण्य प्रकृति के औदयिक भावों को बंध को मांगलिक नहीं कहा किन्तु तीर्थंकर प्रकृति की उदीरणा को मांगलिक कहा। कर्मों की निर्जरा इसके द्वारा होती है। मांगलिक का अर्थ ही है मं गालयन् अर्थात जो पाप का गालन कर दे अथवा मं का अर्थ पुण्य भी होता है जो पुण्य को प्राप्त कराये। इस प्रकृति को पुण्य फला कहा जो सुख और शान्ति को लाने वाली है। आचार्य पूज्यपाद ने सर्वार्थ-सिद्धि में इसे दो प्रकार से परिभाषित किया इसे मांगलिक कहा। ये प्रकृति इस तीर्थंकर बालक की सत्ता में है।

मैं यह कहना चाह रहा हूँ, देवों में अभी मात्सर्य छुटा नहीं हैं। एक देव दूसरे देव के वैभव को देख उनकी आयु, उनके भवन, वाहन, खान-पान आदि में ज्यादा चमक देखता है तो सोचता है मेरे पास तो ये नहीं है। इस मात्सर्य भाव से उसे संक्लेश होता है। आकुलता सबसे ज्यादा वहीं होती है। किन्तु कुछ देव ऐसा सोचते हैं कि इसने पूर्व भव में जरूर पुण्य कर्म किया तभी इसे ये सब ठाठ-बाठ मिला है। और उनकी वह आकुलता भी सम्यग्दर्शन का कारण बन जाती है। अपना वैभव देखेंगे मोह का कारण बनेगा और दूसरे का वैभव देखने से अतीत का लेखा-जोखा सामने आ जाता है। इसी को देवतद्दृद्धि दर्शन कहते हैं।

कल जिन महिम दर्शन के बारे में बताया था आज सम्यग्दर्शन का दूसरा कारण देवतद्दृद्धि दर्शन भी होता है यह बताया। इस देव में तद्दृद्धियाँ ज्यादा क्यों है? पूर्व जीवन में इसने ऐसी धर्म साधना की, जिसके फलस्वरूप मुझसे ज्यादा वैभव है। मैंने किया तो था पर इससे बढ़कर नहीं किया था। इस प्रकार मात्सर्य नहीं रखो - तत्त्वज्ञान से समझो/परखो तब मालुम पड़ेगा गलती कहाँ। सही विद्यार्थी वही माना जाता

है कि मेरेकमनम्बर क्यों आयें। पहले अपने कान खेंच लेता है। दूसरे के कान मत खेंचो अपने कान खेंचो।

आप रत्नत्रय की बात करते हैं, दूसरों से मात्सर्य न करो। कूढ़ो नहीं। अपितु ये सोचो कि उसने ऐसा काम किया था। 12वें स्वर्ग तक ही ये घटना घटती है। द्रव्यलिङ्ग भी यहीं तक होते हैं। बाद में एकमात्र शुक्ल लेश्या होती है फिर ईर्ष्यबुद्धि दुर्ध्यान घटित नहीं होता। मात्सर्य या कूढ़ना नहीं होता। जैसे धोती शुक्ल पहने हो उसी प्रकार भीतर भाव भी शुक्ल होना आवश्यक है। इस प्रकार दूसरे के वैभव को देखकर मात्सर्य नहीं करना अपितु सम्यग्दर्शन प्राप्त करने में कारण बना लेना। उसे यह वैभव क्यों मिला, बस ये सोच लो। बिना मांगे भी फल मिलता है। दानआदि देने में तो फल मिलता ही है अनुमोदना में भी फल। ब्रह्मचारीजी कहते हैं 16.66% अर्थात छठवाँ भाग बिना दिये। कुछ भी नहीं करो तो भी। ये दुकान ऐसी है कुछ भी नहींकरो तो भी नम्बर ही नम्बर मिलते हैं।

आप लोग हैं कि हमेशा रोते ही रहते हैं। रोना कब ठीक होगा जब दूसरों के लिए रोओगे। दूसरा खुशी मना रहा है तो आप भी खुशी मनाओ। धर्म कमाना सीखो - गमाना मत सीखो। भावों की उत्कृष्टता रत्नत्रयधारी के पास बैठने से ही आती है। ये क्षण प्राप्त हुए हैं खूब कर्म निर्जरा कर सकते हो। ये ऐसा लगभग प्राप्त हुआ है। तीर्थंकरों के पंचपरमेष्ठी को याद कर रहेहो। पंचेन्द्रिय विषय तो बंध के कारण है पर पंच परमेष्ठी को याद करना कर्म निर्जरा का ही कारण है। आचार्य कहते हैं-दूसरों से मात्सर्य मत रखो। अपने सम्यग्दर्शन को मांजो। विपक्षा है रहने पर ही मुक्ति की प्राप्ति होती है, इसलिए विपक्षा से डरो नहीं। समय पर्याप्त हो गया। इतना ही काफी है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

12-11-17 जन्म कल्याणक मध्याह्न 4.00

आज रविवार के साथ जन्म कल्याणक का यह अवसर है। आज का कार्यक्रम बहुत ही बड़ा रहता है। हमारे लिए समय मिलता ही नहीं। नया मेहमान आता है, तो माहौल कुछ और ही होता है। जो कुछ भी अपने पास होता है वह सब कुछ नये मेहमान के लिए समर्पित करने का भाव होता है। आप लोगों को ज्ञात ही है क्या-क्या किया जाता है। जब बुंदेलखण्ड में आये तो एक नया नाम आज के दिन सुना। क्या बोलते हैं? साढ़े का दिन है। इस दिन मिठाई-चिकट आदि होती है। इससे स्पष्ट है इसमें सभी लोग भाग लेने वाले होते हैं।

सुनने में आया आज ऐसा भी यंत्र भी आया है, जिसको सुनकर उथल-पुथल मच जाती है। वह यंत्र बता देता है कि गर्भ में कन्या है या पुत्र है। यह ज्ञात कर लेते हैं। अब उसे परिवर्तित कैसे किया जा सकता है, नहीं किया जा सकता है और यदि नहीं चाहिए तो गर्भ में ही समाप्त कर दिया जाता है। वह भीतर से कह रहा है करुणा के साथ चिल्लाता है- मुझे जन्म तो लेने दो। एक बार जीवन मिल जाता है, वही उसी को समाप्त करना चाहता है। मनुष्य जीवन मिलना कठिन उसी मनुष्य जन्म को समाप्त करना चाहता है। ऐसे पुरुष जीवन का महत्व वह समझ ही नहीं पा रहा। ये तो ठीक वैसे ही है जैसे किसी के हाथ रतन लगे और वह उसे

कव्वे उड़ाने के काम में ले अथवा धान की खेती के बाड़ी लगाने हेतु बहुमूल्य फसल को काटे अथवा अभूत का कुंड है उसे पाँव धोने में काम ले।

आज ये ही किया जा रहा है। ये तो फिर भी मिलना संभव है किन्तु आचार्यों ने कहा है कि यह मनुष्य जीवन बहुत दुर्लभ है इसे पाकर युं ही विषयों में गंवाना केवल मूर्खता है। पंचेन्द्रियों के विषय में सार समझना ठीक नहीं। इसका मूल्य वही जान सकता है जो समझता है नहीं तो घण्टों क्या वर्षों गुरुवाणी सुनते रहो, विश्वास नहीं होगा। ऐसा ये भारत देश है, जहाँ जहाँ वैधानिक रूप से गर्भपात को समर्थन नहीं है। वहाँ इसे महापाप के रूप में गिना जाता है। अन्य देशों में ऐसा नहीं है।

करे क्या? जब जनसंख्या बढ़ती है तो जीवन के लिए अनिवार्य तत्त्वों की पूर्ति ही नहीं कर पाते हैं। इस प्रकार के कृत्य की जरूरत नहीं, धार्मिक ग्रन्थों में पूरी व्यवस्था दी है। ये सब प्रकृति स्वयं ही व्यवस्थित कर लेती है। इसे अपनी तरफ से घटाना या बढ़ाना गलत है। देखो चीन में संतान उत्पत्ति की छूट देनी पड़ी। ग्रन्थों से सब ज्ञात हो जाता है। गुण-दोष, लाभ-हानि ज्ञात हो जाती है तो कहने की आवश्यकता नहीं। आ० समन्तभद्र स्वामी ने कहा "यद्निष्ठंतद् वृतये" जिससे हानि होती है उससे बचना धर्म नहीं कर्त्तव्य है किन्तु

आज उसके लिए भी उपदेश की आवश्यकता होती है। अभी छात्राओं ने आठ अंग के माध्यम से सम्यग्दर्शन / विश्वास की बड़ी ही सुन्दर प्रस्तुति की किन्तु क्रम आगे-पीछे हो गया।

शास्त्रों में पहले अमूढ़ दृष्टि फिर उपगुहन अंग का क्रम दिया है। गुरुजी की भी और मेरी भी यही धारणा है। क्यों की पहले के चार अंग अपनी ओर आने के लिए तथा शेष चार पर के लिए दृष्टि में रखकर बताये। हमारी दृष्टि पहले अमूढ़ हो अपने आप ही उपगुहन - स्थितिकरण - वात्सल्य होंगे फिर प्रभावना क्यों नहीं होगी। शरीर में भी आठ अंग होते हैं। एक-एक अंग है तो सम्यग्दर्शन बचता है अन्यथा नहीं।

सम्यग्दृष्टि में करुणा-दया नहीं तो कुछ भी काम का नहीं। स्वरूप के बिना कोई भी तथ्य निकलता ही नहीं। तथ्य भाववाचक है तथा भाव है तो तथ्य है। इसी आधार पर हम घोषणा कर सकते हैं कि ये जीव है- अजीव नहीं। एक स्थान पर आचार्य कुन्दकुन्द ने ये घोषणा की कि जो स्वयं के दुःख से, मृत्यु से डरता है और पर के सुख की आकांक्षा नहीं उसे जीव नहीं कह सकते। "यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्- ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्" यह चार्वाक सिद्धांत मात्र चार्वाक के लिए ही नहीं आज सम्पूर्ण विश्व इसकी चपेट में है।

खाने के लिए नहीं जीना अपितु जीने के लिए खाना है। खाना परिस्थिति है-अनिवार्य है किन्तु क्या खाना - कब खाना यह विचार करना आवश्यक है।

धर्म को आगे बढ़ाना कर्तव्य है, कर्तव्य से फलश्रुति सामने आ जायेगी।

आप दुकान पर चले जाते हो तब सामने वाला देख लेता है। मुख नहीं अंटी बोलती है। जेब में नोट है या नहीं तब तो ठीक है। क्या चाहते हो? हमें ये चाहिए। बांध दो इतना। भाव तो बताओ, कितना पैसा लगेगा। एक बार वस्तु को ले जाइये। आपको अच्छा लगेगा फिर आ जाना। बांध कर देता है। एक हाथ से वस्तु देता है - दूसरे हाथ से दाम (पुड़िया) लेता है। मूल्य लाओ ऐसा नहीं कह सकता क्या भूलकर आ गये। आप लोग क्यों बैठे हो। अंटी में कुछ लाये हो या नहीं।

उनका तो जनम हो गया और इसी भव से मुक्ति भी मिलेगी। हमें क्या मिलेगा? मैं अपने आपको बुरा हुआ महसूस करता हूँ जिस दिन बिक्री नहीं होती। ग्राहक आया उसका मनचाहा दिखाया, नहीं लिया कोई बात नहीं मुझे विश्वास है कि घूमकर इधर ही आना पड़ेगा। अब आ ही गये हो तो जो दाम बताऊँगा वह दाम भी देना पड़ेगा। यहते हो - "नरकाया को सुरपति तरसे, सो दुर्लभ प्राणी" यह मनुष्य भव इतना दुर्लभ है। उसी को मालुम जो तत्त्वज्ञानी है बाकी युं ही आना-जाना है।

अपनी प्रतिभा का मूल्यांकन करो। ये मौलिक क्षण ऐसे ही निकल रहे हैं। एक-एक क्षण निकल जायेगा और काल लुटेरा लेकर चला जायेगा तब पता चलेगा।

आपकी पहचान मात्र आयु कर्म पर है। आयु खत्म तो फिर निकल गये। फलाना चंद उड़ गया। वह उष्मा - गर्मी उसी की पहचान है। हाथ - पैर ढंडे पड़ गये। क्यों? गर्मी निकल जाती है/लकड़ी की भांति हो जाता है। उसे जलाने हेतु दूसरी लकड़ी की आवश्यकता होती है/दाह-संस्कार करने वाला जानता है। आप - हम सब की वही दशा होने वाली है/अतः जो करना है सो कर लो।

जीवन को सार्थक करना चाहते हो सच्चे देव - शास्त्र - गुरु के चरणों में समर्पण कर दो। कितना मिलेगा? ये मत पूछो। जो चाहते हो उससे ज्यादा ही मिलेगा। ऐसा मिलेगा जो कभी समाप्त नहीं अनंत है। मौलिक मिलता है/यह मात्र मनुष्य जीवन में ही मिलता है/ऐसा जीवन वह बालक लेकर आ रहा है। वह अन्तिम जीवन होगा। तीर्थंकर का वैभव अलग ही होता है। आपकी दृष्टि उसी वैभव की ओर है किन्तु वे कहते है "वै भव इति वैभव" यह इस भव में वैभव शून्य जो जीवन मिला है वह अक्षय सुख देने वाला है।

सुख-शान्ति का भण्डार मिलाने वाला है। एक उदाहरण के माध्यम से अपनी बात रखता हूँ कि क्या होता है संस्कारों का महत्व। माता - पिता के संयोग से जन्म हुआ। कहाँ-कहाँ से जीवन में क्या-क्या लेकर आता है तथा क्या-क्या लेकर जाता है। कल नहीं परसों जो संस्कारों के बारे में कहा था/राजा श्रीवत्स है-

पत्नि चेलना है। उसकी युक्ति तो देखो। समर्पण का भाव देखो। कैसे-कैसे प्रयास किया गया पति को सही मार्ग में लाने के लिए। सतीयों में आती है। उसके जीवन में गर्भधारण के समय एक मौलिक घटना घटती है।

मांग करती है। क्या मांग करती है? उसे दोहला होता है। क्या चाहती है? जो शीशु अभी गर्भ में है वह फल देने वाला है। कहती है-मुझे कुछ नहीं आपकी उंघाओं का रक्त चाहिए। कौनसी पाठशाला में गया वह शीशु? चेलना की प्रतिभा कहां चली गयी? ये क्या हो गया बीच में, कोई बात नहीं मांग रही है तो देना। रक्तकूप में ही स्नान कर लो। सुनकर ऐसा लगा, ये कौनसा दोहला हुआ। तीर्थयात्रा, दानादि की बात करती, वैयावृत्ति के भाव करती, आत्मा-परमात्मा की बात करती पर अलग ही भाव हुये। आप लोगो ने सुना होगा। (गर्भपात परनारद में)

अंश है या वंश है, मैं नहीं जानता। बेटा वंश है तो बेटी अंश है। पुछना चाहता हूँ कौनसा अंश आ गया चेलना के गर्भ में। सुन रहे हो आप। (जी) समझना है। केवल माता-पिता ही सब कुछ नहीं। आत्म-तत्व की ओर दृष्टि रखने वाला ही आगे बढ़ सकता है। माता-पिता भी स्वार्थ की बात करते हो। ये लोग भी भूल सकते हैं। स्वयं को देखना होगा। आज तो भूल-भूलैया हो गयी, संतान की ओर ध्यान ही नहीं है। पढ़े लिखे होकर भी महत्व नहीं देते। कैसे पढ़े-लिखे माने इनको? इसलिए मैंने पहले भी कई बार कहा आज फिर

कह रहा हूँ। "हम अधिक, पढ़े लिखे हैं कम, समझदार" अर्थ-पूर्ण पंक्तियाँ हैं।

अपने आपको समझदार मानकर भी मझदार में हैं। ये बड़ी मजेदार बात है। ये क्या हो गया। भारत स्वतंत्र हो गया। कैसी स्वतंत्रता अपनी भाषा, अपना देश, अपना क्षेत्र/भूमी को ही भूल गया। भाषा भूल गया सारा का सारा ही विपरित हो गया। इसलिए हम अधिक, पढ़े लिखे हैं कम, समझार। 70 साल बाद भी ये हो रहा है। महाराज! कुछ परिवर्तन कर दो। पुरी की पुरी शिक्षामण्डली जिसमें कुलपति भी शामिल थे। हमने कहा - आप करना चाहते हैं, भारत को लौटाना चाहते हैं तो सर्वप्रथम चिंतन करना है।

इण्डिया नाम कहाँ से आया? भारत में जब तक शिक्षा भारतीयभाषा में नहीं होगी तब तक तीन काल में भी उन्नति नहीं होगी। अभी-अभी एक पत्रिका पढ़ी, लेखक का नाम भूल रहा हूँ। शिक्षा उन्नति को प्राप्त तभी जब स्वदेशी भाषा में हो। अपने घर की भाषा में नहीं। सुन रहे हो आप। चेलना-श्रेणिक के पुत्र सुनो। न अंश है न वंश है। आप हमारे हितु नहीं हैं ऐसा वह कह रही है। हमें रक्त चाहिए। यह माँ नहीं कह रही पुत्र कहलवा रहा है। ये मनुष्य जीवन है। अब नहीं छोड़ूंगा। कर्त्तव्य के प्रति नैसर्गिक भाव हो। बिना पढ़ाये, बिना लिखायें, बिना समझायें ही यह होता है। इसे आगम की भाषा में "स्वभाव मार्दवं च" कहते हैं। अतिरिक्त अध्ययन की जरूरत नहीं, किन्तु आज अतिरिक्त ही सब कुछ हो रहा है। पहले नियमित अध्ययन होता था,

आज सब अतिरिक्त पर ही निर्भर हो गये।

पहले बुद्धि कमजोर तो भी कोई बात नहीं, आज उसी पर जोर दिया जा रहा है। इसलिए आज का व्यक्ति - हम अधिक, पढ़े-लिखे हैं, कम समझदार। जब आपका बच्चा समझदार नहीं तो आप कैसे हो सकते हैं। कर्मों की लीला बड़ी विचित्र है कहने की आवश्यकता नहीं। अंश और वंश की बात नहीं। ये कैसे हुआ तो पूर्व भव में वे महाराज थे, उस नगर में आहार हेतु आये। मासोपवासी महाराज थे। तीन बार आये। क्षीणक राजा के राज्य में दूसरा कैसे दे सकता है। अब एक बार हाथी बिचक गया, फिर एक बार आये इस बार आग लग गयी। तीसरे माह में राजा परचक्र शंघवा और कुछ कार्य में व्यस्त हो गया। लोगों में कानाफूसी शुरू हो गयी।

यहाँ का राजा स्वयं आहार नहीं देता और हमको देने नहीं देता। दूसरे ने कहा - ज्यादा जोर से मत बोल। राजा की आज्ञा है, रहना मुश्किल हो जायेगा। ये वाक्य उन मुनिराज के कानों में प्रविष्ट हुये, उसी का करामात है। यत-तत्र जहाँ भी देखो ऐसा ही वातावरण हो गया। उसी आर्तध्यान में प्राणान्त हो गया। आहार तो लूंगा पर बिना विधी के नहीं।

क्या यह राजा की आज्ञा सही है? मेरे यहीं आहार हो, क्या ये सही है? आहार तो होगा ही। अभी ज्ञानीओं ने एक हायकू बोला था- "मनोनुकूल

आज्ञा दूं कैसे दे दूं, बंधा विधी से"

विधी-न्याय के अनुसार ही आज्ञा दी जाती है। मनमाना नहीं कर सकते। इसमें पक्षपात के साथ नहीं चल सकते। आज क्या दशा हो रही है, आप सभी देख रहे हो। शिक्षा के साथ शून्य लग गया। संस्कार / संस्कृति से नहीं जुड़ने के कारण ऐसा हो रहा है। इतिहास पढ़ो उसी के अनुसार करो। कमियाँ होगी ही नहीं। इतिहास कभी गलत लिखा ही नहीं जा सकता। वह इतिहास जो सही है क्रिया रूप में आता रहता है।

उस अर्द्धशताब्दी में क्या-क्या घटित हुआ। नीति-व्यवहार से जनता लाभान्वित होती है। सोचो तो आगे की पीढ़ी को क्या मिलने वाला है? शिक्षा यदि अपनी भाषा में नहीं तो इतिहास समाप्त, व्यवहार समाप्त, संस्कृति समाप्त सब समाप्त कहती गर्व से कह रहे हो स्वतंत्र हुये 70 वर्ष हो गये। ये साधक ऐसी साधना करने वाले हुये जिन्होंने मृत्युञ्जयी / कालजयी इतिहास की स्थापना कर गये। काल पर असर नहीं पड़ा / क्यों नहीं पड़ा? वह कार्य आज भी अधुरा है।

हमें स्वतंत्रता मिले या न मिले भाषा तो हमारी अपनी होनी चाहिए। ज्यों ही स्वतंत्र त्यों ही हो जायेगा। आज 70 वर्ष हो गये। उधर चीन को 2½ वर्ष बाद स्वतंत्रता मिली। किन्तु ज्यों ही स्वतंत्र। मण्डली ने कहा इस हेतु 8-10 वर्ष आपेक्षित है। माखिया ने कहा आज रात से ही यह नियम लागु होगा। शुभस्य शीघ्रं, अद्यैव कुरु, नियोग इसी को कहते है। अधकचरा ज्ञान

नहीं होना चाहिए। नियम/विधान कभी भी लचकदार नहीं होना चाहिए।

लचकदार कदम रखोगे तो फिर कहोगे - कमर झुक गयी। पैर नहीं कमर। संदेह में पैर पड़ गया/समान रूप से पैर नहीं पड़ने के कारण यह दशा हो गयी। एक-एक समय में यह ठीक होगा। इसके लिए कैमरे अथवा X-Ray सब फेल है। अपने आप भी ठीक हो जाता है। ऐसे कई राष्ट्र है जो बिना English के भी आज उन्नति के शिखर पर है। भारत के नेताओं की ये धारणा बन गयी कि बिना English कुछ नहीं हो सकता। ये एक पागलपन है, समझदारी नहीं। चीन के पास English नहीं फिर आगे कैसे बढ़ा?

संस्कृति का ज्ञान नहीं होता

तभी ऐसा होता है। यदि संस्कृति का ज्ञान हो जाये तो आयात नहीं उत्पादन करता। English पहले पढ़ो फिर विषय पढ़ो ये प्रवृत्ति उचित नहीं। भीख मांगने की ओर जा रहे हैं। कोरिया, जापान, रूस, इजराइल आदि अनेक देश बिना English आगे बढ़े। आप कह रहे हो - हमें उन्नति करना है वो भी English के आधार पर कभी नहीं हो सकता है। 70 वर्ष के बुड्ढे हो गये हो। अभी भी कबुल कर लो। संतान के लिए कुछ दे सकोगे।

अभी एक काम राष्ट्रपति जी ने बहुत अच्छा किया। जिस प्रान्त में जो भाषा चलती है वहाँ के न्यायालय उसी भाषा में होना हो। जिससे जिन्हें समझना है वे

समझ सके। अन्य भाषा में व्याख्या न्याय नहीं। बस आप जीत गये हो। हव।

ये कौनसी भाषा/संस्कृति है। बच्चों की भाषा बोलो फिर भी दिमाग हव नहीं कहता। हमारा लड़का तो English मिडियम में पढ़ता है। हव। क्या शिक्षा है। शिक्षा वही जो स्वास्थ्य बनायें, शिक्षा वही जो निरोग बनाये, जिसे पढ़ने पर उन्नति की ओर कदम बढ़े। संस्कृति की ओर ध्यान जाये। आधुनिक शिक्षा को मैं शिक्षा नहीं मान सकता। आप भले ही मान लो।

आज ऐसा ही एक साधक आया है, जो जनता के लिए/लोककल्याण के लिए आया है। दूसरे के लिए जो सोचता है वह काम हो जाता है। दूसरे को संतुष्ट करोगे सभी संतुष्ट हो जाओगे। जनता का भला हो जायेगा। मैं का नहीं हम का उपयोग करो। उन्नति चाहते हो तो तीन अंग बाध्य है लिए दिये अपना ही प्रभावना अपने आप ही होगी। आज तो अपनी प्रभावना कर रहे हो ("अपनी भावना करो और धर्म की प्रभावना करो।" जनता के बिना सुख शांति का अनुभव नहीं।

आप सभी कपड़े पहने हो, पुछने वाला न हो तो ईमानदारी से बताओ? होता है कि नहीं। भारत में तो ऐसा नहीं मिल सकता ये तो..... नंचे रखा ही नहीं है। ठिक नहीं है क्या? वह मिल से पुछता है। अब मैं पुछना चाहता हूं आप कपड़े अपने लिए पहन रखे हो या दुसरो के लिए पहन रखे हो। बाजार में

निकल रहा है। अपना भी दिमाग और उनका भी दिमाग खराब कर दिया।

जीव बीत रहा है। यह सब अनावश्यक है। क्या ओढ़ रखा है? मैं हमेशा बोलता हूँ। लोग मुझसे कहते है आपने वस्त्र त्याग कर दिये है परन्तु सच पूछो तो "मैं अभी दिगम्बर हुआ ही नहीं। मैं शरीर को वस्त्र मानता हूं।" जब तक शरीर है तब तक दिगम्बर नहीं। इसे फेंका भी नहीं जाता। "अनादि संबंधे च" नया वस्त्र मिलेगा। जल जाये तो भी। इस वस्त्र के संबंध को समाप्त करना चाहते हो तो शरीर नाम कर्म का अभाव कर दो जो 13वें गुणस्थान के अन्त में ही होगा।

ये मार्ग है, ये पथ है इसी का नाम संयम है। इसी के लिए यह बालक आपके यहाँ आया है। अभी 1008 कलशों के माध्यम से अभिषेक किया। बहुत ही मौलिक क्षण है। भगवान के माता-पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त किया अब भगवान कब बनोगे। महाराज के सान्निध्य में। दुनिया की भावना भी पूर्ण कर दो। मजबूत भूमिका बनाओ। आजका दिन निकल गया। 2½ दिन आपके और 2½ दिन हमारे हैं। आपने वस्त्र पहनाये है कल मध्याह्न में हम उतार देंगे। फिर ये हमारे वंश के, हम उनके अंश हो जायेंगे। आप सब देखते रहियो। कल की यह घड़ी मूल्यवान घड़ी है। आपको फिर मोह छोड़ना

पड़ेगा भले ही रोते रहना।

आप कितना भी रोओ-धोओ वे तो वन की ओर निकल जायेंगे। ऐसा ही करना था तो हमारे घर क्यों आये। सीधा रास्ता था। धन्य है आप जो आपकी दीरव में आये। बहुत व्यवस्थित कार्यक्रम है उनका। भले ही आपके आंगन में आये पर भोजन भी आपका नहीं करते हैं आहार जब होगा तो दिगम्बर अवस्था में होगा। वो भी चक्रवर्ती- नाभिराय- बाहुबली- मरुदेवी के घर नहीं हुआ।

आपके घर में रहे पर वस्त्र-भोजन- पानी सब कुछ वहीं से। उनकी नौकरी-चाकरी में लगे रहते हैं। कर्म सिद्धान्त बहुत महत्वपूर्ण है। जन्म-जरा और मृत्यु सब कर्म पर ही आश्रित है। इसलिए उन्होंने इन सब का नाश करने हेतु इसी पथ को चुना आगे हम भी करेंगे। इन्हीं भावों के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

संस्मरण- होंगरगांव से पंचकल्याणक बाद संघ का बिहार होंगरगढ़ की ओर हुआ। ग्राम कोलिहापुरी में सामायिक बाद संघ का बिहार हुआ। रास्ते में एक स्थान पर एक कच्चे (खपरैल) घर में दो हथकरघा लगे थे जो पति-पत्नि चलाते थे। आर्यिका को रोड़ पर से ही वे हथकरघा दिख गये। बिना किसी के निवेदन से आर्यिका उसके घर में प्रवेश किये। वह ग्रामीण धन्य हो गया जैसे भगवान सामने आकर खड़े हो गये।

तप कल्याणक

13-11-17 "कैसे बुझाये प्यास?" प्रातः 9.20

जब आपको क्षुधा सताती है तो आप पेट में भोजनकर लेते हैं और प्यास तो तरल पदार्थ यथेष्ट बैठकर ले लेते हैं। अभी कहा हमारी प्यास बुझ जाये हमें धर्मामृत कराओ। पण्डित जी गलती कर गये। क्यों की आपकी प्यास बुझाने में लौंटे क्या बड़े-बड़े घड़े भी समर्थ नहीं हैं। हाँ! एक-आध अमृत की बूंद चखते हैं तो वर्षों क्या भव-भव की प्यास भी शान्त हो सकती है। धर्मामृत तो केवल चखने मात्र की आवश्यकता है।

आज तक वैज्ञानिक भी इस बात का परीक्षण नहीं कर पाये। जिव्हा तक ले गये और दूसरे हाथ में कलम है पर लिख नहीं पायें की इसका स्वाद कैसा है? साइनाइड बोलते हैं उसे। जिस बिन्दु की गंध भी आ जाये तो अक्षय-अनंत सुख पा सकते हैं किन्तु क्या करें आप पेट भर खाने के आदि हो चुके हैं। भीख जैसे मत मांगो। अपने भीतर ही वह अमृत का खजाना है।

कौनसा बटन दबाना है यह मैं बता देता हूं। 9 बजे आता हूँ किन्तु समय मात्र 5 मिनिट मिलता है, 1 मिनिट रह गया है फिर भी मैं उसी में अपना काम करूंगा। कभी-कभी औषध देते नहीं मात्र रेखा खेंच देते हैं तो भी वह औषध का काम कर जाती है। आत्म तत्व की गहराई में देखो

तो वही आनन्द आयेगा जो जिनेन्द्र भगवान को आता है।

आज तीसरा कल्याणक तप कल्याणक है। बात तप कल्याणक की कर रहे हो और आप तपस्या से दूर रहना चाहते हो। मध्याह्न में देखेंगे कौन-कौन आता है प्रभु के साथ दीक्षा लेने। सौधर्म इन्द्र जो ताण्डवनृत्य करता है वह भी उस तप से घबराता है। कोई डाट-बाट नहीं सब चमक-दमक निकल जायेगी ऐसा यह पंचकल्याणक का उत्तरार्ध। अब सावधान हो जाइये, उलटी गिनती शुरु हो गयी। केवल ज्ञान कल्याणक और निर्वाण कल्याणक तो सुबह जल्दी ही हो जाता है।

उसमें किसी की प्रतिक्षा भी नहीं की जायेगी। आप नहीं भी आयेंगे तो भी प्रभु की निर्वाण की प्राप्ति हो ही जायेगी। ऐसा यह पंचकल्याणक सानंद सम्पन्न होने की ओर है। आप सभी को बहुत आनन्द आ रहा होगा। सही पूछो तो हमें भी बहुत आनन्द आ रहा है। ऐसा आनंद की उसके बारे में भी बहुत बार कहना पड़ रहा है। बाल्टी जल से प्यास तृप्त नहीं होती ये तो शब्दों में मात्र कहने में आता है।

वह भीतरी स्वाद सबको मिले हमें भी मिले भले ही हमारा नम्बर बाद में आ जायें कोई बात नहीं। इसी भावना के साथ! अहिंसा परमो धर्म की जय।

13-11-17 दीक्षा (तप) कल्याणक मध्याह्न 1:00

नामकरण - अभी तक आपके घर में आदिकुमार के रूप में रहना हुआ। आज उन्होंने सभी वस्त्राभुषण का त्याग कर केशलोंच किया। पिच्छी-कमण्डल की उन्हें कोई आवश्यकता नहीं होती है। चर्याहुआपके घर आयेंगे. आप क्या कहोगे। आदिकुमार... नहीं कहने देंगे। आज से इन्हे ऋषभसागर मुनिमहाराज के नाम से जाना जायेगा बोलो ऋषभसागर महाराज की जय।

प्रवचन - अभी तक आप लोग यही कहते थे हमारे यहाँ पंचकल्याणक होना है - हमारे यहाँ पंचकल्याणक होना है। पंचो का भी और साथ ही साथ समाज का भी कल्याण होना है। यह चर्चा बहुत दिनों से चल रही थी। अब क्या करना है? संस्कारों का काम है। आशीर्वाद के साथ यहाँ के लोगो ने आगे बढ़ना शुरु कर दिया।

वितराग भगवान का पंचकल्याणक है और संस्कार भी पुरे के पुरे वितरागी द्वारा ही दिये जाये ऐसी भावना आप सबकी पूर्ण हुयी। संसारी प्राणी संसार में ही रुल रहा है। अभी विवाह हुआ था। सुनकर लगा इस बंधन से कैसे छुटेगे। वे तो छुट गये पर संसारी प्राणी मेरा-तेरा ही करता रहता है। वाद-विवाद परेशानी/संघर्ष की ओर चला जाता है। जीवन में हर्ष नहीं आ पाता। आत्मा की तो सुध ही नहीं। आत्मा की बात अनुभव में लाने योग्य है क्यों की इसको बताना कठीन है/इसी लिए

प्रभु न किसी से दीक्षा लेते हैं तथा न किसी को दीक्षा देते हैं। उनके साथ केवल विशेषण लग जाता है।

"केवल सम्यक्त्व ज्ञानदर्शन सिद्धत्वेभ्यः"

मोक्षशास्त्र) के वर्णन करने वाले सूत्रों में यह सूत्र बताता है केवल = only रह जाते हैं। सोना खरीदते हैं उसमें कोई प्रकार का बट्टा नहीं होता किन्तु यदि आभरण खरीदते हैं तो बिना बट्टा के नहीं मिल सकते। उनके पास ज्ञान है किन्तु उसके संस्कार भी उनके पास आ जाते हैं। देहाश्रित नहीं देहातीत दृष्टि ने/ज्ञान ने चेतना पर ऐसे संस्कार डाल दिये।

हम-तुम लोगों का बट्टे के साथ चलने वाला ज्ञानदर्शनोपयोग है। उमास्वामी महाराज ने इसीलिए उनके लिए "केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शन सिद्धत्वेभ्यः" कहा। सिद्धत्व दो प्रकार का होता है कर्मातीत और शरीरातीत। कर्म नष्ट होने पर असिद्धत्व समाप्त मात्र/केवल सिद्धत्व रह जाता है। अभी शेष संस्कार को नाश करना आवश्यक होता है। तब जाकर 16 वाणी का वह शुद्ध स्वर्ण प्राप्त होता है। उनका जीवन विकासोन्मुखी होता जा रहा है।

इसकी प्राप्ति हेतु वैराग्य होना अति आवश्यक है। वैराग्य किसे - जिसे आप-पर का ज्ञान है। मुझे पण्डित जी का त्याग करने की आवश्यकता नहीं क्यों की मैंने पण्डित जी को अपनाया ही नहीं। जहाँ मेरा-तेरा प्रत्यय लग गया वहाँ वैराग्य की परम आवश्यकता

है। राग जहाँ आ गया उससे हटकर वैराग्य होना जरूरी है।

अभी तक ऋषभ कुमार आपके थे। अब आप नहीं कह सकते की ये हमारे हैं। कल आयेंगे आपके घर, आप जो देंगे ले लेंगे कोई लेने नहीं देगा। मरुदेवी को छोड़ा। भरत-बाहुबली को छोड़ा। ब्राह्मी-सुन्दरी को छोड़ा। सुनकर विस्मय होता है, कैसे राग को तोड़ा जा सकता है? ये महापुरुषों का ही काम है। उसी पर प्रयास किया जा रहा है। उनकी साधना अद्भूत थी।

अभी संस्कार विधी में जो मंत्र पढ़े उसमें आया है- चार ज्ञान (केवलज्ञान को छोड़कर शेष चार) की भी निवृति करते है। मतिश्रुत अवधी और मनःपर्यय ज्ञान के निग्रह हेतु स्फर्तु-स्फर्तु स्वाहा कहा। हम ज्ञान को विकासोन्मुख बनाने में लगे रहते है। श्रुतज्ञान आदि प्राप्ति में लगे रहते। कैसे हमारी स्मरण शक्ति तेज हो? वे पुरुषार्थमूलक ज्ञान को प्राप्त नहीं करते हैं। खेल नहीं है ये मनःपर्यय ज्ञान होने पर भी प्रयोग नहीं करते।

सारे के सारे मंत्र सिद्धि पर प्रयोग नहीं करते और हम यही देखते रहते है कि हमें सिद्धि हुई कि नहीं। उनकी उसके प्रति कोई आकांक्षा नहीं होती। यदि उनके प्रति आकांक्षा हो जायेगी तो सम्यक्दर्शन - सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र दुषित हो जायेंगे। जो इस दुषण से बचाता है उनकी दिनदुनी

रात चौगुनी वृद्धि होती जाती है।
उसके सामने ये सब रत्नी मात्र भी नहीं। कहाँ छोटा सा टिमटिमाता दीपक और कहाँ सूर्य। अंश भी नहीं हैं। कल प्रभु को वही केवलज्ञान घटित होगा/प्राप्त होगा। केवलज्ञान होने के उपरान्त समोशरण से भगवान की दिव्यध्वनि खिरेंगी। प्रभु की उस वाणी का सर्वत्र प्रचार-प्रसार होगा।
कल आप आयेंगे परसों निर्वाण पर आओ या न आओ भगवान तो मोक्ष प्राप्त कर ही लेंगे। अन्यत्र तो उस समय सर्दी रहती है क्यों की मोक्ष सुबह जल्दी ही होता है। किन्तु यहाँ पर सर्दी है ही नहीं। ये सब भगवान के समोशरण का प्रताप है। छत्तीसगढ़ में न ज्यादा तेज सर्दी होती है न ज्यादा तेज गर्मी होती है। वैसे सर्दी होना भी अनिवार्य है। क्यों कि २२ परिषह में शीत परिषह भी होता है अन्यथा एक परिषह ही कम हो जायेगा। हमारी निर्जरा कम हो जायेगी। हालांकि सर्दी नहीं तो गर्मी डबल है हमारा काम बन जाता है।
हमें प्रभु की वाणी को आत्मसात् करना है। उनके वैराग्य को देखकर अपने राग पर कुठाराघात करना है। हर व्यक्ति के बस की बात नहीं। मरुदेवी आदि भी जानते हैं फिर भी रोते हैं। सौधर्म इन्द्र चिंतित-एक ओर निवांजना

की आवश्यकता पड़ी।

सर्वार्थ सिद्धि से आये थे पर धरती की हवा लगते ही राग की हवा लग गई। इस राग को छोड़ना बहुत कठीन है। भव्य जीव उसमें भी निकट भव्य आसन्न भव्य का ही यह काम है। यद्यपि वो रो रही थी फिर भी इनका दृढ़ निश्चय देखकर सभी लोगों ने इन्हें अनुमति दी। और इन्होंने "वसुधैव कुटुम्बकम्" सारी धरती को ही अपना परिवार बना लिया। लपी हुयी धरती भी आनंदित थी।

किसी में भी द्वन्द नहीं था ऐसा रूप बना लो। इनका ऐसा आकर्षण की संसार के सारे आकर्षण स्वमेव ही छुट जाये। ऐसी भावना रखो कि हे प्रभु आपके साथ हम भी कल्याण के भाजन बन जाये। ऐसी अनुमति। आशीर्वाद दिया। उनको तो आना था ही। उनके पीछे पीछे सुनते हैं 5 हजार राजा और आ गये। ये कुछ भी नहीं बोले। तुम्हारे लिए बोलने से काम नहीं, ये मेरी साधना समझ नहीं पायेंगे, चले गये।

बहुत कम रह गये। शेष विचलित हो गये। यह सिंह वृत्ति साधना है इसमें मांगना नहीं है। बहुत कठीन है। फल आंखो से पानी, हमें तो आता है यहां देखेंगे किसे आता है। तलवार की धार पर चलने की साधना है। अभी मान्दिर जी के संस्कार होना है। शान्ति के साथ रहना। दीक्षा कल्याणक सार्थक हो गया। — अहिंसा परमो धर्म की जय हो

ज्ञान कल्याणक

15-1-17 (आहार-चर्या) प्रातः 8.15

आज तो हमारा दिन है। केवलज्ञान से पूर्व की भूमिका जारी है, तपस्या जारी है। बिना तप के केवलज्ञान नहीं। आज हमारा सौभाग्य है। आज बड़े महाराज आहार पर उठेंगे व्यवस्था मुझे बनाना है। जब मैं चौके में जाता हूँ तो उस समय मौन रहता हूँ। आज आप सब सुनिये। सभी लोग व्यवस्थित रहें ताकि चर्या सानंद सम्पन्न हो।

देने वाले इस तरह से खड़े हो ताकि जो देखने वाले दूर-दूर से आये हैं वे भी देख सके ताकि आपके पुण्य को बढ़ा सकें और कर्मों की निर्जरा कर सकें। और लोग कहें कि डोंगरगाँव में अच्छी व्यवस्था थी। श्रावक के सात गुण होते हैं - श्रद्धा-भक्ति-अलौल्य आदि। इनमें एक सबसे विशेष गुण होता है - विवेक। बुद्धि तो सबके पास है पर विवेक नहीं। अच्छा तो समय भर नहीं यहाँ तो जल्दी हो गया। देखो। महाराज आ गये।

कोई बोलेगा नहीं। विधी को समझे। युग के आदि में वृषभनाथ निकले। शरीर में गड़बड़ियाँ थी। दाता और पात्र के बीच में कर्म होता है। देने वाले आप हैं लेने वाले भी सामने हैं पर दे-ले नहीं सकते। मरुदेवी भी खड़ी है। इन्द्रों के हाथ से आहार नहीं लेते। सौधर्म इन्द्र भी नहीं। एक भी देवी-देवता के यहाँ

महाराज का आहार नहीं होता।

विधी के अनुसार करीये। जितनी शान्ति उतना ही आनंद आयेगा। भिक्षा का अर्थ मांगना नहीं होता। भिक्षावृत्ति यह आगमानुसार विधी है। अयोध्या नगरी में पंचकल्याणक कर रहे हो विधी तक करना नहीं आया। नामस्मरण करो। पुण्य जागृत करो। आपके यहाँ हो जायेगा। महाराज वापस आ गये आहार नहीं हुये। ब्रह्मचारी लोग कितने घूम रहे हैं, हमें पिच्छी-कमण्डलु चाहिए पहले आहार देना तो सीख लो। पीछे रहोगे तभी पिच्छी मिलेगी।

श्रमणों की चर्या सदैव श्रावको पर आधारित रही है। नल का पानी दे दिया कमण्डलु में क्या होगा? जिनवाणी का जो स्वाध्याय करेगा वही जिनवाणी को समझ सकेगा। यह श्रावको का कर्त्तव्य है। नल से काम हो रहा है इसीलिए कुयें सूख गये हैं, तालाब है ही नहीं। हमारा तो चल जायेगा इतना कहकर टाल रहे हैं। पानी कौनसा है? देखो। विधी के अनुसार ही देना होता है।

जिस प्रकार माँ एक बालक का पालन-पोषण करती है/वह कुछ नहीं कहता फिर भी सब समझ में आता है उसी प्रकार मुनिराज बिना बोले आकर चले जाते हैं। बिना बोले आये थे और बिना बोले ही चले गये। कहां है वह

नाभिराय? रोओ नहीं अन्यथा अन्तराय हो जायेगा। हे आदिनाथ घर चलो - ऐसा नहीं कह सकते।

6 महिने के उपवास के बाद उनके यहाँ आये हैं। देखते हैं कौन वह पुण्यात्मा जीव है जो उनकी पारणा करायेगा। चक्रवर्ती - बाहुबली दोनों भाई खड़े हैं, हमारे यहाँ ही महाराज आयेंगे। हमारे पिताजी हैं। हम। जगत पिता बन गये। कोई मेरा - तेरा नहीं, न ही कोई घरबार है अब उनका। होंगे गांव में कैसा लग रहा है। बताओ होंगे गांव वालों। किसके घर में रत्नवृष्टि होगी बताओ।

कहाँ चला गया कुबेर. अपने घर के ऊपर ही कर लो रत्नवृष्टि / बरसालो। आहार देओ, नीचे देखो। ऊपर मत देखो, जीव जन्तु को बचाओ। आहार होगा तो श्रावक के यहाँ ही होगा पर जब भी होगा विधीवत ही होगा। पड़गाहन हो गया है। हमें तो महाराज हैरते ही नहीं। नाभिराय, भरत, बाहुबली के यहाँ नहीं हुआ। एक सामान्य मानसिक राजा श्रेयांस के यहाँ हो गया। राजा सोम और राजा श्रेयांस दोनों समता के सकार से चलते हैं।

आदिपुराण में दान तीर्थंकर की उपमा दी है। दान तीर्थ का प्रवर्तन इन्हीं के माध्यम से हुआ। बाहुबली कामदेव हो सकते हैं, चक्र का प्रवर्तन चक्रवर्ती द्वारा परन्तु दान तीर्थ का

प्रवर्तन तो राजा श्रेयांस-सोम को ही जाता है। देवी-देवता भी जिनके आंगन में उतर आये हैं और रत्न-वृष्टि कर रहे हैं। महान पुण्य के उदय होने पर ही होता है। ये कोई खेल नहीं है।

इन्द्र बुला ले अपने भवन में, व्यवस्था कर ले, नहीं। ऐसे भोजन की व्यवस्था चाहते ही नहीं। आज तक स्वर्ग के महलों में किसी मुनिराज का आहार नहीं हुआ। वहाँ ले जाना चाहे तो भी नहीं ले जा सकता। विदेह तो जा सकते हैं पर स्वर्ग नहीं। क्यों नहीं हुये क्यों की असंयमियों के यहाँ आहार नहीं। ब्राह्मी-सुन्दरी के यहाँ भी नहीं क्यों की उनमें पक्षपात का अभाव हो गया। इससे स्पष्ट हो गया कि चक्रवर्ती से भी तेज पुण्य तो राजा श्रेयांस-सोम के पास था।

जातिस्मरण के माध्यम से ज्ञात हो गया कि पूर्व भव में मैंने किस प्रकार नवधा भक्ति पूर्वक आहार दान दिया था। चक्रवर्ती का जीवन सात्विक था पर दान देने योग्य नहीं था। पहला आहार तो राजा श्रेयांस और सोम के घर हुआ। ये है भिक्षावृत्ति। न मेरा न तेरा। अन्तराय कर्म का उदय होता है तो वह किसी को भी देने अथवा लेने नहीं देता। ऐसे कठोर कर्म मत बांधो तो आहार दे भी नहीं सकते, देख भी नहीं सकते। वही

सौभाग्य भव-भवान्तर में काम आता है।

वही स्मरण में आ गया कि पूर्व में चारण ऋद्धिधारी को आहार दिया था। ऽ० भक्ति की आवश्यकता नहीं मात्र नवधा भक्ति चाहिए। वृषभनाथ तीर्थंकर के अलावा शेष २३ तीर्थंकरो ने क्षीरान्न का आहार लिया था। जानते हो क्षीर किसे कहते हैं? उस क्षीर में इतनी ताकत जो केवलज्ञान का कारण बन गयी। आप द्वारा दिया आहार कैवल्यज्ञान के लिए कारण होता है। इसलिए कब क्या हो ज्ञात रखो।

यह शरीर अन्न का कीड़ा है। वह खीर खाया हुआ तन को, मन को आयु आदि को बल देता है। चक्कर आने लग जायेगा एक-आध अठमी-चतुर्दशी करके देख लो। पूजन चालु हो गयी है। स्थापना में बहुवचनान्तक भी हो सकता है। मुनिन्द्रः की जगह मुनिन्द्राः अथवा वृषभसागरः के स्थान पर वृषभसागराः भी हो सकता है। इसलिए बहुवचनान्तक भी किया जा सकता है। आ० समन्तभद्र स्वामी हुये हैं जिन्होंने कई ग्रंथो पर टीकाऐं लिखी। सब जगह आ० कुन्दकुन्द के लिए आ० कुन्दकुन्द देव न कहकर आचार्य कुन्दकुन्ददेवाः ही कहा।

लौकिक रीति से भी आप आ जाइये ऐसा कहा जाता है। ऐ तू इधर आ यह कहना लोक व्यवहार नहीं। कितना कठोर लगता है। शब्दो

में बहुवचन जो आदर का प्रतीक है प्रयोग करने से सुनने वाले का खुन उबलता नहीं अपितु उबलता खुन शान्त हो जाता है।

आप लोग शान्तिधारा करते हो। इस प्रकार के वचनों का प्रयोग करो वातावरण पुरा का पुरा शान्त हो जाता है। ऐसी ही शान्तिधारा करो। यत्र-तत्र-सर्वत्र शान्ति ही शान्ति होगी। विचार भी करते है किसी के बारे में तो सम्मानजनक शब्दो का ही विचार करे। अपनी प्रशंसा के शब्द न बोले अपितु ऐसे शब्द बोले जो सामने वाले के लिए सम्मानजनक हो। "आत्मा की बात तो करते नहीं- आत्म-प्रशंसा चाहते हो।" ये गलत है।

आत्मा की ख्याती करो, आत्मा के गुणों का वर्णन करो। बच्चों को भी यही सीखायें। इससे सभी एक-दूसरे के लिए सम्मानजनक शब्दो का प्रयोग करेंगे। यदि आहार में नम्बर नहीं आ रहा है तो हाथ लगा सकते है। पूजन-अभिषेक में ऐसे हाथ लगाते हो वैसे इसमें भी कर सकते है, विधी पूर्वक करें। करंट आ जायेगा। मेरा अपना विचार तो यह है कि जितना पुण्य देकर भी नहीं कमाओगे उससे अधिक पुण्य/कई गुना पुण्य हाथ लगाने से प्राप्त कर सकते हो। आगे बैठने से ज्यादा पुण्य पिछे बैठने वालों का होगा।

संतोष रखो। भावना होनी चाहिए आहार अच्छे से होना चाहिए। इक्षु रस बहुत हो

गया आज हीरान्न की बात की। यहाँ के मूलनायक अजितनाथ भगवान हैं उनकी अपेक्षा कह रहा हूँ।

आपका आहार ऐसा ही है जिससे केवलज्ञान हो जायेगा। मध्याह्न में आइये और उस दृश्य को देखिये। आहार को देखकर अनुमोदना करने मात्र से भी कुक्कुट-बंदर आदि जीवों का उद्धार हो गया। जंगल में आहार आज ढोंगरगांव में आहार हो रहा है। सात्विक भाव किया करो। बैठे-बैठे भी कर्मों की निर्जरा होती है। उसका प्रचार-प्रसार करो जो अच्छा कार्य करता है। सर्वत्र समृद्धि हो जायेगी। राम-राज्य की स्थापना होने में देर नहीं लगेगी।

गैय्या है तो दूध होगा, दूध होगा तभी घी होगा, घी होगा तभी आरती उतारोगे। क्या घासलेट तेल से आरती उतरती है क्या? और जब आरती आयेगी तो आर्तध्यान समाप्त हो जायेगा। ये पंचकल्याणक ऐसा समय पर आहारचर्या हो गयी। बड़े महाराज ने हमारा ध्यान रखा। पौने नो पर (8:45) ही उठ गये। अभी सभी 10 मीनिट ज्यादा देख सकते हैं। हमें तो छठा भाग मिलेगा। बहुत अच्छा। युग के आदि में सब हुआ जो आज तक चला आ रहा है इसी को आगम परम्परा कहते हैं।

हमारे यहाँ श्रमण आते नहीं-ये कोई नहीं बोलता की हमारे यहाँ श्रमण बनते नहीं। ग्रन्थों के माध्यम से हमें यह उपलब्ध हो रहा है। देव लोग आहार क्यों

नहीं दे सकते जवाब दिया गया कि वे त्याग नहीं कर सकते। आप लोग साधु के घर पर आने पर बड़े आनन्दित होते हैं। आज हमारे घर भी महाराज हैं।

शुद्धि होना चाहिए। क्षेत्र की शुद्धि के साथ-साथ वस्त्रों की भी शुद्धि होनी चाहिए यह दोनों पर आधारित है। कंधे से कंधे मिलाओ तभी यह धर्म का रथ आगे बढ़ेगा। यत्र-तत्र-सर्वत्र धर्म का प्रचार तभी होगा। छत्तीसगढ़ में महाराज कम आते हैं। मैं कहता हूँ बुन्देलखण्ड बनाओ क्यों नहीं आयेंगे। सभी का फास्टफूड आदि का त्याग होना चाहिए। अभी के संस्कार ही आगे भव-भव के काम आयेंगे। वस्त्रों में जो आज अशुद्धियाँ आ गयी हैं। वे सारी की सारी दूर होना चाहिए। जिनवाणी को तो आदर में रखते हो, जलगालन की भी उचित व्यवस्था होनी चाहिए।

ओढ़ना-पहनना भी शुद्ध हो। इसके लिए विदेश की ओर मत देखो। स्वाभिमान रखो। पूर्वजों ने दिया उसे सुरक्षित रखो अन्यथा कुछ भी बचने वाला नहीं है। उसका कारण यही है कि अपना बीज समाप्त कर विदेशी बीज-खाद-कीटनाशक आ गया है। अभी देहली में इतना धुँआ कारण पता लगाया। जिसमें पक्षी तक मर गये हार्वेस्टर के कारण ऐसा हुआ। भारतीय शिक्षा प्रणाली के अभाव के कारण ऐसा हो रहा है। मुख्यमंत्री/प्रधानमंत्री को बुलाते हो उनके सामने इसे रखो तथा अपने धन का उपयोग ऐसे काम में करो। काफी समय दे दिया।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

15-11-17 केवलज्ञान कल्याणक मध्याह्न 12.00

हम लोगों के पास ज्ञान तो है पर वह ज्ञान अधूरा है। इन्द्रियाधीन है। दिन में हो तो रात में नहीं रात में है तो दिन में नहीं। वैशम्य है। आज वृषभनाथ भगवान को इन सब ज्ञानों से परे वह केवलज्ञान प्राप्त हुआ। वह ज्ञान सीधे ही नहीं होता, यथोचित पुरुषार्थ मांगता है। "विषयों की तरफ तो पुरुषार्थ करते हो, विषयातीत होने में मन नहीं लगता।" पंचेन्द्रिय विषयों में बड़े चाव से भाग लेते हैं। दुनिया की स्थिति बड़ी दयनीय समझते हैं।

समझते हुये भी कदम सही दिशा की ओर बढ़ने लगे तो बहुत ज्यादा समय लगने वाला नहीं। आज वृषभनाथ भगवान को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ, वे देखते भी हैं और जानते भी हैं। आप मात्र दो आँखों से जानते हैं, वे अतीत को भी और आगे का भी बिना व्यवधान के जानते हैं। केवलज्ञान के होते ही शेष चार ज्ञान (मति आदि) लुप्त अवस्था को प्राप्त हो जाते हैं। जैसे- सूर्य के उदय होने पर तारायें अपने आप ही लुप्त हो जाती हैं।

एक बार वह हमें भी उपलब्ध हो जाये तो हमें भी वह दिव्यज्ञान हो जायेगा। बारह सभायें पंचेन्द्रिय जीवों से भरी हैं। गुणार्थी जो गुणों को चाहता है उसी के लिए दिव्यध्वनि काम आ सकती है। मुख्य रूप से सभी तीर्थंकरों ने एक ही बात कही। "हम अपने आचार में अहिंसा एवं विचारों में अनेकान्त

लायें।" दूसरे के अस्तित्व को नकारें नहीं। भले ही वह महाप्रासाद में हो हम तो कुटिया में ही ठीक हैं। कुटिया के स्थान पर महाप्रासाद चाहते हो तो कमसे कम भगवान की नकल कर लो।

दुनिया की कोई भी शिक्षा नकल करने की छूट नहीं देती किन्तु यह एक ऐसी शिक्षा पद्धति है कि नकल करके ही पास हो जाओ। विद्यार्थी सब संतुष्ट हो गये। नकल में भी अकल होना चाहिए। आचरण में अहिंसा चाहिए। सभी जीव सुख चाहते हैं दुःख को कोई नहीं चाहता। जो दुःख के कारण हैं उनसे दूर हो जाओ अहिंसा फलेगी। सभी जीवों के प्रति हमेशा-हमेशा अभयदान प्रदान करो। दुनिया के जीव भयभीत होते हैं। आप उन्हें डराये नहीं। वह नहीं चाहते की कोई उन्हें भयभीत करें।

भाग्य के अनुसार सब अपना-अपना काम करते रहते हैं। कल निर्वाण कल्याणक है। सुबह समय पर आओ तो ठीक नहीं आओ तो वे रुकेंगे नहीं। बैठ गये अब विहार नहीं योग निरोध कर मुक्ति को पायेंगे। कल आप भी अपने-अपने वाहन में बैठकर अपने स्थान पर चले जायेंगे। ये मेरा स्थान है ऐसा पाण्डाल में कोई नहीं कहेगा। कल वैराग्य का कारण उपस्थित होगा, मैं प्रायः उसे वैराग्य का कारण मानता हूँ। जिसे कोई देखना पसंद नहीं करता मैं उसे देखता हूँ। कोई नहीं रहता पाण्डाल उतारने वाला अपना काम करता रहता है। पण्डित जी

भी अन्यत्र चले जाते हैं। मैं सोचता हूँ उनका क्या होगा।

इस प्रकार आचरण में अहिंसा का होना प्राण है और विचारों में अनेकान्त का होना त्राण है। इन दोनों से यह जीव आगे बढ़े। दो उदाहरण देता हूँ, जिससे आसानी से समझ में आ जाये। एक लकीर बनायी इसे बिना मिटाये छोटा बनाना है। इसमें क्या बाधा है। उससे ऊपर या नीचे बड़ी रेखा खेंच दो। बहुत गहरा संदेश है इसमें। "दूसरे को छोटा करने की बजाय आप बड़े हो जाइये।" नहीं तो अपने में लीन हो जाओ।

प्रभु अपने में लीन हो गये। अब दुनिया से कोई मतलब नहीं। हमारी यह कमी है। सब कुछ होते हुए भी दूसरे की थाली में देखने की आदत है। इसे नियत खराब / बचपना माना जाता है। आप पचपन में भी यह काम कर रहे हैं। आपको सीख लेना चाहिए। दूसरा उदाहरण क्या है? अहिंसा का है। जिसे भेदविज्ञान हो जाता है वह छुरता छोड़ देता है।

सर्प होता है वह आपसे डरता है और आप सर्प से डरते हैं। आपकी दृष्टि कैसी है आप अपना पांव उस पर रखें उससे पूर्व ही आपको वह सीख दे देता है। बिल्ली होती है उसके पास पंजा / जबड़ा है। उसी पंजे से चूहा भी पकड़ती है उसी से अपने बच्चे को भी पकड़ती है। अहिंसा हैया नहीं। दूसरे को दुत्कार - अपने को प्यार करते हो / अहिंसा से प्रेम - हिंसा को छोड़ दीजिये। ज्यादा तो मैं नहीं कहना चाहता। इतना ही।

अहिंसा परमोधर्म की जयाँ हैं

मोक्षकल्याणक

15-11-17 सही दिगम्बर कौन? प्रातः 9.00

बहुत दिनों की प्रतीक्षा आप लोगों को थी। कैसा होगा? क्या होगा? कब होगा? और आज वे सारे स्वप्न आप लोगों के साकार हो गये। जितनी भक्ति और उत्साह से इस अनुष्ठान को पूर्ण किया है अब कर्तव्य होता है यहाँ के लोग प्रतिदिन जिनालय में जाकर वन्दना-ताल आदि बजायेंगे। अपने संस्कारों को उज्ज्वल बनायें जिससे बच्चों का भी पथ प्रशस्त होगा।

ध्यान रखें - संसार में अनन्त काल से रुल रहे हैं। बार-बार वही होता है। बार-बार तो बोली होती है। आदर्श मार्ग को पहचानें। अपनी निष्ठा को मजबुत कर साधना को आगे बढ़ाना है। दीपक होता है उसके तल में अंधकार होता है इसी प्रकार से संसारी प्राणी के तल में अंधकार चाहे अरिहंत परमेष्ठी भी क्यों न हो! कल नहीं परसों भी कहा था- "वस्त्र का त्याग करना दिगम्बर नहीं, काया को वस्त्र मान उसे भी उतार देना दिगम्बर है।" सही पद्धति यही है। भगवान आपने तो उस पद को पा लिया हम भी जल्दी जल्दी निकल जायें। पाँच में से एक ही परमेष्ठी (मान सिद्ध) को यह सौभाग्य प्राप्त है। आज निर्वाण के बाद कुछ भी शेष नहीं रहा। भगवान गायब हो गये अब इन चर्म चक्षु से हम उन्हें नहीं देख सकते, वे सबको देख रहे हैं। हम आस्था से

ही उसे प्राप्त कर सकते हैं।

आज के इस अवसर पर मैं यही कहूँगा की संसार में दुर्लभ कुछ भी नहीं। दुर्लभ है तो जो इन पाँच दिनों में देखा है - सुना है - अनुभव किया है उसे हृदय में स्थापित कर तन्मय हो जाना है। बाकी सब तो होता ही रहता है। कुछ करना - धरना नहीं है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

15-11-17 गजरथ फेरी मध्याह्न 3.00

मुख्यमंत्री डा० रमण सिंह (छ० ग० शासन)

आज यह आप लोग अथक परिश्रम करते हुये एक लक्ष्य को लेकर चले थे। आज वह लक्ष्य पूर्ण सम्पन्न हो गया। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री जी भी समय पर उपस्थित हुये। यह उनकी धार्मिक लगन का परिचायक है। अभी उन्होंने अपने वक्तव्य में विकसित छ० ग० कहा। हमने इसके क्षेत्र को पग - पग नापा है। देखकर मन प्रफुल्लित / उल्लसित हुआ है।

अन्य राज्यों / प्रान्तो के लिए भी यह प्रेरणा बन गया है। सदैव विकासोन्मुखी दृष्टि रखना चाहिए। जिससे जनता का भला होना चाहिए। सर्वत्र भाईचारा का व्यवहार होना चाहिए। "दया धर्म का मूल है - पाप मूल अभिमान" यह सिद्धान्त भारत में जो महान आत्मायें हुयी उन्होने इसे कौने - कौने तक पहुँचाया है। किसी महान् व्यक्ति ने आकर पुछा कि

कम समय में धर्म का स्वरूप बता दो।

राजा-महाराजा होते हैं उनके पास समय की कमी होती ही है इसलिए उसने ऐसा प्रश्न किया। हमने कहा-बहुत अच्छी बात है। प्रत्येक व्यक्ति अपना रुदन करता है। मुझे ये चाहिए-मुझे ये चाहिए रोता ही रहता है। आप भी रोना जानते हो। उसने कहा हाँ महाराज! प्रत्येक व्यक्ति जन्म लेते समय भी रोता है। रोकर अपने स्वार्थ को पूर्ण करना चाहता है।

अब इसे बदलना है।

धर्म का स्वरूप समझना चाहते हो दूसरे के लिए रोना शुरू कर दो। बस हमारा काम हो गया। इन लोगों ने (मुख्यमंत्री आदि) काम छोड़कर जनता के बारे में सोचना प्रारम्भ किया, क्या जरूरत थी? करोड़ों की जनता को सुखी बनाने का बीड़ा उठाया। स्वप्न में भी यही सोचते हैं। देखते हैं कि कैसे जनता की सेवा करें। यह पवित्र भाव भारत ही नहीं विश्व में भी सुख-शांति स्थापित करता है, स्वार्थ में शांति नहीं आ सकती।

ऐसा ही मार्ग आदिनाथ से लेकर महावीर स्वामी तक सभी तीर्थंकरों ने अपनाया। यही विश्व शांति का मार्ग है। आज वे सब चले गये फिर भी हमें ऐसा हितकारी मार्ग दे गये जिस पर चलकर हम अपना एवं दूसरों का हित कर सकते हैं। अहित से प्रत्येक व्यक्ति बचना चाहता है। सर्प भी बचता है। आप सर्प

में भी अहित देखते हैं।

आप पहले पत्थर उठाते हो। वो भी आपकी तरह प्राणी है। संज्ञी है। जानता है। वो काट न ले। आपको कैसे काट ले। आपके भीतर का भाव काटता है। वह फणा बाद में आप दृष्टि पहले उठाते हैं। आप से बचने के लिए ये उपाय करता है। आपसे सौ गुना डरता है। इसीलिए दिन में आपके दर्शन न हो जाये इसी भगवान से प्रार्थना करती है। रात में अपने पेट पालने हेतु भोजन की तलाश में निकलता है।

आप सभी पद से सहित प्राणी है उसके पास कोई पद नहीं हैं। आपके पास पद है फिर भी दूसरे पद के लिए लालायित रहते हो। समझ में आया? एक पद वह जो चलने के लिए होते हैं, एक पद वह जो बैठने के लिए होता है। ध्यान रखो - जब तक राजा सिंहासन पर बैठता है उसे आराम नहीं मिलता। बैठकर देखते हैं। क्या-क्या कर्त्तव्य होता है।

सर्प का दूसरा नाम उरग भी है। उरग का मतलब वह छाती/पेट लगाकर रिलकता है। आपके पास पद भी है तथा चार पैर वाला और चाहिए। प्रत्येक पैर किसी जन्तु पर पड़ सकता है अतः सावधानी से चलें। सर्प तो किसी पर पद रखता ही नहीं वह तो छाती लगाकर चलता है। आप भी छाती से आलिंगन ले लो, पद की बात ही नहीं। इसी को भारतीय संस्कृति कहते हैं। "हाथ न मलो, न ही

हाथ दिखाओ, हाथ मिलाओ"

हाथ कब मलते हैं? जब दूसरे के सुख को देखते हैं हाथ युं-युं करते हैं। हमें कविता तो आती नहीं फिर भी कविता बन जाती है। पवन जी कविता करते हैं। आज हाथ तो मिलाते नहीं हाथ दिखाते हैं इसलिए दशा क्या है। भगवान का हाथ कैसे रहता है। (आशिर्वाद मुद्रा में) यह अभय का प्रतीक है और युं (मारने जैसा) कर दिया क्या हो गया? चोट पहुँचाने का / मारक चिन्ह हो गया। अभय समाप्त हो गया।

हाथ मिलाते हैं क्रोधादि कषाय सब समाप्त हो जाते हैं। इसलिए "उरसा गच्छति इति उरगः।" वह सर्प कहीं भी चला जाये, निद्रा भंग नहीं होती। आप पर से भी सर्प चला जाये पता ही नहीं चलेगा और आपकी पदचाप उसे व्यवधान डाल देती है। प्रचलन में परम्परा ही सही सर्प का एक दिन रखा - नागपञ्चमी कहते हैं। मनुष्य का कोई भी ऐसा नहीं उसका तो सदैव पंचम आलापचलता रहता है। कल बाल दिवस था। भारत कैसा भारत है। उरसा गच्छति इति उरगः।

इसी प्रकार नदी को देखो। शास्त्रों में इसे निम्नगा भी कहा है। निम्नगा इति नदी। जहां-जहां से बहती है वहीं तीर्थ बना जाती है। गंगा का नाम लेते ही माथा श्रद्धा से झुक जाता है। सब

ऊपर जाना चाहते हैं। कभी सोचा जो नीचे की ओर रहता है वहाँ पानी कौन पहुँचाता है। इसलिए जल सदैव ढलान की ओर ही जाता है।

बूंद-बूंद पानी के मिलने से उसमें गति आ जाती है। पैर नहीं है - क्षमता नहीं है फिर भी चली जाती है-चली जाती है और कहती है पी ले बेटा। प्यासे के पास नदी स्वयं जाती है जब की कुओं के पास प्यासे व्यक्ति को जाना होता है। कुआँ स्वयं जाकर पानी नहीं पिलाता। कभी-कभी वर्षा के दिनों में नदी का पानी घाट के ऊपर से होकर घर तक आ जाता है।

यही धर्म है। ये मिलाहै आपको। ये क्षण है। बांटो, जितना ज्यादा बांटोगे उतना ही ज्यादा मिलेगा। जहाँ कहीं भी देखो भोजन का शुल्क नहीं रखा जाता। वह तृप्त हो जाता है तो 10 की जगह 50 देता है। तृप्ति का अनुभव कभी फालतु नहीं जाता। भावों से ही सब कुछ होने वाला है। बच्चों में भी इसी प्रकार के संस्कार डालना चाहिए। दूसरा संग्रह मत करो। किसी ने कहा महाराज सबसे ज्यादा पैसे वाले तो जैन ही है।

तो मैं कहता हूँ संग्रह करो - किन्तु परिग्रह मत रखो। संग्रह और परिग्रह दोनों में प्रत्यय लगा है किन्तु दोनों में अन्तर है। संग्रह परिग्रह

का कारण है। परिग्रह मुर्छा का नाम है जब की संग्रह समय-समय पर करौती करके किया जाता है और आवश्यकता पड़ने पर उसका उपयोग सबके लिए किया जाता है।

सरकार के पास मांगा मत करो। मुझे ये कभी भी अच्छा नहीं लगता। हम कभी भी इस प्रकार से बोल नहीं सकते। हम निष्परिग्रह वाले है। जैनियों का ऐसा इतिहास रहा है सबसे ज्यादा सेवा के कार्यों में योगदान करते हैं। पेटी को खोल दो जिसे आवश्यकता है उसे आगे बढाना चाहिए। गर्मी में ये (C.M.) आये थे - वहाँ इन्होंने सब देखा। इस पंचकल्याणक में जितने इन्द्र-इन्द्राणी बने हैं, सबने हथकरघा से बने धोती-साड़ी आदि पहन रखे हैं। अब तो वह हथकरघा और आगे बढ़ गया है।

रोज-रोज की बात जो होती है यही रोजगार होना चाहिए। सबकी मदद से उसे रोजगार प्राप्त हो गया। पुरा परिवार ही खड़ा हो जाता है। अब परिग्रह छोड़ो - मुर्छा छोड़ो जो है उसका वितरण करो। धर्म वितरण करने में है परिग्रह में नहीं। 100-200 महिलायें एक साथ काम कर रही है। इतने अल्प समय में इतनी प्रगति वे लोग कहते हैं हमें तो स्वप्न जैसा लगता है। सभी महिलायें सुरक्षित भी हैं।

सुबह आती है शाम को अपने घर पहुँच जाती है। रात में भी यही सोचते है, अपना

कर्तव्य समझते हैं।

स्वाभिमानी है किसी से मांगते नहीं। ज्यादा नहीं चाहिए केवल धंधा चाहिए। भारतीय संस्कृति स्वाभिमान से जीने की संस्कृति है। प्रतिदिन व्यक्ति अर्थ पुरुषार्थ करता है। संग्रह होगा-परिग्रह नहीं। मुर्छा पास आयेगी ही नहीं। धन के द्वारा मुर्छा बढ़ती है और धर्म के द्वारा मुर्छा घटती है। जहाँ धर्म है वहाँ कोई भी रिश्ते-नाते नहीं। इसलिए संग्रहकरो जब आवश्यक हो खोलकर दे दो।

हाथ मिला लो - एडी नहीं मिलाओ हाथ मिलाते ही रग-रग में रक्त का संचार होने लगता है। खुन में संचार होते ही ताली बजाने की इच्छा होने लगती है। इससे बिना भोजन - पानी - दवाई कुछ नही लिया फिर भी सब ठीक हो जाता है। दवाई दबाने का काम करती है, औषध शोधन करती है। डा० साहब (C.M.) बैठे हैं। वे तो शुद्ध वैद्य है - आयुर्वेदाचार्य है। द्व.ग० को ऐसा व्यक्तित्व मिला। म०प्र० में भी शिवराज जी है। उन्होने वहाँ एक क्षेत्र विशेष को अभ्यारण्य बनाने की शुरुआत की है। द्व.ग० तो पुरा का पुरा अभ्यारण्य बन सकता है। वृंदावन बन सकता है। द्व.ग. को पुरा का पुरा वृंदावन बनाना है।

हम भी उसी विचार के हैं, लेकिन हम पहले योजना नहीं बनाते। हमतो पहले करके

दिखाते हैं। हम तो कागज पर नहीं - करने में विश्वास रखते हैं। "मत दिलाओ, विश्वास भौंह आता, व्यवहार से" दोबारा बोलूं क्यों की यहाँ कवि महोदय भी बैठे हैं। (चंद्रसेन व अजय अहिंसा) मत दिलाओ.....।

हमें व्यवहार करना है। आपका व्यवहार बता देगा कि आपका क्या निश्चय है आपका क्या ध्येय है। अपने आप ही पता लग जायेगा आपको बताने की भी आवश्यकता नहीं हैं। व्यवहार - व्यवहार हो। वह समीचीन होना चाहिए। इसलिए मैं हमेशा कहता हूँ अब सक्रिय दर्शन - सक्रिय ज्ञान एवं सक्रिय आचरण होना चाहिए, निष्क्रिय नहीं।

हमें धंधा चाहिए। अब आपको धंधे पर विश्वास नहीं है तो क्या करोगे। भरोसा होना चाहिए अपनी बाहुओं पर। बाहु पुरुषार्थ का प्रतिक है, और ले जाने वाला (गतिशीलता) का प्रतीक एवं मस्तिष्क योजना बनाने वाला है। हव तो कह दो। एकदीव बनें। सक्रिय होकर आगे बढ़े। इससे रक्त का संचार होगा। रक्त संचार होने से सुख का संचार होगा।

पुरुषार्थ करने से रक्त का संचार अच्छे से होता हैं। हरेक व्यक्ति उमाद दौड़े। सक्रिय होकर रोजगार करे तो हरेक व्यक्ति सक्षम हो जायेगा। बच्चे भी इसे सीख रहे हैं। जो बाहर नहीं

जाना चाहता वह घरपर अपना काम करना शुरू कर दिया है। जो रोजगार करने में मन लगायेगा, अपने आप ही अच्छा धन कमायेगा। आप दे क्या रहे हो बल्कि वही आपको दे रहा है।

उसी का श्रम है। यहाँ बैठे सभी लोगो से कहना चाहता हूँ बल्कि जैनियों से विशेष रूप से कह सकता हूँ जितने भी राजा-महाराजा, सेठ-साहुकार हुये उसमें जैनियों का कितना योगदान है। इतिहास पढ़ो सब ज्ञात हो जायेगा। युगो-युगो रुके वे शिलालेख आज भी बता रहे हैं। युग के आदि में उन्होने निर्माण कराया। बना के चले जाते हैं।

अब आपके यहाँ नेता आते हैं, उनसे मांग मत किजिये। कहाँ से लायेन्गे। युं-युं उनके सामने करते हो। आप ही ने तो भेजा है यहाँ से चुनकर। आज वे जहाँ पर है वहाँ तक आप जा ही नहीं सकते हो। इनको यह कहना चाहिए आप चिन्ता मत करो हम सब पूर्ति करेन्गे। बड़े-बड़े बांध आदि का निर्माण, जल प्रबन्धन हो रहा है। मांग मत करो।

पानी तो तभी मिलता है जब आप उदारता दिखाओगे। यहाँ छ. ग. की यह विशेषता है जिसके कारण चारों ओर हरियाली रहती है। प्रत्येक गाँव में चाहे छोटा सा भी गांव क्यों न हो उसमें अच्छा

तालाब मिलता है, जिसका पानी उज्जवल रहता है। उससे ट्युबवेल आदि से पानी लेते रहते है। यहाँ मिट्टी के बांध भी बने हुये हैं।

सीमेन्ट वालो! सुनो! 100 साल से भी ज्यादा हो गये वह मिट्टी का बांध आज भी मजबूत बना हुआ है। ऐसा यह भारतीय इतिहास रहा है। भले ही अंग्रेजो ने बनाया हो। सीमेन्ट जल्दी पकड़ता है और जल्दी छोड़ भी देता है। इसी प्रकार आप लोगो के यहाँ थाली नहीं है - कटोरे है कटोरे। थाली में इधर-उधर चला जाता है किन्तु कटोरे में जो कुछ होगा एकत्रित रहेगा खाने में सुविधा होगी ऐसा यह धान का कटोरा है।

ध्यान रखो! यहाँ का धान सर्वत्र प्रसिद्ध है। पंजाब का गेहूँ प्रसिद्ध हो सकता है लेकिन चावल के बिना कुछ नहीं। अन्य धान सुगन्धित नहीं यहाँ का धान...। आप ही बताओ बासमती कहाँ मिलता है? फिर उसमें थोड़ा सा गैय्या का घी डाल दो। अंगुलियों में ऐसी गंध रूप घण्टे इत्र के बिना भी सूंघते रहो। कटोरे के द्वारा जलप्रबन्धन स्वतः ही हो जाता है। पानी दूसरों के पास चला जाता है, किसानो द्वारा सहज होता है।

इसीलिये यहाँ गर्मी भी नहीं - सर्दी भी नहीं। दो-दो श्रावण होते हैं। मई में भी धान की फसल लेते हैं।

एक एकड़ का मालिक तीन एकड़ का मालिक कहलाता है क्यों कि वह तीन-तीन फसल लेता है। कहाँ रखोगे इसलिए कटोरा ही ठीक है बटोरो नहीं।

मुख्यमंत्री महोदय को जाना था। शायद वे भूल गये होंगे। मुख्यमंत्री दादा बन गये हैं। उन्हें हमारा आशीर्वाद है। (Break)

हमारा अभी पूरा नहीं हुआ है। आप बताओ आपको भी जाना है क्या? बता दें। हमारी यही रीत है बीच में जाना है तो उन्हें खाना कुछ भी खिलाना आदि है, वह कर दो वे मेहमान हैं हमारे। अब सर्वप्रथम जो यहाँ एक भी दिन नहीं आये, कार्यक्रम कैसा चल रहा है? उन्होंने नहीं देखा ऐसे भोजनालय के प्रबंधकों को हमारा आशीर्वाद पहुँचे। श्रीमान-धीमान कोई भी क्यों न हो सभी को उसी के माध्यम से प्रसन्नता मिलती है। बाकी व्यवस्था तो ठीक है पर भोजन की व्यवस्था यदी ठीक न हो तो सब व्यवस्था चौपट हो जायेगी।

ऊपर-ऊपर के सम्मान से कुछ नहीं होता। वे प्रसन्न शब्दों के साथ आपको अच्छा भोजन करा देते तो मन उल्लासित। प्रफुल्लित हो जाता है। होता है कि नहीं, सही बताओ। ये पंचकल्याणक कैसा लग रहा है। अच्छा लग रहा है। आपसे कई सुना अच्छा हमें लग रहा है। यहाँ भण्डारा तो चलता ही रहता है। जो भी व्यवस्था की है उसे आकस्मिक मत जानना। महीनों का काम है ये।

कमर कसते हैं तब होता है। यहाँ देखने मिला।

हजारों वर्ष में भी ऐसा महोत्सव नहीं, इसे हमेशा याद रखना। यह आपको अपने कर्त्तव्य के लिए प्रेरित करता रहेगा। दूसरी बात आपने कुछ नहीं किया। यहाँ की जनता जो है उसका भी पुण्य है, योगदान है। इससे आगे बढ़कर मत सोचना, अपने को बड़ा मत समझना। बड़ा तो तब होंगे जब आप अपने आपको बड़ा न माने/कहे।

इस चौक के पुण्य का उदय है जो इतना विशाल अनुष्ठान यहाँ हुआ आगे भी करते रहना चाहिए। समय पर सब कुछ सानंद सम्पन्न हुआ है ये भी महान् पुण्य का उदय है। जब शान्तिनाथ के चरणों में पहुँचा तो सोच रहा था, कैसे होगा? चलो देखते हैं, विहार तो करो। रामटेक से विहार हुआ। किधर जायेंगे पता नहीं। भण्डारा की तरफ मुड़ते ही लोगों का भण्डारा चालु हो गया। दीवाली पर तो माला मुरझा गई थी। पंचमी को जब विहार का सुनातो उसपर पानी का छिड़काव हो गया उस दिन यहाँ दीवाली मनाई गयी।

सभी जीव अपना-अपना पुण्य लेकर आते हैं। स्वास्थ्य के साथ जितना समय मिला उपयोग किया। संघ भी आया। आपलोगों का भी आभार है हम तो भार उठा नहीं सकते। दौंगरगांव तक ही सीमित नहीं रहना-आगे भी कार्यक्रम होना है। धार्मिक अनुष्ठान में बिना बुलाये भी जा सकते हैं। रतनाली।

अहिंसा परमो धर्मकी जय हो

17-11-17 "मोह से निर्मोह बनने का रास्ता" प्रातः 9:20

पंचकल्याणक महोत्सव उसकी योजना, उसके स्वप्न सारे के सारे चरितार्थ हो गये/साकार हो गये। अब तो आप लोगो का कर्त्तव्य है कल जैसे मस्तकाभिषेक महोत्सव सम्पन्न किया वैसे यहाँ पुजारी पूजा करें। लगे कि प्रतिदिन पर्व चल रहा हो। ये साधन है साध्य तो कर्मों का क्षय करना है। मोह जिससे गलता जाये गृहस्थ को वह कर्त्तव्य करते रहना चाहिए। संत तो निर्मोह है, इसलिए वे विचरण (विहार) करते रहते हैं।

यह निर्जरा का माध्यम ही साधना का परिणाम है। कर्म निर्जरा करना ही साधक का उद्देश्य होना चाहिए। इसी प्रकार की साधना का उपयोग पल-पल होता रहे। दिपक जलाया है तो पल-पल उसकी रोशनी देखो। रोशनी देखो-दिपक नहीं। भविष्य कितना है/कितना काल शेष है? ये मत देखो बस जो चल रहा है उसके पल-पल का उपयोग करना है। कब तक करना है? जब तक जीव है उपयोग करते रहे।

आपने प्रार्थना कि हमारा ध्यान नहीं रखते/आप लोग है हमारा ध्यान रखने वाले, आपको ध्यान तो करना ही है। जिसके लिए आपने यह अवसर प्राप्त किया है। (अपूर्व-अनुत्तरमती जी)। सबका भला हो, सबका कल्याण हो। जब तक यह दृष्टि प्राप्त हो, हम सदैव विकासोन्मुखी बने रहे इसी भावना के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

विहार - मध्याह्न/२०

रात्रि विश्राम- शिरगांव [श्री जी के साथ विहार]
चर्या - कोहिलाडुरी
18-11-17 "प्राकृतिक जीवन जीते हैं गांव वाले" प्रातः 9.20

देखो आप सब लोग नगर से गांव में आये। नगर वालों के पैर कमजोर रहते हैं। हम छोटे-छोटे गांव में पांव-पांव चलकर आ जाते हैं। यहाँ की जनता शुद्ध-सात्विक जीवन जीने वाली है। इन्हें किसी की आवश्यकता नहीं, नगर वालों को गांवों की आवश्यकता है। गांव वाले कहते हैं - आ जाओ और ले जाओ। इस प्रकार के भाव बने रहते हैं। आप लोगों के जैसे भाव दुकान पर जाने के बाद बने रहते हैं उसी प्रकार के भाव इनके बने रहते हैं। आपके साथ बच्चा गया, सब्जी की दुकान से खरीदी, इसके हाथ में एक केला दे दो। किसान कहता है इस हाथ में भी और उस हाथ में भी ले लो।

सब कार्य समय पर करते हैं। वर्षा होती है, खेती करते हैं। समय पर उठते हैं, सुबह भगवान का भजन-पूजन करते हैं और खेत से लौटकर शाम को भी भजन-आरती करते हैं। "इन्हें आशा-इच्छा सताती ही नहीं और आपसे आशा-इच्छा छूटती ही नहीं।" आप लोग इनका अध्ययन करो। इनकी तरह सात्विक जीवन जीना प्रारम्भ करो। देखता आया हूँ, कैसा इनका सात्विक जीवन है। परोपकार के लिए ही मानो इनका जन्म हुआ है। ज्यादा संग्रह की कभी बात करते ही नहीं।

आप जो दे देते हैं, ले लेते हैं। सरकार को भी ये ही देते हैं। सरकार बनाने वाली भी तो जनता ही है। सुना है यहाँ कि सरकार ने किसानों की बोनस बांटा,

वो कहाँ से देगी इन्हीं का लेकर इन्हें दे रही है। यहाँ हथकरघा भी घर-घर में लगे हैं। लड़का भी - लड़की भी सभी चला सकते हैं। यह स्वाश्रित जीने की कला है।

गांव में किसान खेती करता है, शेष बचे समय का उपयोग वह इसमें कर सकता है और सुन्दर-सुन्दर वस्त्रों का निर्माण कर सकता है। चाहे तो उन वस्त्रों का निर्यात भी कर सकता है। आप लोग खरीदते हैं ये लोग उत्पादन करते हैं। कपास होगा तो वस्त्र बनेंगे / वस्त्र होंगे तो खरीदोगे अन्यथा क्या खरीदोगे? ये सारे के सारे उत्पादन से जुड़े रहते हैं। घर में दूध-घी होता है। उसी से मावा- मिठाई बनाते हैं। मूंह कड़वा हो तो ये लोग मीठा करने वाले हैं।

इनके साथ आप लोगों का व्यवहार कोमल होना चाहिए। आप मालगुजार कहलाते हैं, ये वास्तविक माल-गुजार हैं। इनका माल आप ले लेते हैं, इन्हें गुजरना पड़ता है। चारों ओर प्रकृति का वातावरण है। वृक्ष - नदी - तालाब है। सड़क जो शहर की ओर जाने वाली है। सीधे-साधे लोग रहते हैं। इनके साथ उसी तरह का व्यवहार हो। प्रभु ने यही उपदेश दिया। हमेशा सहयोग / सहानुभूति की भावना रखो। सुख-दुःख में एक-दूसरे का साथ दे। ऐसा मानव ही एक दिन महात्मा / प्रभु बनता है।

संतोषी बन आत्म तत्व की आराधना करता है। अभी विहार हुआ, गांव वालों का पुण्य इसी ओर ले हुआ। आप लोग सुन लेते हैं यही निकाल जाते हैं। गांव के लोग सुनते

है और ग्रहण भी करते है।

सुनो अच्छे से सुनो! आपकी और इनकी आत्मा में कोई अन्तर नहीं है। प्रत्येक के पास आत्मा है। ये मेरी आत्मा है- ये इनकी आत्मा है ऐसा भेदभाव नहीं होनाचाहिए। आत्मा की अपेक्षा हमारी और परमात्मा में कोई अन्तर नही है। इस भेदभाव को समाप्त करना है। मोह भाव के कारण यह भेदभाव होता है। कौनसा गांव है- कोहिनापुरी। अच्छा-अच्छा।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नुँ

वैय्यावृत्ति में → मध्याह्न २.००

(1) मोक्षमार्ग प्रकाशक के विवादास्पद बिन्दु। हमारे नाम से छपाना चाहते थे हमने ऑर्डर वालों को एवं सतना वालों को निम्न बिन्दु बताये-

(A) कारण-कार्य व्यवस्था (अभाव को कारण नहीं मान सकते)

(B) मिथ्यात्व एवं अज्ञान को भिन्न मानना

(C) रत्नत्रय को अविरोधितकर कहना

(D) चतुर्थ गुणस्थान में शुद्धोपयोग मानना।

(2) आनंद मानना क्या छठे से नीचे क्यों की शैलेश्यान होता नहीं। आश्री- बाहर से आनंद दिखना और भीतर से आनंद मानना में अन्तर है। इसे ही क्रियावती एवं भाववती कहते है। क्रियावती का संबंध कषाय से भाववती का मिथ्यात्व से है। कषाय/लेश्या दिखने में आती है/इसे पुरुषार्थ पूर्वक छोड़ सकते हैं।

(3) पंचसमवाय आचार्य कुन्दकुन्द का शब्द नहीं है।

(4) मिथ्यात्व में पांच मिथ्यात्व के अलावा कुछ भी नहीं है। तीव्रता जो आती है वह कषाय से आती है।

चन्द्रगिरी - डोंगरगढ़, मंगल प्रवेश प्रातः 8.00

19-11-17 "प्राचीन श्री जी का प्रवेश" प्रातः 9.20

सुनते हैं शुक्ल पक्ष प्रारम्भ होता है, चन्द्रमा की एक-एक कली उद्घाटित होती है और एक-एक कली उद्घाटित होते-होते एक दिन पूर्णिमा को सारी कलायें उद्घाटित हो जाती है। उस दिन समुद्र अथवा सागर में उमंग और उल्लास हो जाता है। ऐसे ही छत्तीसगढ़ वाले सागर/सरोवर के समान उल्लासित होते हुये आज यह श्री जी को यहाँ तक लाये।

श्री जी पहले कहाँ स्थापित थे कोई पता नहीं। बाद में बुढ़ार वालों ने कहा महाराज एक प्रतिमा मिली है उसे किसी क्षेत्र पर विराजमान करने का भाव है हमारे मन में आया क्षेत्र भी प्राचीन - प्रतिमा भी प्राचीन है। ग्रीष्मकाल में जो कुछ आवश्यक था प्रतिमा तैयार हो गयी। फिर बात आयी बिना पंचकल्याणक के भगवान को कैसे विराजमान किया जाये। हम चले गये थे। चले गये का मतलब क्या होता है? हमारा विहार यहाँ से हो गया था। और आज पुनः भगवान ने बुला लिया। पंचकल्याणक भी हो गया।

नगर-नगर और गांव-गांव विहार करते हुये भगवान चन्द्रगिरी में वेदी (अस्थायी) पर विराजमान हो गये। इस वर्ष कितने पंचकल्याणक होंगे? ये तो इन पंचों को मालुम है या फिर पंचपरमेष्ठी को तो है ही। आज सभी स्थानों से लोग आये हैं, अंग बनाकर रखो। अभी नामकरण की चर्चा सामने आयी। हम बड़े बाबा के पास से आये हैं।

हम तो ये देखते हैं कि भगवान हैं या नहीं। कैसे लग रहे हैं बोलो। हमारी भी यही भावना/इच्छा थी कि यहाँ कोई प्राचीन प्रतिमा प्रतिभा स्थली में विराजमान हो क्यों की जबलपुर प्रतिभास्थली में प्राचीन भगवान हैं। रामटेक प्रतिभास्थली में तो एक नहीं दुख है। अब यहाँ प्रतिभा स्थली के नवीन चैत्यालय की वेदी में भी प्राचीन प्रतिमा विराजमान होगी।

अभी तो यह तात्कालिक (अस्थायी) वेदी में विराजमान किया है। विद्यार्थी- शिक्षिकायें प्रति दिन पूजा-अर्चना करेंगे। आज रविवार का दिन है। मध्याह्न में भी आओगे? वो तो बिना कहे ही हो जाता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

20-11-17 संघर्ष किससे? प्रातः 9-20

बांस का वन है। आपने देखा होगा बांस बहुत ऊँचे तक जाते हैं। और तोरणद्वार का काम करते रहते हैं। एक-दूसरे से मिलेंगे तो वैसे ही लगते हैं। जैसे ब्रह्मचारी जी कहते हैं न दोनो हाथ उठाओ - शिखर बनाओ और ताली बजाओ। बांस का वह वन देखने में भी सुन्दर लगता है। जब उनको देखते हैं तो सोचते हैं यूं ही काटकर ले जाऊंगा। जब काटा तो देखा थे तो खींच ही नहीं रहा।

ऊपर तक शाखायें ऐसी फूटी थी उसे निकाल नहीं पाया। इसी प्रकार घना एकत्व आ जाता है तो कोई अलग करना चाहे तो भी नहीं कर सकता। ऐसे वो आपस में पैर होते हैं। अब दुसरी तरफ ये तो आपके सामने एकता

का प्रभाव क्या होता है रखा। अब यदि आपस में उन बांसों के बीच संघर्ष हो जाये तो आग उत्पन्न हो जाती है।

ऐसी आग की उससे सारा का सारा वन ही खत्म हो जाये। दो बांस आपस में टकरा जाये एक सैकण्ड नहीं लगे पुरा वन समाप्त हो जाये। "संघर्ष करना चाहिए किन्तु विपक्ष के साथ पक्ष के साथ नहीं।" पक्ष के साथ संघर्ष करने का यह परिणाम होता है, यही संघर्ष विपक्ष के साथ हो तो अवश्य सफलता मिलती है। "संघर्ष करना है तो कर्मों से संघर्ष करना है।"

बच्चों को भी समझ में आ रहा है। "संघर्षमय जीवन का उपसंहार हर्षमय होता है।" ये हमारी मूकमाटी है। सीधी-सीधी बोलती है। ऐसी भाषा बोलती है जो बिल्कुल सरल हो और सबको समझ में आ जाये। सबको कॉफी असर कर जाये। असर तो करे किन्तु मात्र सर तक ही नहीं रहना चाहिए नीचे उतरकर हृदयंगम होना चाहिए। संघर्ष करो तो इस प्रकार करो - स्वर्ग से भी टपकना पड़ता है। विपक्ष से संघर्ष करोगे तो भीतर का पुरा कर्म वन नष्ट हो जायेगा। इस रहस्य को समझना ही शिक्षा का मूल उद्देश्य है।"

इस प्रकार हमें संघर्ष दूसरों के साथ नहीं, अपने कर्मों के साथ ही करना है। जिसको आज तक अज्ञान से सिंचन किया उसे साफ करना है तो संघर्ष करना शुरु कर दो, रोग का समूह अवश्य ही समाप्त हो जायेगा। इतना ही संक्षेप में आप सभी से कहना है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नमोऽस्तु

21-11-17 "वस्तु स्वतंत्रता का सिद्धान्त" प्रातः 9.20

बिम्ब में और प्रतिबिम्ब में क्या अन्तर है। बिम्ब एक प्रकार से प्रत्येक वस्तुओं का स्वरूप होता है, जैसा आकार है किन्तु जब उस बिम्ब को विषय बनाया जाता है तो भिन्न-भिन्न रूप से वह आँखो में प्रतिबिम्बित होता है। भिन्न-भिन्न व्यक्तियों की अपेक्षा भी एक ही बिम्ब है लेकिन विचारों में विविधता आ जाती है।

किसी को पसंद आये और किसी को न आये ये बात अलग है। हमें बिम्ब तो मिलेंगे, प्रतिबिम्ब हमारे ऊपर आधारित है। आप प्रतिबिम्ब चाहते हैं तो आ सकता है, बिम्ब कभी भी हठात् हमारे भीतर प्रतिबिम्ब उत्पन्न नहीं कर सकता। इतनी वस्तु की स्वतंत्रता है, इसे हम समझ नहीं पाते। मोक्षमार्ग में यह रहस्य समझना परम आवश्यक है। सर्दी आ रही है। पंखा, 5 महिने के लिए विश्राम दे देते हो। आँखो के लिए पसंदिदा होने पर भी अभी इसकी जरूरत नहीं है। अभी तो गर्म वस्तुओं का सीजन है, मलमल भी विश्राम करता है।

देख भी लेते है। पसंद-नापसंद का सवाल नहीं, काल अलग चल रहा है। ज्ञान में इन सब वस्तुओं को देखना चाहो तो दिख सकती हैं। यदि इच्छा न होने के कारण विशेष रूप से आँखो पर प्रभाव नहीं कर सकता है। इसी को ज्ञेय-ज्ञायक संबंध बोलते है। वही वस्तु उपभोग्य हो, वही ज्ञेय बन जाये, वही ध्येय बन जाये कोई बाधा नहीं। भगवान के प्रतिबिम्ब

कुछ देखो, किताब की जरूरत ही नहीं।

हम अपने ज्ञान का सदुपयोग करें। सदुपयोग न कर सके तो अपने ज्ञान को ५-५ महिने के लिए विश्राम दे दें। इसे देशावकाशिक बोलते हैं। ज्ञान को विश्राम देने से माथा ठंडा बना रहेगा। फ्रिज की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी। पैसे ज्यादा आ गये इसलिए फ्रिज ले आते हैं। समय के अनुसार करो तो अवश्य शांति मिलेगी। शान्ति कोई खरीदने की वस्तु नहीं है। जब भी चाहे मिल सकती है, बस हाथ नहीं लगा सकते हैं।

उसका उपयोग अलग ढंग से विद्यमान है। इसलिए किसी भी वस्तु को मत चिपकाओ। हम चिपकते हैं तो वह चिपक जाती है फिर गोंद यदी पावरफुल हो तो कहना ही क्या। यह हमारा मनचलापन है। हमणों के पास भी ज्ञान है, आपके पास भी ज्ञान है पर वह सब मनचलापन है। इस पर नियन्त्रण रखना ही साधना है। चाहे वह वैश्य हो या क्षत्रिय हो, देव हो या दानव हो सबके लिए यही मात्र साधना है। इसके लिए विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं।

ज्ञेय-ज्ञायक इन दो को देखो। एक पर नियन्त्रण सब पर नियन्त्रण हो जायेगा। इसलिए कोई भी प्रदर्शनी आदि होती है वहाँ लिखा होता है- ये देखने के लिए है, हाथ लगाने के लिए नहीं। फिर भी हाथ लगाते हैं इसलिए काँच होता है। काँचको हाथ लगा चित्त/वस्तु को नहीं। ज्ञेय-उपादेय ये ही मानव का मनचलापन है। अपने मन पर नियन्त्रण रखेंगे। यही संक्षेप में पर्याप्त

है। सारांश भी है और पर्याप्त भी है।

पर्याप्त कहते ही अब आ गया। पर्याप्त अपने में अलग ही वस्तु है। नहीं समझे। पर्याप्त से ऊपर चले जाओ तो अपर्याप्त हो जाये इतना ही पर्याप्त है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। जैन

संस्मरण ① जब आश्री के मुख से विद्याधर नाम निकला। ईर्यापथ भक्ति में आश्री ने प्रयोग पर बल देते हुए कहा। एक के पास डीग्री नहीं है फिर भी लोग उसके पास सिद्ध कर रहे हैं। एक के पास डीग्री मात्र है योग्यता नहीं। स्वयं आश्री के ऊपर ही कितने ही लोग शोध कर रहे हैं। वे कहते हैं मैं थ्योरी पर विश्वास नहीं करता प्रयोग पर विश्वास करता हूँ। विद्याधर ने भी कभी स्टेशन पर जाकर टिकिट खरीदा और गाड़ी में बैठ गया। सब अपने आप ही होता जाता है।

(2) उद्देश्य पर ही आपको अपनी क्रिया का दोष लगता है, चक्रवर्ती एक तिहाई मतलब ३२०० रानियाँ म्लेच्छ से लाता है। उनके साथ जो लोग आते होंगे वे मांसाहारी हैं उसका दोष क्या चक्रवर्ती को लगेगा। मांस खिलाने का। नहीं। उदाहरण दिया आपके यहाँ बाजा बजाने वाले आते हैं आप बुलाते हो उनमें अधिकांश शराब पीने वाले ही होते हैं फिर आपको दोष लगना चाहिए। आपका उद्देश्य शराब पिलाना या मांस खिलाना नहीं है। इसी प्रकार जैसा आपका भाव होगा वैसा ही परिणाम होगा। [कमण्डलु वापसी]

प्रतिभास्थली में -

22-11-17 "सार्थक शिक्षा" प्रातः 9.20

एक वृक्ष है, हरा-भरा है। और उस वृक्ष पर दसों दिशाओं से पक्षी अपने-अपने परिवार के साथ बैठे हैं। कलरव कर रहे हैं। उस वृक्ष पर एक तरफ ऐसी कलियाँ हैं, जो अभी खिलने को हैं, वहीं पर कुछ कलियाँ फूल के रूप में हो गयी। कुछ ऐसे भी फूल जो फल की ओर अग्रसर हैं। वृक्ष इन सबको देखता है। वह जान रहा है कि कैसे प्रारम्भ और कैसे वह फलश्रुति होती है।

यह उदाहरण दिया है। इस वृक्ष की भांति ही आप प्रतिभा स्थली का आकलन कर सकते हैं। समान से विशेष आग्रह है कि आगे भी यह परम्परा चली रहे। किसी भी संस्थान को संचालित करने के लिए अर्थ की विशेष आवश्यकता होती है। वैसे किसी काम में मात्र धन ही सब कुछ नहीं होता किन्तु बिना पैसे भी कोई काम नहीं होता। आप लोग कहते हैं न- धन क्या है? ये तो हाथ का मैल है किन्तु वर्तमान में मन को भी निर्मल बनाने का साधन है। इससे बढ़कर कुछ नहीं है।

संस्कारों के साथ अध्ययन होना वर्तमान की बहुत बड़ी जरूरत है। संसार के उस किनारे को भी देखता रहता है, डूबेगा नहीं जो संस्कारों की शिक्षा प्राप्त करता है। अल्प समय में विकासोन्मुखी रहता है। वस्तु कभी भी मुड़कर पीछे नहीं आती है, पर्यायें बदलती रहती हैं। आत्म तत्व की प्राप्ति के लिए सदैव विकासोन्मुखी होना चाहिए। इसका संबंध निर्जीव से नहीं जीवतत्व

से है।

इसी उपक्रम को लेकर यह विद्यालय प्रारम्भ हुआ है। सबके योगदान से यह आज इस जगह पहुँच पाया - बताने की जरूरत नहीं हैं। छोटे- छोटे बच्चे जिनके पैर नहीं उठते, अभिभावक रोते रहते हैं, महाराज बच्चा चल नहीं पाता। आज वे ही अभिभावक देखने आते हैं। सभी लोग एवं शिक्षिकाऐं भी दूर- दूर से आये हैं। सभी अपने को सार्थक मानते हैं। शिक्षिकायें तो अपने को धन्य मानती हैं।

अपने आपका निर्णय बता चल जाता है सही है या नहीं। अभी तो प्रारम्भ हुआ है, संख्या कम / हम संख्या की चिंता नहीं करते। आगे सखा / मित्र आयेंगे, कोई जाने का नाम ही नहीं लेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नमो

विशेष -

(1) शोध करने के लिए निदेशक की क्या आवश्यकता है। ज्यादा मोटी थिसीस लिखना क्या अनिवार्य है। डॉ पृथ्वीश, कलकत्ता में एक शोध हुयी मौलिक थीसिस पुस्तक। उस Phd की जिसे स्वीकार किया गया।

हथकरघा कर्मचारी

22-11-17 "जीवन शैली बदल देगा हथकरघा" मध्याह्न 4.00

— आप लोग तो ऐसे बोल रहे हैं जैसे बड़े-बड़े लोग भी नहीं बोल पाते। दो छोटी-छोटी बच्चियों ने तो बहुत अच्छी भावाभिव्यक्ति की। इस प्रकार के वातावरण से आप लोगों को प्रेरणा मिलती रहेगी। सौहार्दपूर्ण जीवन जीने के लिए यही मार्ग है। ज्यादा पैसे-पैसे से कुछ नहीं। एक-दूसरे से दूरीयाँ बढ़ जाती है। सुख-दुःख में भागीदार बनने से जो शांति मिलती है वह यहीं मिलती है अन्यत्र नहीं।

आप लोग गाँव में रहते हैं शहरों में तो इस प्रकार का वातावरण नहीं पाया जाता है। आपस में सभी कर्मचारी एक परिवार के रूप में रहते हो। ये लोग (दीदी) विद्यालय चला रहे हैं। ग्रामीण जनता को भी लाभ मिले उन्हें भी संस्कार मिले इसलिए आप लोगों को ये प्रशिक्षण दिया जा रहा है। आपके पास संस्कार तो है पर किसी के आगे हाथ न फैलाना पड़े। जितनी उम्मीद उतना मिले। मौलिकता लाने के लिए प्रयास तो किया जा रहा है। सब कलायें आ जायेगी। सभी समस्यायें दूर हो जायेगी। परिवार सुखमय हो जायेगा।

वैसे मैं विहार करता हुआ आ रहा हूँ। छोटे-छोटे गांवों में भी मैंने हथकरघा देखा। वे लोग बड़ी प्रसन्नता के साथ इस ढंग से कर रहे हैं। काम से आप घबराते नहीं, यह सबसे महत्वपूर्ण बात है। ज्यादा काम भी नहीं करना

करना चाहिए, क्यों की एक दिन का तो यह काम है नहीं। अपने माता-पिता, बच्चे-पति परिवार आदि की सेवा के लिए आप कमा रहे हैं। अच्छी बात है।

अभी बालिका ने कहा अब तो हम घर पर ही करने लगेंगे। एक-एक क्षण का उपयोग होना चाहिए। जैसे पैसा महत्वपूर्ण है वैसे ही समय का भी उपयोग करेंगे। कम समय में भी अच्छे ढंग से निष्णात हो जाओगे। भारत में विशेषकर गाँवो में यह मानसिकता रहती है कि हमारा निर्वाह कैसे होगा। जो श्रम करता है- संघर्ष करता है उसको निर्वाह की क्या चिंता करना। व्यसनो से मुक्त रहना आवश्यक है।

गांवो में हमने देखा। हमारा आहार हुआ था। (कोल्हापुरी) वहाँ की एक महिला जो मुखिया थी कि यहाँ कोई भी शराब की दुकान नहीं है। वहाँ की महिलाओं में एकता है। यह आदर्श है हम सबके सामने। बहुत बड़ा काम है। आपस में वात्सल्य-एकता-संतोष के माध्यम से ही संभव होता है। इसी कारण गाँवो में भी अच्छे कार्य हो रहे हैं। सामने-सामने हथकरघा देखा। प्रसन्नता के साथ कर रहे थे। थोड़ा भी समय मिलता है, व्यर्थ न गंवाकर उसका सदुपयोग करते हैं। जो भी परम्परा से काम मिला है, उसे करते जाओ। बच्चो को भी अच्छे संस्कार दो। श्रम से मिला धन व्यसनो में नहीं लगाना अन्यथा परिवार नष्ट हो जायेगा। दुःखी हो जायेगा।

बच्चों को व्यसनों से मुक्त रखीये।

शाकाहार का उपयोग करो। ऐसा भोजन करो जिससे औषध-उपचार की जरूरत ही न पड़े। फिर भी बिमार हो जाये तो काहा-उकाली आदि से ठिक कर लें। सात्विक भोजन- सात्विक विचार रखें। रोगतो आयेंगे ही नहीं। इस प्रकार आप अच्छे से काम करेंगे कोई बाधा नहीं आयेगी। हमारे सामने कहा- महाराज हम दूर से आते है कम समय में आ सके इस हेतु---। अब औरों को भी प्रशिक्षण दे सकेंगे।

(बस की व्यवस्था) छोटी बात थी। २-३ महिने में सीख जाओगे। किन्तु ये सब लगन बिना नहीं होगा। आलस- प्रमाद नहीं करना। सही समय पर उपस्थित होना जरूरी है। व्यवस्थित रहनाही ये होगा। फिर जैसे आपने सीखा है वैसे कोई दूसरा सीखना चाहे उसे भी सीखाना है। अभी ट्रेनर को बुलाते है फिर आप में से ही ट्रेनर बन जायेंगे। स्वावलंबी होने का यह मार्ग है। नाना आपही को करना है। जो भी काम है घर के है रोटी आदि बनाना कैसे सीख लोगी है। जो पढ़कर सीखता है वह तो वैसे ही रोटी बनायेगा।

स्वयं के लिए वस्त्र बना रहे है। अहिंसक वस्त्र का निर्माण कर रहे हैं। इससे मन पवित्र होता है, स्वावलंबी रहते है। देश-विदेश से मंगाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती, उल्टा आप और भेज

सकते हैं।

उनको भी यह लगेगा की यह भारतीय संस्कृति है। ज्यादा तो नहीं बोलना चाहता आप लोगों को कम शब्दों में बता दिया। सबको हमारा आशीर्वाद है। इन लोगों का भर्तीकरण है? काम करते समय आप लोगों को व्यवधान न हो इसलिए हम नहीं आये। अच्छे-अच्छे लोग इस कार्य से प्रभावित हो रहे हैं। हजारों लोगों ने इसे देखा है। उनके भी मन में यही भाव आते हैं कि हम क्या सहयोग कर सकते हैं। आशीर्वाद।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

23-11-17 "दायित्व का भार" प्रातः 9·20

आप लोगों का ध्यान उस ओर ले जाना चाहता हूँ अथवा उस बात को कहुंगा आपका ध्यान उस ओर चला जायेगा। जो आज ही आज जन्मा है। बंदरीया का बच्चा है। जब माँ पेड़ पर बैठी है। आमलिक वह एकदम जल्दी-जल्दी उतर आती है। कूदना-फुदना बुद्ध नहीं। नीचे उतरने का मतलब नीचे मुखकर आगयी। फिर देखती है अब कोई धावा नहीं बोलने वाला वह निश्चिंत हो जाती है।

इसे देखा आपने? बच्चा कहाँ है? गौर किजिये। ध्यान से देखा कभी? माँ से चिपका रहता है। माँ उसे अभय दे रही है। माँ तो जानती है बच्चा अभी छोटा है। आप लोग पूजा विधान

में चढ़ाते हो सुपारी बराबर उसका मांगा है किन्तु वह जानता है यदि माँ को छोड़ दूंगा मेरी रक्षा नहीं है। वह हलांग लेती चली जाती है, उसे छोड़तीनहीं हैं।

दूसरे पेड़ पर चढ़ जाती है, शिखर पर जाकर बैठ जाती है। इसके उपरान्त अब वह बच्चा भी टहनीयों पर खेलने लगता है। इसी प्रकार आप लोग रोया मत करो, उसे देखो। गृहस्थ आश्रम में कैसे करे ? उस बंदरीया को देखो। जैसे उसने जिम्मेदारी के साथ उसका लालन-पालन किया। अच्छे-अच्छे फल-फूल पत्ती आदि पहले उसे खिलाया बाद में स्वयं खाया। सावधानी से होता है। ऋतुमान के अनुसार ही कार्य होते हैं।

छोटे से उसे बहुत बड़ा बना देती है। अब बड़ा हो गया तो चिपकाती है क्या वह बांदरी। एक थप्पड़ लगाती है जा अपनी दुकान खोल ले। आपका ध्यान गया। अब रोना नहीं। कुछ समय वह बंदर-बंदरीया रहते हैं फिर अलग हो जाते हैं और अपने-अपने दायित्व का वहन करते हैं। वह बंदरीया अपने वंश का संरक्षण करती है, दायित्व का पालन करती है। इसी से समूह बनता है, सेना का निर्माण हो जाता है, जिसे बोलचाल में आप लोग वानर सेना कहते हो।

वे सदैव शाकाहारी बने रहते है। इसीलिए संस्कृत में इन्हें शाकामृग की संज्ञा

दी गयी है। वे वृक्षों के ऊपर ही रहते हैं। सर्दी-गर्मी-वर्षा तीनों ऋतुओं में अपना निर्वाह करते हैं।

मनुष्य हमेशा - हमेशा शिकायत ही करता रहता है। आप लोगों (वानर) की शिकायत कौन करेगा? इसलिए आवश्यक हो जब तो ठीक है, अनावश्यक होगा तो कौन करेगा? ऐसी ही हमारी संरचना हुयी है, शरीर में अपने आप ही काम होता रहता है। जब वह बच्चा छोटा रहता है थोड़ा सा नियन्त्रण में रखती है और जैसे ही बड़ा हो गया छोड़ देती है। माँ कहती है - अब वह समझदार होगया है।

ऐसा ही चेतना का स्वभाव है। स्वयं भी इसे जाने। मोह भी बढ़ने लगता है, दायित्व भी बढ़ता है। जब भी माता-पिता का अभाव होता है तो क्या होता है? पुराण ग्रन्थ पढ़ा करो। उनको जो धर्म से बांधा गया उसी आधार पर जीवन पर्यन्त निर्वाह करना है यह प्रेरणा मिली थी। लेने के अपरान्त देना नहीं है, आप को है देना चाहिए। धार्मिक जीवन होना चाहिए। हम प्रेरित नहीं होते है आप बता दो? आत्मा तो सबकी ज्ञानवान है सब जानते हैं। तिर्यञ्च भी पंचम गुणस्थान का पूर्वकोटी वर्ष तक पालन करते है। हमारा बन्दरीया का उदाहरण याद रखना। अन्य लोगों को भी ईमानदारी से बता देना। सामने वाले को समझ में आजाये - बगार लगाके भी बता सकते हो। जहाँ-जहाँ से आये बता देना। होता है यानहीं होता ही है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नूँ

25-11-17 "भानु ने कराया भान" प्रातः 9.20

यह सब लोगों को ज्ञात है, दूर-दूर से लोग उस स्थान पर पहुँच जाते हैं, जहाँ से सूर्य को देखें। किस ढंग से वह उतरता रहता है। कहाँ उतरता है? समुद्र में उतरता है। उसको क्रम-क्रम से देखने के लिए जाते हैं। भले ही वैसा लगे। जब उसका उदय होता है, तब नहीं देखते। वे यह नहीं जानते भारतीय संस्कृति के अनुसार डूबते हुये सूरज को कोई नहीं पूजता। यहाँ उगते सूरज को ही पूजा जाता है।

अन्तरीक्ष बहुत बड़ा है। सब अपने-अपने कक्ष में काम करते रहते हैं। तो उगते समय तो सूर्य को पूजते हैं, डूबते को नहीं पूजते। देखने भले ही चले जायें। विदेशी लोग इसे Sun set और Sun Rise और देशी लोग ....। अपने देश में तो सभी देशी ही माने जाते हैं। जब सूर्य उगता है होनहार कहलाता है, दिखते है। जब सिर पर आता है, अब देख लो नहीं दिखोगे। वस्तुतः 12 बजे योग साधना का काल आता है, उस समय अपना उपयोग लगाओ।

जब आँखें बंद करोगे तो पुरा का पुरा अपना ही साम्राज्य हो जाता है। दिन के 12 बजे आप आँखें बंद करोगे तो सूरज को अपने सामने उगता हुआ-डूबता हुआ, लाल, तपता हुआ दिखोगे। यही स्वरूप आत्म तत्त्व का है। आप लोग जन्म में तो जयजयकार करते हैं और अस्ताचल होने पर राम नाम सत्य हो जाता

है। जीवन भर तो राम की पूजा की। अब ये सब छोड़ दो। किस क्षेत्र में, किस समय पर कितना उपयोग करना इसे जानना बहुत आवश्यक है तभी उपकार होगा।

धरती यदि समय पर नहीं तपेगी तो वर्षा की धार नहीं आयेगी जब वर्षा नहीं तो अनाज नहीं होगा। क्या स्थिति होगी। फिर Sun Set अथवा Sun Rise कुछ नहीं दिन में भी तारा दिखेगी। ये हमें ढूंढना है किसे-क्या दिखता है? हरेक व्यक्ति समस्या में उलझा है। कोई भी व्यक्ति नहीं सुलझा सुलझनहार कहाँ से लायेंगे? अपने साथ कैसा व्यवहार करें? इसमें सूरज- चंद्रमा या तारा का कोई दोष नहीं है।

तारायें इसलिए प्रकाशित नहीं करती क्यों की उनके सामने चन्द्रमा विद्यमान है। वे स्वयं प्रकाशवान तो है पर हम उस प्रकाश का उपयोग नहीं कर पाते। हमारा अस्तित्व उन ताराओं की भांति है। दिन में ताराओं को कोई पूछता नहीं। होती है या नहीं? होती तो है पर दिखती नहीं। सूर्य उदय के बाद चन्द्रमा की दशा क्या है? रहता तो है पर उसका प्रकाश काम नहीं करता। प्रकाशित होते हुये भी दिखता नहीं। हम लोगों की दशा दिन के चन्द्रमा अथवा रात के ताराओं की भांति है। दिन का सूर्य 12 घण्टे रहता है पर उसका भी सही लाभ हम नहीं कर पा रहे हैं।

हमारे बीच में ऐसे भानु विद्यमान है। उनको समझ लो, जीवन को समझने में देर नहीं लगेगी।

चुटकी बजाते-बजाते समझ में आ जायेगा। सूर्य से सारा जग प्रकाशित तो है पर लाभ नहीं ले पा रहा है। "जो दुनिया के आकर्षण से आकृष्ट है, वह दुनिया को लाभान्वित नहीं कर सकेगा। न ही वह स्वयं सुख-शांति का अनुभव कर सकेगा।" इस बात को समझ लिजिये।

डूबना- उदय होना या अस्ताचल की ओर जाना इनका क्या महत्व है। जब कभी भी सूर्य उदय को प्राप्त होता है। सूर्य जब कभी भी उदय को प्राप्त होता है, समुद्र से नहीं होता। इसे उदयाचल कहते हैं मतलब जहाँ से उदय होता है वहाँ पर्वत रहता है और समुद्र में डूब जाता है। 12 घण्टे के बाद वह अस्त हो जाता है। हम लोगों का जीवन भी उस सूरज की भांति है। जन्म के समय सूर्य की भांति इसलिए बाल-भानु कहते हैं। जब जाता है तो 4 व्यक्ति के कंधे पर अर्थात दांया और बांया कंधा मिलाने पर 8 कंधों पर जाता है। ऐसा व्यक्ति कभी सुखी होगा क्या? बोलो।

चाहे सेठ-साहुकार हो या रूखी रोटी खाने वाला हो कोई भी सुखी नहीं। दोनों के हाथ खाली रहते हैं जब जाता है तो। जब आता है तो दोनों मुट्ठी बंद होती है जाते समय खाली। कुछ भी ले जा नहीं सकता। इसका मतलब है आपने अपनी पुरी पूंजी लगा दी। सेठ साहुकार जी अब दिवालिया होकर जा रहा है। जन्म होता है तो जय-जयकार और जा रहा है तो राम नाम सत्य सुना रहे हैं। रघुवंशी होकर लघुवंशी भी नहीं रहा। थोड़ा भी अनुकरण

तो कर लेते। कम से कम लघुवंशी हो जाते।

तो आज आपको यह उदयाचल और अस्ताचल का उदाहरण दिया। अस्ताचल कहते है, होता तो वह समुद्र में ही है। इसके माध्यम से आप बहुत कुछ अध्ययन कर सकते है। दोनों वक्त उगते समय भी और अस्त होते समय भी लाल-लाल रहते है पर दोनों में बड़ा अन्तर है। उसका प्रताप बीच में दिखाई देता है। आपको भी जीवन के मध्य में पुरी शक्ति लगाकर काम करना है, जिससे कभी भी अस्ताचल की ओर जाना न पड़े।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

कुछ हटकर →

(1) अपनी भाषा को छोड़कर अन्य भाषा अपनाना (विदेशी भाषा) राष्ट्रीय मूर्खता है बुद्धि की हिंसा (बौद्धिक हिंसा) है।

(2) कोई भी सरकारी नियम पहले कठोर होते है फिर उनमें ढील दी जाती है। जैसे GST हो या नोटबंदी। आ० श्री ने उदाहरण दिया – पहले B.P चैक हेतु उसे (पारा) पुरा ऊपर चढाया जाता है फिर धीरे-धीरे उसे नीचे उतारते है जिसमें रक्त दबाव कितना है पकड़ में आ जाता है।

(3) बाधक कारण को पहले हटाओ, साधक कारण लाने की आवश्यकता नहीं वह स्वयं ही आ जायेगा।

25-11-17 "आओ सीखें ध्यान बदलना" प्रातः 9.20

ध्यान देने की बात है। इधर-उधर ध्यान न दें। ध्यान के द्वारा ही कर्म बंध होता है और ध्यान के द्वारा ही कर्मों की निर्जरा होती है। क्या चाहते हो? [निर्जरा] गलत! गलत विषय में ध्यान देने से वह प्राप्त नहीं होगा। सही विषय में ध्यान देने पर ही जो चाहते हो वह प्राप्त होगा। इष्ट को चाहते हैं तो ध्यान परिवर्तन करना जरूरी है। अब परिवर्तन चाहते हैं बोलते हैं न एक ही एक भोजन कब तक करेंगे?

अनंतकाल से एक ही एक क्या ध्यान करना है? एक व्यक्ति देश से विदेश जाता है, माल खरीदने के लिए। और नमूने में कई प्रकार तय करता है क्या खरीदना - क्या नहीं अतः नमूना साथ लेकर चला जाता है। वहाँ जाकर संकल्प करता है ये-ये माल लेना। यहाँ वापस देश आयेगा। माल की परीक्षा करना है क्या आया? पहले देखो। तीन चार व्यक्तियों के हाथ में देता है। जानते हो परखी क्या होती है? Sample नहीं - परखने का नाम है परखी।

अब तीन-चार जगहों से एक बोरे में ऊपर से भी-नीचे से भी क्यों कि ऊपर-ऊपर तो ठीक भर देते हैं नीचे से भी निकाला। चारों तरफ से निकाला। क्या परखा? वो वहाँ है जो नमूना के लिए चुना था/निकाला था। उन्हें (विक्रेता) कहा- ये माल वो नहीं दूसरा है। तो? तो ठीक ले जाओ वापस। आप भी साथ आ सकते हैं। मालुम है परख पहले आवश्यक है। स्व

की परख पहले उसके माध्यम से पर की तुलना (परख) करते हैं।

मोक्षमार्ग में यही ध्यान देने की आवश्यकता है। लक्षण के माध्यम से स्व-पर की परख होती है। ऐसी आज्ञा दी गई है। लेकिन नमूना बदलना नहीं चाहिए। जो लक्षण बताये वह होना जरूरी है। लक्षण तो लक्षण होते हैं- विलक्षण होते हैं। अपना उसमें नहीं मिलाना और दूसरे का अपने में नहीं मिलाना (हम इस के प्रयास में रहते हैं। मिला नहीं तो अनिष्ट होता है। ये आपको समझना है।

स्व तो मिलता नहीं स्वाद मिलता है। पंचेन्द्रियों का स्वाद। आज तक यही हो रहा है। यह धंधा सभी जगह शुरू हो जाता है, बंदा भी एक ही मिलेगा। चला जा रहा है। ऐसा नहीं होना चाहिए। हमारे आचार्यों ने इसीलिए भेद विज्ञान उपदिष्ट किया और कहा तुम अब परखना सीखो। इस संसार को परखो जो अपना नहीं छोड़ दो। छोड़ने की बात ही नहीं मात्र दृष्टि को मोड़लो। आज यह बहुत कठिन हो रहा है। इतना भी नहीं हो रहा। दृष्टि बदलना है सृष्टि अपने आप बदल जायेगी।

इतना अन्तर जानना आवश्यक है। इस प्रकार नमूने से अपना-पराये का भेद, क्या लेना, किसे गले लगाना-किससे बचना ये सब जान सकते हैं। जानकर कुछ न कुछ कदम चलना आवश्यक है जिसको पाना

है। कदम प्रारम्भ करनेसे सारे के सारे माता पिता यह जान जाते हैं कि किस ओर कदम पड़ रहे हैं। कैसे कदम पड़ रहे हैं यह महत्त्वपूर्ण नहीं किस ओर कदम है यह महत्त्वपूर्ण है।

कदम कैसे, पैर कैसे पड़ रहे है लंगड़ा रहा है, कोई बात नहीं। कदम किस दिशा में है ये महत्त्वपूर्ण है। जिस ओर जाना है तो उस ओर फिसलना भी अच्छा है, दूसरी दिशा में भागता भी है तो अच्छा नहीं। इस प्रकार माता पिता देखते हैं। बच्चे लोग सुन रहे हैं। ध्यान से या कान से। बीच-बीच में हम पूछते रहते हैं, ताकि बाद में गड़बड़ न हो जाये। पहले कहा था ध्यान से सुने। तो परखी की बात हमने कही। हमारे पास वह परखी नहीं है।

दृष्टि में ध्यान होना आवश्यक है ये तो वही ध्यान है। वर्षो पहले भी पंगत में खाया वे वही अष्टम है वही स्वाद है, वर्षो बाद भी ध्यान में आ जाता है। यह पंचेन्द्रिय विषय का ध्यान है। सुनो। कान में मन रहेगा तो ध्यान यही रहेगा। बोलते समय ध्यान मुख (जीभ) में, देखते समय आंखो में प्रतिनिधी ज्यादा नहीं हैं। एक ही है उपयोग भिन्न-भिन्न है। वह दृष्टि कान में, जिव्हा में, आंखो में, स्पर्श में, स्मरण में उपयोग करते है पर प्रतिनिधी एक है।

आप परखते रहते है परखने वाला आत्म तत्व है। आप ध्यान से करीये। बच्चा आकर बैठा। अब

इधर ध्यान - उधर ध्यान जाता है। मतलब ध्यान तो सबके पास है "हम ध्यान करना नहीं ध्यान बदलना सिखाते हैं" एक बार ऐसा कर दिया फिर देखो। बदले में हम कुछ भी लेते ही नहीं।

आपका ध्यान बदल जाये। जिसके प्रति मोह हो रहा है, उसके प्रति ध्यान रहे। जिसे आप अपना इष्ट मान रहे हो वह अनिष्ट का मूल है। उसे छोड़ दो। सही में सुख का मूल क्या है? इसे पहचानना जरूरी है अन्यथा अनंत संसार बढ़ने ही वाला है। महाराज तो सब छुड़वा देते हैं। हां! हाथ मत लगाओ। तुमने फेंका कहाँ? हमने फिंकवाया है। जो फेंक दिया उस ओर दृष्टि नहीं ले जाओ।

परवी पर को पर समझकर परवो और स्व को स्व समझकर परवो और स्वीकार करो। इतना ही पर्याप्त समझता हूँ। यद्यपि यह छोटा सा वक्तव्य है परन्तु इसे पचाने हेतु बहुत कसरत करनी होगी। भगवान से प्रार्थना करता हूँ इनकी महनत सफल हो।

अहिंसा परमो धर्मकी जय।नँ

2

रविवार
26-11-17 "धर्म से विज्ञान में खुशबु आती" प्रातः 9.20

आज सभी लोगो का ध्यान विज्ञान की ओर है और विज्ञान नित्य नये कुछ करने के लिए तरह-तरह की चीजें सामने लाकर रख देता है। उन चीजों को पाकर आप अपनी संतान के साथ बहुत ही उल्लास से उस विज्ञान की ओर बढ़ रहे हैं। बिच-बिच में आकर कह भी देते हैं, महाराज! धर्म के साथ विकास हो। आप विज्ञान के साथ बढ़ रहे हैं। अब धर्म और विज्ञान दोनों का मेल कैसे हो? मेल तो होना चाहिए।

दोनों गड़बड़ है। गडबड़ ये है दोनो अपनी-अपनी दिशायें हैं। मुख्य रूप से तो आप विज्ञान का प्रयोग भी सुख प्राप्ति के लिए एवं धर्म का प्रयोग भी सुख की चाह के लिए करते हो। अब बताओ आपके सुख की रक्षा को पूर्ण करने वाला धर्म है या विज्ञान? दोनों से-बिससे काम लेना हो। समझो। बिजली से काम लेते हो पर वही बिजली जब झटका देती है तो बचते हो यानहीं? बोलो। बोली नहीं हुलवा रहे हैं। इस प्रकार बचना भी है और काम भी लेना है।

धर्म के माध्यम से वह विज्ञान काम में आ जाता है कुछ हानि नहीं। उसके साथ चलना है जिससे हम अहित से बच सकते हैं। कोई भी ज्ञान हो धर्म के साथ स्वीकार्य है। दो व्यक्ति से हमने पूछा क्या पूछा अभी नहीं बाद में बतायेंगे। अभी विज्ञान का प्रयोग हो रहा है, लोकप्रियता पाने के लिए, प्रसिद्धि पाने के लिए आगे बढ़ रहा है। हमें नहीं मालुम ये सब आप ही से सुना है। हमें न

ही आगे बढ़ना है न ही पीछे खिसकना है।

दोनों ही बातों को देखते हुए आपके सामने रखना चाहते हैं। प्रतिदिन आपके खाने-पीने की ऐसी-ऐसी चीजें आ रही है। भिन्न-भिन्न जाति की आपके सामने रखी जाती हैं। उदाहरण के लिए टमाटर को ही ले लें। ऐसा लगता है बस अभी-अभी ही लाए हैं। रस से भरा हुआ, वर्ण देखने में बहुत सुन्दर स्वाद-वो मत पूछो! ऐसा वह टमाटर बाजार में उपयोग में लाया जाता है।

पेट भरना है या प्राणों को सुरक्षित रखना है? बताओ! वैज्ञानिकों से पूछा जाता है। पेट में जाने के बाद क्या होगा। वहाँ का स्वाद इधर आ जायेगा तो, उल्टी माना जाता है। डकार आती है तो कथंचित् स्वाद आता है। यदि मट्ठा पीकर आओगे तो कैसी डकार आयेगी एवं खीर खाकर आया है तो कैसी डकार आयेगी? जो खाया है उसी प्रकार की डकार भी आयेगी। आज के वैज्ञानिक डकार भी नहीं लेते जब की बहुत कुछ डकार (खा) जाते हैं। परीक्षण आपके द्वारा आवश्यक है। वह टमाटर जो 5-6 दिन उपरान्त बाजार में लाने लायक है उसे (इंजेक्शन का हाथों से संकेत) तुरन्त। चमत्कार हो गया।

सुन रहे हो? (जी) सुनने मात्र से कुछ नहीं होगा। कान पकड़कर सुनना आवश्यक है। इसी डकार केला, सेवफल, पपीता, साग-सब्जियाँ आदि की आदि की दशा है।

लौकिक प्राणियों लौकी जो अलौकिक है उसे खा रहे हो। 8 दिन पहले ही बाजार में आ रही है। फिर आप गर्व करते हैं ये तो Bajpee है। हमें Bajpee नहीं Be-one अर्थात एक होना है।

ये कोई चमत्कार नहीं। परीक्षण करना है। परीक्षण के उपरान्त ही स्वीकार करना चाहिए। विज्ञान और स्वास्थ्य दोनों गड्बड़ नहीं होनी / बोली। जो व्यक्ति इंजेक्शन लगा दिया। पसीना आया ही नहीं। सुई को पसीना नहीं आता। organic खाद देकर उत्पादन करो फिर देखो भीतर भी और बाहर भी। भीतर के तत्व एवं बाहर भी खुशबु आप प्रभावित हुये बिना नहीं रहेंगे। Light नहीं delighted। पैसे की कोई बात ही नहीं। आप कहेंगे - प्रत्येक दिन ला दिया करो जो भी लेना चाहो।

अपने यहाँ देखने आ जाते हैं प्रत्येक वस्तु के लिए। धार्मिक क्षेत्र में भी ये होने लगा। हर बात में इंजेक्शन लगने लगा। वैज्ञानिक जीवन जी रहे हैं। हम। नीचे जा रहे हैं, ऊपर नहीं। घी का दिया जलाया। नहीं। जलाने वाले तत्व समाप्त हो गये। तुम तो जिन्स पहनने वाले हो। कहाँ से लाये - कौनसे यन्त्र से बनायी। अभी जो पहने हो (धोती-चुपड़या) क्या अनुभव हो रहा है। पुछो जिसने पहन रखी है। (विनोद कोयला के दोनों बेटे)

गर्मी में ठंड और ठंड में गर्म ऐसे ये कपड़े (वस्त्र) वातानुकूलित है। और आज का

विज्ञान बातानुकूल है। उसकी बातों पर विश्वास ही नहीं। न ही उसकी बातों से ये जमने वाला। दूध सही नहीं जमा तो घी नहीं प्राप्त होने वाला।

घी चाहिए तो सबसे पहले दूध अच्छी क्वालीटी का फिर जामन नही भी हो तो कोई बात नहीं बादाम- नरेठी - सिक्का आदि से भी, ग्रामीणों से पुछलो। फिर घर के under ground में भी हो आप 10वीं मंजील पर हो खुशबु से मुंह में पानी आ जाता है। ये धर्म का महत्त्व है। "विज्ञान से धर्म में नहीं, धर्म से विज्ञान में खुशबु लाना आवश्यक है।" विज्ञान बदनाम होता जा रहा है। हम नाम नहीं चाहते बदनाम तो बहुत दूर।

इस ओर बहुत पहले आना था। देर-सवेर आ गये कोई बात नहीं। विपक्ष विज्ञान को मानता है मैं नहीं। दिमाग ठिक करना आवश्यक है, भारत को ठीक करना है। विदेश आरती भले ही घासलेट से करे। अब तो तेल के बिना आरती हो रही है। करंट से आरती। आनंद नहीं आयेगा। गाय का घी नहीं डालोगे दीपक में तब तक श्री जी नहीं दिखेंगे।

इस प्रकार हमने आलोचना नहीं की आपकी ही बात आपके सामने हमने रखी। हथकरघा को अपनाओ। जो बात कही उसे आगे बढ़ायेंगे। भारत के अतीत को प्रतीती में लायेंगे, ऐसा हमारा भाव है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। हँ

27-11-17 "ध्वनि का प्रभाव" प्रातः 9 बजे

प्रभु बोलते नहीं। न ही संकेत देते हैं। किसी को रोकने की बात ही नहीं होती क्यों की किसी को संकेत देने की बात नहीं इसलिए उनका किसी से संघर्ष नहीं। राग भी नहीं-द्वेष भी नहीं। इसी को लेकर उनका थोड़ा-थोड़ा अनुकरण करना है। जो भी अपने आप को प्रभु का शिष्य, उनका आराधारी बनने का भाव रखते हैं। हम दूसरे के लिए नहीं कह रहे। जो इसका अनुकरण करता है उसका प्रमोशन अवश्य होता है।

अनुकरण मात्र बाहरी नहीं भीतरी हो। जैसे अभी पुरे भारत में स्वच्छता अभियान चल रहा है। यह स्वच्छता भीतरी है या बाहरी यह जानना अतिआवश्यक है। यदि भीतरी स्वच्छता नहीं है तो बाहरी स्वच्छता का कोई मतलब नहीं रहेगा। बाहर तो दिवाली मना रहे हो और भीतर होली। बोलो! कौनसा महोत्सव माना जायेगा। भीतर में होली है तो फिर दिवाली का क्या अर्थ रहेगा। भीतरी दिवाली से ही वितरागता आ पायेगी। होली मिटी नहि कि दिवाली आ गयी। एक प्रकार से हम खुश है। इसलिए - "ध्वनि दो, गति मंदी हो, नीजि, और औरों की" गाड़ियों में लिखा रहता है, Horn Please, दया करके/कृपा करके ध्वनि दिजिये।

इस ध्वनि से स्वयं एवं दूसरे दोनों की गति में अन्तर आता है। कोई भी आकस्मिक आवाज भय के रूप में परिवर्तन हो जाती है। आप बैठे है, वो भी चुपचाप धीरे से आकर बैठ गया। आपको पता ही नहीं।

एकदम से आवाज कर दी।

बोलो! बिचकेगा की नहीं?

अंधेरा था, एकदम से चमक गये। इसलिए वह कहता है-कुछ संकेत तो दे देते। इसी को ~~धीरे~~ यदि ज्यादा हो गया तो हार्ट पर भी प्रभाव पड़ता है, वह निकल भी सकता है। शास्त्रों में इसे आकस्मिक भय बोलते हैं। सात भयों में एक भय-आकस्मिक भय भी है। आपके द्वारा ध्वनि देने से दूसरे की उदीरणा हो ~~सकती~~ है, होती है। मन पर दबाव पड़ सकता है। मन के दबाव के साथ रक्त-चाप की आवश्यकता पड़ती है।

आप लोग इसे क्या बोलते हैं? [Blood-Pressure] अनेक प्रकार की ध्वनियाँ करते-करते बीमा बढ़ता जा रहा है। बच्चों में भी असर पड़ रहा है। अब रक्त संचार से समझ में नहीं आता ब्लाड-प्रेशर से समझते हैं। ये अंग्रेजी की ध्वनि का प्रभाव है। आप ध्वनि देंगे सामने वाला अपने आप ही हाथ जोड़कर खड़ा हो जायेगा। इतना संकेत पर्याप्त है- मैं समय पर आ गया हूँ। आपने हमें बुलाया है, वह तैयार है।

इससे ध्वनि की/कहने की कोई भी आवश्यकता नहीं। आप लोग बोलते हो ना? "दुर्घटना से देर भली"। इसलिए आपको समाप्त होने की जरूरत नहीं। ध्वनि की भी जरूरत नहीं। एक्सीडेन्ट नहीं होंगे। प्रायःकर जीतने भी एक्सीडेन्ट होते हैं सब नींद के झोंके में होते हैं/वह झोंका

नहीं धोखा होता है।

उसमें भी पी कर के बैठ जाता है। पी का अर्थ जानते हो। भोजन तो ठीक है पी का अर्थ हमें ध्वनि की ओर भी ले जाता है। ध्वनि देने से आपकी गति मंद हो जाती है। साइकल पर जो जाता है - घंटी दबाया ध्वनि के लिए, इसका Balance / नियन्त्रण नहीं रहा। तो क्या हुआ? गति मंदी हो। किसकी? निजी और औरों की। स्वयं की भी और दूसरे की भी। किसी को संकेत न देते हुये अपनी गति से चलते जाये। इसके लिए पगडंडी पर्याप्त है।

Subway - Pathway ये सब वेही हैं। सुनकर आश्चर्य होता है। कहाँ पर यह भीड़ भाग रही है। हमारे पास आते है - महाराज आशीर्वाद दे दो। कौनसे कर्म का उदय है? आँखे बंद करके बेहोशी के साथ चला रहे हैं, पक्का है। ध्वनि से पर को भी दुःख होता है। ऐसी ध्वनि न करो। कोई महोत्सव मना रहा है - आप रोने बैठ जाओ तो कैसा लगेगा? इस ध्वनि द्वारा परिवर्तन भी होता है, हजारों को प्रसन्न भी कर सकते हैं। ये भी ध्वनि पर आधारित है। ये मंत्र जब तक फलीभूत नहीं होता तब तक प्रभु बोलते ही नहीं।

जब केवलज्ञान हो जाता है, समवशरण की रचना होती है तब अपनी इच्छानुसार नहीं - कर्तव्य के अनुसार बोलते हैं। इसे दिव्य - ध्वनि कहते हैं। राग भी नहीं - द्वेष भी नहीं। उस ध्वनि से तिर्यञ्चों का भी भला हो जाता है। आपसे अच्छा वह तिर्यञ्च है। आपके लिए भाषा की आवश्यकता पड़ती है, तिर्यञ्च

के लिए भाषा की आवश्यकता ही नहीं। थोड़ा सा संकेत भर हो जाये, सभी समझ लेते हैं।

इस रहस्य को समझो। आपकी ध्वनि हृदय पर कैसा प्रभाव डाल रही है? मैं कह नहीं सकता, प्रारम्भिक दशा में ध्वनि अथवा आज्ञा न देओ। पुचकार के काम लेओ। पुचकार के रखने पर थोड़ा सा नजर उठाकर बोल दो - बेटा इधर देखो! इतना पर्याप्त है। आज मेहनत ज्यादा हो रही है. इसकी जरूरत ही नहीं है। और ओरों की गति मंदी पड़ रही है। मति स्वं गति दोनों पर प्रभाव पड़ने से अवरुद्ध हो रही है। इतना ही कहना चाहता हूँ। प्रायकर इसी कारण से दुर्घटना हो जाती है, चोट लग जाती है फिर इलाज हेतु अन्यत्र ले जाते हैं। ये सब मात्र उस ध्वनि का परिणाम है।

यह खतरनाक है। इसे वचन बल कहा है। कई लोग दूसरो पर प्रभाव डालने हेतु वचन का प्रयोग करते है। कैसे? अमेरिका ने कहा- ऐसा नहीं होगा तो हम Beto-Power करेंगे। सामने वाले ने भी कहा- हम भी Beto Power करेंगे। अमेरिका ने फिर कहा हम और Beto Power यो पॉवर कोई काम के नहीं। बल का प्रयोग न करें। प्राइमरी के बच्चे चोट को भी भूल जाता है पर थप्पड़ को...। बच्चों का पालन करना बहुत कठिन है। शिक्षिकाओं से मेरा कहना है- पुचकार का प्रयोग ज्यादा करीयो।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

[टीकमगढ़ बस]

28-11-17 "बुंदेलखण्ड का गढ़ है - टीकमगढ़" प्रातः 9.20

आप लोग प्रतिवर्ष अपने दुकान चलाने वाले हैं। बही-खाता जो रखी गयी है, उसको ठीक-ठाक करके नये वर्ष के लिए शुभ के साथ भगवान महावीर स्वामी को याद करते हैं। ये मैं इसलिए कह रहा हूँ कि जिस प्रकार आपकी दुकान है, उसी प्रकार मेरी भी दुकान है। जब कभी पुराने ग्राहक आ जाते हैं, क्यों की उधार देने के बाद ग्राहक आकर आते नहीं। जब आते हैं तो स्वभाविक है जो पुराना उधार है, उसको याद दिलाते हैं। याद दिलाकर पुरानी उधार चाहते हैं।

नये से भी अधिक जरूरी है, जहां से उधार मिलता है उसका अनुकरण करना चाहिए। 33 वर्ष बाद आ रहे हैं। ये भी तो बताओ की वहाँ वाचना, पपौरा जी में वाचना, टीकमगढ़ में महावीर जयन्ती एवं चातुर्मास किसने करवाया? टीकमगढ़ वालों ने ही करवाया। अभी तालियाँ ऐसी नहीं - तालीयाँ तो वही है। पुराना सोना पुराना भले ही हो पर खरा होता है, नया तो बाद में आया। टीकमगढ़ में गया, मैं बहीखाता दिखाता नहीं, बुद्धो को देखकर सब याद आ जाती है। सही तो ठीक है। गलत तो नहीं है न?

हमें चिंता नहीं होती, थाली में रस भरपुर है। ये अवश्य है। आजु-बाजु में क्षेत्र बहुत है - अहार जी; पपौरा जी, बंधा जी, नवागढ़, बड़ागांव भी हैं। पपौरा में तो ऐसा अपने आपको विश्व के कोने-कोने से लोग याद रखते हैं। बंधा जी भी अच्छा क्षेत्र है।

जब तक टीकमगढ़ के भक्तों का बंधन बंधा जी से नहीं तब तक काम नहीं होता / इसलिए टीकमगढ़ उससे बंधा है।

बोलो! चारों तरफ से गाँव इतने बिखरे हुये हैं / इतने गाँव अन्यत्र सघन नहीं हैं। बुंदेलखण्ड का गढ़ है तो टीकमगढ़ है। छत्तीसगढ़ वाले ऐसा नहीं सोचना हमारा ही गढ़ है और भी है कौनसा टीकम-गढ़ / एक क्षेत्र नहीं कई क्षेत्रों को चला रहे हैं। टीकमगढ़ वालों की कई प्रार्थनायें हैं / शायद हमें देखकर पूरी नहीं कर पाये / पहले से ही लिस्ट बना लाते / क्षमय्यो बोली / मैं तो बना लेता हूँ (लिस्ट) / कोई बात नहीं इनमें से 4-5 माँगे भी फल जाये आपका काम हो जायेगा / मैं कहीं भी उत्तर नहीं देता, आज मौका समझ में आ गया। क्यों की इस बात को स्वीकार कर उनकी बात करना है।

मंगलाचरण अच्छा हुआ बताते हैं। हम आते तो पुराना ही कहलाता / इसका अपने आप में अलग आनंद है। जहाँ कहीं से भी आते हैं - पंचकल्याणक की मांग सुनी है / हमेशा-हमेशा सुनते रहते हैं। आज इस कॉलोनी में वेदी शिलान्यास हुआ आज वहाँ मन्दिर का शिलान्यास हुआ / इतना बड़ा है कि तीनों चातुर्मास वहीं हो जायें / वर्षाकाल के बाद शीतकाल, उसके बाद ग्रीष्मकाल इतने ही करलो महाराज / ऐसे-ऐसे नगर हैं चुनाव होते हैं चाहे लोकसभा के हो या विधान सभा के हो, कोई भी खड़ा हो जीतेगा वही जिधर जैन समाज के वोट होंगे। हार-जीत

की बात नहीं, समाज का योगदान भी है।

प्रतिभास्थली जबलपुर में आये थे अष्टाह्निका के पूर्व। महाराज, एक बहुत बड़ा विधान कराना चाहते हैं। समता सागर जी - प्रमाणसागर जी का चातुर्मास सम्पन्न हो रहा था। आप सभी ने कहा - इस विधान में धार्मिक एवं सार्वजनिक सभी की, जैन-जैनेतर सभी लाभान्वित होंगे। अन्यथा महाराज लोग रखने वाले नहीं है। जल्दी - जल्दी पिच्छी परिवर्तन कर, विहार करा है। जैसा आप कहेंगे, वैसा ही हम करेंगे, बस आप आशीर्वाद दे दो।

हमने कहा - इस विधान का आपको एक ही लक्ष्य रखना है। जो भी आजु - बाजु में, कहीं पर भी अनाथ पशु है उनके लिए स्थान इस विधान के निमित्त से बन जाये। समाज ने बहुत उत्साह से आग किया और भी राशि एकत्रित हो गयी। जितनी भी गौशालायें है उनमें यह सबसे ऊपर अपना झण्डा गाड़ेगा। अभिमान नहीं करना। युवाओं को कहा - तुम बुड्ढो से राशि लेओ पर तोड़ो नहीं एवं बोलो नहीं। बोली भी बोलकर नहीं लेना। ऐसे - ऐसे गुरुदेव के लाल है।

पहले हम चातुर्मास कर चुके हैं। कौनसा विधान था? हाँ! कल्पद्रुम विधान। जो कल्पना करो वह पूर्ण होगी। पशुओं का पालन - पोषण होगा। योग से सभी ने सहयोग किया। सरकार ने भी सहयोग किया। आज

वह प्रथम श्रेणी में है।

दयोदय महासंघ ने सम्मान किया। मध्यप्रदेश सरकार ने भी, वह तो इस प्रकार के कार्यों के लिए योगदान करती ही रहती है। इस प्रकार अब वह दिन दुनी - रात चौगुनी प्रगति को प्राप्त है। अभी पंचकल्याणक होना है। केवल होना है। अभी हमने महाराज को भी कुछ भी संकेत नहीं दिया है। जो संकेत देंगे उन्हें ही देंगे आपको नहीं। पहले से पेपर आउट हो जाता है तो आप नकल करोगे। हम नकल नहीं करवाना चाहते हम तो A-1 काम होना चाहिए।

इसका अनुकरण अन्यत्र भी हो इस प्रकार का कार्य करना चाहिए। इसमें बुंदेलखण्ड हमेशा ही अगुआ रहा है। हाथ में झंडा लेकर रखते हैं। हमारा ऐसे लोगों को आशीर्वाद है। महाराज को अभी भेजा है, अभी वे प्रवास में हैं। आपको पहले मालुम चल जाये तो सो जाते हैं। वैसे भी हम बुंदेलखण्ड का चप्पा-चप्पा नाप चुके हैं, मालुम है। श्रावकों के निमित्त से कोई न कोई पगडंडी तो मिल ही जाती है। पहले तो छत्तीसगढ़ भी मध्यप्रदेश में ही शामिल है। सीमाओं के कारण ये भेद हो गया। यहाँ भी अधिकतर बुंदेलखण्ड वाले हैं। चन्दूगीरि आपके सामने हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नैं

29-11-17 "टेका अनमोल का" प्रातः 9.20

जो अपने लिए दिशा बोध मिलता है उसके लिए ज्यादा प्रयास करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। संकेत भी अपने लिए पर्याप्त हो जाता है। गाय के गले में रस्सी बाँधी जाती है। प्रातःकाल उसे जंगल में चरने हेतु भेज दिया जाता है, शाम को वापस आ जाती है फिर से गले में रस्सी बांध दी जाती है। ये उसका व्यवस्थित कार्यक्रम होता है।

सबके गले में रस्सी बांधी जाय, ऐसा भी नहीं है। गाय के बछड़े के गले में रस्सी नहीं पर वह कभी भी भटकता नहीं। माँ का अस्तित्व उसकी निगाह में है। वह संकेत दे देती है- वह आ जाता है। जो भाव रहता है, गले में आ जाता है। कैसे हो जाता है? गाय आगे है बछड़ा पीछे चल रहा है। गाय रुकती है- पीछे क्यों रहता है। वह रुकता मैं आ गया, आगे बढ़ जाता है, दूर चला जाता है वहाँ खड़ा नहीं होता पुनः भागता हुआ आता है और माँ के पीछे ही चलने लगता है।

ऐसे ही भगवान से भक्तों का काम होता रहता है। बस संबंध सही बना रहे। जैसे लट्टू का सम्बन्ध वायर से रहता है। वायर का सम्बन्ध करन्ट से जुड़ा रहे। आप बिल जमा नहीं कराओगे तुरंत कनेक्शन काट दिया जायेगा। इसी तरह देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति नहीं करोगे कनेक्शन कट लेंगे फिर सम्बन्ध समाप्त। कहीं भी रहें भक्ति से सब लोग बंध जाते हैं। ये

सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ है।

यह उपलब्धि हमें हुयी। जिनसे हमें दिशा प्राप्त होती है। किसी को जीवन के प्रारम्भ में उनसे वह दिशा मिल जाती है किसी को जीवन के अन्त में तो किसी को प्रौढ़ अवस्था में दिशा मिली। यह सब अपने-अपने अनुसार होता है। ये संबंध बना रहना चाहिए। यह भावों का बन्धन है। इसीलिए सदैव हमें भावों की ओर देखते रहना चाहिए। जिससे जीवन में प्रतिक्षण प्रकाशमिकता रहें; तथा अलौकिक वृत्ति होती है।

वह अनमोल है। मोल का त्याग करो तब अनमोल की प्राप्ति होती है। ये आप देखो, अनमोल चहते क्या हो। मोल से मोह बना हुआ है। मोह के कारण अनमोल को भूल जाते हैं। प्रभु की प्राप्ति चाहते हो तो मोल से धीरे-धीरे सम्बन्ध कम करो। इसीलिए आपको दान के लिए कहा जाता है। दो प्रकार के देके होते हैं-आप मोल का देका लेते हो, हम अनमोल का देका देते है। अनमोल के लिए कभी ताला-कुंची की आवश्यकता नहीं, चोरी का भय नहीं। इसलिए आप मोल वाले पदार्थ क्यों, अनमोल वाले पदार्थ रखीये।

इससे सुख की नींद सोओगे। नींद की गोली नहीं खानी पड़ेगी। मोल वाले की जगह अनमोल वाला सदैव निश्चिंत रहता है। आप भी निर्विकल्प बनें। बस सच्चे देव-शास्त्र-गुरु शरण में रहें फिर जहां भी रहो सही दिशा में, सही स्थान पर आप पहुँच जायेंगे।

अहिंसा परमोधर्म की जय हो

30-11-17 "अनुभवी का अनुभव" प्रातः 9.20

पिताजी ने बहुत ही समझाया, चुंकी आधुनिक था लड़का अतः उसको समझ में... कम आया। आया तो सैद्धान्तिक कम आया। पिताजी को तो चिंता थी ही। अभी कम समझ में आया है बाद में स्वयं ही ढूंढता हुआ आयेगा। अपनी ही बात को सुधारने के लिए गया। जो-जो मन में भावना थी, मैं कर सकता हूँ। दिन निकल गये। पुरी-पुरी कामना पुरी हो गयी। कैसा लग रहा है? हे मन।

मन कहता है- मन नहीं लग रहा है। पिताजी ने भी क्या सोचा होगा? पिताजी का मन क्या था? अब धीरे-धीरे मन के समझ में आ रहा है। उस समय तो होश-हवश छोड़कर मनमाना करता रहता है। विस्तार में लगा रहता है। अब सोचता है वापस कैसे जाऊँ? किन्तु वह समझ जाता है इस विस्तार में कुछ नहीं रखा है। अब मान लो वह विदेश में था- वापस आया। सर्वप्रथम भारत आते ही यहाँ की मिट्टी को अपने माथे पर लगाता है। कहता है- इसी मिट्टी के माध्यम से मैं लौटकर आया हूँ। पिताजी के पास जाता है।

उन्हें तो पहले से ही ज्ञात था कि ऐसा होगा। वे जानते है कि संध्या किस ओर बहती है। अतः बेटे को देख स्नेह से बोले- "सुबह का भूला शाम को लौट आये तो भूला नहीं कहाता" बेटा तुमसे भी ज्यादा मुझे प्रसन्नता है। ये उदाहरण मैं इसलिए दे रहा हूँ कि आज आप सभी अपने जीवन में अनुभव कर रहे होंगे। बच्चे मानते ही नहीं। शुरुआत में ऐसा ही होता है, बाद में

में रास्ता नजर आता है।

आज देवलोग धरती पर उतरकर भजन करने आये हैं। (जगदलपुर के पात्र) धरती के पूतों सुनलो। हम ये करेंगे- ये करेंगे। इनको देखलो देव होकर भी चैन नहीं। सोचते हैं- कहाँ चलें - चलो चन्द्रगिरी चलो। आदिवासी इलाके में, यहाँ जंगल में क्या रखा है? सही बोलो देवलोगो। सभी लोग आपको ही देख रहे हैं। यहां पर खुशी मिल रही है कि नहीं। यैऽऽऽ- मतलब हम ठीक है। हम सुबह के भूले नहीं।

अच्छा दिया। देवलोग भरक कर अरक जाते हैं। भरक क्या गये कितने ही पीछे वाले भी चले जाते हैं। हे प्रभु! आपका नामस्मरण ही हमारा सहारा है। जगदलपुर वालों ने सोचा - जो करना है समय पर कर लो। दूसरे के यहाँ क्यों जायें, अपने यहीं यह पूरा आयोजन करें। डोंगरगाँव में आये थे। पण्डित जी जयकुमार भी वहीं थे। उन्होंने कहा- कोण्डा गाँव में सबको तुरन्त बुलाकर एक मिटिंग करनी है। कैसे होगा? क्या होगा? हमने कहा होगा ऐसा ही होगा। एक ही दिन में मिटिंग करके हमारे पास आ गये। सारे भगवान जगदलपुर में एकत्रित होंगे। अद्भुत ही अच्छा हो गया।

पण्डित जी हमारे सामने ही सामने बुंदेलखण्ड सागर में पढ़े फिर कोंडा में अध्यापन कार्य कराया। वहीं के पण्डित जी हो गये। आदिवासीयों के बीच रहकर पूरा जीवन इसी इलाके में लगाया। हमने कहा- ये भी आदिवासी है, देखलो। समय पर आप लोग आये हमने भी समय पर काम कर दिया।

आसपास के 5-6 गांव नारायणपुर, कोंडा, अंतपुर, गिदम आदि से श्री जी एक ही स्थान पर से आये। जिनकी समय पर सूर्य मंत्र देकर प्रतिष्ठा होगी।

पाँच गांव का पंच कल्याणक था सो हमने भी संघ के 5 महाराजों को जो अच्छी गाड़ियाँ थी भेज दिया। वहीं बीच में गड़बड़ न हो जाये। सीधे-सीधे दौंगरगाँव में आयें कुछ नहीं करवाये। हमने भी जल्दी ही भेज दिया ताकि समय पर पात्रों का चयन आदि समस्त कार्य हो जायें। अभी पण्डित जी हरीयाणा (हाँसी) में व्यस्त हैं। पूर्ण होने को ही है। बीच में कुछ अन्तराल, सब मिलकर आये हो। कैसा लग रहा है। [अच्छा]

भूलना नहीं। मातृभूमि को कभी नहीं भूलना अन्यथा गड़बड़ हो जायेगी। "जहाँ तपस्या करें वही मातृभूमि है, मन भटक जाता है वह भोग भूमी है" हमें भी अच्छा लगा। समय पर पुरुषार्थ करते हैं, चुटकी बजाते-बजाते ही बड़े-बड़े काम हो जाते हैं। जिस उत्साह के साथ संकल्प लिया उसी उत्साह के साथ श्री जी को अपने-अपने स्थान पर विराजमान करना है। इसमें असावधानी न हो। प्रकृति के अनुसार जहाँ के लोग हैं। उनको भी इसका ज्यादा से ज्यादा लाभ मिले। यहाँ से भी 10 प्रतिमा जा रही है। ये अयोध्या का अतिशय है। यहाँ भी प्रतिष्ठा होना है (मन्दिर में)। उत्साह - निष्ठा के साथ सभी कार्य समय पर सम्पन्न करें। जिन्होंने बनवायी उन्हें बाद में मिलेगी, आपको तो बनी बनायी रसोई ले रहे हो।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नें

01-12-17 जान लेता-अजान फल [Fast food] प्रातः 9.20

एक व्यक्ति जंगल की ओर गया था और जाता-जाता बहुत दुर गया। उसे भूख भी लग आयी और प्यास भी। इधर-उधर देखता है। घना जंगल है, हरा-भरा है, विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे है, गुल्म-गुच्छों से लदे है। वह देख रहा है मेरे लायक कोई फल मिल जाये, जिससे मैं अपनी क्षुधा को दूर कर सकूं। क्षुधा को दूर करना है या रस लेना है। ये दो बातें हैं।

संसारी प्राणी किसी भी पदार्थ में रस ढूंढता है, जबकि वैरागी। मुमुक्षु। सम्यग्दृष्टि रस नहीं ढूंढता क्यों कि वह जानता है कि इसमें रस तो होता ही है। प्रत्येक पदार्थ में रूप, रस, गंध और स्पर्श चारों होते हैं। आप केवल रस की ही क्यों बात करते हो, यह गलती है ठीक नहीं। 99 अंक ही मिलेंगे 100 नहीं। लेने वाला होना चाहिए, देने वालेको देने ही होंगे अन्यथा वह कहेगा मुझे 100 क्यों नहीं मिले। अब वह व्यक्ति समझ नहीं पाया। आकुलता में आ गया। वह क्षुधा के भार से पीड़ित तो था ही।

उस व्यक्ति ने देखा फलों से लदा एक वृक्ष झूल रहा है। ऐसा वृक्ष जीवन में उसने कभी नहीं देखा। देखने की अपेक्षा से वह बहुत सुहाना। थोड़ा पास में गया, गंध आने लगी उसे नशा चढ़ गया कब खाऊंगा मैं इसे। अब हाथ में लेता है, बिल्कुल मुलायम। वह कहता है - सारा परिश्रम हो गया। एक मात्र रह गया रस लेना। बस खाकर स्वस्थ हो जाऊंगा और

सो जाऊंगा। तोड़कर खाने को ही था तभी -

आकाश से ध्वनि आयी!

सोच ले। रूप, गंध, स्पर्श देखकर मन ने भी स्वीकार कर लिया। मन का काम ही ऐसा है। पर ध्वनि - खबरदार! इतना बड़ा वृक्ष है, फलों से लदा है। वृक्ष भी चाहता होगा कि कोई राहगिरी आये और मेरे फलों को खायें। जैसे आप लोग प्रतिदिन पात्र की तलाश में रहते हो। मेरे चौके में कोई पात्र आ जाये। किस प्रकार की आवाज आ रही है - वह समझ नहीं पाया। अभी तक तो सुरक्षित था, अब थोड़ा भी कदम उठाऊंगा असुरक्षित हो जाऊंगा।

यह बात कोई समझा रहा है। कौन समझा रहा है? आयुकर्म है उसका नाम। वह बहुत दृढ़ रहता है। जब तक इसका उदय है मरण नहीं होना। मरण होते ही आयु भी समाप्त। साता के उदय में मरण हो तो भी अहसास नहीं हो पाता। अतः जैनियों के यहाँ जिसको कभी नहीं खाया, जिसका कभी परिचय नहीं है उसे कभी भी मत खाओ। जिसका परिचय नहीं - अजान मानकर, कह दो। गंध - स्पर्श - रूप अच्छा है पर पहचान नहीं है। आप मेहमान नहीं हैं। कई बार मेहमान के यहाँ परोसते हैं। आपने एक को भी हाथ नहीं लगाया। देवलिगढ़ में तो प्रसिद्ध है। होता है किन्हीं।

जिसके बारे में जानकारी नहीं है, उसे नहीं खा सकते हैं। बच्चों को इस प्रकार का व्रत देते हैं। आपकी क्या कहें - आप बच्चों के भी बच्चे हो गये। कौन देगा आपको व्रत। आप कह देंगे महाराज! जिन्दगी पड़ी है, पर थोड़ा

सा खाने में क्या होता है?

इसलिये अजान फल का त्याग जिन्दगी की रक्षा के लिए अनिवार्य है। इसी को किंपाक फल बोलते हैं। किं यानि कैसा याद मतलब फल। कैसा/क्या फल है। पंचेन्द्रिय के विषय इस किंपाक फल की भांति ही है। सुन रहे हैं? थोड़ा सा न मिले तो फिर देखो। सब मीया-फावा हो गया। चुरंत कह देते हो। चलो! कहां? घरेड्ड। बुंदेलखण्ड में ऐसे ही कहते है। घरेड्ड। हम बुंदेलखण्ड से आकर यहां बसे हैं, ऐसा आप बोलते हैं। हम भी बुंदेलखण्ड से ही आये हैं पर बसे नहीं है। हमारा संकल्प है। बसों को दुःख हो तो थोड़ा सा दे दो जिससे उसका दुःख दुर हो जाये परन्तु क्या करें।

यह जीव जिस गति में जाता है, वहीं का हो जाता है। बड़ा वैचित्र्य है-मोह का। बस! इतना ही पर्याप्त है। आप समझ गये होंगे। पुरा समझे या अधुरा समझे ये तो आप ही जानो। बहुत कठीन है। प्रत्येक पदार्थ में रस होता है। रस को समझना बहुत जरूरी है। इस रस को समझ लेने पर आम्रस भी क्या करेगा। बहुत समझदार हो। जो इसे समझ लेता है (आम्रस) धीरे-धीरे पंचेन्द्रिय विषयों को कम करता चला जाता है। भीतर से अपने भावों को और पुष्ट बनाता चला जाता है। यही मात्र क्रम है, यही मात्र ज्ञातव्य है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नुँ

02-12-17 शक्तिशाली कौन? प्रातः 9.20

आप लोगो को ज्ञात होगा कि उसके माध्यम से ही इस विषय को आपके सामने रख रहा हूं। अग्नि जलती है। यह कहने में आता है अग्नि जलती ही नहीं ईंधन जलता है। जब तक ईंधन जलता रहेगा अग्नि रहेगी और ईंधन समाप्त तो अग्नि भी समाप्त हो जायेगी। ये उसका स्वभाव है। जब अग्नि जलाता है किसी व्यक्ति ने उस पर राख डाल दी तो वह अग्नि अपनी शक्ति खो देती है। यहाँ तक भी लगता है कि थी भी कि नहीं।

ये भी ध्यान होगा कि जलाने की जरूरत नहीं, भीतर रहती है। प्रमाण उस पर कितना भी राख डालो, धुंआ उठता रहता है। यह धुंआ बताता है कि मैं उससे अनन्य हूं। उसके बिना नहीं रह सकता हूं। बाहर अग्नि नहीं आ या रही है। उसका स्वभाव होने से ऐसा है। अग्नि के ऊपर धुंआ स्वभाव है। इसी प्रकार आत्मा दिखती नहीं, इसे बताया भी नहीं जा सकता किन्तु संवेदना में आती है। आप शरीर को ही आपा मान रहे हो। शरीर तो ईंधन मात्र है। आत्मा अग्नि है। संचालक अलग है और गाड़ी अलग है।

संचालक गाड़ी को चलाता है। यह गाड़ी कभी भी रुक सकती है, मान लो ड्राइवर न हो तो। गाड़ी यहीं पड़ी रहती है। चाहे वह गाड़ी सोने की भी क्यों न हो, ले

जाओ। इस रहस्य को अच्छी तरह समझ लो।

जिसने समझ लिया उसका बेड़ा पार हो गया। बेड़ा पार होने के लिए एक नियम है कि इसी के साथ चलना है। चलते-चलते हम अपने स्वभाव को प्राप्त कर सकते हैं। अग्नि को ऐसे पकड़ नहीं सकते, ईंधन के माध्यम से ही उसे पकड़ सकते हैं। इसी प्रकार आत्मा को नहीं पकड़ सकते किन्तु आत्म प्रदेश के आधार पर हम उसे जान सकते हैं। स्पीकर (माइक) कभी बोलता नहीं, बोलने वाला कोई और है। सुनते कान हैं पर सुनने वाला कोई और है। वो चला गया कान यहीं पड़े रह जायेंगे। आँखे खिड़की हैं पर तभी जब झांकने वाला हो।

इस प्रकार हाथ-पांव आदि सब उठते हैं, जब भीतर भाव चल रहे हो। फिर भी आप कहते हो - मैं बैठ रहा हूँ, मैं चल रहा हूँ, मैं उठ रहा हूँ आदि। ये जो मैं कह रहे हो यही बता रहा है कि इन सब क्रियाओं से अलग कोई है। यही भेद-विज्ञान है। जैसे ही वह इसका पृथक अनुभव करने लगता है बहुत जल्दी ही इस जेल से बाहर हो जाता है। अब जेल है तो आप कैदी हैं। कैदी है तो जरूर गुनाह है। जेल कभी भी कैदी नहीं होता। उस कैदी को उसमें रखा जाता है। आज तक वही अपराध कर रहा है।

एक बार बोध हो जाये, तो अनादिकाल का यह अपराधी यहीं रहने वाला इस जेल

से छूट जायेगा। अपराध को स्वीकारना होगा तभी उद्धार हो सकता है। इतना ही पर्याप्त समझता हूँ।

आज आपके यहाँ तीन-तीन महाराज (आचार्य वर्धमान सागर + 2 मुनि) भी आये हैं। हमारे उदाहरण को याद रखना। धुंआ - अग्नि, गाड़ी - ड्राइवर, एवं जेल - कैदी। इनके साथ रहता है तो वह सोचता है थोड़ा चलाकर तो देखलें जब भी चलने का स्वभाव तो स्वयं का है। इसी को जीवन में उतार कर अपना कल्याण करें।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

संस्मरण -

(1) अजित प्रसाद जी (जो घिस वालों) के पिताजी महावीर प्रसाद जी को गले में कैंसर बताया। जब सब तरफ से हाथ खड़े हो गये तो आचार्यश्री के पास लाये। आचार्यश्री ने जैसा बताया वैसा ही उन्होंने किया लगभग 17 वर्ष तक वे जीवित रहे। आयुकर्म को पूर्ण करके ही गये।

(2) ऐलक निशंक सागर जी के हाथ में फोड़ा था। बंगलुरु में उस जमाने में 60,000 रु. जमा भी करा दिये ऑपरेशन हेतु। (सन् 1982-83) एक इमरजेन्सी केस आने से उनका ऑपरेशन कुछ देर बाद होना था। वह व्यक्ति बच न सका। इनको भय लगा - बोधरत्न जाने के बहाने सीधे भागकर बस में बैठ गुरु-चरणों में आ गये। गुरुजी ने जैसा कहा वैसा किया लगभग 10 वर्ष बाद गये। एक मुनिराज ने कहा - जब आप ईडर में थे एक बार वे (निशंकसागर जी) बिना बताये वंदना हेतु चले गये। आपने डांटा।

आ. श्री ने बड़े ही स्नेह से कहा - अभी भी तो बिना बताये चले गये। (मतलब गुरुजी उन्हें उस ओर नहीं भेजना चाहते थे क्योंकि उन्हें ईर्ष्या सहन नहीं हो पाती थी)

(3) आ. श्री की वैयावृत्ति के समय उन्होंने बताया - मूकमाटी में जैनेत्तर लोगों को उन्हीं के ग्रन्थों के आधार पर जैन दर्शन का प्रतिपादन कर, उन्हें हारने पर विवश कर दिया। पहले उपनिषद् के बारे में कहा - वे लोग बोले - उपनिषद् मान्य नहीं। तब गीता का श्लोक क्यों कट्यो रखा। अब यदि नहीं बोलते हैं तो गड़बड़ हो जायेगा। इसलिए वे ही लोग (ब्राह्मण) जो विरोधी थे समर्थक हो गये। हमने कहा - इसीलिए आप जैन बनाने की नहीं अहिंसक बनाने की बात करते हैं। आ. श्री की मूकमाटी एक अद्भुत रचना है, जिसे सभी ने स्वीकारा।

ईर्यापथ में →

- पेट से पता नहीं चल पाता कि आहार ठीक हुये या नहीं। किन्हीं का पेट (गुड़) रहता है तो किन्हीं का बाहर।
- गूढ़गर्भा → तीर्थंकर की माता के पेट में त्रिलोकीनाथ होने पर भी बाहर की त्रिवली मिटती नहीं, इसी-लिए उसे गूढ़गर्भा कहा जाता है।
- गूढ़जानु → तीर्थंकर के घुटनों की कटोरी बाहर में दिखती नहीं। बाहुबली में तो विशेषकर से ग्रेंदअँसे घुटने दिखाई पड़ते हैं (प्रतिमा में) यह सामुद्रिक नहीं है।
- तीर्थंकर प्रतिमा में बाल नहीं बनाने पर सदैव युवा अँसी लगती है दूसरा सफाई भी बनी रहती है यह शास्त्रोक्त है।

रविवार
3-12-17 "बिना परीक्षा - नहीं है सुरक्षा" प्रातः 9.20

आप लोगों ने सुना होगा, देखा होगा। इस भव में नहीं पहले भव में देखा होगा आज वह स्मरण में नहीं हैं। सुना होगा कि समोशरण में जाने पर क्या होता है? आज हम वहाँ जा नहीं सकते। हाँ! वहाँ के लोग हमें आकर बता सकते हैं पर यह भी बहुत दुर्लभ है। दुर्लभ तो है ही। तो सुना कि 23वें तीर्थंकर का नगर के बाहर समोशरण लग गया है। सभी लोग देखने के लिए आये। जगह की कमी पड़ गयी। कैसे? तीर्थंकर के समोशरण में तो जगह की कमी पड़ती नहीं।

सब लोग वहाँ गये और आकर वहाँ का वर्णन सुनाते/कहते - सबको 23वें तीर्थंकर के समोशरण में जाना है। सब आकर बताये अरे - हमने इन्हीं आँखो से देखा है। सुना है। अब बताओ 23वें तीर्थंकर तो होते नहीं। फिर भी आप लोगों के पुण्य का अतिशय है जो ऐसा देखने को मिल रहा है। अब सामने वाला कहता है। समोशरण में कुछ अतिशय होते है - बहरा यहि वहाँ जायेतो सुनने लग जाता है, अंधा आंखो से देखने लगता है, लंगड़ा - पैरो से चलने लगता है। ऑपरेशन से नहीं बिना ऑपरेशन, बुद्धि कम हो तो ठीक हो जाये, वृद्ध भी 1-2 नहीं पूरी 2000 सीढ़ी युं ही चढ़ जाये। ये कुछ अतिशय होते हैं।

वह कहता है - हम आकर के बता देंगे। उसने देखा उस कृत्रिम समोशरण में ऐसा कोई अतिशय नहीं हुआ। वह सोच में पड़ गया। विश्वास तो पहले से ही था। वह नहीं आया। (रेवती) तो समोशरण में कुछ गड़बड़ है। अंधे ही ये

वे अंधे ही रह गये। समोशरण तो है पर यह कोई जादु-टोना से निर्मित है जो भीड़ इकट्ठी करने के लिए है।

आपने जो मांग कि थी उस अनुसार नहीं। अंधा, अंधा ही बना रहा, बहरा-बहरा ही बना रहा, लुला भी लुला ही रहा, जिसका दिमाग नहीं चलता था तो अभी भी नहीं चल रहा। उसने कहा विश्वास तो करना चाहिए किन्तु विश्वास के कुछ स्थल (पैमाने) बताये गये हैं, उसके अनुसार है, आगम के अनुसार है तो फिर आँख बंद करके भी विश्वास कर लेना है। फिर कानों से भी कोई मतलब नहीं। पहले कानो से सुनो, फिर आगम से जाँचो फिर पढ़ो परीक्षा तो करो-कैसे ग्राहक हो।

ग्राहक आता है-ये दिखाओ, वो दिखाओ। बहुत सारा सामान दिखाया लेकिन....। यहाँ कोई कपड़े वाले बैठे हों तो बुरा न माने। आज पूजन भी यहीं से किया था। लगता है ये ग्राहक विलायत से आया है। धीरे-धीरे कीमत भी बताता जाता है। पसंद नहीं आ रहा है क्या? आपके पास कितना है। दुकानदार- पहले आप ये तो बताओ कितने वाला चाहिए। हमारे पास तो 10 रु. मीटर 100 रु. मीटर तो 10 हजार रु. मीटर वाला है और रवाली मीटर भी है। वह कहता है- हम घर पर पुछताछ करके आते हैं।

पसीना आ गया। उसे चाय वगैरह भी पीसा दी। ऐसे हैं ये लोग, क्यों? समोशरण में तो चाय पिलाकर बैठाते नहीं-वहाँ तो स्वतः ही आते हैं।

हमें वितरागता की ओर देखना है। एक विशेष बात ये है कि इस वितरागता की नकल नहीं होती। सबकी एक जैसी मुद्रा है।

अब समोशरण की तरफ देखा। तो ये गडबड है। रत्नकरण्डश्रावकाचार में स्वामी समन्तभद्र ने अमूढदृष्टि अंग में रेवती रानी को याद किया। रानी को याद किया राजा को नहीं। क्यों की वह रानी इस अंग में प्रसिद्ध थी। आज भी उस रत्नकरण्ड-श्रावकाचार को पढते हैं तो ज्ञात होता है सम्यग्दर्शन के आठ अंगो में 8 लोग प्रसिद्ध हुये। जिनमें चौथे अंग अमूढदृष्टि में रेवती रानी प्रसिद्ध हुयी। अब हमें आज जब महावीर भगवान और अन्य तीर्थंकर का अभाव है तब भी याद रखना हैं ध्यान रखना है।

बाकी बातें तो याद रखते हो पर मतलब की बात को याद नहीं रखते अथवा भूल जाते है। पहले मैं सोच रहा था, आज रविवार है - मध्याह्न में तो मिलेगा ही किन्तु मैंने सोचा - सुबह वाले चले गये तो। शाल्क जो आया है उसे छोड़ो नहीं। आपके (कभी) डांटने से कहीं वह भग न जाये इसलिए हमें ऐसा ही करना पड़ता है। अपना शाल्क बनाकर रखना होता है। अमूढ दृष्टि सहित होने पर ही सम्यग्दृष्टि आठ अंगो से युक्त होता है। रेवती रानी जो अमूढ दृष्टि में प्रसिद्ध हुयी उससे बहुतों की आंखे खुल गयी।

जो समोशरण में बैठा था (कृत्रिम) उसकी भी आँख खुल गयी। सफेदी की ओर दृष्टि चली गयी। आज ऐसे ही

ग्राहकों की आवश्यकता है। दूसरी बात ये है कि अपनी दुकान में माल भी अच्छा रखो। ऊँची दुकान और फीके पकवान" को हम अच्छा नहीं मानते दुकान ऊँची है तो पकवान फीके क्यों मीठे होने चाहिए अर्थात मीठी दुकान हो। मीठी दुकान होने पर चीटी ही नहीं सभी परिक्रमा लगायेंगे।

दुकान पर रखे माल की गुणवत्ता पर भी दृष्टि होनी चाहिए। ताकि अमूल्य दृष्टि का पालन अच्छे से हो सके। कर सको। इतना ही पर्याप्त सक्षमता हूं। मध्याह्न में आप आयेंगे तो देख लेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नुं

कुछ हटकर -

- पुरुषों के शरीर पर (खासकर कान पर) बालों का होना शुभ मानते हैं, जब कि महिलाओं के शरीर पर बालों का होना अशुभ माना जाता है। यदि महिला शरीर पर बाल है तो वह नेतृत्व करने वाली होगी, पुरुष पर भारी पड़ेगी।
- सुस्वर नामकर्म का उदय है पर पुरुष की आवाज महिला जैसी अथवा महिला की आवाज पुरुष जैसी मोटी होना अच्छा नहीं माना जाता।
- पुरुष की पगतली फ्लेट न होकर बीच में से उठी हो तो अच्छा मानते हैं किन्तु महिला की पगतली फ्लेट/समतल होने पर अच्छा मानते हैं अन्यथा वह महिला परिवार को बांधकर नहीं रखेगी/बिखेर देगी।

4-12-17 "बचना जरूरी विकृति की संस्कृति से" प्रातः 9-20

पुरानी पूजन की किताबों में हमने सुनी थी। आपने उन किताबों के माध्यम से भगवान की पूजा भी की होगी। एक तो भगवान की पूजा हेतु सर्वप्रथम अष्ट द्रव्य लेकर आते हैं। वह अष्ट द्रव्य सजाकर लाते हैं। किसमें ? तो रत्नाय (रत्नों के) थालीमें लेकर आते हैं। आजकल परिवर्तन हो गया। जो देख रहा हूँ। काल छोटा हो या बड़ा हो। रत्नों की थाली हेतु गरीबी की क्या आवश्यकता है, भाव तो कर ही सकते हैं।

जितने भाव उज्जवल होंगे उतनी ही आपको उज्जवल द्रव्य प्राप्त होगी। भावों में गरीबी लाओगे तो द्रव्य में भी अवश्य गरीबी आयेगी। दूसरेनम्बर पर सोने की थाल, तीसरे नम्बर पर चाँदी की थाल फिर ताम्बे की थाल आज प्लास्टिक की थाल आगयी। बिच में लोहे की थाल भी आती है। बुरा न माने जो स्टील के बर्तन देखते हो वह और कुछ नहीं परिष्कृत लोहा ही है। लोहे को सोने की उपमा दे सकते हो। पर कैसा युग आ गया जो स्वर्ण को लोहा बना रहा है। जो भी कीमत लगे चाहे अपने पल्ले से और डालना पड़े। अब मूल्यांकन कहाँ रह गया। आज ऐसा युग आ गया।

पहले के लोग तांबे का ही थाल आदि रखते थे। जो रत्नों का थाल रखने की शक्ति वाले भी अपने घर में एक-आध बड़ा तांबे का जरिर रखते थे। तांबे में रखा जल पेट के लिए अमृत का काम करता है। ये अनुभव सिद्ध है, शास्त्र सम्मत भी है,

आयुर्वेद के अनुसार अनुभूत करके लिखा है।

आज बड़े-बड़े रोगों का मुख्य कारण खान-पान है। ऐसे पात्रों (प्लास्टिक-लोहा) में रखा अन्नादि तो सदोष ही प्राप्त होगा। पहले के लोग खलबट्टा भी चांदी-सोना के रखते थे/आज लोहे के भी है? क्या पता? आज जितनी भी औषधी बनती है, सब प्लास्टिक में आ रही है जिसके दुषित है - पहले ऐसा नहीं होता था। सारवों संपर्क की औषध है/इसके महत्व से भी ज्यादा यह महत्वपूर्ण है कि उस औषध को कहाँ रखा। आयुर्वेद औषधी कभी भी हानिकारक नहीं, बस रोग का निदान सही होना चाहिए।

युग परिवर्तन के कारण भाव परिवर्तन होते जा रहे हैं। असावधानी इस इसका एक मात्र कारण है। इतिहास से संबंध बिछुड़ चुका है। यद्यपि नाती-पोतों का संबंध दादा जी के साथ है/इसी सम्बन्ध से यहाँ तक आ गये पर आज का युग ऐसा अपने उस इतिहास से जोड़ नहीं पा रहा है। इतिहास कह रहा है - आ जाओ। हमारे पास, हम भविष्य बना देंगे। तुम कहते हो नहीं हम अपना भविष्य बना लेंगे - तुम्हारे बाप भी नहीं बना पायेंगे।

इतिहास जो जानता है वही कुछ कर सकता है। यदि अपने दादा जी-नाना जी से संबंध नहीं रखेगा तो पुराना सोना नहीं रख पायेगा। ऐसा क्यों कहा जाता है कि पुराना सोना अच्छा होता है? पुराने सोने

में बट्टा [मिलावट] नहीं होता। आभरण में आने पर बट्टा आ ही जाता है।

इस प्रकार गुणवत्ता को लेकर ध्यान नहीं दोगे, पुराने संबंधों को छोड़ दोगे तो क्या होगा। आज इतना अन्तर क्यों है? जैसी शिक्षा, रहन-सहन, खान-पान मिला वैसे ही विचार बन गये। इन्हीं विचारों से इतिहास के प्रति बहुमान नहीं रहा। वह सोचता है इसमें क्या रखा है? जो रखा है इसी में रखा है। यह बात युवाओं के गले में उतर नहीं पा रही है। इसी कारण आपकी बात आपके ही बच्चे नहीं मान रहे हैं। फिर हमारे पास लाते हैं - महाराज! आप ही कुछ समझायें इसे। अब हम क्या करें?

पहले लाये नहीं, बिगड़ने के बाद ला रहे हो। गलती हो गयी महाराज - क्षमा कर दें आप तो क्षमा की मूर्ति हो, सबको क्षमा करते हो। क्षमा की भी कोई हद होती है कि नहीं। सही है न? सही बात को हव तो कह दो। [हव] हमें अच्छा लगता है - इस हव को आप लोग भूले नहीं। बघेलखण्ड हो या बुन्देलखण्ड हो या छत्तीसगढ़ हो सभी इस हव को समझने लगे हैं। यह हव No (हाउ) में न बदल जाये।

जो No कहता है वह पहले ही प्रश्न करता है। वह भी नहीं देखता कि मेरा प्रश्न सही है भी कि नहीं? उत्तर देने वाला सोचता है कि इसका प्रश्न करना ही ठीक नहीं है। क्योंकि उत्तर सदैव प्रश्न में ही छिपा होता है। जो प्रश्न करता है, वह

पहले उत्तर को मथना है। तभी उसमें से नवनीत प्राप्त होता है। इतना ही कहना था।

आपने सोने जैसे रंग के थाल में अष्टमंगल द्रव्य चढ़ाया। हमने इसे प्लास्टिक का समझा। लकड़ी/प्लाई का है। लकड़ी तो अच्छी पर प्लाई - पी लिया है जिसने। मैं लकड़ी पसन्द करता हूँ। प्लाई को तो खोल दो तो क्या-क्या डला है पता चल जायेगा। लकड़ी का भगवान से सम्बन्ध कर सकते हैं पर इसे भगवान के पास नहीं ले जा सकते। जो काष्ठ पहले उपलब्ध होते थे, वे आज देखने में उपलब्ध नहीं हैं। शीशम की बात करो तो कीमत सब समझ में आ जायेगी।

जो शीर्ष तक पहुँचा दे उसका नाम शीशम है। लोहे को तो जंग खा जाये पर शीशम कहता है मैं जंग को खा जाऊंगा। यहाँ के लोगों ने इस प्रकार का ही काम किया है। डोम में शीशम उस पर सोने का काम होगा। तो यह मैंने कहा कि इस ओर (इतिहास) दृष्टि देना चाहिए तभी विकास सही में हो सके। आज के बच्चे शीशम जानते ही नहीं - इतिहास कैसे समझेंगे। पहले के लोग, बड़े-बड़े जो जहाज आदि बनते हैं उनमें शीशम का प्रयोग पानी का इस लकड़ी पर प्रभाव ही नहीं होता।

विज्ञान को जो वरदान मान रहे हैं आज अभिशाप सिद्ध हो रहा है। मैं क्या करूं? पुरानी सज्जन की किताब अपने पास रखो। रत्नों का थाल

आपके भावों में आ जायेगा। भाषा का ज्ञान होना चाहिए। रतन थाल की बजाय आज तन को ही रतन मानने में लगा है। मेरा कर्तव्य था सो बता दिया। दूर से लोग (उज्जवल पार्टी) आये हैं। इससे बचना आवश्यक है।

रत्न के नहीं, सोना के नहीं तो कम से कम श्री जी के अभिषेक - पूजन आदि हेतु चाँदी बर्तन तो ला ही सकते हो। जिससे अष्टमंगल द्रव्य से प्रभु की आराधना कर सको। चांदी के बर्तन भी नहीं तो पहले जब में होता था उस समय कलाई बना लो - कलाई बना लो की आवाज सुनता था। पहले मैं कलाई का अर्थ यह कलाई मानता था। बाद में समझा जो तांबे के बर्तन होते हैं उनमें कलाई द्वारा वे चांदी से चमकने लगते थे। चांदी से मतलब नहीं अपितु ताम्र में रखी सामग्री विकृत होने का रास्ता था।

भोजन बच भी जाये पर पचन पाये। आज के बर्तन में तो भोजन विकृत हो जाता है। "इस विकृति की संस्कृति से बचना जरूरी है।" इतिहास को पुनः लौटाना आवश्यक है। भगवान तक जो बर्तन पहुँचाते हो उन्हें बांध-बुंध कर रखो। बुद्धि को सही करो। ऐसे द्रव्य को अमेरिका के शेयर बाजार में मत फेंको, वह द्रव्य भगवान के चरणों में लग जाये। यही हमारी भावना है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

"प्रतिभावली स्कॉलरिस उद्घाटन"

5-12-17 "भारत से बात करो" प्रातः 9.00

छात्राओं के द्वारा अभी आपने उनकी प्रस्तुति देखी। ऐसी वेषभूषा आदि सब जो आँखो को न चुभे। परीधी के अन्दर ही हमें रहकर समस्त कार्य करना है। सुन रहे हो। [जी] हाँ! आपको ही सुनने की अब आवश्यकता है। तो भारत का वह मानचित्र जो विश्व के सामने उत्तमांग कहलाता है। इसे Head बोलते हैं। हमारे यहाँ टोपी की परम्परा है Hat की नहीं। भारत के स्वरूप का ध्यान रखेंगे।

इसी प्रकार वाद्य की टोन है। जहाँ तक मुझे ध्यान है अभी जो टोन बज रही थी वह भारतीय टोन न होकर विदेशी टोन थी। पूर्ण रूप से तो मैं नहीं कह सकता। पहले रणभेरी होती थी, जिसका ऐसी ध्वन्यात्मक प्रभाव कि कमजोर सेना भी उस ध्वनि को सुन अपने देश, अपनी संस्कृति, अपनी अखण्डता हेतु उठ खड़ी हो जाये उसकी धमनियों में रक्त धमकने लग जाता है। उसे सुन रात में भी वह सुरेत तैयार हो जाये।

ऐसा नहीं की सोते हुये कर रहे हैं। इसलिए टोन की एवं बोल की शब्दावली भी भारतीय होना चाहिए। "भारत की बात करो एवं भारत से बात करते दोनों में बहुत अन्तर है।" ध्यान रखो! आपको भारत से बात करना है। भारत से बात करना खेल नहीं है - भारत की बात तो सब कर सकते है। इतना ही रखते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

पाण्डाल में पूजन पश्चात् –

आज आप लोगों का समय ज्ञानीओं ने ले लिया / अब आप लोगों के लिए ऐसे ही ठीक है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। मैं विशेष अब उपदेश उसे दो जो स्वीकार करें।

वेदी शिलान्यास समारोह

6-12-17 "जंगल में मंगल" प्रातः 9.00

यहाँ पर क्षेत्र का विकास हो रहा है। चारों ओर की जनता का इसके साथ बड़ा श्रद्धान और बहुमान है। अपने जीवन में से समय-समय पर यहाँ आकर इस कार्य को देखते हैं। कुछ लोग जो धन है उसे लगाना चाहते हैं। एक धन वह है जो चंचला/लक्ष्मी, दुसरा धन है समय का योगदान। बहुत कम व्यक्ति होते हैं, जिन्हें यह सौभाग्य प्राप्त होता है जो अपने बहुमूल्य समय को ऐसे कार्यों में प्रदान करते हैं।

रविवार के दिन आना अलग वस्तु और पूरे दिन रविवार मनाना अलग बात है। जो इसमें समय-धन लगाकर योगदान कर रहे हैं वे निश्चित ही पुण्यवान हैं। जनता में "दिन-दुनी रात-चौगुनी" वातावरण बनाना बहुत बड़ा काम है। पहले के लोग तीर्थ बनाये। बनाने से बनना है। महान तप अनुष्ठान के द्वारा ही प्रसिद्धि को प्राप्त होते हैं। इसके लिए साधना, महनत-कसरत करनी होती है। पहले जय-जयकार नहीं बाद में जय जयकार होती

ही है। जयजयकार का मूल्य समझना पहले आवश्यक है।
पहले से ही लोगों का
इसी तरह के कार्यों में मन रहा है। जैन समाज किसी से मांग नहीं करता क्यों कि वह स्वार्जित जीवन जीने में विश्वास करता है। प्रत्येक व्यक्ति इसी तरह रहता है तो रहने योग्य सब प्रबंध हो जाते हैं। दूसरी तरफ तीर्थ के साथ-साथ मान्दिर है। यह वह मान्दिर है जिसका मूल्य अनमोल की प्राप्ति है। कैसे उस शाश्वत सुख को प्राप्त किया जाता है - यहाँ वह ज्ञान मिलता है। बातों से नहीं मिलता है उसे पाने के लिए छोटी-छोटी इच्छायें यहाँ आयेगी।
आत्मभावक लोग इतने
सहज ही इस जंगल में छोड़ जाते हैं। किसके भरोसे? [आ. श्री आपके] हम तो विहार करते रहते है, आना-जाना लगा रहता है। जो इस भार को उठाते है उनका कितना बड़ा साहस है - देखलो। इससे उनका जीवन सार्थक हो जाता है। जीवन में इस पवित्र योगदान के फलस्वरूप सुगंधी चारो ओर फैलेगी। भावों के माध्यम से ही यह सुगंधी आती है, जो अनेको को आकर्षित करती है।
इन्हें देखकर सार-असारता
का बोध हो जाता है। आज यह चैत्यालय के रूप में आपके सामने है। बड़ा क्षेत्र तो है ही किन्तु इच्छायें

प्रतिदिन पर्वत पर नहीं जा सकती। यहीं पे रहकर के पर्वत पर बने मन्दिर - शिखर एवं सहस्कुट का दर्शन करेंगी। रामटेक में मानस्तंभ का दर्शन होगा तो यहाँ सहस्कुट चारों ओर से दिखेगा।

एक मन्दिर यहाँ पर है तो वह एक मन्दिर जहाँ 1008 भगवान विराजमान रहेंगे। समय मिला तो सभी छात्रायें मिलकर यात्रा करेंगे। यह प्रतिदिन का कार्यक्रम, पता भी नहीं चलेगा। एक-एक घड़ी निकलती जायेगी इससे जो पाप कमाया है वह विनाश को प्राप्त होगा, धुलता चला जायेगा। अच्छी दिशा होगी, नयी उमंग होगी और पवित्र भाव होंगे। पहले लोग आकर कहते थे, सोचता था ये काम कैसे होगा? कैसे क्या होगा "इरादा होगा सब काम होगा।" इरादा दृढ़ होना चाहिए।

ऊपर से तुफान भी चलेगा कुछ नहीं होगा, भीतर से मजबुत पकड़ रहेगी लहराता रहेगा उस तुफान में भी बिंदु गिरेगा नहीं। आप केवल ध्वजा के बारे में ही सोचते हो, नींव के बारे में भी सोचो। यह तीन वर्ष पूर्व भूमि-पूजन के रूप में आज विशाल रूप ले लिया और आज यह चैत्यालय का रूप भी तैयार हो गया। इसमें जो वेदी होगी वह चतुर्मुख बनेगी। चारों ओर भगवान होंगे। जैसे समोशरण में गंधकुटी में भगवान विराजमान रहते है। छात्रायें सामने, आजु-बाजु, पीछे कहींसेभी दर्शन-

पूजन कर सकेगी।

वह सुहाना दृश्य होगा। यहाँ बैठकर पूजन - भजन करेगी, माला फेरेगी। जब यहाँ बैठेंगे तब इसे याद करेंगी। अतित में जो शिलान्यास हुआ उस समय ऐसा हुआ था- ऐसा हुआ था (कोई चिन्ता नहीं रहेगी। यह वेदी चारों तरफ से तीन कटनी के माध्यम से रहेगी। नीचे एक कटनी पर चार प्रतिमा पद्मासन में तथा दूसरी कटनी में चार प्रतिमा खड्गासन की रहेगी) सबसे ऊपर श्री जी जो प्राचीनकाल से आये हैं। कहाँ से आये हैं? पता नहीं। जिनके सामने न जाने कितनी पूजन - कितने पूजन और कितनी माला जपी होगी, ज्ञात ही नहीं कौनसे भगवान हैं, ये सब उनकी वितरागता का ही परिचायक है। इस समय कोई प्रशस्ति भी नहीं है। इन लोगो ने कहा भगवान का नामकरण कर दो।

भगवान का क्या नाम?

भगवान है न। यह व्यापक नाम है। पार्श्वनाथ भगवान कहने से संकीर्णता आ गयी। भगवान का अर्थ है ज्ञान की मूर्ति। ज्ञान मन्दिर में विराजमान होंगे। सरस्वती वा भी इसी तरह है। भगवान का मुख चारों ओर होता है, दिव्य ध्वनि खिरती है उसी से हमारा उद्धार होता है। अब इस कार्यक्रम को शांति के साथ बैठकर सम्पन्न करेंगे। अभी तक इसकी बात चल रही थी। आज यह शिलान्यास का कार्य, मैं भी इसमें शामिल हो गया हूँ। हम यही

कहना चाह रहे हैं।

कार्यकर्ता यहीं रहकर इन सब कार्यों को कर रहे हैं। गृहस्थ में बहुत कठनाइयाँ होती हैं। आपका यह सब प्रबन्ध हजारों छात्राओं के लिए काम आयेगा। सभी लोग कमरकस लें, इनके बारे में सोचो। उदारमना तीर्थयात्री आयेंगे किन्तु वे सब बाद में फिर देकर भी जायेंगे। जंगल में मंगल जैसा वातावरण हो गया है। दोंगरगांव – दोंगरगढ़ एवं बीच में यह चन्दूगिरी है।

कुछ लोग आये महाराज आशीर्वाद दें दें। किसलिए? हमारा शेष जीवन यहीं गुजर जाये। पहले संकल्प लें लें। इसी भावना से इतनी सारी बाल ब्रह्मचारणी बहने यहाँ आ गयी। संक्षेप में इतना ही। आगे अभी कार्यक्रम शेष है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

Notes –

(1) Before नहीं - Become चाहिए। इसके दो अर्थ हैं। समय से पूर्व हुआ काम यानि जल्दबाजी के काम कभी भी अच्छे नहीं होते इसीलिए आज भी पत्थर के मन्दिरों में विश्वास रखते हैं। जल्दी किसी को आशीर्वाद किसी भी काम के लिए नहीं देते हैं। दूसरा Be मतलब होना और One मतलब एक अर्थात एकत्र होना चाहिए तभी कार्य श्रेष्ठ होता है।

7-12-17 "आओं काम ले घोड़े से" प्रातः 9:20

जब कभी भी किसी के यहाँ मेहमानी के लिए जायें अथवा बहुत दिनों का मित्र बिछुड़ गया हो तो यह पूछा जाता है कि "घोड़ा ठिक काम कर रहा है।" समझ गये होंगे। यह गंवे की भाषा है। हम तो समझ गये। आप लोग चार पहिया वाले है घोड़ा तो वास्तव में हमारा ही है। अभी छत्तीसगढ़ी भाषा में भजन की। इस भजन में घोड़मा-घोड़मा कहा है, उसका इस घोड़े से ही सम्बंध है।

संदेह नहीं है जब तक तभी तक पैरों में ताकत है तथा पैरों में बल रहते तक ही अपनी क्रियायें स्वाक्षित है। घर में तो सास-बहु आदि का सहारा, बाहर में कोई सहारा नहीं। सबके लिए यह नियम लागु होना है। चाहे श्रमण हो या श्रावक हो इसे सदैव स्वतंत्र रखना चाहते हैं और चाहिये ही। पराश्रित व्यक्ति कभी भी आनन्द का अनुभव नहीं कर सकता है। जो भी दुखी है चाहे वह सास-बहु हो अथवा अन्य कोई भी साथी-सनाथी हो उनकी ओर मत देखो। क्यों की ये सब संबंध-सनाथी आपने बनाये है।

अभी सब तो ठीक है। अन्यथा पधारो सा! मारवाड़ी का यह शब्द बहुत अच्छा है। पधारो सा। आने के लिए भी पधारो सा और जाने के लिए भी पधारो सा। हम काम नहीं करना चाहते। तो भी पधारो सा। इस प्रकार इस घोड़े से काम लेना जरूरी है। घोड़ा काहे के

लिये होता है। ये बताओ। [सब चुप] अरे! सवारी के लिए होता है। इसके ऊपर बैठकर सवारी करते हो या इसको ऊपर बैठकर सवारी करते हो।

ही मान् लोग इसको ऊपर बैठा रखे हैं। इस घोड़े से समय पर काम लेओ। समय पर सही खुराक देओ। दक्षिण में इसे चमक कहते हैं। खुराक के साथ-साथ बिच-बिच में खरारी भी करते रहो अर्थात कंघी जैसे उसकी पीठ आदि पर हाथ फेरते रहो तो अच्छा काम करता है। इससे उसमें पॉवर आ जाता है। समय पर काम करेगा। आप देखते भी रहो काम सही कर रहा है कि नहीं। आज शासन वाले इस बात को नहीं समझ पा रहे हैं। आप युं ही उन्हें धंधा देते रहो। उन्हें मत देकर आपने ही पहुँचाया है।

अब आलसी बनाओ। आलसी होगा वह विलासी बनेगा। क्यों की आलसी एवं विलासी दोनों की घनिष्ठ मित्रता है। अब वह कभी भी उपवासी नहीं बन पायेगा (जो उपवासी नहीं बन पायेगा वह अन्तिम समय में कैसे काम करेगा? नहीं कर पायेगा। अतः इस घोड़े से काम लेना जरूरी है। घोड़ा तभी काम करेगा जब यह सवारी का काम करेगा, भागेगा, आपकी तरह नींद नहीं लेगा। आपने देखा होगा घोड़ा कभी भी लेटता नहीं खड़े-खड़े ही नींद ले लेता है।

इसे हमेशा-हमेशा तैयार रखो यह एक ऐसा घोड़ा है। यदि इसे तैयार नहीं रखा तो परिणाम अवश्य ही विकृत होंगे। मन को वशीभूत कर लो तो तन अपने आप

ही वशीभूत हो जाता है। मन अपने वश में नहीं होने से तन को ज्यादा खुराक देते हैं। तन को खुराक अधिक देने पर वह काम नहीं करता परिणाम वह आलसी - विलासी हो जाता है।

इसलिए संतान को कभी भी विलासी मत बनाओ। छ.ग. में विशेष रूप से एक शहर है? क्या नाम है? विलासपुर है कि नहीं। बोलो। वह राजधानी तो नहीं बना पर जो कुछ भी होगा विलासपुर में ही होगा। आपको न्याय विलासपुर में ही मिलेगा। बच्चों को विलासी मत बनाना। घोड़ा कभी भी सोता नहीं। हाँ! सोता भी है तो आपकी तरह खुर्राटा नहीं लेता। खड़े-खड़े ही सो लेता है। घोड़े पर चलने वाले जानते हैं, वे सोते भी रहते हैं और यात्रा भी चलती रहती है। कैसे सोते होंगे? घोड़ा उन्हें पटकता नहीं क्या?

नहीं! वह कभी पटकता नहीं। हाँ! अपनी चाल बदल देता है जिससे इनकी निद्रा-भंग हो जाये। हमारे जितने भी गुरु हुये वे सभी घोड़े पर बैठते तो थे, निद्रा भी लेते थे पर कभी भी गिरते नहीं। और आप गिरने पर उठते ही नहीं। "निद्रा लेना आवश्यक है पर आवश्यकता से अधिक निद्रा न लें" प्रमाद हमारा बहुत बड़ा शत्रु है।" अब शासन को भी खबर लग गयी। उन्होंने कह दिया- हम सहयोग नहीं रोजगार देना चाहते हैं। रोजगार ही रोजमर्रा की समस्या को सुलझा सकता है। इसी से देश में ही नहीं विदेश तक में काम हो सकता है।

इस प्रकार "घोड़मा" का यही अर्थ बताते हैं।

हमारे यहाँ साधु के 28 मूलगुण में एक मूलगुण का नाम है - ठीढी भोजन - खड़े होकर भोजन करना। (खाना) घोड़ा कभी भी बैठकर नहीं खाता। शरीर पर कभी खुजली इत्यादी चले तो वह मिट्टी में एक - दो बार पुरे शरीर को रगड़ लेता है और पुनः खड़ा हो जाता है। "ज्यादा ऐशो-आराम में रहोगे तो बेहोशी के साथ ही जाओगे। बोलो! कैसे जाना चाहते हो? तो फिर होश में आ जाओ।"

अब रहा ही कितना सा है। कह दो कि अब पुरा भार ले लो। "आभार मानकर भार उतार दो।" कर्ज करके जाओगे तो दूर ही रहोगे। भारत को चेतना चाहिए। भारत कोई वस्तु नहीं - यहीं भारत बैठा है। इतना ही रखो। आज देर हो गयी। समय पर सब कार्य होंगे तो घड़ी की कोई आवश्यकता नहीं। हमारा कार्यक्रम (चर्या) ही घड़ी बन जाय और यही पहचान।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नुँ

वैय्यावृत्ति में -

प्रतिमा कैसी हो - समचतुरस्रसंस्थान वाली हो, घुटने न दिखे, मांसल अर्थात भरावदार हो, कर्व लिए हो, पांच जगह सेनाम समान हो, 3D से देखने पर एक सी दिखे, सिर ऐसा गोल दोनो तरफ से समान दिखें। आदि-2 ये सभी बातें सोचकर आचार्य श्री ने पुरानी प्रतिमाओं के आधार को छोड़कर नया रूप आधार दिया है।

8-12-17 "नों-दो-ग्यारह मतलब फूटा गुब्बारा" प्रातः 9.20

आपके यहाँ कोई मित्र आता है और आपके सुख-साता के बारे में पूछता है। आप उसे जवाब देकर संतुष्ट कर देते हैं। मुझे ये बात समझ में नहीं आई, मात्र आधा मिनिट में आप उसे संतुष्ट कर देते हैं और वह भी संतुष्ट हो जाता है। हम एक उदाहरण दे देते हैं। जैसे - एक गुब्बारा दुकान से खरीदा लड़के ने। उसे देखा- वह रबड़ का टुकड़ा है और कुछ नहीं। जब वह लड़का उस गुब्बारे में मुख से हवा भरता गया। सोचता है इसे अब व्यवस्थित कर दें- बांध दे। जैसे ही बांधने की कोशिश करता है धीरे-धीरे पुरी हवा निकल गयी।

दुबारा हवा भरा। धागा बांधना कठीन होता है। जैसे-जैसे हवा भरता जाता है उसका रंग, उसका आकार स्पर्श बदलता जाता है। इसी तरह शरीर विज्ञान और जीव विज्ञान दोनों चलते रहते हैं। गुब्बारा की साता के माध्यम से आप अपना परिचय देते रहते हो। यह कुछ नहीं- पुद्गल का विकार है। जो संकुचित और विस्तार को प्राप्त होता रहता है। इसमें संतुष्टि की क्या बात है। आत्मा का रूप- रंग, आकार- प्रकार कुछ भी नहीं दिखता।

कुछ ज्यादा हवा भर दी फट जायेगा ये गुब्बारा। कम हवा भरेंगे तो फूलेगा ही नहीं। जीवन पर्यन्त यह संकोच-विस्तार होता रहता है। आप जीवन के भिन्न-भिन्न समयों में भिन्न-भिन्न फोटो लेते रहते हैं।

फिर गर्व से कहते हैं ये प्रोटोप्लाज्म है। ये मैं ही हूँ। ये कोई नहीं बता पाया कि जीवन क्या है?

चाहे वैज्ञानिक हो या चाहे अपढ़ हो। दोनों में तुलना करते हैं तो वह अपढ़ ही अच्छा है जो कम से कम शांति के साथ तो बैठा है। आप रात-दिन दुनियादारी में ही घुसे रहते हैं। दिमाग उसी में रहता है। इसकी चिकित्सा करना बहुत ही कठीन है। उसके माध्यम से साता चाहते हैं- कैसे संभव है? हवा भर दो। आपने भर दी पर धागा बांधना कठीन है। थोड़ा सा भी ढीला छोड़ा नहीं कि हवा निकल गयी। अब भागते रहो। जैसे छोरा बच्चा/बच्चे पतंग के पीछे भागते रहते हैं।

इसका बिल्कुल स्वतंत्र अस्तित्व है। जीव विज्ञान एवं शरीर विज्ञान को समझना अनिवार्य है। किन्तु एक सीमा तक ही कर सकते हैं। इसका नियन्त्रण न ही हमारे पास है न ही और किसी के पास है। इसी के साथ जो अन्य तत्त्व हैं सब संयोग-वियोग पर आधारित रहते हैं। जो इस विज्ञान से परिचित रहता है वह कभी गुणा-भाग में नहीं पड़ता। इसे 9-2-1 कहते हैं। यह अभाव का सूचक है। जानते हो इसका क्या अर्थ है।

कहते हैं न अरे भैया! वहतो 9-2-1। हो गया। 9 के बाद बिच में 10 भी निकल गया फिर 10 की शून्य भी चला गया मात्र एक रह गया। इसका नाम है 9-2-1। सब लाइन में खड़े हुये हैं, किसी को

भरोसा नहीं।

मोक्षमार्ग में भरोसा (विश्वास) बहुत जरूरी है। आप भरोसामंद है तो चलो। हम आपको भरोसामंद नहीं बना सकते। जैसे गुब्बारे में हवा भरी वैसे हम आप में भरोसे की हवा भर दे संभव नहीं। जैसे-जैसे भीतर का तत्वज्ञान होता जाता है वैसे-वैसे भरोसा होता जाता है। हमारी धारणा को हम बदल सकते है। इसमें किसी की मेहरबानी नहीं हैं। ज्ञान को विकसित करके स्वीकारना अथवा योग्यता करके स्वीकारना।

आप लोगों के बारे में कुछ भी नहीं है। एक सैकेण्ड भी नहीं लगता, अरे! गुब्बारा फूट गया। कुछ भी नहीं बचता। इसलिए यहाँ भरोसामंद कुछ भी नहीं हैं। दिखा है जब तक दिखा है। किसके भरोसे दिखा है। एक जो भीतर में बैठा है। जो देखने में नहीं आता। ये सब रंग-रूप उसी के ऊपर आधारित है। वह निकल गया बस सब निकल गया। फिर कहते है 9-2-11 हो गया।

इस 9-2-11 को याद रखेंगे। क्या-क्या था और क्या-क्या रह गया। आत्मा एक है और 11 में भी एक है। उस आत्मा का ऐसा ही स्वभाव है दिखता नहीं पर देखता अवश्य है। विज्ञान और वैज्ञानिक दोनो आज तक उसे ढूंढ नहीं पाये है। इससे परे है। इसके लिए बहिर्दृष्टि नहीं अन्तर्दृष्टि होना आवश्यक है। इतना ही पर्याप्त है। हमारे गुब्बारे के उदाहरण को कभी मत भूलना। माता बनने लगे तो इसे फुलाकर सामने

रख देना फिर धीरे-धीरे गांठ ढिली करते जाना अन्यथा कभी भी फूला नहीं पाओगे। जब तक दिमाग सही है, काम में ले लो। यही सार की बात है। इसी में विज्ञान एवं शरीर विज्ञान दोनों हैं। यह छोटा सा वक्तव्य आपके सामने रखा।

अहिंसा परमो धर्म की जय। हँ

9-12-17 "इलाज से अच्छा बचाव" प्रातः 9.20

जिसके साथ जिसका एकरूपता हो जाता है। एकरूपता का मतलब दोनों मिलने के उपरान्त विशेष गुणवृद्धि होती है। उसकी सुगन्धी, उसकी पाचन शक्ति, उसके स्वाद की अपेक्षा सेहत भी गुण है, उन गुणों में वृद्धि होती है। ऐसा ही संयोग / सम्मिश्रण / सुयोग के विषय में हमें ध्यान देना चाहिए / जिसके संयोग से अपने भावों में, गंध में, रूप में आदि-आदि विकृति आती है तो बहुश्रुत भी क्यों न हो वह वर्जित है। यही बातें जो लौकिक दृष्टि से आवश्यक है ध्यान रखना जरूरी है। मोक्षमार्ग में भी पथ्य का होना बहुत अनिवार्य है।

पथ्य नहीं तो यहाँ पर गुजारा चलेगा ही नहीं। "कबूल है"? कबूल का मतलब "स्वीकार है"। एक उदाहरण दे देते हैं। आपको ये पता लग जायेगा कि ये कितना प्रभावक है। दूध के साथ मान लो घी मिलाते हैं, चल जायेगा पर जवान पहलवान है या जिसे पथ्य के रूप में मात्रा मिलाकर देना है। किसे?
अब यदि मट्ठा है और उसमें घी मिला दिया क्या होगया? स्वाद में क्या आयेगा? ऊपर-ऊपर तो विकृती आगयी है। जिसमें विकृति पैदा हो गयी अब

सेवन के योग्य नहीं रहा।

अब दुसरी ओर दूध में.. हमने सोचा महत्व में भी दिया जाता है सो दूध में बगार दे दिया। क्यों हंसने लगे? उसका उसके साथ समझौता नहीं है। दूध में बगार तो वह बिगड़ जायेगा। वही बगार महत्व में दे दिया जाये तो.... आनंद आ जायेगा। हैं तो वही बगार वहाँ बिगाड़ दिया और यहाँ पाचक बना दिया। स्वादिष्ट हो गया। इस विवेक का होना जरूरी है। जो भी भोजन होगा उसको ठिकाने कर देता है।

डाक्टर कभी भी ऐलोपैथी के विपरीत होता ही नहीं। वह तो ऐलोपैथी का ही समर्थक होता है। हमारे यहाँ उसे वैद्य कहते हैं जो आयुर्वेद आदि का ज्ञान रखता है। आप लोगों का विश्वास डा० पर रहता है वैद्य पर नहीं। यह धारणा गलत है। डा० तो एक उपाधी है। डाक्टर का अनुवाद ऐसा नहीं होता है। अंग्रेजी में उसे फिजिशियन कहते हैं। चिकित्सक कह सकते हैं। ज्यादा है तो वैद्य जी। किन्तु हमने आपको बिना औषध के कैसे स्वस्थ रह सकते हैं वह बता दिया। पहले के लोग भोजन के बारे में उठना-बैठना-सोना-रहना को ही अपनी औषध समझते थे।

विवेक से काम करते थे। उन्हे किसी प्रकार की बिमारी नहीं होती थी और जब बिमारी नहीं तो फिर वैद्य की भी क्या आवश्यकता? वह वैद्य भी आ जाये तो घबराता था। यह सबके साथ था चाहे राजा-महाराजा

हो या गरीब हो। उनकी सेवा/चाकरी भी इसी प्रकार की जाती थी। पहले ये ध्यान रखा जाता था वो कितना खाता है और कितना बचाता है।

बच्चा छोटा होता है माता-पिता ध्यान रखते हैं कितना देना है बड़ा होने पर भी वह उन बातों को भूलता नहीं। मोक्षमार्ग में भी चिकित्सक की भांति मुमुक्षु को आचार्य-उपाध्याय और साधु तीनों की निगाह यही रखती है कि इसकी चर्या गैर न हो/विपरित न हो। गृहस्थ का विपरित कार्यक्रम ही उसके लिए अभिशाप बन जाता है। यहाँ में और गृहस्थ में बहुत अन्तर है। वहाँ जब कभी खोंचे यहाँ एकबार मिलेगा वो भी बैठकर नहीं खड़े होकर लेंगे थाली में नहीं हाँ देने वाला हाथ में थाली रख सकता है। खाने में किसी प्रकार की स्वतंत्रता नहीं।

चटक-मटक नहीं कर सकते।

"मोक्षमार्ग चटक-मटक का नहीं है।" संयोजना इस प्रकार की होती है कि इसकी आवश्यकता ही नहीं रहती। फिर कैसे सोना? काष्ठ पलक (खाट) या तृण पर सोना कोई गादी-तकिया नहीं। अब पैदल ही चलेंगे। आप गाड़ी में जायेंगे। कहाँ? हवा खाने जा रहे हैं। पैदल यात्रा करो तो बिमारी आने के लिए उसे सोचना पड़ेगा। कर्मोदय से आ भी जाये तो मेहमानगिरी तो यहाँ है ही नहीं। दामाद भी क्यों न हो। एक-दो दिन बस तीसरे दिन से तो चलो दुकान पर अथवा खेती-बाड़ी हो तो खेत पर काम करने। इससे

पहले ही वह रवाना हो जायेगा।

इस प्रकार कषाय रहे - रहो। मेहमान बनकर रहो। अभी तक तो किया, अब किसके कहने पर छोड़ रहे हो? मन के समझाने पर आ गये। आपका मन अभी झुका हुआ मन है। मन बिका हुआ है। मोक्षमार्ग में मन से कुछ भी नहीं चलेगा। "मन का काम मत करो मन से काम लो।" दुबारा कहूँ - मन का काम नहीं करना - मन से काम लेना सीखो। बस ये ही पथ्य है। रहे आप यदि खराब मानो तो आपका mind ही खराब है।

मनचाहा करने लगोगे तो किसी भी क्षेत्र में स्वस्थ नहीं रह सकते हो। मन कहता है - "एक और ले लूँ" पेट कहता है - बस करो भाई साहब। हमारी ओर भी निगाह दो। मैं पचा नहीं सकूँगा। मन कहता है - मैं ऊपर से गोली दे दूँगा। कौनसी? [पाचनकी] जब माता भोजन की डीक ही नहीं तो गोली क्या करेगी। घण्टी बज रही है। आप नहीं सुनें तो क्या काम की। [सीटी] यह English शब्द है। अब जाओ सीटी में - Voyage तो आपको नहीं चाहिए। नहीं माना - नहीं सुना। क्यों हुआ?

[संकेतसे] फुट गया अब। अब क्या करोगे? कहीं भी रहो, संयम रखना आवश्यक है। चाहे English हो या हिन्दी। आप सभी तभी स्वस्थ रह सकते हैं। सभी धर्म अर्थ और काम पुरुषार्थ गृहस्थ में चाहते हैं तो संयत होकर रहो / साधु बनकर रहो। इस प्रकार आप पेट अथवा मन की

ओर देखेंगे तब विवेक को लगाओ। मन सदैव पेटी की ओर जाता है, पेट कहता है मेरी ओर देख लो। आप लोग किसकी ओर देखोगे। [पेट]

बच्चे बहुत सही बोल रहे हैं। वो कभी भी ज्यादा नहीं रखायेंगे। आप लोग बैठ जाते हैं तो एक-आध और ले आओ। इसलिए चिकित्सा के लिए शिविर लगाना पड़ा। यहाँ कुछ मिलने वाला नहीं है। दूध में कभी बगार नहीं लगाया जाता। मन कहता है - देखलो एक बार क्या जाता है? गड़बड़ हो जायेगा। मुनिमहाराज के संकेतों को समझकर देखने का प्रयास करें। यही इस वक्तव्य का सार है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

संस्मरण -

विहार करते हुये रामटेक से दौंगरगांव आ रहे थे। रास्ते में देवरी नाम का गांव मिला। जिनमन्दिर एवं समाज थी। आर्यिकी चाहते थे कि समाज वालों को लाभ मिल जाये। (चर्या का) अतः मन्दिर जी उठे किन्तु आहार दौंगरगांव वालों के चौके में हो गया। आ. श्री बोले - मैं चाहता था गांव के किसी चौके में पड़गाहन हो जाये पर अपने चाहने से कुछ नहीं होता।

० आ. श्री के पचासवें संयम स्वर्णिम चातुर्मास का पिच्छीपरिवर्तन आद्योपान्त 50 मिनिट में पूरा हो गया।

० औषधी भी अकाल मरण का कारण हो सकती है।

रविवार
10-12-17 "स्वास्थ्य का राज : नीम और गाय" प्रातः 9.20

आप लोगो को प्रतिदिन मिलता होगा। पेड़ पर फल लगने से पूर्व की अवस्था क्या होती है। बीज से पेड़, पेड़ से फूल, फूल से फल फल से बीज। न जाने यह यात्रा कहाँ तक पहुँच जाती है। वह फूल बहुत कोमल होता है। अभी पूजन में कोमलता के लिए पुष्प का उदाहरण दिया था। जैसे नीम के कुसुम - सुमन अथवा पुष्प है। इसकी पाँच कलियाँ होती है। लौंग से भी बहुत छोटी। छोटी होने पर भी पांच पांखुड़ी से उसकी यात्रा प्रारम्भ होती है। ×

आप लोग छाया ढूंढते हो। छाया में भी शीतोपचार चालु रहता है। भीतर सब कुछ डाल दिया है। कानो को भी वस्त्र के माध्यम से बांध दिया है ताकि लू का प्रवेश न हो सके। आप सुन रहे है? [जी आ.श्रीजी] कहीं ऐसा तो नहीं कि गमछा कानो पर बांध लिया हो। सुनकर भी आपको आश्चर्य क्यों नहीं होना। वह कोमल पुष्प / कली के रूप में बाद में प्राण के रूप में काम करता है। आपकी सेवा के रूप में नीम का वृक्ष खड़ा है। नीम की सुगन्ध उस पुष्प के माध्यम से नासा तक आती है।

जैसे ही सुगन्ध आती है, खुश हो जाते हैं। सोचने की बात यह है कि वह कली जो फल बनी उस पुष्प से प्राणवायु मिलना। आज दुनियादारी के प्रबंध करते-करते सरकार थक रही है। अब बोलो! उस एकेन्द्रिय के द्वारा सुगन्ध मिल रही है। वह कहता है - मेरा केवल

कड़वा ही स्वभाव नहीं है। मेरा स्वभाव तो ....बोलो क्या बोलते हो। मैं अपनी कलिका से ऑक्सीजन - प्राणवायु भेज रही हूँ। सुन रहे हो? प्राण निकल रहे हैं। नीम का वृक्ष उसका गुणधर्म बता रहा है मैं उपस्थित हूँ। कार्बनडाईऑक्साइड को ग्रहण करता है और प्राणवायु को देता है।

इसलिए जो समझदार होते हैं, वे उस नीम वृक्ष को भी लगाते हैं। गुणधर्म कड़ुवा भले ही हो। आप द्वारा थोड़ी भी असावधानी होने पर वह नीम का पेड़ तैयार रहता है। सुबह उठते ही मुझे चबा लो। सोचो तो आपकी कौन - कौनसे प्राणी चिन्ता करते हैं। भगवान सबकी चिन्ता करते हैं। उसके चबाने से आराम तथा प्राणवायु का काम कर रही है। कोई रोग भी हो तो सब ठिकठाक हो जायेगा। हमारे आचार्य कहते हैं वह सूख भी गया तो उसे पेड़ की छाव/त्वचा सूख गयी तो भी वैद्यराज कहते हैं- इसे घिसकर लगा लो।

फोड़ा - फुंसी इत्यादि सब गायब हो। तीन दवाई तो हमने दे दी की फोकट में। वैद्य लोग आये हैं दवाई बांटने हैं। हम बोलते तो नहीं है बस आपको याद दिलाते हैं। इस प्रकार वह नीम का पेड़ होता है। बहुत तेज बुखार भी आ गया हो तो इसका काढ़ा बनाकर पीते हैं। रात में वह ऑक्सीजन देता है। हमें पुरुषार्थ से इन सबबातों का चयन करना है। किस समय क्या वस्तु लाभप्रद है। कभी बिमार पड़ेंगे ही नहीं। संसारी अवस्था ही बिमारी

की अवस्था है, अतः हंसते - खेलते रहो।

इन बातों को अवश्य ग्रहण करो। उसे छोड़ दो जिससे बिमारी बढ़ती है तथा जिससे बिमारी घटती है उस कार्य को करेंगे। कौनसा मार्ग चाहते हो। संसार मार्ग या मोक्षमार्ग। हमारे पास संसार है नहीं आप लोग मोक्षमार्ग पर चलते नहीं। कैसे होगा। आप लोग होशियार हो। कहते हैं- महाराज आप जाओ वहाँ से आवाज दे दो। हम धन्यवाद दे देंगे। नींद आयेगी तो क्या करोगी। फिर अब उन्हें धन्यवाद से क्या मतलब।

व्यवहार की अपेक्षा सोचते हैं। ऐसे ही दूसरा उदाहरण एक गाय है। वह प्राणवायु का ही सेवन एवं प्राणवायु ही देती है। संसार में सारे प्राणी प्राणवायु छोड़ते नहीं किन्तु गाय सेवन भी तो छोड़ना भी है प्राणवायु। इधर है निरन्तर वह यह रासायनिक क्रिया कर रही है। ऐसे प्राणी का घर में, अडोसपडोस में होना अमृत का काम करता है। ऐसी स्वीकारता प्रत्येक व्यक्ति के लिए हो जाये। वह क्या खाती है? क्या चर्या करती है? क्या परिणाम होते होंगे? क्या संस्कार होते हैं हम कुछ भी नहीं कह सकते हैं।

जब पढ़ा तो ऐसा लगा। देखो क्या है यह! देखने से मालुम नहीं चलता। भोली-भाली सी दिखती है वह गैया। वह हमें अपने स्वभाव से अवगत कराना चाहती है। उसके द्वारा गोशोधन मितना

है। गौरोचन बहुत कीमती होता है। स्वर्ण रहता है उसमें।

सारा का सारा दूध में संचार होता रहता है। सुनो डब्बे का दूध पीने वालों! कितना मूल्यवान है वह गाय का दूध। गरीब लोग बुलाने ही उससे दूर रहे पर कहते हैं- सेठ जी दूध पी लो। सेठ जी- नहीं। क्या पीयेंगे। चाय। हाय-हाय। उस देवता को तो भगा दिया आपने। और चाय सभी आंगन फांद कर रग-रग में प्रवाहवायु की तरह घुस गयी। कैसा युग आ गया- "अमृत को छोड़ विष का स्वागत कर रहे हैं।"

अब हमेशा को आपका विष दूर हो जायेगा। इसी भावना से दो उदाहरण दिये जो मौलिक हैं एवं व्यवहारिक - प्राचीन हैं। आप इन्हे अपने ही पास मत रखना, सबको भेज देना। यहाँ एक हजार बच्चे हैं। हमारी कोई पत्रिका तो निकलती नहीं किन्तु यहाँ बैठे लोग ही पत्रिका है। कभी - कभी दिन में 5-6 बार भी मिल जाती है। इस पत्रिका को लाखों की जनता तक भेजना आपका काम है। हम तो यहीं बैठकर इसी प्रकार समाचार देते रहते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय। हो

Note - जागरूकता -

आप ही अपने शिष्यों के प्रति बहुत अधिक जागरूक रहते हैं। थोड़ी सी गलती होती है उसे मंच में रख सुधार देते हैं ताकि अशुभ भावना न हो। स्वामी विवेकानंद।

11-12-17 "याद रखो पूर्वजो का लेखा-जोखा" प्रातः 9.20

जब आत्म तत्त्व सीधे-सीधे हाथ नहीं मिलता (इनको स्वरूप तक पहुँचाने वाला दूसरा कोई सहायक तत्व ढूंढा जाता है ताकि हम उसके अभाव में भी अपने मन्तव्य को जैसा चाहते हैं वैसा रूप दे सकें। उसके माध्य से। फिर भी प्राकृतिक/सार्वजनिक वैसा ही रहता है। इसी को आचार्यो ने स्थापना माध्यम से कहा है। स्थापना में किसी भी वस्तु को रखकर उसमें स्थापना की जाती है, जिसे हम सभी उसी रूप से स्वीकार करते हैं।

आज दादा-पड़दादा जी नहीं हैं। रह भी कैसे सकते हैं। आप भी बूढ़े हो चले हैं किन्तु उसी आधार पर आज भी निर्वाह कर रहे हो। उनके द्वारा जो लिखित लेन-देन है उसे कहाँ रखते हो। सोना-चाँदी तो तिजोरी में ही रखते हो परन्तु दादा जी-पड़दादा जी द्वारा लिखा/रखा हुआ। उसे तो हवा तक भी नहीं लगने देते हो। चार-पांच भाई आपस में एक साथ रहे तो भी उन भाइयों को भी ज्ञात नहीं होने देते। क्यों की उसमें हवा लगते ही अनेक प्रकार से बात बिगड़ सकती है। यह कोई स्वार्थ आदि का विषय नहीं जोखिम का विषय है।

घर में माँ को भी नहीं बताते। वह प्रचारित करने का विषय नहीं है। उसका उपयोग करते हैं। साक्षात् दादा-पड़दादा जी का है। आज भी कार्य हो रहा है, उनके नाम से ही हो रहा है। उसी आधार पर

हजारों व्यक्ति आज भी आपसे लेनदेन कर रहे हैं। संबंध बनाये हुये हैं आपका जीवन सुखपूर्वक चल रहा है। इसे देखकर अब हमें विश्वास करना है।

भले ही दादा-परदादा जी हुये अब वह नहीं हैं। यूं कह दो भगवान महावीर हुये वे अब नहीं है किन्तु वही जो रिवम, वही लेनदेन का कार्यक्रम आज भी चल रहा है। भारत वर्ष इतना विशाल होते हुये भी इसके कोने-कोने में अहिंसा, सत्य, अचौर्य, अपरिग्रह के सिद्धान्त गुंज रहे हैं। बहुत प्रकार के विचार, बहुत प्रकार की भाषायें, अनेक प्रकार का इतिहास फिर भी अहिंसा का प्रभाव, भेरवा-जोरवा ज्यों का त्यों हो रहा है। जैसे लड़के के सिर पर माता-पिता का हाथ हमेशा रहता है वह सो भी जाता है तो भी उस हाथ को महसुस करता है। थोड़ा सा भी खिसक जाये तो फिर देखो। विचारों का तालमेल, इन सबको महसुस नहीं तो संबंध टूट जाता है।

इसलिए आप लोगो पर जो दायित्व है, उसका वहन करना चाहिए। कब तक? जब तक साक्षात् तीर्थंकरों का आना-जाना नहीं होता आपको संरक्षण करना चाहिए। संवर्धन-प्रवर्धन तो आप कर नहीं सकते इनसे कम संरक्षण ही करलो। संरक्षण भी उसी उद्देश्य के अनुरूप करना चाहिए। इसमें एक परिवार नहीं-हजारों परिवार लगे हैं। थोड़ा सा भी वे दिखा देंगे,

उस लेखा-जोखा को तो पता चल जायेगा।

हमारे ऋषियों ने बताया है इतना देना है - इतना देना है। आप केवल लेने ही लेने की बात करते हो। ये सब उनके रूप लेखा जोखा में Record है। "स्वार्थ के वशीभूत होकर गड़बड़ करोगे तो पश्चाताप करना पड़ेगा।" यह हजारों व्यक्तियों की लेन-देन चल रहा है, उसे संभालना हमारा दायित्व है। उसी अनुसार उपयोग करो। ऐसा नहीं कि आपको पानी मिला, आपने उसे बंद कर दिया। पानी बंद होता ही नहीं अब वह ऊपर की ओर चढ़ने लगा। इस वेग को रोक दोगे तो खतरा हो सकता है।

उसका सही उपयोग और सही रूप से प्रवाहित होना चाहिए। धर्म रोकने की चीज नहीं है। हाँ! हमारा उपयोग हो सकता है। कब तक करना है जब तक तीर्थंकरों का पुनः आना नहीं हो। मैं समझता हूँ इन क्रियाओं (हस्तक्षेपआदि) साहित्य आदि के माध्यम से व्यापी काम हो रहा है जो चतुर्थ काल में होता था वह आज पंचमकाल में भी हो रहा है। उन्हीं के नाम से हो रहा है। अपना नाम बताने की भी जरूरत नहीं है। लेन-देन की बात है। (किसको नहीं) कोर्ट में सब मालुम पड़ जाता है।

यह बहुत फैलाव के साथ (व्यापक) है, सबके लिए इसका उपयोग करो। ज्यादा उपयोग कर लें तो? ऐसा कुछ नहीं। पानी ज्यादा उपयोग, ज्यादा

नहाकर उपयोग कर सकते हैं क्या ? सरकार को पूछना पड़ेगा। हम इस नहर का उपयोग कितना करेंगे, कब करेंगे। पूछताछ होगी।

इसी प्रकार धर्म के बारे में उपयोग करो। धर्म के काल में तो धर्म होना चाहिए। उपयोग में कंजुसी भी नहीं करनी चाहिए। जितना फैलाव उतना ही उपयोग होता है। हम दादा-पड़दादा जी के माध्यम से ध्यान आपका महावीर स्वामी की ओर ले गये। नहीं गया हो तो मैं क्या करूँ। पत्रिका की भांति शास्त्र भी उठाकर देखो कैसे हित हो सकता है। इन्हीं शास्त्रों में शुद्ध आहार पानी का बताया। कहाँ से लाये। अपने घर से नहीं लाये। सब शास्त्रों में उल्लेखित है।

यह सब नहीं होता तो आज अंधकार में डूब जाते। भगवान से कम नहीं है यह योगदान। ऐसे होता था। इसे सुरक्षित रखना है। लेकिन मात्र हल्दी-कुंकुम-आरती उतारने से नहीं। लेखा जोखा भीतर रखो। आपका आचरण बता देता है कि ये भगवान महावीर स्वामी को मानने वाले है। इसी से विश्वास जमता है। सबके पास लेखा-जोखा है, असल में लाने से काम ज्यादा होता है, बाजार में लाने से विस्तार होता है। ग्राहक पर जानने लग जाता है कहाँ पर विश्वास योग्य माल मिलता है। जो दिया उसे सही स्थान पर सुरक्षित पहुँचाने का प्रयास करेंगे।

इसमें किसी प्रकार की

गड़बड़ नहीं होनी चाहिए। आप लोग माल बेचते हैं, उस पर सील लगी होती है विदेशों में भी इस सील का महत्व है। यदि यह सील बदल देंगे तो गड़बड़ हो ही जायेगा।

बड़े पुण्य से मिला है इसे सुरक्षित रखो। सुरक्षित रखोगे तभी तो जब तीर्थंकर आयेंगे तब बता पाओगे अन्यथा क्या बताओगे। इसे सुरक्षित रखने के लिए दिन दुनी - रात चौगुनी वृद्धि होना चाहिए। तभी प्रभु मिलने वाले हैं नहीं तो दूरी बहुत हो जायेगी। आर्यखण्ड में पुण्य से जो मिला है उसे और आगे बढ़ायेंगे।

अहिंसा परमो धर्मकी जय।

संस्मरण -

जब अस्वस्थ अवस्था में रामटेक चातुर्मास पश्चात् डोंगरगांव के लिए विहार हो गया तो मार्ग में आ० श्री० से कहा - आपका Will Power बहुत मजबूत है। आ० श्री० ने कहा पूर्व में इससे भी अधिक खराब स्वास्थ्य में विहार किया। एक बार तो 107° बुखार उसमें ही चल दिये। हमने कहा - आपको वैद्य जी मना नहीं करते थे। आ० श्री ने कहा - वैद्य बोले उससे पूर्व ही विहार हो जाता था। ऐसा जयपुर से किशनगढ़ जाते समय और बाद में भी हुआ। अस्वस्थता में भी आ० श्री पूर्ण जागरूक रहते हैं। रामटेक में - पिच्छी से परिमार्जन एवं पाठ-उल्लिकुमण में प्रत्येक शब्द ध्यान से सुनना।

12-12-17 "आओ जगायें संवेदना" प्रातः 9:20

आप लोगों के यहाँ आप लोगों का परिवार तो रहता ही है किन्तु उसके साथ-साथ पशुओं का भी पालन किया जाता है। पुराण ग्रन्थों के माध्यम से ज्ञात होता है कि जैसे आप धर्म करते हैं वे भी धर्म करते हैं। आप पाप से डरते हैं तो वे भी पाप से डरते हैं। जैसे बच्चे पहचान जाते हैं कि ये हमारे माता-पिता, भाई-बहन हैं, वे भी जानते हैं। इतना ही नहीं वे आपकी गतिविधियों से सब जान जाते हैं। हमारी माँग को पूरा करेंगे या नहीं। इसका मतलब आपके दिल को भी उन्होंने जान लिया है।

आप भले ही पहचानें या न पहचानें/वे तो आपको जान ही लेते हैं। तो पशुओं में भी इस प्रकार की जानकारी रहती है। आपने बेच दिया, अब जिसने खरीद लिया उसी के अनुसार रहते हैं। अपना जीवन-यापन करते हैं। पशुओं के मालिक के भावों से अवगत हो जाते हैं। यह हमारा पालन करेगा कि नहीं अथवा स्नेह देगा या नहीं। आप लोगों के यहाँ गमी भी हो गयी है तो वो पशु भी शाल में बँध-बँधा ही दुःख में सहभागी बन रहा है। अब आप चाहे उसे घास डालें या सूखा भूसा डालें अथवा हरा-भरा भी डालें तो भी वे नहीं खाते हैं।

सुन रहे हो। जी आण्टी। बहुत बड़ी विडम्बना है। पहले के लोग अपने घर में केवल मनुष्यों को ही नहीं ३०-४० पशुओं का पालन कर

लेते थे। वे पशु अपने मालिक के सभी संकेतों का ध्यान रखते है। बस चुटकी बजाते ही सभी पशु सावधान हो जाते है और एक आप लोग, हाँकते जाओ-हाँकते जाओ। चार बार कहना पड़ता है। आप लोग 3 बार शुद्धि बोलते है। फिर भी स्वीकारते नहीं।

एक आवाज देते ही सारे के सारे आ गये। क्यों आ गये? इस तरह का विचार आपके मन में भी आना चाहिए। धार्मिक वातावरण से ऐसा होता है। आप रात में नहीं रखते आपको देखकर पशु भी रात में नहीं रखाते हैं। इसलिए एक बात कहना चाहता हूँ, पशु की आँखो में पानी आता है। उसके भीतर में करुणा रहती है मात्र हमें ही नहीं। वह जानता है कि मेरा मालिक आज कोई कष्ट में है।

अब दूसरी ओर उनके परिवार में (पशुओं के) कोई भी बछड़ा-गाय या बैल मरण को प्राप्त हो गया। इससे आपको भी कष्ट होता है। आगम के अनुसार एक दिन का सूतक बताया। ये सब आप क्या जाने। आप सब तो दुकान चलाने वाले हैं। किसान इस बात को अच्छे से जानता है। इस प्रकार वह पशु दुख में दुख और सुख में सुख कर रहा है। आपको भी करना चाहिए।

मान लो कोई आनंद/खुशी का वातावरण आया आप एक कोने में जाकर रोने बैठ जायें। बारात आने

वाली है, तो उसे यही कहा जाता है भाई जो चाहो ले लो पर रोओ मत। तो इस प्रकार दुख-दुख की अनुभूति हम आपस में तो करते ही है, जानवर भी करते है।

यह शौर-सूतक का रिवाज मात्र जैनियों में ही नहीं, जैनेत्तरों में भी होता है। किसान होता है - बैल - गाय का पालन करेगा तो उसे शुद्ध दूध एवं स्वाद प्राप्त होगी। मान लो बच्चे छोटे है, गैया मर गयी। कैसे होगा। एक दिन का सूतक होता है। किसी की गमी में जाने पर भी एक दिन का सूतक बताया। अतः दुःखानुभूति एवं सुखानुभूति केवल मात्र आपकी वरणा पर आधारित है। शुद्धाशुद्धि का उन पशुओं को विवेक नहीं फिर भी ऐसा होता है। चाहे वह सात्विक हो या असात्विकी सिंह, सर्प उनमें भी यह धर्म चलता है।

आचार्यों ने कहा जैसे आप श्रावक बन सकते है वैसे वे भी संयमासंयम का पालन कर सकते है। अतः अब थोड़ी दृष्टि बदलने की जरूरत है। "दुःदर्शन तो देखते हो दुरदृष्टि भी रखा करो।" क्या कहा ? भले ही वह पशु है पर आत्मा में कोई भी भेद नहीं है। वह भी धर्म-अधर्म को समझता है। आगम पर दृढ़ान करके प्रवृत्ति करता है। उनको देखकर हमें समझना चाहिए। वे हमारे काम आते है हम उनका काम कर देते है। समय पर भोजन - पानी, रहन-सहन, दवा-दारु इत्यादि करते है। प्रेम से पीठ पर हाथ फेर देते हो।

यदि बिमार पशु भी होता है तो एक-आध दिन में पूर्ववत भोजन करने लग जाता है।

अपने ही बच्चों के बारे में मत सोचा करो कुछ अड़ोस-पड़ोस के बारे में भी सोचा करो। क्या पता अगले ही क्षण न जाने क्या होने वाला है। इस प्रकार उसे भी आनन्द आ जाता है। मान लो कोई इससे बोलना वाला नहीं था। वह सोचता है चलो पूछा तो सही। यह अच्छा लगता है। अपने गाँव का व्यक्ति आ गया, बुंदेलखण्ड से आ गया। पूछ लिया तो बस उसे सब मिल गया। खाना-पिना हो जाता है तो पक्का नाता-रिश्ता जोड़ लेते हो।

आचार्यों ने कहा पशुओं से भी इसी प्रकार का नाता-रिश्ता रखो। वैसे-ऐसे भी किसान होते हैं, मान लो मजबुरी में किसी पशु को बेचना पड़ रहा है। वह पहले सोचता है किसे देऊँ। जैसे आप लोग अपनी कन्या का विवाह करने से पूर्व सोचते हो। अन्यथा दूसरे ही दिन द्वार पर आकर खड़ी न हो जाये। जहाँ उसका आजीवन निर्वाह हो सके। वैसे ही किसान सोचता है। अब ये दूध इत्यादि नहीं देती, भार जैसी लग रही है किसी अच्छे किसान को दे दूं। जिससे इसका भी निर्वाह हो जाये।

ये सब क्या है? अपने कर्तव्य के अनुसार सभी को करना चाहिए। आज आधुनिक युग में

ये सब बातें गौण होती जा रही हैं। युवा वर्ग का इस ओर ध्यान जाना आवश्यक है। आज का वातावरण - शिक्षाप्रणाली ऐसी ही हो गयी। पढ़ लिखकर घर पर आ गया। अब पिताजी से कहता है- पिताजी या तो आप घर में रहेंगे या मैं रहूंगा।

पिताजी कहते हैं हम तो बहुत दिन रह चुके बेटा अब तुम्ही रहो। बोला क्या है। क्यों ऐसा ही है। और कुछ नहीं तो चन्द्रगिरी तो है ही। भगवान आपके है। एक सज्जन बुढ़ रहे थे। रहो। यहाँ रहकर अपनी धर्म साधना कर सकते हैं। प्रतिभास्थली तो है ही। बच्चों को तो 8-10 वर्ष रहना ही है तथा क्षिक्षिकायें तो यहीं की हो गयी। आप भी अपना एक-आध मित्र तैयार करके आ जायें।

एक-दो को साथ में लाने से दः आवश्यकों का पालन अच्छे ढंग से होगा। स्वाध्याय - धर्मध्यान में युं ही समय निकल जायेगा। समय को निकालना नहीं अच्छे तत्वज्ञान के साथ करना है। महाराज कहे तो नहीं मानते और डाक्टर कहे तो - हाँ हम एकासन ही करेंगे। आप ही लोगो के लिए सीख दे रहे हैं। इसलिए युवा अवस्था में बहुत खाया-पिया अब Break लगाना चाहिए। Break है या नहीं? विमान में यदि चलाने वाले को लगता है कि आगे एक्सीडेन्ट हो सकता है, तो वह यहीं से Break लगाना शुरु कर देता है। हम सब

पर Hear दे रहें है पर कोई सुन ही नहीं रहा।

अच्छा है आपने पूछा। (एक बुजुर्ग सज्जन)। यहाँ ऐसा कार्य चल भी रहा है। जब पशु भी कर सकते हैं तो हम क्यों नहीं कर सकते। बस कमेडी वालों से और पूछ लो। हाँ! पर ए.सी. नहीं चलेगा। भगवान है। यहाँ सब शुद्ध है। इस प्रकार से शेष जीवन बिताने से न केवल पारिवारिक अपितु पारलौकिक जीवन भी शान्ति के साथ बितेगा। अपने जीवन को सार्थक कर सकते हो।

आगम का वचन है कि कम से कम 3-4 भव और ज्यादा हो तो 7-8 भव में मुक्त हो सकते हो। बस जो व्यक्ति जहाँ है वहाँ रहकर भी हर्ष-विषाद किए बिना, कष्ट सहिष्णु के साथ इसे प्राप्त कर सकता है। 3-4 भव कैसे? तो एक ये भव अगले भव में देव और वहाँ से आकर मनुष्य बन पुरुष बन मुनि दिक्षा ले और उस शाश्वत सुख को पा सकते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

विशेष- बात ब्रह्मचारी अवस्था की है। अमरकंटक चातुर्मास हेतु विहार चल रहा था। आर्यिका के दोनों पांव के तलवे पूर्ण रूप से घिस चुके थे। हर एक-½ km पर बैठना उसमें भी कमण्डल किसी को नहीं देना। प्रभात सागर जी का पत्र लेकर गया। उस दिन आर्यिका को कमण्डल मुझे दिया वहा चलो! इस साथ-साथ विहार किये। सभी चकित थे।

13-12-17 "आओ बनायें स्थायी फण्ड" प्रातः 9.20

आप लोग बहुत दूर-दूर से भिन्न-भिन्न दिशाओं से आये हैं। कभी-कभी वाहन के कारण समय पर नहीं मिलने से निर्धारित समय पर नहीं पहुँच पाते हो। कुछ ही शाम हो जाती है और शाम को तो मिलकर ही जायेंगे सब। ज्यादा विलम्ब होता है, पुनः घर याद आ जाता है। वहाँ जाते ही चंद्रगिरी याद आने लगती है। यह गृहस्थ की स्थिति-परिस्थिति है।

जिसकी उपादेय की ओर दृष्टि हो जाती है तो ये सब बातें भूल जाता है। फिर वह यही सोचता है- मुझे अब घर पुनः लौटना पड़ रहा है। रास्ता तो रास्ता है उसे तो नापना ही पड़ता है। मार्ग में प्रतिकूलता आती है। आये। वह तो एक लक्ष्य बनाता है, दिशा चुनता है, चुनकर कदम रखता जाता है। एक-एक कदम चलना होता है। "मोक्षमार्ग में चलना कम होता है, चढ़ना ज्यादा होता है।" आप पहले क्यों नहीं बताते? यह मार्ग ऐसा ही भैया। मधुवन में चढ़ना ज्यादा और चलना कम होता है।

हमने उस पहाड़ पर देखा यहाँ जैसे बुढ़े-बाढ़े चलते हैं, वैसे जवान भी चल रहे हैं। सबने हाथ में लाठिया ले रखी है। कोई भी भाग नहीं सकता। एक-एक कदम चढ़कर वंदना के लिए जाता है। जाते समय और उतरते समय दोनों समय लाठियां हाथ में रहती हैं। उतरते समय जवान भाग सकता है। चढ़ते समय

तो सभी लोग बुद्धो की तरह चलते हैं। आगे-पिछे होते रहते हैं।

चढ़ना है तो एक-एक कदम कैसे रखते हो। बताओ। इसलिए धीरे-धीरे एक-एक कदम बढ़ाओ। एक सीढ़ी चढ़ते हैं तो जितना चढ़ना है उसमें से एक सीढ़ी तो कम हो ही गयी। कितना रह गया। यह पूछो ही मत। कहाँ तक जाना है तो जहाँ तक सीढ़ियाँ बनी हैं अर्थात जहाँ तक चढ़ना है वहाँ तक चलते जाओ। आप सभी मोक्षमार्ग में लगे हो, सब आगे ही बढ़ते जाओ। अब वापस नहीं आना है।

अनादि काल से चलते-फिरते-भटकते यहाँ तक आ गये। किन्तु ये समीचीन मार्ग नहीं। चलना और चढ़ना सही दिशा में इसी का नाम मोक्षमार्ग है। ये लौटने के लिए मार्ग है ही नहीं। आप लोग आज तक इस मोक्षमार्ग से अपरिचित हैं और संसार मार्ग से परिचित हैं। संसार मार्ग से आपका ऐसा सम्मोहन हो चुका है कि वहीं की वहीं परिक्रमा लगा रहे हैं। इसीकारण संसार बढ़ता ही जा रहा है- घटने का नाम ही नहीं लेता। इसलिए हेय कहने मात्र से छुटता नहीं है। एक-एक कदम पर अनुभव के साथ चलते जाना है।

अभी तक जो चला वह मार्ग नहीं भटकन था। आप लोग जिस मार्ग पर चल रहें है यह मृगमरीचिका जैसा मार्ग है। जिसमें एक प्यासा मृग देखता है आगे जल है। वह छलांग लगाकर

आगे बढ़ता है। जल भी उतना ही आगे बढ़ जाता है। इसी भ्रम में अपने कदम आगे बढ़ाता है। धीरे-धीरे उसका कंठ सूख जाता है और भूमि पर गिर जाता है।

वहाँ तक तो हिम्मत रखकर गया था पर अब पानी के अभाव में मर जाता है। "जल नहीं पावे प्राण गमावे, भरुड़-भरुड़ मरता। वस्तु पराई माने अपनी भेद नहीं करता।" आपसे पूछा जाये कहाँ से आये हो? आप तुरन्त अपने कर्म स्थान का नाम बता देते हैं। कर्म स्थान का मतलब जहाँ कमाया जाता है वह कर्म स्थान है। इन्दौर से आये हैं, महाराज! सही बताओ। आपकी बोली तो बुंदेलखण्ड जैसी लग रही है। हम बोलते नहीं सुन तो सकते हैं। बुंदेलखण्ड से वहाँ जाकर बस गये। क्यों गये? कमाने गये। सही कमाई कर रहे हो या नहीं। यदि सही नहीं कमाई कर रहे हो तो जल नहीं पावे..... की बात होगी।

"अर्थ को कमाओ परन्तु अर्थ परमार्थ को कभी भूलना नहीं।" अर्थ कमा रहे हैं इसलिए परमार्थ करना है तो कुछ न कुछ निकाल कर अवश्य रखो। यह Filed में करोगे तो दुगना-चौगुना-चक्रवर्ती दर से बढ़ता ही जायेगा। छोटी सी राशि भी करोड़ों में हो जायेगी। सोचने की कोई बात ही नहीं। सदुपयोग की बात है। बस यह सदैव ध्यान रखना, कहाँ से आये हो? उस समय की स्थिति-परिस्थिति क्या थी। भूलियो नहीं।

उतना निकाल दिया तो निकाल दिया।

कम्पनी में जब कोई नौकरी करता है तो उसके वेतन में से कुछ राशि निकाल कर अलग रखवाते हैं उतनी ही राशि कम्पनी भी निकालती है। (P.F.) कम्पनी कह देती है यह राशि आपके ही काम आयेगी। वहाँ तो कम्पनी निकाल देती है, यहाँ कौन करेगा? हम उसी की याद दिलाते हैं। आपही के वह संचित कुल से काम आयेगा। एक पाई भी इधर-उधर नहीं होगा। ये सही कमाई का फल है।

ज्यादा तो मैं नहीं कहना चाहता, इतना तो समझ में आ गया होगा। क्यों नहीं आयेगा, जो प्रतिदिन ग्राहकों को समझाते हैं। संक्षेप में हमने आपके सामने रखा। जिस उद्देश्य को लेकर आप गये वह काम चलाऊ है। (कमाने को) स्थायी फण्ड का काम करो, जब तक मुक्ति नहीं मिलेगी तब तक काम करता रहेगा। हाँ ध्यान रखना मुक्ति में काम नहीं आयेगा। अतः भगवान की पूजा-विधान-जाप-अनुष्ठान आदि उस स्थायी फण्ड के लिए जरूरी है, कमी छोड़ना नहीं।

12 घण्टे इधर काम करते हो तो 1-½ घण्टा इस फण्ड हेतु भी करें। सभी के लिए 6 आवश्यक जो बताये है, उन्हें प्रतिदिन करें। पूजन-दर्शन आदि। आचार्य कुन्दकुन्द ने यही कहा- ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं हो कोई बात नहीं। भगवान का नाम जपें,

वंदना करो - प्रतिक्रमण करो।

स्वाध्याय को 28 मूलगुण में नहीं बताया। स्तुति - वंदन - प्रतिक्रमण में स्वाध्याय गर्भित है। इनको कर्म निर्जरा का साधन माना। मूल में स्वाध्याय नहीं, हौंतत्व ज्ञानि हेतु स्वाध्याय रहें। इधर - उधर की बात करोगे तो ध्रुव-फण्ड नहीं होगा। हम उसी ध्रुव फण्ड की बात कर रहे हैं।

कुछ भी संग जाने वाला नहीं है। आपकी सबकी चिन्ता रखें देव-शास्त्र-गुरु आपकी चिन्ता रखते हैं। कमसे कम उस ध्रुव फण्ड को आप सभी अवश्य पूर्ण करो।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

14-12-17 "मत ड़ालो बोझ" प्रातः 9.20

किसान समय पर उसको महत्व देता है, जिसे चार या छः महिने बाद प्राप्त करना है। हम जिसे प्राप्त करना है उसको तो महत्व देते नहीं, इधर - उधर की बातें करते हैं। किसान कब प्राप्त करना है, किस विधी से प्राप्त करना है, कहाँ से प्राप्त करना है इसे समझता है। किन्तु वह आपकी लाइन से नहीं चलता/लास्त मतलब पद्धति से है। वह अर्थ की पद्धति से नहीं चलता। उस अर्थ के द्वारा जिसे रखरीदा है वह सेवा कर रहा है।

समझ रहे हैं आप। अर्थ इकट्ठा करने में लगे हैं वह अर्थ से परमार्थ की ओर जाने में लगा है। आनन्द का अनुभव कर रहा है। आप उस आनन्द का अनुभव

नहीं कर सकते हो। आज दुनिया फिर भी लगभग उसी का अनुकरण कर रही है। लगभग इसलिए कह रहा हूँ कि महाराज भी है न।

समय रहते नींद खुल जाये तो अच्छा है। अन्यथा ऐसा भी विचार- कौन आ गया है हमें उठाने? जब संस्कार की बात आती है तो समय पर पाना होता है। ये संस्कार अनिवार्य की प्राप्ति में सहायक होते हैं। किसान अर्थ का नहीं उपभोग्य पदार्थ का उत्पादन करना है। कब? जब गर्मी ज्यादा पड़ती है- तब। नहीं। जब सब सोते रहते हैं, वह जागता रहता है। इस अवसर की प्रतिक्षा में रहता है कि मुझे क्या करना है।

जिस प्रकार अवकाश प्राप्त होने पर भी प्रतिभा सम्पन्न विद्यार्थी अपने अध्ययन पर ध्यान देता है। आगे की भूमिका बनाते रहते है। उसी प्रकार वह किसान करता है। समय पर खेत में हल जोतकर कठोर मिट्टी को मुलायम एवं उपजाऊ बना देता है। वर्षा को देख 4-5 दिन में वह उस भूमि में बीज डाल देता है। वर्षा होती है। किन्तु समय पर अंकुरण नहीं हुआ। सही समय पर सही बीज डाला फिर अंकुरण क्यों नहीं।

उत्तर आया मात्रा में कमी थी। किसकी मात्रा में? बीज को कितनी गहराई पर डालना यह महत्वपूर्ण है। नींव की भांति गहराई नहीं चाहिए। जहाँ हवा भी पहुँचती रहे। क्या कहते है उसे - फुसफुस। आपके इधर भूरभूरा

कहते हैं, उधार तो फुसफुसा। कई लोग कहते हैं न महाराज ये बहुत फुसफुसा है ले लो। आपको बिल्कुल भी तकलीफ नहीं होगी। ऐसे ही अंकुरित होने में बीज को भी तकलीफ नहीं होगी। — — —

को भी अनुपात से रखो।

भावना भावों की है भगवन यह फसल समय पर आ जाये / जिससे सबको वितरीत कर सकूं। अपने पास नहीं रखता। बाकी सब इन भावों से वंचित रहते हैं यह मेरा कहना है। अभी आपके सामने दो बालिकाओं ने बताया। आप लोग सोच रहे होंगे कि ये रटा हुआ जैसा लग रहा है किन्तु यह रटा हुआ नहीं है। विद्या कैसी होनी चाहिए? तो जीवनोपयोगी विद्या हो। जो जीवन निर्माण में काम आये वही विद्या है। वह अक्षरात्मक नहीं भावात्मक / संस्कारात्मक हो।

इसी शिक्षा से जीवन में खुशहाली प्राप्त हो सकती है। कहाँ तक प्राप्त होगी? कह नहीं सकता जब भी होगी इसी प्रकार से होगी। हाँ! इतना अवश्य की वर्तमान की शिक्षा प्रणाली से नहीं होगा। इतिहास जानने से ही ज्ञात होगा। धार्मिक दृष्टि से भी यह आवश्यक है। नहीं तो जो जीवन मिला है अन्तिम क्षणों में हिसाब-किताब, लेखा-जोखा लगाओगे तो कुछ भी नहीं मिलेगा। आज अर्थ के लिए तो रात-दिन एक कर रहे हैं। परिश्रम नहीं करने से इधर-उधर घुम रहे हैं।

ऐसे में जीवन के संध्याकाल में मात्र पछतावा ही शेष रहता है। जाग्रत अवस्था में कुछ करना है सो कर लो तभी जीवन उज्ज्वल बन सकता है, अन्यथा नहीं। तो

खाद कम डालो, बीज पर बोझ मत डालो, बीज गहराई में भी मत डालो इतना ही इस वक्तव्य का अर्थ है।

इसे समझ कर जीवन में ग्रहण कर सकें ये ही मात्र भाव है। चाबी रखी जाती है। ताला लगाकर सुरक्षित रखते है चाबी को। हमारे पास ऐसी चाबी है विद्या रूपी चाबी कहीं भी जाओं उपयोगी सिद्ध होगी। यही विद्या एक मात्र वर्तमान और अतीत को सुधारने में सहायक है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

15-12-17 "हाथी ने दी शिक्षा" प्रातः 9.20

प्रायः करके मनुष्यों को ही उपदेश दिया जाता है। ये सारी व्यवस्थायें मनुष्यों के लिए ही होती हैं। सुनते हैं समोशरण में तिर्यञ्च भी जाते हैं। आप भी सुनते हैं, वो भी सुनते हैं। वे कैसे ग्रहण कर लेते हैं, आपको पता भी नहीं लगता। धारण करने की प्रक्रिया तो चेतना की हैं। चाहे फिर मनुष्यों के कान हो या पशुओं के कान हो। धीमान् के हो या गरीब के हो। छोटा लड़का भी क्यों न हो अथवा 80 वर्ष का वृद्ध भी क्यों न हो। प्रक्रिया भीतर से चलती रहती है। और बाहर से अनुमान लगाते है।

अच्छा सुना तो दूसरों को सुना देते हैं। पर ध्यान रखें! ये सुनने की चीज है सुनाने की नहीं। इसलिए हमारा कल्याण हो, संभव है दूसरे का भी भला हो। यह मनुष्य की सबसे बड़ी कमजोरी है कि वह अपने आपको सबसे उच्च

मानता है। होता होगा भी क्योंकि समझता है तो होगा सचमें भी। लेकिन जब अति समझ लेता है तो समझाने की प्रक्रिया चालु रहती है।

आपको अति में तो नहीं गिनते, पर सुनते हैं, अब गुरुजी कहाँ तक कर पाते हो। कल एक उदाहरण दिया था वह अलग ही ढंग से दिया आज अपने ही ढंग से बताता हूँ। सर्कस होती है। सर्कस में पुरुष-महिला आदि सभी काम करते हैं। अनेक प्रकार के व्यक्ति प्रशिक्षण / लेते / दिखाते हैं। उसमें मनुष्य ही नहीं क्रुद्ध जाग पशुओं से भी कराया जाता है। अब बोलो! जहाँ मनुष्यों की गति नहीं, मनुष्यों की वहाँ गति है। एक पार्ट में बता दिया जाता।

हाथी का बच्चा था- थोड़ा बड़ा हो गया। एक गेंद लकड़ी की उसके पास छोड़ दिया। उसके पैर बड़े हैं- गेंद छोटी है। अब देखो। उसे क्या प्रशिक्षण दिया अथवा लिया। वह गेंद को अपनी सूंड़ से बीचों बीच ले आया। उसे स्थिर कर दिया। चारों तरफ जनता भरी है। बीचोंबीच वह हाथी है। सर्वप्रथम वह उस गेंद पर एक पैर स्थिर करता है। आपके पास दो ही पाँव हैं उसके पास चार हैं। आकार में भी आपसे चौगुने हैं। भारी भरकम है।

अब एक पैर रखा था- उसके ठीक विपरीत दूसरा पाँव भी रख दिया। इस प्रकार अपने आप पर नियन्त्रण

रखते हुये चारों पैर उस पर रख दिये। वह हाथी का बच्चा (अप्) बता रहा है कि नियन्त्रण ऐसे रखा जाता है। मनुष्यों को सीखा रहा है संयम ऐसे रखा जाता है।

साउण्ड - ध्वनि के माध्यम से वह करता रहता है। साउण्ड देखी नहीं। टकरायेगा दीवार से अतः इसका उपयोग कर लो। अब चारों पैर रख दिया उसे ज्ञात है खड़ा नहीं रह सकता है अतः उस गेंद को लुढ़काना शुरु कर दिया। ये Football है Logball नहीं। पैरों पर नियन्त्रण बनाकर खिसकाता जा रहा है। अब दो हाथ वाले ताली बजाने लगते हैं। आपको सीखाना बहुत कठीन है।

हमने सोचा आज बुद्धि की कसरत कहाँ-कहाँ है। बाहर बाद में आती है भीतर तो पहले ही चालु हो जाती है। अब वह उस ताली की ध्वनि नहीं सुनता। वह जानता है कि ये ताली क्यों बजा रहे हैं। मेरे चमत्कार से प्रभावित होकर ताली बजा रहे हैं। ताली दे दुंगा तो पैरों पर से नियन्त्रण खो दुंगा। अतः नियन्त्रण कहीं खो न दे। आज लोग अपनी चेतना का नियन्त्रण खो देते हैं। विश्व में रहते हैं हम दूसरे पर प्रभाव क्या सोचकर डालते हैं।

सीखना अनिवार्य है। सोचते है बिगड़ा हुआ युग है। तो सुधरा हुआ कौन है। सुधरा हुआ वही है जो अपने आपको नियन्त्रण में रखता है। हाथी के बच्चे से सीख लो।

उसके पास ऐसी बुद्धि है। गेंद पर खड़ा हो गया चारों पैर से लुढ़काते हुये। आजकल की परीक्षा में नकल की मना करते हैं। हमारे यहाँ नकल की पुरी छुट रहती है। हाथी की नकल करो।

नम्बर की चिंता मत करो। बोरी भरकर नम्बर दे देंगे, जितना चाहो। योग्यता के अभाव में ऐसा ही हो रहा है। भारत की भी यह दशा हो गयी। प्रमाण पत्र के माध्यम से योग्यता का आंकलन करना ठीक नहीं। तत्त्वार्थसूत्र में प्रमाण का मतलब सम्यग्ज्ञान को प्रमाण कहते हैं। देखना अलग है और पैर रखना अलग है। दोनों को सम्यग्ज्ञान कहते हैं। सोच विचार के अभाव में किया गया कार्य मोक्षमार्ग नहीं माना जाता है।

यह दूसरों के लिए नहीं स्वयं के लिए है। हमारे से भी आगे की कोम है। दूसरी ही कोम है। पशु है, शाकाहारी प्राणी है। नियन्त्रण के कारण इस प्रकार कट पाता है। परन्तु बिगड़ता है तो किसी के काबु में नहीं रहता। अपनी इन्द्रियों के वशीभूत होकर आपको भी प्रभावित कर सकता है। कई युग बीत गये, अब हमें इस दिशा में कदम रखना है। लड़खड़ाते हुये तो हम बहुत चले हैं। एक पैर इधर तो दूसरा पैर उधर। इधर-उधर मत देख। प्रशिक्षण की भी आवश्यकता नहीं। एक व्यक्ति इस प्रकार आगे बढ़ जाता है तो हाथी - घोड़े - बन्दर ही

क्या गधा भी आपके साथ चलने लगता है।

गधे से कहा- तुम तो गधे हो। वह कहता है- तुम तो कुछ भी नहीं हो हम कम से कम गधे तो हैं। इसी तरह एक ओर सर्कस में देखा। वह आज नहीं बताऊंगा फिर कभी आज तो गधा तक ही सीमित रखुंगा। मतलब ऐसी भी शिक्षा आज अरबों- खरबों का धन बहाया जा रहा है फिर भी डिफाल्टर घोषित हो रहे हैं। योग्यता नहीं लेकर आया।

आकर वह दादा जी कहता है- मुझे काम ले सकते हो परन्तु योग्यता नहीं है। जिसमें अपने आप खड़े होने की क्षमता है वही दूसरों को खड़ा कर सकता है। आप खड़े तो होते हैं, लेकिन चुनाव में। अब हम किसको बैठायें? सुन रहे हो। जी। देख लो गुजरात में क्या हुआ?

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

Notes -

- जो-जो देखी वीतराग ने.... आ० श्री कहते हैं जो-जो देखी वित्तराग ने। अतः वित्तराग छोड़ो तभी वीतराग मिलेगा। वैसे भी ह्रस्व वि पहले आता है और दीर्घ वी बाद में व्याकरण के अनुसार भी अतः हम वित्तरागी नहीं वीतरागी बनें एवं वीतराग की उपासना करने वालों की चर्या- सेवा करें।

16-12-17 "भूसा उड़ाओ- धान नहीं" प्रातः 9.20

आप लोगों के सामने कल भी कहा था। हम अपने ऊपर नियन्त्रण कैसे रखकर आगे बढ़ सकते हैं। आज पूर्वज हमारे सामने नहीं हैं (उनके अभाव में भी महत्त्वपूर्ण यह है कि हम उन्हें किस रूप में स्वीकारते हैं। इसका कोई नियम नहीं है कि आपके बच्चे आपको स्वीकार करें आपकी गतिविधी कैसी है? उसी पर आपकी संतान: तय करती है कि हम इसे स्वीकार करें या नहीं। अभी नहीं जिस समय (भविष्य में) जरूर सोचेंगे की हमारे पिताजी ने इस प्रकार का काम किया।

आज हमें सब समझ में आ रहा है। अन्यथा विपरित हो तो - कैसा किया जरा सा हम लोगों के बारे में तो सोच लेते। कुछ ऐसा करते जिससे चार चांद लग जाते। देख लिया सब स्वार्थ की दुनिया है। आप इस प्रकार भी कह सकते है, हम छोटे थे, पिताजी चले गये, उन्होंने कुछ नहीं किया। आकस्मिक उनकी मृत्यु हो गयी। [बंदरों की आवाज] जीवन में इसी तरह उछल-कूद होती रहती है। प्रबंधकों को पहले ज्ञात नहीं था अन्यथा टीन नहीं छत डालते। आवाज नहीं होती। अब ऊधम होयेगा तो ये क्या करेंगे। प्रवचन के समय रोज इसी तरह ये सेना आ गयी। 10-15 मीनिट फिर हम क्या करेंगे। बहुत कठीन है।

तो मैं कह रहा था - आपलोगों

को अतीत की ओर ले जा रहा था। हमारा जो भविष्य होने वाला है वह इनका वर्तमान होगा। जो चले गये उनका अतीत आज वर्तमान है। भविष्य में क्या करना तो उसके बारे में सोचना पड़ता है। आज ऐसी स्थिति बन गयी है कि देश/समाज की क्या सोचेंगे एक परिवार के बारे में भी नहीं सोच पा रहे हैं।

शासन के सामने हाथ फैला देते हो/मांग करते हैं। शासन क्या करें। केवे सबकी पूर्ति करेगी। अतीत की घटनाओं के कारण वर्तमान की समस्याओं को हल करना एवं सुख-सुविधा बनाना बहुत कठीन होता है। आप खलिहान में हैं। हवा चल रही है। अच्छी बात है एकदम खड़े हो गये। तिपाई लगा रखी है। अब किसान 2-3 तगारी मतलब तसला दक्षिन में मसूरा भरकर तिपाई पर खड़े व्यक्ति के हाथ में दे दिया। 2-3 मीनिट भी नहीं हुये (उड़ाने लगा। क्या उड़ेगा। भूसा उड़ेगा। धान उड़ता नहीं।

उड़ान उड़ गया। $\frac{1}{2}$ मिनिट भी नहीं हुआ। हवा का रूख बदल गया। वह इधर से उधर चालु हो गयी। कुछ वह हवा बदल गयी। अब क्या करेंगे। ~~उस~~ किसान ने जो नीचे हेर लगाया, उसमें ऐसी व्यवस्था है वह चारों तरफ घुम सकता है। उसी जगह वह धान को गिराता रहता है। यह वर्तमान की विशेषता है। आप लोगो को भी किसान की तरह हवा का रूख देखना

है। जैसे अभी शासन की हवा बदल रही है। आप सहयोग देते हैं, उन्हें भी सहयोग चाहिए।

आपसी संबंध होते हैं।

उद्देश्य सभी का एक ही है- मात्र भूसे को उड़ाना। धान को रखना। ये सब स्वार्थ की दृष्टि से नहीं होता है। उस समय का भारत क्या था? बदलती हुयी हवा को देखकर काल है प्रति सजग होना चाहिए। आज वर्तमान में धर्म का स्वरूप - अहिंसा का स्वरूप बदलता नजर आता है जबकि स्वरूप कभी बदलता नहीं। इसका क्षय आपको ही जायेगा। आपकी अहिंसा से ही आनेवाली पीढ़ी को बल मिलेगा।

पूर्वजों का ऐसा इतिहास था। इतिहास खोलकर देखते हैं तो लगता है हमारा इतिहास बहुत उज्जवल था। कहने की कोई आवश्यकता ही नहीं। बस सोना नहीं है। योग्य बुकबंधन जो आगे की पीढ़ी के लिए अहिंसा का विस्तार करें। ऊपर से सब सुखी है - भीतर से भी सब सुखी हो। सुन रहे हो? (जी आ० श्रीजी) दोनों कानों से या मन से? मन से। कानों में मन को उपस्थित कर रखा है तब तो सही अन्यथा हमारी बात यों ही उड़ जायेगी।

तो धान को रखना है। कानों में जो शब्द आये उन्हें सुरक्षित रखना है। बंदर बुद्धि तो कैसी रहेगी। सही बताओ। जब फोन पर बात होती

रहती है- उस समय कोई अधम मचाये तो क्या करते हो? एकाग्र होकर सुन लेते हो। प्रबंध होने पर भी क्या करें? दिव्य-ध्वनि की आवाज भी आपके कानों में न आये तो मैं क्या करूं?

विषयों के कारण ऐसा है। वर्तमान का सदुपयोग करते हुये अहिंसा की रक्षा करना है। शाकाहार से ही धर्म समझ में आ सकता है। मांसाहार से तो दिक्कत ही होगी। भविष्य अंधकार मय होगा। इतना ही कहना है। "वर्तमान में रहकर भविष्य को भूलना नहीं।" वर्तमान में जो कुछ भी उदय में आ रहा है, उसमें भी साहस के साथ आगे की ओर कदम बढ़ाते जाना है। पीछे की ओर यदि कदम बढ़ाया तो खड्डे में गिरोगे। ऐसे खड्डे में छिपता भी नहीं लगेगा।

कई बार तूफान आता है तब कहा जाता है- जहाँ भी हो खड्डे नहीं हों- बैठ जाओ। गुरुत्वाकर्षण के कारण खड्डे में गिरने की संभावना होती है तो- लेट जाओ। लेटने का मतलब सोना नहीं है। ताकि फायरिंग का प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसी प्रकार जैसे अभी ऊपर ले चल रहा था (बंदरों की आवाज)। इन सबको देख अडोस-पडोस के प्रति कर्त्तव्य करना है। उनकी वो जाने। आलस करेंगे तो बाद में पश्चाताप के अतिरिक्त कुछ नहीं निकलेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय!

रविवार
17-12-17 "कैसे दूर करें- अज्ञान रूपी अंधकार" प्रातः 9.20

आप लोगों को ज्ञात नहीं- जो अपने भीतर भी उस प्रकार की शक्ति/इस प्रकार का बल विद्यमान है किन्तु जब तक उसका ज्ञान नहीं है तब तक इसी प्रकार चलता रहता है। ज्ञात होजाने पर नहीं करता उसे उजाले में भी डर स्वप्न में भी डर लगने लगता है। अज्ञान को इतनी आसानी से दूर करना सरल नहीं है। "आसमान को छुना फिर भी सरल है, परन्तु अज्ञान को दूर करना बहुत कठिन है।"

प्रभु से हमें बोध प्राप्त होता है फिर नहीं भी चाहें तो भी डर पास में नहीं आ सकता। और आ भी जाये तो परिक्रमा लगाकर वापस चला जायेगा, सामने नहीं आ सकता है। आपको चाहिए ऐसा ज्ञान हमारे पास आ जाये किन्तु अज्ञान को तो पहले छोड़ना पड़ेगा। ऐसे नहीं कि एक जेब से निकालकर दूसरी जेब में रख लिया/बताओ। महाराज! खर्च तो इतना ही हो और हमें धन मिल जाये। ज्ञान कहता है- मैं स्वयं धन हूँ और शाश्वत धन हूँ। अज्ञान को तो आप छोड़ नहीं रहें। मैं घर जाऊँ या नहीं जाऊँ? मन में अनेक विकल्प आते हैं।

देखो उदाहरण के माध्यम से समझ में आ जायेगा। एक [वायर] तार के माध्यम से लाइट की व्यवस्था कर दी। लाइट तो लाइट है। इसमें भेद नहीं होता किन्तु उसकी भिन्न-भिन्न अभिव्यक्ति के कारण

एवं ऊपर के कवर के कारण उसमें विविधता देखने को उपलब्ध हो जाती है। करंट में कोई भेद नहीं रहता। रहता है तो बताओ? फिर जब भेद नहीं है तो काम क्यों करता है।

देखो! सैकड़ों मीटर दूर से बिजली तारों द्वारा उसमें करंट एक ही है पर पहले हम उसमें 0 वॉट का फिर संख्या बढ़ाते हुये २२ वॉट और बढ़ाते-बढ़ाते अंत में हेलोजन पर आ गये। हमें ये बताओ इसमें बड़ा कौन है? आपने कहा था खर्च कम हो / तो हेलोजन में खर्च सबसे ज्यादा एवं 0 वॉट में बहुत कम / अब ये बताओ उसी लाइन से 0 वॉट भी और उसी तारन से हेलोजन भी। लेकिन 0 वॉट कहता है- प्रवेश कहाँ से करोगे? वह कहता है मेरे घर में प्रवेश नहीं मिलेगा। ये हमारा घर है।

अब सोचना यह है कि एक ही लाइन है एक (जीरो) वॉट जैसा करन्ट है। फिर भी हेलोजन जहाँ वहाँ लिखा है "Danger"। जीरो वॉट है तो यदि लाल भी है तो Danger नहीं। जिसके पास जितना धन रहेगा, उसको उतना ही Dangerious कहते है। नींद नहीं आ रही, आयेगी भी नहीं। भले ही कितना भी प्रबन्ध क्यों न कर लो। ध्यान रखो - नींद भी बहुत सोच-समझकर आया करती है।

जो शान्ति का अनुभव करता है, नींद भी उसी के पास रहती है। आप अज्ञान के चक्कर

में हो, इसलिए ऐसा हो रहा है। दो प्रकार का प्रकाश है- एक हैलोजन का, दूसरा ० वॉट का। जीरो वॉट का प्रकाश ऐसा प्रकाश है जिससे शान्ति का अनुभव होता है। उसको भी कुछ नहीं सहते। उसमें भी करंट आ रही है।

जब बाहर जाते हैं। रोड के ऊपर से बिजली के तार मिलते हैं। बताते हैं कि यह हाई-टेंशन लाइन है। कुछ व्यक्ति मिलते है जो बहुत हाई-टेंशन में रहते हैं। "सब तनाव में है- तनाव मुक्त है तो हम।" "जीरो टेंशन वाले है हाई टेंशन वाले नहीं।" सरकार भी कहती है- रसी का उपयोग करें। इसमें कुछ भी खर्चा नहीं है। आपने कहा था- कम खर्चे में बता दो अतः सरकार के अनुसार चलो। इसलिए "हाई टेंशन से दूर, इंटेन्शन सही करें, यही मेडीटेशन है।" अन्यथा गोली लेकर भी ध्यान नहीं कर पाते। बहुत ही सरल प्रक्रिया है, बस इसे समझ नहीं पाते।

इसी का नाम अज्ञान है। वही ज्ञान हो जाता है और वही अज्ञान। हैलोजन से काम लेना तो अज्ञान है। यहाँ आना चाहते हो तो कोई खर्चा नहीं लगेगा। अपने ही घर में आप रह नहीं पा रहे हो और दूसरे के घर की ओर झांक रहे हो। ध्यान रखो- वहाँ नींद नहीं और यहाँ गोली की जरूरत नहीं। यहाँ अल्प निद्रा ली जाती है। यह रास्ता है निष्परिग्रह का, गृहस्थों की अपेक्षा अल्प परिग्रह कहा। लिमिटेड रखो। लिमिटेड के दो अर्थ

होते हैं।

पहला लिमिटेड = सीमित, दूसरा लिमिटेड यानि कम्पनी जैसे प्राइवेट लिमिटेड। "अनलिमिटेड तो रखो- और लिमिटेड की बात करो। ये ठीक नहीं। गृहस्थ सीमा रेखा खिंच देता है। इससे अज्ञान कम होता जाता है। ० वॉट के पास अज्ञान रूपी अंधकार आता तो है पर उसे छु नहीं सकता। इर्द-गिर्द सब ओर अंधकार है, दूर तक अन्धकार ही अन्धकार दिख रहा है फिर भी यहाँ पुरा अज्ञान नहीं हैं। केवलज्ञान होगा तभी पुरा अज्ञान दूर होगा। पुरा तो तभी मिलेगा जब पुरा छोडोगे।

भोग्य वस्तु मिलती है पर भोक्ता नहीं। अतः आवश्यकता के अनुसार वस्तु रखें। बडे-बडे अस्पताल बन रहें है सब रईसों के लिए हैं। गरीबों के लिए नहीं। सम्यग्दृष्टि के लिए भी आवश्यक है। इतना ही पर्याप्त है। अब हमारे हेलोजन को तो भूल जायेंगे किन्तु जीरो वॉट को सदैव ध्यान में रखेंगे।

अहिंसा परमो धर्म जी जय।

इर्यापथ में -

शुभ लेश्या कब अशुभ लेश्या में परिवर्तित होगी। संयम के साथ शुभलेश्या जब कि मिथ्यात्व के साथ अशुभ लेश्या होगी। द्विपायन मुनि पर बहुत चर्चा हुयी। तैजस पुतला कब निकला संयम में या असंयम में। आ.श्री-सम्यग्दर्शन के साथ ज्ञान भी सम्यक्। वह मिथ्या ज्ञान कब होता है दर्शन मिथ्या होते ही।

18-12-17 "संकल्प से आती दृढ़ता" प्रात: 9.20

ने एक स्थान पर लिखा है, उसका भाव यह है कि कोई भी धार्मिक अनुष्ठान करता है उसका उद्देश्य होता है। इसका अर्थ यह है कि आप मांगलिक कार्य करने जा रहे हैं, अब आलस्य से दूर हो जाओ। स्नानादि कर लो। अब स्नान गरीब भी करता है और अमीर भी करता है। गरीब भी तेल लगाता है और बोलो ना! अमीर भी तेल लगाता है। अमीर का तेल अलग रहेगा। गरीब तो कोई घानी का तेल भी ले लेगा। ये वस्तुस्थिति है। वही बता रहा हूँ। अब एक बार तेल लगाया जाता है और अच्छे से स्नान कर लिया।

जिस जल से एक बार स्नान कर लिया, उसे दुबारा काम में नहीं लिया जाता है। इसी प्रकार इत्र भी एक बार सूंघ लिया दोबारा काम में नहीं। ठीक इसी प्रकार धार्मिक अनुष्ठान पूर्ण निर्मलता के साथ करें तो कर्मों की निर्जरा होती है फिर दोबारा बंध नहीं होता। आपने देखा होगा उस प्रकार के जल अथवा गंध को दुबारा लेने के भाव भी नहीं होते। अब मान लो कपड़ा है, बहुत अच्छा कपड़ा है। आपका मित्र सदैव उस कपड़े की इच्छा करता था। उसकी अलमारी में वही कपड़ा। सीधे दुकान से लाकर उसे उढ़ा दिया। अब क्या हुआ। उस कपड़े को देखना भी पसन्द नहीं करोगे।

इसी प्रकार आचार्यों ने कहा है, जितने भी हैं बदले में सोचना नहीं है। स्नान से निवृत्त हो हाथ में मंगलद्रव्य लाये। चढ़ा दी - चढ़ा दी। इस निमित्त से

मोह को विसर्जन करना चाहते हैं। मोह कभी भी ग्रहण करने योग्य नहीं। मोह तो मोह है अब वह चाहे अमीर का हो या गरीब का हो। अमीर का मोह बड़ा - ऐसा तो नहीं है। स्वर्ण दिलवा दो। मोह तो अप्रशस्त / अशुभ ही होता है। उसी को दूर करने / कराने के लिए धार्मिक अनुष्ठान की आवश्यकता होती है।

इस प्रकार एक बार जो द्रव्य काम में लेलिया, दोबारा काम में नहीं आता। अब दूसरी ओर कपड़ा है आवरण है। आपने उतारकर रख दिये / कोई दूसरा व्यक्ति उठा लिया। अब दोबारा काम में नहीं लेओगे क्या? क्यों हंस रहे हो? देखो एक बार ही वस्तु का उपयोग करना चाहिए। यही मोह है। उसका तो छोड़ना हो गया सबका क्यों नहीं। मैं ये नहीं कह रहा कि उतार दो। आचार्यों ने इसे उपभोग की संज्ञा दी है। तो एक बार भोगने में भोग की संज्ञा दी।

इसी तरह है कि कब पहनना और कब नहीं पहनना / अष्टमी - चतुर्दशी को स्नान - अशन आदि का त्याग, उस दिन अलंकार का भी त्याग। ऐसा नहीं की अरहा तेल - उबटन लगा कर बढ़िया धोती दुपट्टा पहन लिया। रत्न दीपों में तो साधारण श्रावक बनकर शुक्ल वस्त्र धारणकर शुक्ल लेश्या को धारण करता है। इसी प्रकार आभूषण - अलंकार - भोजन - वाहन आदि में भी उदासीन रहता है। भोजन करता भी है तो काम चलाऊ मतलब खाना पूर्ति कर लेता है। उस दिन वह संस्कार नहीं करता है। संस्कार का मतलब विशेष स्वादिष्ट / सुगंधित नहीं बनाते हैं।

इसी को त्याग की उपासना बोलते है।

जो सम्यग्दृष्टि होता है वह हर काम इसी प्रकार से करता है। अपने उपभोग को कुछ समय त्याग करके इसका सेवन करता है। ऐसे में स्वाद का कुछ महत्व नहीं रहता है। इस प्रकार हमारे आचार्यों ने हमें अपने दर्शन/अपने उपयोग को मांजने के लिए कुछ साधन प्रदान किये है। इन्हे उपयोग में लाये तो जरूर स्वच्छता आती है। मान लो पानी गंधला था - फिटकरी उसमें घुमा दी. अपने आप ही वह गंदगी नीचे बैठ गयी।

इसी तरह जितनी देर/काल के लिए धार्मिक अनुष्ठान के भाव रहते है तो हमारे परिणाम उज्जवल एवं भाव प्रशस्त रहते हैं। यही हमारा उद्देश्य हो। जीवन पर्यन्त हमारे भाव इसी तरह के बने रहें। क्यों की भावों में समय-समय पर परिवर्तन होता रहता है। संकल्प ले लेने से हमारा जीवन साफ होता जाता है। साफ करना है या नहीं। बोलो। भोजन करते हो तो हाथ साफ करते हो या नहीं। हमारे हाथ नहीं, अपने स्वयं के।

संकल्प ले लिया तो अब वह दिनरात धो रहा है। भले ही सो जाओ। छोटा सा व्रत भी दृढ़ता/संकल्प से लिया तो रात में भी निर्जरा होती रहती है। इसीलिए आप उस नियम को

स्वप्न में भी तोड़ते नहीं। नहीं-नहीं, ऐसा हमारा संकल्प है। ऐसा होता है कि नहीं। पक्का है।

तो अब दो नम्बर का काम छोड़ दो। धीरे-धीरे सरकार भी अब कह रही है। इसके पीछे सत्य-आदर्श-राष्ट्र भक्ति सबका पालन हो जायेगा और मोह अपने आप ही मिट जायेगा। फिर सर्प तक भी आपसे डरेंगे नहीं। यह कब होगा? जब आपके हाथ में कुछ नहीं होगा और आप इधर-उधर नहीं देख रहे होंगे। आपके हाथ में लड्डिया तो फिर वह भी कुछ करेगा। क्यों की सर्प भी जानता है कि यह मृत्यु एवं मृत्यु का साधन है। प्रतिकार के भाव तभी आते हैं।

इस तरह हम जीव होते हुये भी जीव से घृणा के पात्र न बनें। मित्रता के पात्र बनें। उसे भी सौभाग्य माने साथ में जीयें तो गीतर का जहर समाप्त हो जाता है। आप अमृत चाहते हो या जहर। अमृत को पाने हेतु। आरोग्य को प्राप्त करने हेतु दण्ड के रूप में आपको प्राप्त होता है। मोह देती देना होगा। कर्ज ली रखा है तो चुकाना भी पड़ेगा। ये जितनी भी बातें है, आचार संहिता की बातें हैं। प्रभुख बनने की साधन-भूत है। जो भी आदर्श बना है वह इन नियमों से ही बना है। अब आज बनो या कल बनो। बनना है तो छोटे-छोटे नियम लेकर/संकल्प लेकर उस मोह के ऊपर मार करते रहो।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नमो

19-12-17 "आओं बनायें रिश्ता भगवान महावीर से" प्रातः 9.20
सुनो! 10 मिनिट युं ही जय-जयकार में निकाल देंगे तो
क्या पाओगे। अनुशासन होना जरूरी है। देखो! आपकी पहचान
बाहर से है या भीतर से है? भीतर से तो आप जानो, बाहर
से पुरी दुनिया जाती है। किसी ने कहा - उसका वैमनस्क होगा
अतः कहा - सब मालुम है हमको - पहचानते है हम उसे। अब
आपको क्या हुआ? "सब मालुम है" उसने तो कह दिया। अब
आप स्वीकार करें, यदि नहीं है तो सिद्ध करके बताइये। मतलब
हम भीतर से आपको पहचानते है।

ये भीतर की बात हुयी,
अब बाहर से कैसे? उनसे तो क्या उनकी छाया से भी हम
बच जाते है। हाँ। इसका अर्थ है उनकी छाया भी पड़ना हमारे
लिए हानिकारक है। इस प्रकार आपका संक्षिप्त परिचय
हो गया। क्या देखा और क्या सुना ये बाद की बात है। इन
वाक्यों को सुनकर पहचानने का तरीका है। भगवान को
कैसे पहचाने? हो तो पहचाने। माल दिखाओं। दिखायेंगे
तभी जब आप लेंगे। हमारे ऊपर गुस्सा नहीं करना चाहिए।
कूवत हो तो। धर्म को खरीदने के लिए कौनसी कूवत हमारे
पास होनी चाहिए।

विज्ञापन करते जा रहे हैं। लोग भी इस
विज्ञापन के युग में समझदार हैं। एक बार खरीदता है -
दोबारा उसकी दुकान पर नहीं जाता है। धर्म को ऐसा नहीं
बनाना है। ऐसा धर्म करो। एक बार धर्मात्मा से सुनेगा तो

हटेगा ही नहीं। पचासों दूकानें हैं, पर एक बार जो पसन्द आ जाती है, ध्यान वहीं जाता है। वह जो प्रथम लाइन में है। इधर से उधर हो या उधर से इधर कोई फर्क नहीं।

उसने अपना अनुभव बताया, अब हमें समझना है। भगवान के अभाव में भगवान की पहचान कैसे करें। हम बता देते हैं। बाबा जी - दादा जी नहीं रहे, पिताजी - चाचा जी हैं। अब आप फोटो में देखते हैं। पिताजी से - दादा जी नहीं दिखते? क्या ये फोटो है क्या? इनके भाव क्या हैं? दादा जी कौन थे - बाद में बतायेंगे। इनके भाव क्या ये रह दो। पिताजी को भी उनके दर्शन नहीं हुये। क्योंकि जिसक्षण पिताजी का जन्म उसी समय दादा जी की मृत्यु हो गयी।

जैसे नाती अनभिज्ञ है, वैसे ही पिताजी भी अनभिज्ञ हैं। अब फोटो लगी है। पिताजी बतायेंगे ये हस्तासर उन्हीं के हैं। उनका अस्तित्व क्या था? मोहल्ले में किस-किस के पास क्या-क्या दिया? नाती होशियार हो तो सब खोज निकालता है। सुनते हैं - ऐसा है - लिखा हुआ है। हम न्यायालय में जायेंगे। कोई भी मना नहीं कर सकता कि हमने नहीं लिया। उस लेख के माध्यम से आगे बढ़कर दादा जी से अधिक कमाई कर सकते हैं।

आज तो दिवालिया हो रहे हैं। दिपावली के दिन भगवान महावीर स्वामी सबको याद आते हैं। अब आप दिवालिया हो जायेंगे तो किसे याद करेंगे।

आपके गुणों के माध्यम से भी आपकी परम्परा के बारे में जाना जाता है। आप लोगों का क्या कर्तव्य है? उनके नाम से जाने जाते हो, हाँ आप वैसे ही होंगे। जैसी आपकी चर्या है उसी प्रकार जानेगा।

चित्र / बिम्ब की ओर देखने से महावीर भगवान का स्वरूप ज्ञात होता है। इसी प्रकार भक्तों के माध्यम से, उनकी चर्या के माध्यम से हमारे पूर्वजों का लेन-देन / व्यापार होता है। बोलो होता है कि नहीं। कभी-कभी दादा जी बिना फोटो के भी जाने जाते हैं। मान लो पोते की आकृति एवं दादा जी की आकृति एक सी है। होती ही है पिताजी से नहीं मिलेगी वह पोते से ही मिलेगी। नाती की आकृति नाना जी से मिल जाती है। नाना जी दूर है यहाँ नाती है, जान लेते हैं। इसी को आचार्यों ने कुल-जाति कहा है।

समझ में आ गया [जी आ० क्षी० जी] इधर नाना जी से नाती, दादा जी पोता जुड़ा होता है। इनकी आकृति से भीतर का बोध हो जाता है। आप लोगों के चित्र से भी, परन्तु आज गफलत जैसा हो रहा है। पहले चित्र बनाया जाता था, दो ही रंगों के माध्यम से - Black & White। यदि White नहीं हो तो अकेले Black से भी नहीं अकेले White से भी नहीं। सफेद पर सफेद क्या करेगा? आपका चित्र केवल भीतर से संभव नहीं - केवल बाहर से भी संभव नहीं। दादा जी - नाना जी

पोते या नाती में आ सकते हैं। दादा जी-नानाजी दो हैं किन्तु नाती अथवा पोता एक है। इस एक में ही दो के पहचान कराने की क्षमता है।

इसीलिए दादा जी-नानाजी नाती-पोते को अच्छा मानते हैं उनसे ज्यादा प्यार करते हैं। पिताजी से नहीं क्यों की पिताजी एक का काम वह दो का काम कर रहे हैं। इसी प्रकार आप कहीं भी रहियो, छाप पड़े बिना रह नहीं सकती। भगवान को चाहते हैं तो तैयार हो जइये। उस गौरव को मन जीवित हस्ताक्षर से प्राप्त करना संभव नहीं। ऐसा व्यवहार बनाइये की उसकी आकृति दूसरों पर पड़ जाये। उसी व्यवहार से निश्चय की प्राप्ति होती है। केवल व्यवहार भी नहीं - केवल निश्चय भी नहीं दोनों में तालमेल होना परम आवश्यक है।

महावीर भगवान का वह वैभव आज भी ज्यों का त्यों विद्यमान है। (जिनवाणी) उसे सुरक्षित रखा है। हजारों वर्ष से लाते-लाते यहाँ तक लाये हैं अब उसे जीवित कैसे रखोगे? विचार करना है। यदि लाइन ही गायब हो जायेगी और आप सोते रहोगे तो क्या हालू होगा। आपको तो पता लगाना जरूरी है पहले क्या था- उससे पहले क्या था। तभी निकाल उसे सुरक्षित रख सकोगे। आज आप लोग उपेक्षित कर रहे हो।

इसे प्रवाहित करेंगे तभी जीवित रख सकते हैं। नदी का जल बहता रहता है तो

प्रवाहित होता रहता है। नहीं तो आप कहते हैं - महाराज ये सूखी नदी है।

सूखी नदी में तो फूट ककड़ी, तरबूज आदि होंगे, जल प्रवाहित नहीं। सूखी नदी में तो वह फूट-फूट रोयेगा। इसलिए नदी को सुखाइयो नहीं। और फूट ककड़ी भी नहीं। सिंचाई करते रहो - कृषि करते रहो पानी का उपयोग करने से वह बना रहेगा। सब आनंद में रहेंगे। नाती को याद रखीयो। हमारे इन एक-एक उदाहरण को याद रखते हो कि नहीं। महिने भर बाद भी याद रहना चाहिए तभी लाभ मिलेगा।

याद रखना कि महाराज जी ने नाती-पोते, दादा जी का नाम नाना जी का नाम फूट ककड़ी का नाम सबका नाम लिया था। कर्तव्य मानकर ये सब काम कर लेना चाहिए, अन्यथा महावीर भगवान से हमारा नाता-रिश्ता कुछ भी सिद्ध नहीं हो पायेगा।

अहिंसा परमो धर्मः की जय।।

अभिभूत →

ईसरो से पूर्व चेयरमेन के. कस्तुरी रंगन तथा एक वैज्ञानिक और एवं अमरकंटक युनिवर्सीटी के कुलपति आ० क्षी के दर्शन कर इतने अभिभूत हुये कि आत्मी की 1/4 घण्टे की चर्चा में लगभग 3-4 बार उनकी आंखो में पानी आया।

20-12-17 — "आओं कषाय करें" — — — प्रात: 9.20

एक ही वस्तु भिन्न-भिन्न काल में भिन्न-भिन्न उद्देश्य के द्वारा अपना प्रभाव दिखाती है। वह वस्तु किसी अन्य के संयोग के साथ, विपरित संयोग के साथ अथवा समान रूप से तो परिणाम अलग-अलग निकलता है। यह कार्यक्रम पुरी दुनिया में रात-दिन चल रहा है। हमें किसके सम्पर्क में क्या होता है, इसका अध्ययन होना अनिवार्य है। तभी जिसे हम औषध मानते है होगी। सामान्य से हैलो ठीक लेकिन विशेष तब जब और भी मेल मिलाप चाहिए। अन्यथा होसकता है वह बाधक न बने पर साधक भी नहीं। — — —

— — — — — — — — — इसके लिए बड़ी जागृती की आवश्यकता है। किसके लिए क्या गुणधर्म है तो निश्चित हीत का सम्पादन अन्यथा अहित हो जायेगा। आप अहित तो नहीं चाहते। जल्दी में ऐसा हो जाता है। तो मैं कहूँगा जल्दी में संसार बढ़ जाता है। जल्दी में संसार घटता भी है क्या? हाँ! विधीवत् करने से जल्दी में संसार घट भी सकता है। विधी के बिना साधन से साध्य की प्राप्ति नहीं हो सकती। एक व्यक्ति को खाने में न जाने क्या आया। उसे पता नहीं। बाद में घर वालों से पुष्टाह की-ज्ञात हुआ, हाँ! ऐसा हुआ था। वह अपना परिणाम दिखा रहा है। काफी उग्र है। — — —

— — — — — — — — — घर वालो ने कहा - हम इसे शान्त कैसे कर सकते है। वह श्वांस में भी - रक्त में भी घुस गया है। कई अंगो में प्रभाव दिखा रहा है। वैद्य जी ने कहा -

घबराने की कोई बात नहीं। हमारे आचार्यों ने लिखा है कि यदि रोग है तो उसकी औषधी भी है। आप औषध लेना चाहते हैं किन्तु अभी इसे सेवन नहीं करना जो औषध है बता देता हूं। पिलाना अथवा खिलाना तो था नहीं। जलाकर उसे शरीर के उस विवक्षित स्थान पर लगाना था।

अब लेप लगाने से उसके उल्टी-दस्त की तेजी में कमी आने लगी। मतलब रोग कम (नीचे की ओर) हो रहा है। इसको सब लोगों ने स्वीकार कर लिया कि औषध का प्रभाव हो रहा है। लेप का कमाल है। थोड़ी देर बाद उसी लेप पर और लेप का प्रयोग किया, फिर उसी के ऊपर लेप लगाते चले जाते हैं। इससे उल्टी-दस्त एकदम तो नहीं रुके लेकिन बहुत अन्तराल में अपना प्रभाव दिखाया। औषध लेने वाला भी कहता है- वैद्यजी महाराज आपने बचा लिया।

घर वाले भी सभी प्रसन्न। एक ने कहा इतनी तुरन्त लाभ देने वाली औषधी क्या है? बताओ। वैद्यजी- बतायेंगे तो तुम दुरुपयोग करोगे अथवा अश्रद्धान करोगे ये तो युं ही है। अतः आचार्यों ने कहा औषधी का नाम मत लेओ। जिसको औषधी के प्रति गाढ़ श्रद्धान, जैसे अरहंतादि के प्रति श्रद्धान होता है। अरहंत तो मुक्त नहीं, उनमें राग का अभाव होता है। वैद्यजी आपको असर औषधी से मुक्त करा सकते हैं। हमने क्या कहा था- प्रतिज्ञा ली थी कि

आपके अनुसार ही करूंगा।

मैं दुनिया की सेवा प्रसंग के अनुसार ही करूंगा। एक वैद्य जी- जो आप कहो। मैं जो चाहता हूं करोगे? तुरन्त प्रतिज्ञा को स्वीकार कर ली। अब क्या है वह देवाई बता दो। लोगों ने सोचा लेप लगाया था तो चरक- कल्याणकारक के लेप-प्रकरण को देख लें। मैक्या? लेप प्रकरण में तो बहुत सारी औषधियों के बारे में दिया है। तब ज्ञात हुआ कि विष के द्वारा विष चढ़ा है सेवन करने से, अतः उसी को जलाकर लेप कर देना।

भीतर नहीं देना (नाभी केन्द्र पर, जिससे जो खाया है उसको परिवर्तन कर सको। तो घर वालों से पूछा क्या खाया था? त्वैकी- तुम्बी कड़ी थी वह कड़वी संस्कृत शब्द है। उस कड़ी तुम्बी को सुखाकर उसी का लेप नाभि प्रदेश पर कर दिया। विष को विष मार देता है। जो विष खाया गया था उसका यह लेप मारक हो गया। इस उदाहरण के माध्यम से सोचना है जो जीवन में विष फैला है (बहुत समय का है आज का नहीं है। उस पर कषाय करना है। जिसके द्वारा विष फैला उसी को जलाकर लगा दो।

कषाय जो है कषाय को जला देगी (खबरदार! दूसरे पर कषाय नहीं, अपने पर करना है। आपने राग-द्वेष किया तो अपने ही ऊपर लेप चढ़ाना है, दूसरे पर करेंगे तो खबरदार। वह आप पर विष नहीं चढ़ा सकता, आप उस पर विष नहीं चढ़ा सकते। (सुन रहे

हो? [जी आ०श्री जी]

देखों छात्राओं ने एक स्वर में कहा। वे मन- वचन - काय की शुद्धि पूर्वक बोली। वचनों का प्रयोग जरूरी है। एक बार नहीं 3 बार करो। विश्वास हो तो। लिखा तो सब है। भीतर विष है उसके लिए भीतर विष देन्गे तो ओर फैलेगा, बाहर देन्गे/लेप करेन्गे आमूल चूल परिवर्तन अवश्य होगा। स्पर्शन इन्द्रिय सर्वत्र है। भोजन धीरे-धीरे काम करेगा। लेप का प्रभाव जल्दी एवं सर्वत्र होगा। आत्मा राग - द्वेष युक्त है। प्रत्येक प्रदेश से वर्गणायें ग्रहण होती है। भगवान से प्रार्थना करते है जितने भी प्रदेश है उनका उपयोग ऐसे करेन्गे।

तो कषाय उस आत्मा पर करो जिसने भीतर गन्दगी फैलायी है। स्वच्छ भारत का अभियान छेड़ रखे हो। हम भी शामिल हो जायें। न ही हमारे पास झाड़ू है तथा न ही नगरपालिका की अन्य सामग्री, न ही गांग की आवश्यकता है। मैं देखुन्गा जिसने इस पवित्र आत्मा को गन्दा बना रखा है, जिससे दर-दर भटक रहा है। यह सब दूसरे द्वारा किया हुआ नहीं है। अपना है। आप सोयें है क्या?

हमारे यहाँ का सिद्धान्त यही कि हमें अपनी आत्मा पर क्रोध, अपनी आत्मा पर मान, अपनी आत्मा पर माया करना है, ऐसी उपासना की उठकर भागना ही पड़ेगा। ऐसी ध्वनी कर दो कि उस

जंगल / अरण्य में चाहे वह किसी भी कोने में क्यों न हो, नाग भी जो चन्दन वृक्ष से लिपटा हो सबका मद झर जाता है - चलो जल्दी-जल्दी खाली करदो। वह आ जायेगा हमारे वश की बात नहीं हैं।

आत्मा को जागृत करने की जरूरत हैं। कर्म ऐसा करो किसी भी भव में - अन्तर्मुहूर्त में जाना होगा। आपको तो कषाय करने का अभ्यास भी है। कृपा होगी भगवान को साक्षी बनाकर अपने आप पर क्रोध-मान आदि करो दूसरे पर नहीं करना। महाराज यैतो करेंट जैसे लगता है। देखो सबके मुख खिल गये। परन्तु प्रभाव बुद्ध पर ही पड़ेगा। आज तक नहीं हो पाया परन्तु जब भी होगा इसी विधी से होगा। इस पर दृढ़ विश्वास करना होगा।

इसी सैलाब आज करो चाहे कल करो चाहे परसों करो। विधी ये ही है। अतः विधी को भूलो नहीं - कल को भी भूलो नहीं। मनुष्य गति में ही यह ओबदीकाम करती है। मनुष्य पर्याय मिलना बहुत दुर्लभ है। क्या कर रहे हो? कहाँ जा रहे हो? भारत जा रहा हूँ। विदेश नहीं देश है यह। विदेशी जैसे हो गये हैं। मंत्र का प्रभाव कितना पड़ेगा, कह नहीं सकते। मंत्र भी अपना प्रभाव भारतवासी पर ही डालेगा - विदेशी पर नहीं। India पर भी प्रभाव नहीं भारत पर ही डालेगा। India घोषित करना चाहते हो तो हमारा मंत्र हमारे पास ही रहने देना। सहयोग नहीं दे पायेगा। स्वप्न में भी विदेशी नहीं होना

चाहिए। विदेश तो भारत से सदैव उलटा ही करता है। वहाँ Fast food होता है यहाँ fast नहीं Slow होता है। Fast food वाले को fast जाना भी होता है। अब आपके हाथ में है- जीवन चाहिए तो जीवन और मृत्यु चाहिये तो मृत्यु। जैसे आपकी इच्छा हो।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नमो

21-12-17 "Fast Food नहीं Fast Food करें" प्रातः 9.20

अभी आप लोगों ने भजन की और कुछ लोगों ने भजन सुनी और कुछ लोगों ने तालियों से साथ दिया। उसके बिच में एक बात हमने भी सुनी बाकी तो...। मुझे सुनने में बहुत आनन्द आता है। क्यों की भजन करने वाले उनको याद कर रहें हैं और उन शब्दों के माध्यम से सब लोगों को वहाँ तक ले जा रहें हैं। उनकी आकृति को अपनी दृष्टि में देखने का सौभाग्य प्राप्त कर रहे हैं।

शब्दों में ऐसी क्षमता होती है। वह किसके लिए सच है, किस व्यक्ति को अर्थ बताने में महत्त्वपूर्ण है। "मैं करबद्ध प्रार्थना करता हूँ" ऐसा कहते ही हमारे सामने एक आकृति आ जाती है। कर याने हाथ बद्ध याने ऐसे (संकेत करें) नहीं। करबद्ध का अर्थ यह है कि तुं (संकेत) कर लेता है। और करबद्ध के साथ ही इसके भीतर में नम्रता आ जाती है। मानु बन जाता है। इससे विपरीत जब बाजार आदि में जाते हैं तो वस्त्र आदि संभालकर, दर्पण में स्वयं नहीं अपने रूप को सजाता रहता है। होता है कि नहीं। फिर बाहर

निकलते ही, यही देखता है कि मेरी ओर किसका ध्यान है। सही बताओ।

कोई ध्यान नहीं तो/मतलब मेरी वेशभूषा में कोई कमी रह गयी है। सब ओर देखते हैं, इसी प्रकार के भाव है। उन्हें सुनते/स्मरण करते रहते हैं, तो माथा झुक जाता है। जब एक हाथ के ऊपर दूसरा हाथ आता है तो अहोभाग्य मानता है। इसलिए जिनवाणी का कोई अंश सुनने से गद्गद हो जाता है। ये बताओ आपने क्या शब्द सुना? जो सुना वह शास्त्रोक्त ही सुना। आचार्य श्री हमने, बोली आगे। हमने Fast food का त्याग कर दिया है। ये Fast food नाम अतीत में हमने कभी नहीं सुना। आप लोगों का सौभाग्य है जो सुन रहे हैं।

यह Fast food साइज को ही Fast life बना देता है। महाराज ये सेण्डविच है, अण्डरस्टैंडिंग है या नहीं/आप ही जानो। Fast life का मतलब जानते हो/जिसका जीवन बहुत गतिशील हो। जो मृत्यु की ओर जल्दी जा रहा है। Fast food एक तरीका है जल्दी मृत्यु के लिए। दादा जी भी Fast food कर रहे हैं। हम जबरदस्ती नहीं करते। हम दादाजी-पिताजी से नहीं बच्चों से हम कहना चाहते हैं - Fast food का त्याग करो, पर Fast food को याद करो।

अतीतकाल में क्या भोजन होता था, उसको तैयार करना है। ताकि जिन्होंने केवलज्ञान को प्राप्त कर लिया वे याद आ जायें। उनके उस केवलज्ञान में वह

Fast food ही काम आया।

आपके घर में वे होनहार तीर्थंकर आते हैं। आंगन में खड़े हो जाते हो। हे महाराज ठहरीये - हे महाराज! ठहरीये। क्यों बोलते हैं? आप जानते हैं। क्या करना है? ये भी जानते हो। वे मौन रहते हैं फिर भी प्रतिग्रहण हो जाता है। केवलज्ञान का कारणभूत यह food/आहार आप देते हो। यह सब होटल में नहीं मिलता। होटल के सामने आप खड़े हो जायेंगे - हम नहीं आयेंगे। वहां तो अति Fast food है। हम Fast life नहीं चाहते, लंगड़ाता हुआ जीवन भी नहीं। एक-एक कदम, श्वांस-श्वांस में संकल्प लेते हुये चलते जायें।

"Just Wait at the Gate."

अपने द्वार पर प्रतिक्षा करो। द्वारापेक्षण वालों को ग्राहक जरूर मिलेगा। हमारा विश्वास रहता है। हम भी ग्राहक को तोड़ना नहीं चाहते। सबको माल नहीं मिलता। तभी मिलेगा जब Fast food का त्याग किये हो। क्या खा रहे हो? हम आहार कैसे लेंगे। आप सोचिये। आपके द्वारा दिये उस आहार के निमित्त से केवलज्ञान, तीर्थंकर बनने वाले हैं। वे सब कुछ जानते हैं। Fast food मिला नहीं होगा।

क्या करोगे? दादा जी कहते हैं - 5 दिनके लाने Fast food का त्याग करते हैं। दादा जी - हमारा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, इसलिए हमें Fast food लेने के लिए कहा गया है। हम भी कह देते हैं - दादाजी

अभी 5 दिन हम सोचते हैं।

जब आपकी ये छात्रायें जिनका जीवन प्रारम्भ भी नहीं हुआ, वो कहती है हम जीवन के अन्तिम क्षण तक के लिए Fast food का त्याग करते हैं। हम मौन रहते है फिर भी ग्राहक आया है तो छोड़ कैसे दे? मालुम पड़ा तब इन लोगो (महाराज जीसभी) को कहा Fast food में क्या-क्या डला है। वैसे Fast का अर्थ होता है उपवास / उपवास की जो food बनाये सच में वही Fast food है।

आज की शिक्षा प्रणाली यही कर रही है। धर्मध्यान भी नहीं रहा शुक्ल ध्यान तो दूर की बात है। दूसरे की अच्छाइयाँ नहीं देखते। वात्सल्य अंग नहीं। पूरक बनने के भाव ही नहीं रहें। सब एक-दूसरे को टेड़ी आँख से देखते है। टेड़ी आँख का मतलब- महाराज इसकी आँख शुरुआत से ही टेड़ी है। कोई खतरा है। ऐसा कर लो- आप आँख को टेड़ी करके एक फोटो लेकर देख लो / उस समय पता लग जायेगा। टेड़ी आँख से बैल देखता है। जिसे देखते ही सब लोग भाग जाते हैं।

ऐसी आकृति हो आपकी / आँखो से करुणा बरसती रहे / स्नेह से ओतप्रोत हो। सामने वाला बैल भी मुंह ही आपके पास आ जायेगा। सुप्रभातं- सुप्रभातं कहेगा। आज तो अच्छे दर्शन दिये। जब हमारे प्रभु 6 महिने उपवास के

बाद उठे। बाद में भी Fast food है या लेने योग्य है। सोचा होगा। आपने नहीं सोचा।

उन्होंने देखा अभी तो जमाना है। सब दिखाया पर...। क्या हुआ? जो नवधा भक्ति पूर्वक आहार देगा उसी से लेंगे। प्रतिज्ञा थी। किसने दिया? आप सबको ज्ञात है। बड़े-बड़े चक्रवर्ती के यहाँ नहीं। अतः शुद्ध भोजन किजिये। उसी में से त्यागी-व्रती को खिलायें तथा मेहमानों को दें। इसीलिये आज तक यह प्रशस्त मार्ग बना है। आज तक जीवित है तो इस मार्ग पर चलने वाले श्रमण और श्रावकों के कारण ही जीवित है।

वह जो कुछ भी करते हैं, वह सब शाश्वत, जीवनोपयोगी, अत्यन्त आवश्यक होता है। सब कुछ होते हुये भी ऐसा मार्ग अपनाया। चाहते तो 4-5 व्यक्ति नियुक्त कर देते - केवलज्ञान होने तक पर ऐसा नहीं। सौधर्म इन्द्र कहेगा पहले भेरी भक्ति का प्रबन्ध करो। आज तक जीवन के शुरू से ऐसी व्यवस्था मैंने की है। सब कुछ ऐश्वर्य स्वर्ग से हाथ भी नहीं लगाया। यो सौभाग्य मुझको मिले। जब से दिक्षित हो गये दिक्षित होते ही अब किसी का भी नहीं चलेगा। सौधर्म इन्द्र अब इसलिये नहीं कह सकता क्यों की वह आहार देने योग्य नहीं न ही आहार लेने योग्य है। अस्त का भोजन करने वालो को केवलज्ञान नहीं हो सकता। न ही अस्ती

को केवलज्ञान हो सकता है।

अब तो केवल श्रावक के हाथ से ही आहार लेंगे। वह चाहता है, मुझे भी इसी तरह रत्नत्रय की प्राप्ति हो, केवलज्ञान की प्राप्ति हो। तभी आश्चर्य होते हैं उसके घर में। Fast food के द्वारा सब आश्चर्य समाप्त हो गये। आप लोगों के घर की स्थिति क्या है, आप ही जानेंगे। इतना अवश्य है आज जो आहार ले रहे हैं वह खतरनाक होता जा रहा है। दिन-प्रतिदिन ऐसे-ऐसे भयंकर रोग हो रहे हैं।

बस! एक बात कहकर मैं अपनी वाणी को विराम देता हूँ। पंजाब में एक शहर है (अमृतसर) वहाँ से एक ट्रेन ही चलती है उसमें केवल कैंसर वाले बैठते हैं और कोई नहीं बैठता। उसे "कैंसर- ट्रेन" कहते हैं। इस प्रकार सुनते हैं कि आज जो भोजन - राशन का उत्पादन हो रहा है, उसमें खाद यूरिया डाला जा रहा है। प्रतिवर्ष डालना उस पर कीटनाशक का छिड़काव और। सूंघने मात्र से वहाँ के लोगों में भयानक रोग। कैंसर इसी प्रकार, इससे बचना जरूरी है। शुद्ध खाद एवं शुद्ध दवाइयाँ। अपने यहाँ कीटनाशक नहीं - कीट निरोधक का उपयोग होता है। रोग हीन हो इसके लिए जानवरों की खाद का प्रयोग करें। प्रचार- प्रसार चालु हो गया है। इसी से खेती होती थी- इतिहास पढ़िये। भगवान महावीर एवं बाहुबली इसी परम्परा से चलना है। आज का यह वक्तव्य Fast food के नाम पर हुआ।

अहिंसा परमो धर्मकी जय हो

"गणित दिवस"

22-12-17 "अगणित को पहचानें" प्रातः 9.20

युग को गणित से अगणित की ओर जाना चाहिए। गणित का अर्थ सीमा होता है जब अगणित का मतलब सीमातित। आज हमारे पास मांग आयी - महाराज! गणित दिवस है। हमारे भगवान तो अगणित हैं। हिसाब - किताब रखना हो तो दुनिया से बात करो, बे हिसाब रखना हो तो भगवान से बात करो। गिनना एक प्रकार से गरीबी का द्योतक है। गणित वाले उससे ऊपर उठ नहीं पाते। जो गिनना छोड़कर आत्म कर्त्तव्य करता जाता है, वही गणित को भूल पाता है।

मात्र 100 वर्ष पूर्व, ज्यादा अतीत में नहीं, दादा - परदादा जी के जमाने में सुनते हैं - भारत से कपड़े का निर्यात होता था। विश्व का ऐसा कोई भी देश शेष नहीं रहा जहाँ भारत का वस्त्र निर्यात नहोता हो। बदले में क्या आता था, पैसा नहीं, केवल सोना-चांदी आदि। ऐसा विदेशी लोगो ने अपने इतिहास में भारत के बारे में लिखा है। गणित वाले अगणित कैसे हो सकते हैं इस उदाहरण से स्पष्ट है। उन्होंने ये भी लिखा है - सोना-चांदी, हीरा-मोती कहां रखते थे? तो मान लो एक कमरा 10x10 या 20x20 का है, उसमें चार दिवारें हैं तो चार कोने भी होंगे। बुंदेलखंड में "कुनिया"।

उस कोने में उंडेल दिया जाता था। उस पर कोई चादर अथवा बोरी ढक दी जाती है। सुन रहे हो? [जी] फिर गिनते कब होगे? गिनने में समय जितना - उतना उत्पादन और

कर सकते हैं।

इसलिए हमें इस गणित से ऊपर उठना है। ये गणित का चक्कर ठिक नहीं। पहले भी कहा था- ये सब लौकिक गणित है, हमारे यहाँ पारलौकिक गणित बोलते हैं। अलौकिक गणित कहते हैं। दुनिया के सारे गुणा एक तरफ और भगवान के गुण अलौकिक, जिन्हें गिन नहीं सकते। इसलिए ये क्या गुणा- भाग चल रहा है। ऐसे पुछते हैं न। पहले हमें मालुम नहीं था। एक मित्र ने दूसरे मित्र से कहा - क्या गुणा-भाग चल रहा है?

उसने कहा- क्या करें, उसके बिना दाल-रोटी नहीं मिलती। बोलो क्या चाहते हो। मतलब दाल- रोटी के लिए गणित का विषय होता है। तो ये चक्कर है। जब विदेशी आते थे, उन्होंने देखा। रखने हेतु कपाट/संदुक कुछ नहीं हैं। ताला- कुंची का महत्त्व तो विदेश में था, यहाँ नहीं। ज्यों ही ताला- कुंची का भाव आयेगा, विश्वास उठ जायेगा। इस गणित के कारण क्या हाल हो गया। मान लो सुबह से शाम तक दुकान किया। अब रात हो गयी दुकान बंद, एक-आध खिड़की खुली रख ली और चारों तरफ बैठ गये। गिन रहे हैं।

लड़का भी - पिताजी भी गिन रहे हैं। अब माथा ठनक रहा है - कितने हो गये? यहाँ पर मैं बताना चाहता हूँ- जहाँ गिनती आ गयी, पिताजी का विश्वास लड़के पर नहीं रहा। रख लो ऐसा कह देते। गिनती आ गयी बिच में अब लिख कर भी क्या लिखेंगे। उनके सामने लड़का गिनता है तो सोचते हैं कि

इस पर विश्वास नहीं होता।

विश्वास में कमी आ गयी। सुनरहे हो? [जी] आवाज में भी कमी आ गयी। हमें उस पर विश्वास करना है, जहाँ गणित नहीं अगणित है। चक्रवर्ती - छः खण्ड का अधिपति बोला - कुंची नहीं रखता। निमिच्छित दान की घोषणा - जो चाहो मांग लो। एक हफ्ता तक - हम ये उपकार कभी नहीं चुका पायेंगे। कोई भी घर में चूल/सिगड़ी इस हफ्ते नहीं जलायेगा/मैं उसका उपकार मानूंगा। गिनती नहीं है। निमिच्छित दान में गिनने की बात ही नहीं। नौ निधियाँ होती है उसके पास।

अपार वैभव का धनी होता है। जब तक वैराग्य नहीं होता तब तक प्रतिपल लुटा रहा है। बांट रहा है फिर भी खजाना खत्म नहीं होता। फिर भी वे छोड़कर नहीं उससे मुख मोड़कर गये। सुना आपने? गर्दन में सर्वांफल नहीं होगी, क्योंकि इसमें परिग्रह होता है। क्या है वे नौ निधियां? जिसके लिए 60 हजार वर्ष तक दिग्विजय यात्रा की। 84 लाख हाथी, 18 करोड़ घोड़े, इतने ही रथ, 9 निधियों, 14 रत्न आदि जो अन्य किसी के पास नहीं। इन सब को छोड़कर। बाहरी वैभव को छोड़कर भीतरी वैभव को प्राप्त करने चले गये वे चक्रवती।

वन में गये एक घोड़ा तो साथ रख ही लेते। अब तक जंगल में हैं। नहीं। वह भी परिग्रह है। इसकी सीमा कहां से जहां से गिनती शुरू होती है। यदि आत्म-विश्वास खोना चाहते हो तो गणित दिवस मनाओ। आत्म-विश्वास वाला

इस गिनती से विश्राम लेना चाहता है।

आत्म विश्वास के साथ वह ऊपर उठना चाहता है। कहता है - "नमो जिणाणं" जिसके प्रारम्भ में ही अगणित गुण है। द्रव्य एक होता है पर गुण अनन्त होते हैं। आप गिनती छोड़ दीजिये - जिनेन्द्र भगवान की विनती सामने लाइये। क्या कहा? हमने कहा - "सारी की सारी गिनती छोड़ दीजिये और जिनेन्द्र भगवान की विनती प्रारम्भ कर दीजिये।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नैं

23-12-17 "झूठी दुनिया से मन को हटा ले.." प्रातः 9.20

अभी आप लोगों ने भजन सुनी और बीच-बीच में दो-दो पंक्तियाँ जोड़कर विशेष संगीत के साथ जुड़कर आती है। आप सभी ने सुनी होगी, हमने भी सुनी। उसका अर्थ पता है आपको? पंक्तियाँ क्या है? झूठी दुनिया से मन को हटा ले..... । वो ही तो हम कह रहे हैं। हम अपने आपको झूठा मान लें, तब शांत हो जायेगा। आप दूसरे को झूठा मानते हो एवं अपने आपको साधुवाद मानते हो। यही एक प्रकार से वैशम्य है।

कोई भी मानने के लिए तैयार नहीं कि मैं दोष से युक्त हूँ। ये कितना बड़ा झूठ है, बिल्कुल सफेद झूठ। इसको सत्य कैसे कहें? ये झूठा सत्य नहीं सफेद सच है। ये सब भावों की अभिव्यक्तियाँ है। तो क्या भगवान से भी ध्यान हटा लें? नहीं। इन्हीं के माध्यम से हमें ज्ञात हुआ कि कोई भी

झूठा नहीं हैं।

सब अपने-अपने द्वारा ही परिणाम होते हैं। कितने लोग उनकी प्रशंसा करने में लगे हैं - थोड़ा सा और बोलो ना / और कितने ही - कान भर गये। उन प्रभु के समोशरण में सभी प्रकार के बैण्ड-बाजा, दिव्य घोष हो रहा है - वे दिव्यध्वनी कर रहे है / पुरा समोशरण भरा है। फिर भी आप भक्ति भान आदि के साथ बैठे हैं। और कुछ भी नहीं / वे प्रभु बीचोंबीच बैठे हैं।

उनकी उदासीना कहे या आसीनता कहे / क्या कहे? संसार से उदासीन होना अपने आप में आसीन होना है। फिर हमें अपना ज्ञान होता है / इस कोलाहल में हमें भी अपने प्रश्न को हल करना है / इसी को पढ़ना और इसी में पढ़ना है / सब हल हो जायेगा / हमें अनेक प्रकार का आवर्तन चाहिए - वैसा वातावरण चाहिए / ये ही झूठा मन हो गया / कुछ नहीं चाहिए / तीन लोक ज्ञान में उतरा है फिर उन्हें तो एक पल का भी विश्राम नहीं होगा / "सालोकानां - त्रिलोकानाम् > यद्दविद्यादर्पणायते" दर्पण की भांति जिनका ज्ञान है / लोक-अलोक झलक रहे हैं, पर अपने आप में है, संसार में नहीं है।

तीन लोक से बाहर भी नहीं / संसार में रचे-पचे नहीं हैं। हिन्दी में आधार की अपेक्षा में कहा जाता है मे के स्थान पर, पर भी कहा

जाता है। थोड़ी सूक्ष्म बात है पर आप लोग इससे भी सूक्ष्म बात को समझ लेते हैं अतः मैं इसे मोटी मानता हूँ। इसमें और इस पर इसका अर्थ क्या होता है? आप लोग इस पर ध्यान तो देओ किन्तु इसमें लीन मत होओ।

बोलो! आपके मुख से अच्छा लगता है। हम इसमें ध्यान करते हैं पर लीन नहीं, आप जिसका ध्यान उसी में लीन हो जाते हैं। इसे सुधारना आवश्यक है। आज ये सुधार भी कहीं हो गया है। भगवान की मुद्रा को देखते हैं - भगवान क्या करें। वे कुछ नहीं करते अपनी बात समझ में आ जाती है। वो भी हाथ में हाथ धरकर। मैं एवं पर में इतना अन्तर है। आज कई लोग सागर से आये हैं। तो कुछ लोग सागर में डुबकी लगा रहे हैं। ये सागर को जानते तो हैं पर उसमें डूबकी नहीं लगाते।

जो सागर से पार होना चाहता है वह सागर छोड़े। हम क्यों सागर को छोड़ें। "इसमें नहीं रहना - इस पर ध्यान देते रहना।" समझ में आया। (जी आपश्री जी) कुछ लोग जी कह रहे हैं कुछ 'हव' कह रहे हैं। हमें 'हव' का बहुत आनंद आता है। अभिभावक लेने आये हैं बच्चों को। बहुत अच्छा। इस प्रकार जब भी भगवान के दर्शन करो। यही ध्यान रखो - वे दुनिया में रहकर भी उसमें लीन नहीं, अपने आप में हैं। दूसरे को प्राप्त करना नहीं है। दूसरे को (अपनी आत्मा)

प्राप्त करना है।

जिसे ग्रहण किया है उसको छोड़ने में दुःख होता है जिसको ग्रहण किया ही नहीं उसमें हर्ष-विषाद, सुख-दुःख कैसा? अतः आपे में रहो। सुन रहे हो। हिजड़ो आप तो रहते हैं पर आपे में भी रहो। छोटी-छोटी बात है, पर ध्यान देने योग्य है। आपका समय हो गया है।

नहीं हुआ। सुनो। आपकी कविता का पक्ष कोई भी नहीं रखेगा। (चन्द्रसेन से) यदि संगीत का पक्ष होता तो उसमें वादन भी, गायन भी, गुणगान भी हो जाता। आपका अपना पक्ष है इसलिए वीर कहलाते हो। आप ताली बजवाने के आदि हो हाथ से हैं। यदि नहीं बजायेगा तो गुस्सा भी हो जाते हैं। उनकी कविता पर तो इतनी ताली, हमारी पर नहीं। ताली भी अलग-अलग क्वालिटी की होती है। क्या होती है।

एक के लिए ऐसी ताली की एक बार और बोलो, दूसरी ताली ऐसी की बहुत हो गया अब बैठ जाओ। इस ताली की तीन को समझते हो? इसलिए भगवान सबको देखते हैं। चाहते किसी को नहीं, इस रहस्य को समझ लो। बस बेड़ा पार हो जायेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

Note- ० एक मण चूना ५० मण पानी को सोख लेता है।
० एक आंवला २४ नारंगी का फल देता है।

25-12-17 "काला हुआ सफेद" प्रातः 9.20

आप लोगों को ज्ञात होगा अथवा देखा भी होगा लकड़ी अनेकों प्रकार का प्रयोग करते हैं। लकड़ी से ही ईंधन प्राप्त कर भोजन पाक/तैयार किया जाता है। उसी लकड़ी में एक बबूल की लकड़ी भी होती है, वह बहुत कठोर होती है। ये उदाहरण इसलिए दिया जा रहा है - क्यों कि कहा जाता है, पुनने में आता है इतना क्यों आग- बबूला हो रहे हो। किसी भी कारण को पाकर ऐसा वह हो जाता है।

तो वह बबूल का वृक्ष कैसा होता है। मोटे- मोटे बबूला ऊपर से तो काला - काला भीतर से लाल-लाल होता है। सर्वप्रथम तो कालापन ही दिखता है। मतलब अपने भीतर के तापमान को बाहर निकालता है अतः बाहर से काला भीतर से लाल होता है। यह उसकी क्रिया-शक्ति का प्रताप है। इसीलिए आचार्यों ने कहा कि अपने को भी कालापन हटाकर लालपन में आ जाना है। इसके उपरान्त और क्या है? आगे इसे जलाया। एक अंश भी कालापन नहीं रहता। सबका सब पाउडर बन जाता है। कालापन-लालपन को त्याग अब वह रख चाँदी सी सफेद हो जाती है। उसमें कोमलता आ जाती है।

महराज के केशलोंच के लिए श्रावक उस रख को लाकर दे देते हैं। कोई सिर में खुजली आदी भी निकला हो सब उस राख से ठीकठाक हो जाता है। किसी प्रकार की दवाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है। सफेद झक होती है

वह। अब देखो पहले वह लकड़ी काली अर्थात कृष्ण लेश्या थी- फिर लाल मतलब पद्म लेश्या आ गयी तथा अंत में सफेद शुक्ल लेश्या का प्रतीक हो गयी।

कठोरपन का त्याग कर नरम बन जाती है। अंत तक भी लकड़ी लोगों के काम आती है। सबके लिए सरल बन जाती है। लोग भिन्न-भिन्न प्रकार के बर्तन उसी से मांजते हैं। ये उदाहरण आपके सामने रखा। जलने पर भी वह काम देती है। आत्मा में भी इसी प्रकार की क्षमता विद्यमान है। तप के माध्यम से हम ऊँचे उठ सकते हैं। कृष्ण लेश्या के साथ मानो आत्मा है। कृष्ण याने श्रीकृष्ण जी के चित्र को देखा होगा कैसा काला। भीतर से आत्मा कैसी? बिल्कुल सफेद चांदी जैसी।

आत्मा भी तप रूपी अग्नि के माध्यम से जब तपती है तो चांदी सा निखार आ जाता है। ये शरीर काला है, इसे कितना भी मांज लो, इत्र-फुलेल लगाओ; तीन बार नहाओ, अभी सर्दी है मैं गर्मी की बात कर रहा हूँ। उस समय तो 2-3 बार नहाते हो। 3 बार ही क्या फव्वारे के नीचे ही बैठे रहते हो। आत्मा के पास इतनी गर्मी है- इसे पहचानो। तप की गर्मी। 12 प्रकार के तपों के माध्यम से उस आत्मा को चोखी-कंचन सा बनाने का काम करते हैं। आप लोग आग-बबूला क्यों होते हो। आत्मा तो वैसे भी अग्नि में जलती नहीं - ज्वलनशील तो शरीर है। शरीर को जलायेंगे तो

आत्मा तो अनंत काल तक कंचन सी रहेगी।

आप नहीं जलाओगे तो एक दिन घर वाले तो उसे डोली में उठाकर ले ही जायेंगे। और कहेंगे- इस जीवन में तप नहीं किया कोई बात नहीं अगले जनम में कर लेना। और डोली से उतारकर अग्नि लगा देंगे। कौन? 5-6 पुत्रों में जो ज्येष्ठ पुत्र होगा वही पिताजी के शव को जलाने के लिए आगे होगा। सही बात है कि नहीं। गर्मी होती है आकर देख लो। उस समय, कहाँ रहेंगे, पता नहीं। ऐसा करना- ऊपर से झांककर आप देख लेना। हमें जलाया जा रहा है- नहीं हमारे शरीर को जलाया जा रहा है।

भेदविज्ञान होगा इस दृश्य को देखकर किन्तु ऐसा सोचते ही नहीं। सोचने के लिए भेदविज्ञान आवश्यक है। अब दूसरे पर आग-बबूला नहीं, दूसरे को काला नहीं कहीयो। दूसरे को भी अपने समान शुद्ध आत्म तत्त्व मानो। यही भेद-विज्ञान है। फिर जहाँ भी जाओ आत्मा में डूब जाओगे। अभी तक तो दुनियादारी में ही लगा रहा। इस शरीर हेतु बुरे-बुरे कर्म किये किन्तु अब मुझे नाश करना है।

इतना अवश्य ध्यान रखना अंत में कर्मनाश करने में भी यह शरीर ही साथ देगा। आप इस शरीर को कौडी के भाव काम में ले रहे हैं, जब की महाराज। करोड़पति- अरबपति - खरबपति भीख्यों

न हो। वे तो तीन लोक के नाथ बन गये हैं। महाराज जी को देखने से ऐसा ही लगता है।

जब शरीर में संस्कार पड़ेंगे, आत्मा में कंचन की बात अवश्य आयेगी। आज रविवार है। बड़े-बड़े नगरों से लोग आये हैं। अभिभावक गण भी आये हैं। आत्मा की बात करो। ये सौभाग्य मिला है तो आत्म स्वभाव का चिंतन करना चाहिए।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नुँ

संस्मरण-

आर्यिका के घनिष्ट मित्र थे जिनगोंडा। आज प्रातः पता चला कि वे नहीं रहें। वे नांदनी मठ के भट्टारक थे। हाथी द्वारा उनकी मृत्यु हो गयी। आर्यिका के साथ ही वे भी गृह त्याग कर देशभूषण महाराज के चरणों में आ गये। जब देशभूषण महाराज जी विहार करते हुये दक्षिण में गये। लंबन निधी पहुँचे तो आर्यिका इधर आ गये उन्हें भट्टारक का पद दे दिया। उनका पहलवान परिवार था। चर्या अच्छी थी। क्षुल्लक वासुपूज्य नाम रखा था। गुरुकुल में अध्ययन किया। शास्त्री बने। पहले क्षुल्लक रहे फिर भट्टारक जी बने। कुम्भोज बाहुबली उसी तरफ रहे। मठ कोंपी समृद्ध-खेती-बड़ी भी उस मठ के अन्तर्गत। किन्तु आकस्मिक निमित्त पाकर यह घटना घटी अतः किस समय क्या हो जाये पता नहीं। प्रतिपल सतर्क रहो।

25-12-17 "अनिवार्य के साथ आवश्यक करो" प्रात: 9.20

जब आप कोई कार्य सम्पन्न करते होते हैं, उस कार्य सम्पादन करने के योग्य साधनों का भी आप ध्यान रखते हैं। क्यों की सही साधन/कारण के माध्यम से ही कार्य सम्पन्न हो सकता है। जैसा आप चाहते हैं, वैसा कार्य हो सकता है। इसलिए कार्य के पूर्व उसके कारण अथवा साधन के बारे में सोचना पड़ता है। बिना सोचे करते हैं तो सफलता प्राप्त नहीं होती। यह उचित निर्णय तात्कालिक भी हो सकता है अथवा पूर्व से योजनाबद्ध भी किया जा सकता है।

तात्कालिक कैसे? जैसे- पाठशाला खोल दो, कमेटी की मिटिंग बुला दो। इसीप्रकार मोक्षमार्ग में भी कर रहे होते हैं। योजनाबद्ध कार्यक्रम होता है। केवल आपके लिए ही नहीं कहा, हमारे लिए भी 24 घण्टे बहुत कार्य सम्पादित करने होते हैं। वह सब समय पर करने होते हैं। आप लोगों के छः आवश्यक बतायें कुछ अन्तर देकर श्रमणों के भी 6 आवश्यक बतायें हैं जिन्हें समय पर करना आवश्यक है।

इनका नाम आवश्यक इसीलिए पड़ा। "अवश्यमेव इदं कार्यं इति आवश्यकं"। आगम में जिस समय करना कहा उसी समय में करना तभी आवश्यक माना जायेगा। अन्य समय में करते हैं तो आवश्यक नहीं माना जाता है। जैसे- भोजन करना है। जो-जो भी

आवश्यक है, थाली में परोस दिया गया है। और कुछ भी परोस दिया गया है।

इसे सौंफ - इलायची - लौंग इत्यादि बोलते हैं। चुंकी थाली के अन्त में रखा गया था किन्तु परोसने वालों ने उसे प्रथम श्रेणी पर रखा। आप समझ रहे हैं न। अब ये ही पहले खाने लग जाये तो..। आप लोगों को हँसी आ रही है, मतलब ये ठिक नहीं हैं। जब भोजन पूर्ण हो जाये उस समय लेने योग्य है। उसकी गलती हो गयी तो आप सब हंस रहे हैं। उसी प्रकार आप लोगों को देखकर हमें भी हँसी आती है। पर क्या करें?

ये आवश्यक का अर्थ ही नहीं समझ पा रहे हैं। क्यों की २ दिन पूर्व ही एक व्यक्ति हमारे सामने आये। कहने लगे - आपका (प्रतिमास्थली का) जो ये कार्यक्रम मुम्बई में हुआ वैसा तो कभी भी नहीं हुआ। हमसे आकर कहने लगे - महाराज अब सुख खुल गयी है। हमें दिल्ली, कलकत्ता, अहमदाबाद, बैंगलोर, लंदन में भी होना चाहिए। लन्दन में तो पहले होना चाहिए। अब बोलो क्या होगा।

परीक्षा का फार्य क्या है। कैसे है इसका मतलब चाहिए हमें। ये सब आवश्यक में नहीं आता। अभी हम आवश्यकता के हिसाब से ले और दिया किया जाता है। उसी प्रकार भोजन के समय सौंफ आदि चुस्की लेकर रखना तो सही नहीं माना जाता। उसका अनुपात - समय अलग है।

वह छः आवश्यक का तो नाम ही नहीं ले रहा है। ये ध्यान रखो - पेट सौंफ से नहीं भरता।

"दाल-भात-रोटी, ये ही बात चौखी"

जठराग्नि तेज है तो बिना सौंफ आदि के भी हजम हो जायेगा। आज हर बात में ये हो रहा है। बस आप लोग होना तो चाहिये - होना तो चाहिये यही बात करते हैं। फिर तो ऐसा करो विद्यालय को ट्राला की भांति चक्का लगा दो। ले जाओं कहीं भी। जलयान जल में, वायुयान वायु में, भूयान भूमि पर चलता है। इस प्रकार करेंगे तो आपका उद्देश्य क्या है।

उद्देश्य ये है कि इन यानो का कितना उपयोग, कहाँ-कहाँ करना है। यान का उपयोग, यान की यात्रा कहाँ-कहाँ कर रहे हैं। हमारे पास आते है - आशिर्वाद दे दो। किसलिए। बस सब अच्छे से हो जाये। ये आवश्यक हो गया हमारे लिए। सुन रहे हो। [जी] परीक्षा की बात कर रहें हैं। क्या आवश्यक है? परीक्षा आवश्यक है। जब परीक्षा हेतु जाकर बैठ गये, पत्रिका (पेपर) हाथ में आ गयी। पढ़ा - आवश्यक सूत्र। उसे पढ़ीये। कितने प्रश्न है? मान लो 6 प्रश्न है। फिर लिखा था ध्यान दिजिये।

आवश्यक भी आ गया और ध्यान भी हो गया। आवश्यक में जाग्रति थी यहाँ चित्त शान्त हो जाता है। 5 नं० पर जो प्रश्न दिया है, वह अनिवार्य है। अब देखो।

6 प्रश्न आवश्यक है और 5 नं० वाला अनिवार्य होगा। यही हम समझाना चाह रहे हैं।

आप सोच रहे होंगे महाराज ने कटाक्ष कर दिया। कटाक्ष तब होता है जब ठीक-ठीक नहीं दिखता है। चश्मा निकालकर देखते हैं। पहले कुर्सी पर बैठिये फिर चश्मा लगाइये। फिर वह कहता है- एक आँख को बन्द करीये। तो आप एक आँख वाला ही चश्मा रखते न। समझो इसे। पहले दोनों से देखो फिर एक को बंद कर दिया। क्यों की एक से हो सकता है दूर का-एक से पास का, एक से ऊपर का...इसलिए ध्यान से पढ़िये। अनिवार्य को कैसे छोड़ देंगे।

इसे पहले लिखो नहीं तो आवश्यक का कोई मायना नहीं है। वह कहने लगे- आपने पहले तो कहा नहीं (अब कब होगी परीक्षा? 365 दिन बाद) महाराज कुछ कुछांक / दया आदि के नम्बर भी होते हैं। हाँ! इधर आओ हाथ जोड़कर खड़े रहो। पीछे घुम जाओ। पीठ पर एक देते हैं। जा 365 दिन बाद आना। इसीलिए आचार्यों ने कहा परीक्षा हेतु आवश्यक एवं अनिवार्य इससे ध्यान रखो।

आगम में आचार्यों ने 6 आवश्यक बताये पर अष्टमी-चतुर्दशी को ये 6 आवश्यक - कोई आवश्यकता नहीं। उपवास है। भोजन नहीं तो पूजन भी नहीं, स्नान आदि भी नहीं। भगवान के सामने ध्यान लगाकर बैठ जाओ।

कुछ मत करो। सुन रहे हो। ध्यान से सुनो।

इसलिये वि श्रोताओं को इसी में ज्यादा लगाओगे तो मात्र विज्ञापन ही होगा। और कुछ नहीं। हाँ ताली बजाने वाले तो बैठे ही हैं। अब कोई प्रवचनकार है। उन्हें तो मुख से बोलना है, उन्हें दोनों हाथों से ताली बजाना है। गड़गड़ाहट हो रही है जैसे तो बादलों की आवाज वर्षा के समय। ऐसा भी हमने सुना है - संख्या कम है तो यंत्र के माध्यम से तालियाँ बजा दी जाती हैं। ये भी एक विज्ञापन है।

मात्र एक पुजारी पूजा कर रहा है। मंत्रों का उच्चारण हो रहा है। अपने यंत्र से इस प्रकार जैसे तो लाखों व्यक्ति वहाँ पर हो। जाकर देखा - वहाँ कोई नहीं मात्र एक पुजारी था। विज्ञापन के कारण आज ये ही दशा हो गयी। हम तो करने योग्य पर ही ध्यान देते हैं। जिस दिन इधर ध्यान तो 6 आवश्यक पर ध्यान नहीं रहेगा। इसी प्रकार चाहे बम्बई - कलकत्ता - दिल्ली, देश - विदेश कहीं से भी आ जायें। उसका प्रभाव उतना ही जितना हम चाहते हैं।

आप सोच रहे होंगे, इसीलिये महाराज नहीं आये। हम आकर क्या करते। 4 बजे हमें प्रतिक्रमण करना होता है। और यहाँ पे बजे तक माइक मिलने वाला नहीं। मात्र सुनना ही होता सो हमने सुन लिया। प्रभावित करो पर उतना ही। जिस मात्रा / अनुपात में उतना ही होना चाहिए। पहले सौंफ

खाओगे, हंसी के पात्र बनोगे। पाचक ही पाचक नहीं खाया जाता। मात्र शतरंज के खेल से ही काम नहीं। इससे तो ऐसा होगा कि रणांगण में आप बच्चों को भेजना नहीं चाहते।

इस प्रकार आप कहीं भी रहें, दुकान पर भी 6 आवश्यक जरूरी है। वे क्या-क्या है, इन्हें ध्यान में रखें। भगवान को याद रखेंगे तभी छः शुद्ध नम्बर / अंक पायेंगे। अंक का क्या अर्थ होता है? क्या आप जानते हो? दक्षिण में अंक को गुण बोलते हैं। गुण का मतलब नीचे से कितने ऊपर आ गये। हमें हमेशा गुणी की ओर देखना है। अंक / गुण के अभाव में कोई भी अनुभव नहीं होगा। गुण तो आत्मा का वैभव माना गया है।

प्रथम श्रेणी में गुण ही मिले। खेल-कूद में भी गुण मिले किन्तु वह मन प्रशस्त हेतु। अनिवार्य नहीं। पहले श्रम करो। अच्छे से अध्ययन करो फिर मन को प्रशस्त करने हेतु खेल-कूद इत्यादि। इसी का नाम 6 आवश्यक है। ज्यादा कह लिया हो तो यहीं छोड़ देना। अंक को भी छोड़ देना क्यों की गुणों से ही उन्नति-मुक्ति की प्राप्ति होती है। गुण के स्थान पर दुर्गुण आ जाते हैं तो पतन होता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नैं

26-12-17 "स्वाद का आस्वादन" प्रातः 9.20

प्रवचनसार में आचार्य कुन्दकुन्द देव ने एक गाथा लिखी है। उसका स्पष्टीकरण टीकाकार ने दिया है। खाने-पीने की बात है ये ध्यान रखना। उसमें कहा कि किसी के पास घी है वह स्वादिष्ट भी है, पौष्टिकता को भी लिए है, स्पर्श-गन्ध भी उसकी अच्छी है। व्याख्याकार, कोशकारों ने उसे दुग्ध रस का सार कहा है। सार का अर्थ निःसार को हटा दिया/दूर कर दिया जिसमें से वह सार-सार बचा है। आपको भी इसी प्रकार सार को ग्रहण करना है।

ये उदाहरण दिया गया इसकी अवगुणता के बारे में एक बात कही कि वह आग को बढ़ाने वाला है अतः सावधानी से रखीयो। गर्म है तो हितकारी नहीं। ठण्डा है तो भी एक अवगुण - जम गया। जमना भी ठीक नहीं और गर्म होना भी ठीक नहीं। बिच की दशा में रहे तभी स्वाद का आस्वादन ले सकते है। गुणों का आनंद लिया जा सकता है। इसी प्रकार चरित्र को भी "दुग्ध-घृतवत्" कहा। इस चारित्र में अच्छे-अच्छे साधु भी पकड़ में आ जाते हैं।

कोई भी हो कानून तो कानून है। विधी-न्याय के सामने राजा-महाराजा कोई भी हो, सब एक ही लाइन में आ जाते हैं। जिन्होंने दीक्षा के समय प्रतिज्ञा ली की मैं कुछ भी ग्रहण नहीं करूंगा।

मन-वचन-काय से सबको छोड़ दिया।

अब एक-आध दिन तो बैठा रहा फिर आकुलता होने लगी। क्या? प्रतिज्ञा थी की जिसको छोड़ा उसे ग्रहण नहीं करूंगा किन्तु आहार तो लेना होगा। भोजन मैं तो थी भी आयेगा। इस वृत्ति से आत्मा को उपलब्ध नहीं कर सकेगा। तीर्थंकर भी आहार ग्रहण करते हैं। इतना ध्यान रखना - आहार के समय केवलज्ञान नहीं हो सकता। निर्विकल्प समाधी नहीं हो सकती न ही शुद्धोपयोग होगा।

इसीलिए महाव्रती के लिए भी कहा कि वह एक देश व्रत का पालन करता है। आपके पास भी देश व्रत है पर उनका देशव्रत अलग प्रकार का है। आपने आधा-आधा छोड़ा पुरा नहीं। इन्होंने पुरा छोड़ दिया पर ग्रहण करना है। क्या ग्रहण करना है? आहार/भोजन ग्रहण करना है। 10 प्रकार के बाहरी परिग्रहों में भोजन को परिग्रह नहीं माना है। भोजन परिग्रह तब हो जायेगा जब पाँच इन्द्रिय की उसमें संलिप्तता होगी। इस भोजन के बिना शुद्धोपयोग नहीं - केवलज्ञान नहीं।

देशव्रती को ये दोनों त्याग में भी नहीं हो सकते। उम्मीदवार के रूप में हो सकते हैं - एक देश परिग्रह का त्याग आपने किया है। इन्होंने महाव्रत धारण किया है। इनके लिए भी शुन्यागार पिच्छी - कमण्डलु - शास्त्र आदि उपकरण के रूप में ग्रहण

करना बताया है।

आप ग्रहण त्याग के रूप में करते हो। इसलिए एकदेश वाले होते हुये भी आप अशुव्रती है, भलेही आप रसपरित्याग करते हों। पहले २८ मूलगुण धारण करो फिर रसो का त्याग करो। मुनि के ग्रहण और त्याग तथा आपके ग्रहण-त्याग में जमीन आसमान का अन्तर है। प्रतिज्ञा के बाद यदि ग्रहण तो दोष के भागी होंगे। मैं नहीं आचार्य कुन्दकुन्द कह रहे हैं- इसे बोलते हैं अध्यात्म। पुलिस चोर को पकड़ती है किन्तु जब पुलिस ही गुनाह करे तो उसको पकड़ने के लिए भी पुलिस आती है। वह ऊपर वाली पुलिस होती है।

उसी प्रकार मुझे क्यों कह रहे हो, ऊपर वाले कह रहे हैं। कोई भी हो पकड़ में आयेगा। तो चटका तो लगेगा ही- गरम घी के कारण। अब थूकेगा अथवा छोड़ेगा-जिव्हा के कारण। आप चटक-मटक के कारण ऐसी स्थिति में हैं। अब छोड़ो बहुत दिन हो गये। यहाँ छोड़ दो तो छोड़ दो, वहाँ नहीं छूटता। स्वर्गों में अंधकार ही अंधकार है। "विषयों का अंधकार सबसे बड़ा अंधकार माना जाता है।"

इतना ही पर्याप्त है। जो कर्त्तव्य निष्ठ है, वही पालन करता है। कर्त्तव्य में चूक होने पर पश्चाताप - आलोचना इत्यादी करते हैं। प्रवचनसार का यह प्रसंग अनूठा है। इसमें किसी को भी छोड़ा नहीं। कोई लिहाजा नहीं। भाई - बहन कोई नहीं। इसी को बोलते हैं शास्त्र। शास्त्र कोई लिहाजा नहीं रखते।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

22-12-17 "शरीर अलग, आत्मा सबकी एक" प्रातः 9:20

आगम से हम सुनते आ रहे हैं, पढ़ते आ रहे हैं कि आदिनाथ भगवान् का समोशरण युग के आदि में लगा। उनकी ऊँचाई 500 धनुष बतायी गयी। इसप्रकार उस समय सभी मनुष्य 500 धनुष अथवा कुछ कम काया वाले थे। ये विचार आ सकता है कि 12 योजन विस्तार वाला वह विशाल समोशरण पर इतनी बड़ी भारी - भरकम काया वाला कैसे बैठेगा? कैसे भ्रमण करेंगे? इतना ही नहीं मनुष्यों के अतिरिक्त असंख्यात देवी - देवता और आते हैं। यहाँ पर तो व्यवस्था न होने से कह देंगे देवता सब बाहर की खड़े ही जायें।

वैसे ही वैक्रियिक शरीर धारी हैं। कैसे सम्भव कर पायेंगे? तिर्यञ्च कहते हैं हम तो सदैव मनुष्यों के साथ ही रहते आये हैं। उनका पालन करते हैं। चक्रवर्ती के यहाँ करोड़ों हाथी - घोड़े इत्यादि रहते हैं। अब अजितनाथ भगवान का काल आ गया। उसमें इतना नहीं रहता। ऊँचाई - आयु - वैभव आदि में कमी आ गयी। कमी आते - आते आज हम सब भगवान महावीर के तीर्थकाल में हैं। यहाँ मात्र एक योजन का समोशरण रह गया। अब क्या होगा। मैं आगे - मैं आगे, जैसे यहाँ रविवार को होता है न। तीर्थंकर की पुण्य प्रकृति में कोई भेद नहीं हैं। जो भी सुनने की इच्छा रखता है - आयेगा। उसका स्थान पहले से ही

आरक्षित है।

उस पर दूसरा कोई नहीं बैठ सकता। इसलिए आप ऐसा ही काम करें कि समोशरण में अपना स्थान आज से ही आरक्षित कर लें। विलम्ब से आये तो दूसरा बैठ जाये, ऐसी बात नहीं है। मनुष्य है तो मनुष्य के कोठे में, तिर्यञ्च है तो तिर्यञ्च के कोठे में, देव-देवियाँ भी भिन्न-भिन्न कोठे में बैठते हैं। कभी भी आज तक ये सुनने में नहीं आया कि किसी भी समोशरण में लाठी-चार्ज, तू-तू-मैं-मैं हुयी हो। समोशरण में किसी प्रकार का वैर नहीं रहता।

वहाँ सब वैर-भाव छोड़कर बैठ जाते हैं। ये तो यहाँ पर अज्ञान के कारण संकीर्ण बुद्धि रखते हैं। जो इससे ऊपर उठे हैं उनके सामने जाते ही वैर ठंडा-ठंडा हो जाता है। जैसे कितनी भी गर्मी पड़े, धरती फट जाय किन्तु बिजली चमकी वर्षा होते ही 5 मिनिट भी नहीं लगते सब धरती ठण्डी हो जाती है। उसमें भी ओला वृष्टि हो जाये तो फिर क्या? हम सभी देखते हैं कि इस धरती की महिमा अपरम्पार है। हम सदैव निशंकित होकर सोचें अथवा पढ़ें/समझें। हमारे मन में कालुष्य होने पर, ताप/संताप होने पर आज ये समाप्त हो गये।

अन्यत्र भी ऐसा होता होगा।

ये हमारी बुद्धि जो संकीर्णता की ओर चली जाती है। सबको तरन करते हुये मूलनायक महावीर स्वामी भगवान बने। फिर भी हमारे मन में प्रश्न उठते हैं। प्रत्येक समोशरण में 60 हजार प्रश्न पूछे

जाते हैं। वह श्रावकों का मुखिया होता है। भगवान महावीर स्वामी से भी प्रश्न किये। उसी परंपरा से जो शास्त्रधर परमेष्ठी होते हैं उन्होंने द्वादशांग की रचना कर डाली। किसी भी द्वादशांग में अक्षर-पद-अधिकार आदि सब उतने ही जो प्रथम तीर्थंकर के काल में हुये। कोई कमी नहीं।

सब द्वादशांग की रचना करने वाले माने जाते हैं। हम अपनी बुद्धि से सोचते हैं। एक-प्रश्न में ही आकुल-व्याकुल हो जाते हैं। समोशरण में ये सब नहीं होता। बाहर कितना भी तूफान हो पर भीतर नहीं। अथाह सागर है। ऋद्धियों की महिमा सुनते हैं। सर्वत्र प्रलय हो जाये पर इनका तप-तेज इस प्रकार का है कि उन पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। महिनो क्या वर्षों रहे तो भी कोई परिवर्तन सम्भव नहीं।

उनके बारे में सोचते/पढ़ते तो होंगे। जैसे दूसरों की महिमा है उसी प्रकार अपने पास भी अपरम्पार शक्ति है। हमें उस शक्ति पर विश्वास होना चाहिए। जैसा विश्वास होना चाहिए वैसा नहीं है। उस अनुपात से नहीं है। हमारे हीलेपन से वह शक्ति बाहर नहीं आ पा रही है। इसलिए जो कुछ भी है, किसी के पास पीतल, किसी के पास चांदी, किसी के पास (पीला-पीला) स्वर्ण, और उससे भी बढ़कर किसी-किसी के पास रत्नों की थाली झकझक कर रही है। ये सब काहे के लिए है? भगवान की पूजन करना है। भावों में कभी कोई कमी मत रखो। हो पुण्य

कम-बेशी हो सकता है, इसलिए ऐसा दृश्य मिला।

भाव बढ़ाइये। बोली बोलते हैं न आप लोग। हम भी कहते है भावों की ओर देखें- द्रव्य की ओर न देखें। द्रव्य न भी हो, भाव से वर्षा हो जाती है। वर्षा हेतु ऐसा वातावरण निर्मित करना है। जब तपा लगता है- गर्मी पड़ती है फिर तो मानसून आना ही है। ये सब अतीत की घटना हो जायेगी। भविष्य भी अंत रहित है। वस्तु स्वरूप पर बार-बार चिंतन करता है उसे कोई भी भय-भीति का तूफान डरा नहीं सकता। वह इस तूफान में भी शांत बैठा रहता है।

तूफान है भाग जायेगा। रुक नहीं सकता। यथावत् पुनः हो जाता है। वस्तुओं के भीतर परिणमन की लहरें उत्पन्न होती रहती है। छद्मस्थ अवस्था में वह अनेक प्रकार से विकल्प करता रहता है। इसी कारण आँखो से पानी बाहर आता रहता है। जब तक आँखो में से पानी अच्छे ढंग से बहेगा नहीं तब तक आँखो की ज्योती बढ़ेगी नहीं। अभी शरीर में हो रहा है, आत्मा में ऐसे भाव होने चाहिए। तभी मोहनीय का नाश हो केवलज्ञान को प्राप्त करेगा। वह शांत होकर भी प्रशान्त बना रहता है।

प्रशान्त महासागर है न। हम जब छोटे थे, तब भूगोल में पढ़ा था। सब शान्त हो जायेंगे। कोई ठिकाना नहीं। अतः शरीर की ओर मत देखो- आत्मा की ओर देखो। सभी तीर्थंकरो की इस अपेक्षा से अँगाई/मालव आदि

एक ही है।

हमें अलग दिख रहा है क्योंकी हमारी दृष्टि शरीर पर है। आत्मा सबकी एक ही है। अध्यात्म की ओर से देखोगे तो सब साम्य नजर आयेगा। शरीर की ओर देखोगे तो वैशम्य। ये शरीर है जो गलन-पूरण स्वभाव वाला है सभी उसी के रूप आदि पर चिंतन करते रहते हैं। हम उस रूप चिन्तन न करें इन्हीं भावनाओं के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय।नँ

28-12-17 "धार लगाये पार" प्रातः 9.20

यह प्रतिदिन का परिचय में आया विषय है, हम लोगों के लिए भी और आप लोगों के लिए भी। उसी के माध्यम से तत्त्व को पकड़ने का प्रयास करेंगे। जब आप लोग किसी को परोसते हैं वह तरल पदार्थ पानक / पेय के रूप में हैं तो उस समय जिस पात्र को परोस रहे हैं, बड़े लोग कहते हैं देखो / सुनो पहले जग पूरा भरा हुआ है धार बनाकर छोड़ देना। समझ में नहीं आता कि धार क्या वस्तु है? दूध की धार है या जग की धार है। सोचिये। किसकी धार है?

ध्यान में नहीं आया तो आगे नहीं बढ़ेंगे। यदी ध्यान में नहीं तो हम आगे वाला नहीं देंगे। भले ही ज्ञान में आपके आ जाये। ध्यान में-ज्ञान में एक है है महाराज। आप कह दो-मैं नहीं कहूंगा / बुंदेलखण्ड में एकहि कहते हैं। एक ही कहो। उतें क्यों

वहाँ कह दो ना। उतै - इतै - कितै। दीर्घ के स्थान पर ह्रस्व कर दिया जाता है।

बोलने में सुविधा होत है महाराज। फिर अर्थ में दुविधा होत है महाराज। अब बताओ जग में धार है या दूध में धार है। दूध में है तो उसे थाली में बैठा दो। कहाँ गयी धार? जिससे परोसा जाता है उसमें धार होती है। जग में धार होती है। आपके जग ऐसा होगा। कम्पनी ने के आधार जैसा बना देती है। मतलब दूध में धार नहीं, धारा तो पेय है। जग में धार बनी ही रहेगी।

काम में आता है तभी बनी रहेगी एवं ज्यादा भरा रहता है वही बुझता है। बिना धार के आप पी नहीं पाते। आप लोगों की बात है वह धार दूध की या जग की? देने वाले ने तो दे दिया फोर्स के साथ। हमारी तो प्यास ही नहीं बुझी। धीरे-धीरे दीजिये। जल्दी में वह जल भी प्यास बुझा नहीं पायेगा। शान्ति के साथ लो ताकि आंतों पर प्रभाव नहीं। सुनने में आ रहा है न? तीन बातें हो गयीं - परोसने वाला, पीने वाला तथा पीने के बाद क्या प्रभाव आंतों पर पड़ता है। तभी प्रयोजन सिद्ध होने वाला है।

पुलिस कहते हैं यदि ध्यान में नहीं लो। नम्बर भी नहीं दे पायेंगे। कहने के उपरान्त भी ले लेता है अथवा रुकने के उपरान्त भूल जाता है तो कैसे रहेंगे। अतः धार याद रखना आवश्यक है। सुन रहे हैं। अब इसको

कथ्य क्या है, उसे समझें।

अरहंत परमेष्ठि समुद्र के समान है तो गणधर देव जग के समान तथा आप सब चुल्लु के रूप में हैं। अरिहंत रूपी उस समुद्र को पी नहीं सकते अतः गणधर देव ने उसे द्रव्यानुयोग रूपी जल के रूप में निकाला। उन्हें लगा वे उसे पी नहीं पायेंगे तो तो फिर चार अनुयोग निकाले। अनुयोगों के माध्यम से ही हम उसे पी सकते हैं। दूसरे दो पीला सकते हैं।

ये एक उदाहरण इसी तरह का दूसरा उदाहरण देखें। यदि समझ में नहीं आया हो तो आ जायेगा। आपका छोटा बच्चा है। उसे प्याले से दूध नहीं पीला सकते हैं तो वह दूध एक डिब्बा अथवा एक बोतल में भर दिया/पुश नहीं भरा थोड़ा सा खाली रखा। उसके बाद उसके मुख पर एक क्या रख दी। [निप्पल] भारत के हो या इंग्लैण्ड के हो। वो ही रख दी। उस टोंटी में एक छेद कर दिया। वह बच्चा पीने लग गया। पीते-पीते एक दिन उसको डकार लग गया। वह बोल नहीं सकता।

अतः अब ही पता लगाओ। वह बच्चा सोचता है इन्हें यह भी ज्ञात नहीं कि डकार कैसे लगा फिर प्रवचन कैसे सुनेंगे। उदाहरण सहित बात बताना आसान हो जाता है। आप बैठ जाते हैं तो आपके पुण्य से याद भी आ जाता है। आपकी कृपा है। यहाँ

प्रतिदिन एक उदाहरण दिया। इससे परोसने की कला आ जाती है। आपको खाने की कला आ जाती है।

अतः देखा तोंदी का छेद धीरे-धीरे बड़ा हो गया / इसका लग गया। अब तोंदी बुसरी बदल दी। इस प्रकार बड़ी सावधानी की आवश्यकता है। अभी एक व्यक्ति ने कहा महाराज हम प्रक्षालन (पाद) करना चाहते हैं। सामने वाले ने कहा - कर तो सकते हैं। तो क्यों लगा रहे हो। धोती दुपट्टा पहनना आवश्यक है। वह कहता है - हमें पहनना नहीं आता। फिर 5 मीनिट में तैयार होके आ गया। कैसे? प्रतिभा तो भीतर है बस उसे पहचानना आवश्यक है।

कोट - टाई भी तो पहन लेते हो। आप भारतीय हैं यह कभी न भूलें। "जो बंधन को स्वीकारता नहीं वह कभी भी वंदन को प्राप्त नहीं होता है।" हम उसे स्वीकार करते हैं। हमारे पूर्वजों ने / आचार्यों ने प्रेरणा दी / जो देखा वह सिखाया / जो सीखा उस पर चलकर ही रसपान कर सकते हैं। अब यार किसकी याद रखना और तोंदी का छेद बड़ा है या छोटा देख लेना। नहीं दिखे तो चश्मा लगा लेना। तोंदी भी लगी है कि नहीं, छेद बड़ा ही या छोटा।

इसके अतिरिक्त अब मान लो बच्चा छोटा है, निद्रा आने लगे / उस समय आप उसका कान पकड़कर कहते है पहले दूध पी ले फिर सो जाना। ऐसा करते हैं तभी

जागृती आती है।

जागृती को याद रखो और उसके साधनों को याद रखो। नियम से बंधने वाला व्यक्ति ही आगे बढ़ता है। तीर्थंकर भी जब तक घर में रहे केवलज्ञान नहीं होता। उन्हें भी नियम से बंधना जरूरी तभी उन्नति को प्राप्त हुये। अतः आप सभी नियम से - व्रत से बंधो। संस्कारों का होना भी तभी संभव है। जीवन में अनुशासन होना अनिवार्य है। अनुशासन का अर्थ ही है नियम - उपनियम, व्रत आदि।

अब लड़का बड़ा हो गया वह सीधे प्याले से पीने लगा। आप लोटा दे दिये लोटे से पीने लगा। आप लोग अभी दौड़ी को ही नहीं छोड़ रहे हैं। ये ही चिंता का विषय है। माता-पिता को यही चिंता सताती रहती है। अतः आपका शरीर ऐसा बने कि बिना दौड़ भी जीवन कर सके। ये संस्कारों का ही प्रभाव है। आज भारत को संस्कारों की अत्यधिक आवश्यकता है। युग पीछे-पीछे ही जा रहा है। इसलिए अब जागृत करने की आवश्यकता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

Note-1 मुनि महाराज यदि किसी भी कार्यक्रम में जाते हैं तो उसमें क्या प्रस्तुति होना है आदि-आदि पता लगा लें। अन्यथा मंच पर बैठने से अनुमोदना का दोष लगेगा। सबसी हिंसा की भी दोष (अनुमोदना) लग सकता है। अतः विचार करके ही जायें।

29-12-17 "सुधारो सिद्धान्त की भूल" प्रातः 9.20

अज्ञान के कारण हम सही वस्तु स्वभाव का ज्ञान नहीं कर पा रहे हैं। यह हमारा अपना ही अज्ञान है। गुरु अपने उपदेश से एवं आगम हमें समझाने का प्रयास कर रहे हैं। ये हमारा पुण्य का उदय है किंतु इतना पुण्य नहीं कि हम समझ पायें। फिर भी गुरु-आगम कोशिश करते हैं। हाथी को पालने वाला महावत कहलाता है। वह हाथी से काम लेता है और हाथी को अंकुश भी लगाता है। जब ज्यादा काम लेता है तो उसे घास डाल देता है। हाथी उसे खाने में लग जाता है।

जब कभी वह उस घास में स्वाद से अनुभूत एक पुड़िया लेकर उसे खिलाना चाहता है हाथी उसे सूंघता है। लालमिर्ची है, अतः सिर पर डाल लेता है। महावत सोचता है- ये हमारा ही हाथी है। इसका अज्ञान है। अनादि से अज्ञान के कारण हर प्राणी की यही दशा हो रही है। जब खा लेता है- भीतर का भी और बाहर का भी स्वाद आ जाता है। वह समझता है ये बाहर का ही स्वाद है- ये भूल है। फिर भी कोशिश बनी रहती है। हम लोगों की स्थिति भी वस्तु स्वभाव न समझ पाने के कारण ऐसी ही बनी हुयी है।

हाँ हमें सुख मिल रहा है। किससे मिला? पता नहीं थोड़ी सी प्रतिकूलता हुयी कि तुम मुझे दुःख देरहा है। पहले जब सुख मिल रहा था तब मानता था कि ये सुख तुम्हारी वजह से नहीं किंतु अब

दुःख मिल रहा है तो उस पर टूट पड़ता है। उसे समझाते हैं कि ये दुःख उसके कारण नहीं जो कर्म तुमने किया उसी का फल है।

ऐसा होता है यह है विश्वास। प्रतिति हो जाती है। अभी कुछ नहीं मिला, ज्ञान भर हो गया। हमारा भाग्य ऐसा ही फूटा है सो कर्म का फल उसी प्रकार मिलेगा। यह सब जिनवाणी एवं गुरु वाक्य से ज्ञात होता है। इस पर श्रद्धान करता है, इसी को सम्यग्दर्शन कहते हैं। अच्छा लगा / अब हाथ-पैर मारने लग जाता। इसके रखने/प्राप्त होने से सुखी नहीं तो दुःखी इसी प्रकार से रात-दिन सोचने लगता है। रातदिन क्या पूरा जीवन निष्फल जाता है, जीवन क्या भव-भव निकल जाते हैं।

समझता है आज नहीं कल तो मिल ही जायेगा। आज तक क्यों नहीं मिला? पुण्य-पाप को न समझने का परिणाम है यह। ये सिद्धान्त है कि पुण्य उदय में हो तो अनुकूलता और पाप उदय में हो तो प्रतिकूलता मिलती है। इसको समझ लो बस आपका कल्याण हो जायेगा। इस पर दृढ़ विश्वास होने पर सम्यग्दर्शन अथवा शुभोपयोग होता है। शुभोपयोग कामतलब शुभ कर्म नहीं।

गुरु वाक्य- जिनवाणी में विश्वास जाग्रत हो जाता है। इस बात को जब वह श्रेणी की भूमिका में आ जाता है तो पुरुष-पुण्य रूपी राग-द्वेष

को भी भूल जाता है। इसीको शुद्धोपयोग बोलते हैं।

खरीदना है शुद्धोपयोग
हम फ्री दे देंगे / ले जाओ जितना चाहो। कोई बांध-तराजू नहीं। क्या हुआ। वर्तमान में पुरुषार्थ नहीं कर पा रहे हैं पुरुषार्थ नहीं तो कम से कम विश्वास तो करो। आज नहीं कर पा रहा, कल विश्वास के सहारे करूंगा। आज सब भूल जाता है। अनुकूल-प्रतिकूल सबको / न राग-न द्वेष करता है।

संक्षेप में यही रहा। पुरुषार्थ से कर्म सिद्धान्त पर विश्वास करता है अन्यथा राग-द्वेष करता है। सोचता है मैंने अपना इतना काल व्यर्थ ही गंवा दिया। इसलिए शुभोपयोग से भाव आस्रव ही होता है ऐसा नहीं संवर-निर्जरा भी होते हैं। ऐसा भीतरी विश्वास होना चाहिए। हमने पूर्व में जो कर्म किये वे ही आज उदय में आकर फल दे रहे हैं। कोई भी व्यक्ति कर्म से पिड़ीत नहीं होना चाहता है। जैसे-कोई आया था 1000 रु उधार लिया था अब 1000 और हो गये वर्तमान में 1100 रु देना है। वह व्यक्ति 1200/- कमा लेता है। उसको 1100/- देने में क्या एतराज होगा।

उसका तो कमाई का धंधा चालु हो गया। वह भी सोचता है कर्ज लिया था / प्रतिज्ञारत ही था। जाओ ले जाओ। अब कर्जदार नहीं रहा। इसी प्रकार हमें गुरुवाक्य-जिनवाणी याद करती रहती है। तुम्हारा कितना

कर्ज है और कितना दे दिया।

शुभोपयोग से केवल बंध ही मानोगे तो सब हाथ से निकल जायेगा। उससे संवर एवं निर्जरा भी होती है। मात्र शुद्धोपयोग से संवर-निर्जरा ऐसा भी नहीं है। शुभोपयोग गृहस्थ को भी होता है। एक देश चारित्र तथा सम्यग्दृष्टि के रूप में गृहस्थ को रहता है। जिसके द्वारा संवर एवं निर्जरा होती है।

बाहरी पदार्थ मात्र से सुख-दुःख एकान्त से मानना भूल है। धूप में बैठे हो, उष्ण नाम कर्म भीतर से है तभी ताप/जलन का अनुभव होता है। मान लो बुखार है, कंपकंपी लग रही है, अलेरिया को आने दो मालुम पड़ेगा। कम्बल के कारण गरमास नहीं न ही सूर्य से क्यों की भीतर ज्वर उपस्थित है। भीतर में ज्वर प्रकृति का उदय होगा तो 4-5 कम्बल लपेटकर धूप में भी बैठ जाओगे तो भी ठंड ही लगेगी।

ज्वर को भगाना है तो 2-3 दिन लंघन कर लो। लंघन भी कड़ी तपस्या है। तपस्या बिना आरोग्य नहीं मिलता। हाथी की भांति बैठे हो। मोदक को मिट्टी जानकर बैठे हो भीतर से खायेगा तो सब ज्ञात हो जायेगा। अब 'हव' कह दो। अच्छा है आज नहीं कल कदम बढ़ जायेगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

30-12-17 "जब जागे तभी सवेरा" प्रातः 9·20

यह सही है प्रायकर कुछ ऐसे निमित्त मिलते है, जिसके द्वारा तात्कालिक प्रभाव पड़ना प्रारम्भ हो जाता है। किसके ऊपर? बाहरी कोई ऐसा पदार्थ जिसका प्रभाव बाहर ही पड़ना चाहिए किन्तु भीतर भी प्रभाव पड़ता है। तो भीतर भी हलचली और बाहर भी ये दो प्रश्न है। इतना अवश्य है कि बाहर कौन निमित्त आया जिससे भीतर हलचली मची / जरूर कोई अनहोनी हुयी होगी। ऐसा क्यों होता है?

इसका सहज उत्तर यही है कि बाहरी पदार्थ जड़ होता है, चेतन भी हो सकता है किन्तु शुद्ध चेतन नहीं अशुद्ध चेतन / तो वह भीतरी हलचली में कैसे कारण बना? भले ही वह भीतर हो - कवर्ड हो - आवरण से युक्त हो / किन्तु भीतर चेतन है / संवेदन है / वह भूखा - प्यासा है। कुआँ कभी प्यासे की प्यास बुझाने नहीं आता / आप कहेंगे हमारे यहाँ आता है 5-6 मंजील के ऊपर भी चढ़कर के आता है। पर ऐसा नहीं है। ये तो पुराना हो गया / ऐसा आविष्कार नहीं जो ऊपर तक चढ़ जाये।

उसको चढ़ाने में भी दिमाग का ही काम हुआ / अपने आप नहीं चढ़ सकता। जो प्यासा है वह कूप की ओर ही चला जाता है। सुना आपने / तो मैं यह कह रहा था कि भीतरी हलचली में अनिवार्य बाहर का ही कारण नहीं / भीतर का चेतन यदि

जागृती का ही अनुभव करे तो अवश्य प्रभावित हो जाता है। जैसे सुगंधी का आप अनुभव कर रहे हैं/आपको सुगंधी आ रही है। सुगंधीको सुगंधी का ज्ञान नहीं होता। क्यों की उसके पास नाक नहीं हैं। उसमें यदि इतर (इत्र) की भी धार डाल दो तो भी मालुम नहीं। ज्यों ही हकरवन खोलते हैं इत्तर नाक सुसुर करने लग जाती है (कहाँ की इतर है? तो अर्थ यह निकला की प्रभाव तब, जब भीतर जागृती रहती है।

सब कुछ होते हुये भी चेतन जागे तभी प्रभाव नहीं तो नाक में भी डाल दो, कुछ होने वाला नहीं। इसलिए आप लोग अब जाग जाइये। जाग रहे हो या नहीं? सूर्य उदय में जागना, राशन-पानी के लिए जागना सब अलग-अलग है। भरा पेट हो तो दिन भी सोना तथा खाली पेट रात में भी जागना होता है। अष्टमी/चतुर्दशी को देख लो। जो करते हैं उनमें से कुछ लोगो को पुछ लो।

वे पुछते हैं क्यों सूर्य उग गया। बोलते हैं नहीं- ये तो हैलोजन का उजाला है। 35 हैलोजन और लगा दो। मुझे तो सूर्य से मतलब है, इस कृत्रिम प्रकाश की कोई जरूरत नहीं। बहुत उपवास करने पर ऐसी दशा हो जाती है वह दिन को रात एवं रात को दिन कहने लग जाता है। उसे इसी प्रकार का दिखने

लगता है।

अभी हमने देखा कुछ लोग हाथ से मंजीरा बजा रहे थे, कुछ लोग गा रहे थे, कुछ लोग ढोलक / मृदंग बजा रहे थे। एक लड़का जो खड़ा हुआ हुआ था / मान लिजिये वह कुछ बजाना चाहता था पर उसके हाथ में कुछ नहीं था। नाचना चाहता था / उसके पाँव जमीन पर थिरकने लग जाते हैं। वह न गायक की ओर देखता है, न ही वादक की ओर देखता है। सुन रहे हो? [जी]

आप लोग गायको एवं मृदंग-तबला इत्यादि को ही देखते रहते हो। वह बालक तो (धुन) की ओर देख रहा था। ज्यों ही तो पकड़ में आ गयी नाचने लगा। ऐसा ही आप लोगो का कार्य होना चाहिए। सभी सुनने बैठे हो किन्तु जागृती होनी चाहिए। चाहे वह धार्मिक जागृति हो या धन-सम्पती आदिकी जागृती हो / इसलिए जागृती बिना कुछ नहीं। आप सोये हो मतलब चेतन की जागृती नहीं। जो जागृत है उसका रुझान सम्यग्दर्शन की ओर होता है।

सम्यग्दर्शन के समय कुछ विशेष बातें कही / उस समय साकार उपयोग वाला हो - जागृत अवस्था का होना भी कहा। साकार एवं जागृत में अन्तर क्या है? तो ऐसा है - सोते समय भी साकार उपयोग के अतिरिक्त हजारों उपयोग होते रहते हैं किन्तु जागृती नहीं रहती। और सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति बिना जागृती

के हो नहीं सकती। सुन रहे हो जी?

इसलिए चेतन का अर्थ जागृती नहीं। जानना - देखना ये तो आत्मा का स्वभाव है। हमेशा बना रहता है। जागृती हमेशा - हमेशा नहीं। जागृती क्या? जागृती का मतलब अन्य स्थान पर उपयोग नहीं, उसी स्थान पर उपयोग होना अनिवार्य है। जो इष्ट पदार्थ है. अन्यत्र से उपयोग को हटा वहीं लगा देता है। जागृती हो पर ही सम्यग्दर्शन की प्राप्ति सम्भव है। हाँ सम्यग्दर्शन प्राप्त करने वाला निद्रा ले सकता है। कब?

उत्पन्न होने के बाद। उत्पन्न नहीं होता तब तक जागृती बनी रहनी चाहिए। अब जागरण का समय आ गया है। वह बच्चा कैसे कैसे भी जानना होगा। जैसे तो नाचने का पूर्व से अभ्यास कर रखा हो। जैसे ही वाद्य यंत्र बजने लगे उसके पांव जमीन से उठ गये। टून (धुन) सुनते ही (इतना आप लोगों को भी जागना होगा। महाराज! हम सुनने आये है। हम नहीं मानेंगे। मन कहाँ - कहाँ की यात्रा करके आ जाता है। हमें नहीं बताओ।

हमारे पास भी मन है। उसका नियन्त्रण करना परम आवश्यक है। बाकी नियन्त्रण तो बहुत हो गया। यहाँ बैठे-बैठे नियन्त्रण कर लेते है उस उपग्रह का जो लाखो किमी. दूर है। कौन वासी है। उपयोग भवन में बैठा है अतः भवनवासी देव है।

ऊपर जा रहा है।

ऊपर-ऊपर जा रहा है। उसमें क्या कमियाँ रह गयी है उसका अध्ययन कर रहा है। सामान्य से जो जानने में नहीं आती है उन्हें भी देख रहा है। इसी पुकार हमारा भी कनेक्शन जागृती के साथ बना रहे तभी सम्यग्दर्शन बना रहेगा। साकार उपयोग के साथ जागृती भी जरूरी है। इतना ही पर्याप्त समझता हूँ। लगभग 15 मिनिट तो हो गया। हमारे इस लाईव का उद्देश्य याद रखना।

आपने देखा नहीं, हमने देखा है। हमारी बात पर विश्वास रखना। खोजी हो जाओ- भोजी तो आप हैं ही। भोजन तो करते हैं, अब खोज करना प्रारम्भ कर दो तभी लक्ष्य को पा सकते हैं।

अहिंसा परमो धर्म कीजिये। नैं

विशेष (संस्मरण)

1 सामुहिक पाठ में भी मन अच्छा लगता है। इससे खुब आमदनी होती है। गुरुजी हमें बोलते थे कोई भी कक्षा ले लो। हम स्वाध्याय कराते। उसके उपरान्त दहढाला को कोई ढाल अथवा मेरी भावना अथवा वैराग्य भावना आदि का सामुहिक पाठ होता था। धर्मेन्द्र कुमारजी अथवा कभी-कभी लुहाड़िया जी सामुहिक पाठ प्रतिदिन होता था। कर्म निर्जरा एवं मन रमाने का अच्छा साधन है।

द्वारावास शिलान्यास कार्यक्रम

दि-12-17 "कैसे चमकायें भीतरी मुखड़ा" प्रातः 9.00

योजना तो यहाँ मध्याह्न के लिए थी। कईलोगों ने पूर्व में आकर के अपनी व्यवस्था कैसी। क्या है। देखने आये थे कि क्या है? यदि आपके यहाँ बारात एक दिन पहले आ जाये तो क्या स्थिति होगी? जो भी व्यवस्था में खर्च होगा आपको ही देना होगा। ये ही होना चाहिये था। सहस्त्रकूट के शिलान्यास का कार्यक्रम मध्याह्न में दूसरे दिन डोम का कार्यक्रम होना है। जिन्होंने द्वारावास की घोषणा की, उन्होंने कहा - महाराज! प्रातः चल हो सकता है क्या? हमने कहा - क्यों नहीं हो सकता।

उससे पहले क्यों? तो सुनो! यह भी एक मन्दिर है वह भी एक मन्दिर है। उस मन्दिर में जाने के लिए शिक्षा इसी मन्दिर से प्राप्त होगी। दिशा बोध मिलता है जो हमेशा उसके साथ रहता है। यह ज्ञान मन्दिर है। गुरुजी कहते हैं - हमें ऐसे ज्ञान मन्दिर से ही भीतरी मुखड़े को चमकाने की शिक्षा मिलती है। बाहरी मुखड़ा तो नजर आता रहता है। वह भी वर्तमान का। अतीत का अपना ही फोटो पहचान नहीं पाते। बुढ़ापे में देखने पर स्वयं कहता है कि ये चित्र किसका है?

आज उसी मुखड़े को संभालने में लगा हुआ है। जब कि अविनश्वर आत्म-तत्त्व को प्राप्त करना चाहता है। हमें भी प्राप्त करना है। ऊपर वाले की जैसी इच्छा। हमारी यही भावना है आप भी

उस मार्ग में जल्दी-जल्दी चलें।

मन में इसी प्रकार की योजना बनाता है। तो यह आवसीप विद्यालय के छात्रावास का शिलान्यास हुआ। जंगल में अपनी चंचला लक्ष्मी का उपयोग इस तरह से किया। सम्पदा को जोड़कर रखा था, प्रतिक्षा के साथ देख रहे थे कि कहाँ लगाऊँ। बादल बनते है फिर देखते है कि कहाँ बरसे। यहाँ छोटी-छोटी डोंगरी (डोंगरगढ़) के बिचोबिच चन्द्रगिरी है। बस बरसना प्रारम्भ कर दिये। अभी चातुर्मास नहीं ये तो लोकल मानसून है। चारों ओर से श्रावक आये हैं - दिल्ली, बम्बई, सूरत, आसाम, राजस्थान आदि भिन्नभिन्नधानी से। सब तरफ से उपस्थित हुये।

बरसना प्रारम्भ कर दिया पर ध्यान रहे बाढ़ की नौबत न आये। खुब भक्ति-खुब नाचिये। वर्षा हो जायेगी पर ये ध्यान रखना उस पानी की व्यवस्था आपको ही करना होगा। ऐसा नहीं हो कि नींव रखकर भाग जाओ। आये थे तब इन्होनें पुछा महाराज! छात्रावास का निर्माण कैसे/क्या होगा/हमने हाँ कहीं। पर ऽ वर्ष कैसे? इन्होने कहा एक वर्ष में पूर्ण करेन्गे। लगभग ऽऽ० छात्राओं की व्यवस्था इसमें होगी।

इसमें कोई संदेह नहीं कि पहले बहुत नियन्त्रण से प्रवेश देते थे/छुट्टी की वापस भेजना पड़ता था। प्रबन्धको से कहना चाहूँगा कि अब

सोहिये नहीं।

वर्षा होगी - ठण्ड होगी। अतः ठण्ड से प्रबन्ध करना होगा। सामग्री जुटाना होगा। हमने सोचा ये कहाँ छुपे थे। मध्यप्रदेश के ही वासी हैं बुंदेलखण्ड कहलाता है। स्वयं ही सारी व्यवस्था करेंगे। अभी तक लाइट में नहीं थे। आज लाइट में आ गये। वहाँ धर्म का वास है और यहाँ कर्म का वास है। ये आकस्मिक किन्तु नियोजित कार्यक्रम है। हमारा कहना है - लोगों का सोचना हो सकता है कि जंगल में कौन आयेगा। अब आप ही इस वातावरण को देख लिजिये। जंगल में भी मंगल हो रहा है।

सम्पदा का सही उपयोग उन्होंने किया। सभी स्वार्थी हैं। मैं स्वयं भी स्वार्थवश ही आया हूँ। यहाँ लूट रहा है। लूट सको तो लूट लो। जोड़ने की बात नहीं। लोभ - मोह के साथ जोड़ लेता है फिर देखता है, कहाँ वितरण होगा। हमारे पास ग्राहक आते हैं। हम भी टटोल लेते हैं कि सही है या उसही - उसही है। ऐसे कई व्यक्ति आते हैं।

अभी मध्याह्न में एक और आपके सामने आने वाले हैं। देखो। मेरा कहना है - मनोरंजन हो लेकिन वह मनोरंजन भी निरंजन के लिए होना चाहिए। निरंजन की उपासना हेतु ही सब कुछ करें। ज्यादा तो नहीं कहना चाहता। छात्रावास का शिलान्यास हुआ। यह सही समय पर सही दिशा में सही स्थान पर सम्पदा का उपयोग हो रहा है।

अहिंसा परमोधर्म की जय हो

"विदेशी नव वर्ष"

"प्रगति हो - दुर्गति नहीं"

अथवा

1-1-18 "प्रगति उन्नति के साथ है दुर्गति के साथ नहीं" प्रातः 9.2.

वहाँ का ये विषय है जब हम ईसरी बाजार में (पारसनाथ) रेल पटरी को पार कर प्रतिदिन उस ओर जाते थे। उस समय बिच-बिच में रेल का आना-जाना होता था। कई प्रकार की रेल निकलती थी। जब राजधानी निकलती थी तो रुकना पड़ता था। उस समय जो उसे देखकर काल का चिंतन करता है वह अपने-अपने ढंग से है। जब राजधानी निकलती है, लोग अपने आप ही दूर हो जाते हैं। क्यों? ~~fast~~ Fast-life · अब मैं रुकता था। अन्य रेल निकलती तो मैं डब्बे गिन लेता था किन्तु जब राजधानी पास होती तो गिन नहीं पाता।

गिनते-गिनते कितने डिब्बे खिसक गये पता ही नहीं। कभी-कभी तो ऐसा लगता था मानो गर्दन ही.... । हाँ, दबाव तो पड़ेगा ही। शायद इसी आधार पर आइंसटीन ने कहा हो - काल को कोई आवश्यकता नहीं। "काल निरपेक्ष भी काम हो जाता है।" ताली मत बजाओ। किन्तु काल निरपेक्षिता मानना ठीक नहीं। कभी तो काल को मानो और कभी काल को न मानो। ऐसा भी नहीं है। काल को गौण-मुख्य किया जाता है।

वैज्ञानिक दृष्टि से भी काल की निरपेक्षिता मानना ठीक नहीं। कोई भी कार्य को करने के लिए काल की अनिवार्यता/अभिन्नता होती है। किन्तु जब रेल को शून्य के रूप में स्वीकारें,

तो उस समय काल को शून्य न करें।

रेल की गति पहले कम थी फिर बढ़ गयी। कोई बात नहीं, पर काल सापेक्ष है। विज्ञान ने भी सेकेण्ड के भी करोड़वें पार्टस स्वीकार कर लिया है। वह चाल घूमती है उसे देख नहीं सकते परन्तु कउन्ट तो कर ही सकते है। यह अनुमान पर आधारित है। यहाँ भी यही कहना चाहता हूं काल निरपेक्ष कोई वस्तु नहीं। वस्तु में कम-ज्यादा समय में शक्ति-विस्फोट हो रहा है तो कम-ज्यादा काल का ही परिणाम है।

ऐसी स्थिति में उस काल को चिंतन का विषय बनाना चाहिए। वेग बोलते है। वेग का मतलब गति। वह गतिमान होने से काल नहीं के बराबर पर काल नहीं है ऐसा आप नहीं कह सकते। आप लोग काल की कलौती करके कहाँ जाना चाहते हैं। अब बजाओ ताली। काल बचाओ पर उसका उपयोग क्या करेंगे ये बहुत महत्वपूर्ण है। वहाँ के कार्य को छोड़कर आये हो। कहते हो महाराज-आशिर्वाद दे दो। ऐसे आशिर्वाद नहीं देते। कर्तव्य को छोड़ना गलत है।

इससे काल का उपयोग नहीं होगा। "समय आता नहीं, समय को बुलाना पड़ता है।" आज ऐसी स्थिति है कि न हाथ है न पैर है। हमारे पास हाथ भी है और पैर भी, दोनों हैं। उन्हीं हाथ-पैर से गति बनते है। इनके अभाव में भागना चाहते हो तो नहीं

भाग सकते।

जब वेग बढ़ जाता है तो नियन्त्रण खो देता है। इस नियन्त्रण का होना जरूरी है। वेग के साथ दुष्ट उपसर्ग लगाते है। संवेग - निर्वेग इन दोनों में वेग के पीछे उपसर्ग लगा है। ये दोनों ही मोक्षमार्ग में काम आते हैं। इन पर चलेंगे तो आप अवश्य ही मोक्ष के निकट हो जायेंगे। अब थोड़ा आगे चलते है। इससे उद्वेग - आवेग शब्द बनाया। उद्वेग में होश हवाश खो देता है और आवेग में विवेग खो देता है। आप उद्वेग एवं आवेग से ऊपर उठे तो अति सार्थक होगा। अथवा जो नहीं भी आया किन्तु इनसे ऊपर उठ चुका है उनके लिए हमारा आशीर्वाद पहुँच जाता है।

क्यों? क्यों कि आपने पुरुषार्थ की ओर एक कदम बढ़ाया। उस पुरुषार्थ से अजैत-पजोस वाले भी शिक्षा ग्रहण करते है। कौन हैये? हमेशा इन्हें देखने से उद्वेग - आवेग भी शान्त हो जाता है। घड़ी भी बन्द हो जाती है। बन्द नहीं होती, लगता है। क्यों की घड़ी को तो चाहे पानी में अथवा चाहे ऊपर कहीं भी रखो आवाज करती ही मिलेगी। वैसा ही सामने वाला भी सुख-शान्ति का अनुभव करें। आप Live-Life चाहते है, मैं समर्थक नहीं। Life का मतलब मृत्यु भी है। उद्वेग-आवेग मे कुमृत्यु जब की संवेग - निर्वेग में पण्डितमरण बोलते हैं। मृत्यु निश्चित है - डरना नहीं है। अकाल मरण न हो। अतः प्रगति - उन्नति हो, दुर्गति से बचो। इतना ही आपसे कहना था।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

2-1-18 "मोक्ष की चाबी" प्रातः 9.20

आप यह न समझें कि मोक्ष दूर है, हम वहाँ कैसे पहुँच पायेंगे। आप ऐसा बिल्कुल भी मत समझो। एक बहुत बड़ा प्रसाद है। उस पर ताला लगा है। भीतर और कितने ताले लगे हैं पता नहीं वो भी बड़े-बड़े। अब कैसे जाऊँ। जो जिसका साधन है/कारण है उसे पकड़ेंगे तो कार्य बहुत जल्दी होता है। जितना बड़ा ताला होता है उतनी ही बड़ी चाबी भी हो ऐसा नहीं है। आप लोगों ने अपने मुख से ही कह दिया। ताला बड़ा रह आये चाबी तो छोटी ही होती है।

उसमें ज्यादा मेहनत की भी आवश्यकता नहीं है। मोक्ष ऐसा ही महा प्रसाद है, जहाँ पहुँचने के लिए ताला पर ताला, ताले पर ताला लगा है। इसका मतलब जानते हो। एक धर्मशाला है उसमें एक कमरा बुक कराके अपना ताला लगाकर चला गया। दूसरा आये उसने भी उस ताले पर एक ताला लगा दिया। मालिक आया। हमारा नुकसान हो रहा है एक ताला और इन तालों पर लगा दिया। ऐसा होता है कि नहीं। बोलो।

आज पुनः पंगत लगाकर बैठ गये। हमने तो सोचा था कि भीड़ आयी है चली गयी होगी, आज फिर उतनी ही संख्या में बैठ गये। मेरे सामने चाबी रख दी। हमने सोचा हमें चाबी की क्या आवश्यकता? सामने वाले ने सोचा होगा कि यहाँ सामने रखेंगे तो कोई भी उठायेगा नहीं। किन्तु ऐसा है - मैं तो कभी भी उठ कर चला जाऊँगा। आप अपनी जाने। एक बार एक सज्जन आये।

बोले, महाराज! बहुत कीमती घड़ी है। आपके लिए रखी है। मैंने कहा मैं घड़ी बांधता नहीं, इसलिए ज्यादा मेहनत नहीं करनी।

तो जितनी आवश्यक है बस समता भर रखो। याद रखोगे? समता सबसे बड़ी चाबी है। दूबारा कहूँ - हर क्षेत्र - हर काल - हर अवस्था में समता रहे। बस इस समता रूपी पूंजी मात्र से ही मुक्ति की प्राप्ति हो जायेगी।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नमो

3-1-18 "भावों का विस्तार" प्रातः 9.20

जब हम किसी बात को स्पष्ट करते हैं। वचन जहाँ पर बौने हो जाते हैं अथवा गुंगे हो जाते हैं। शब्द बोलते हुये भी गुंगे हो जाते हैं। कब? जब एक शब्द में 10 शब्द का अर्थ लाओगे तो कहाँ से आयेगा। इसी प्रकार जब लोगों को देखता हूँ तो ऐसा ही लगता है। कि ये लोग बहुत कुछ कहना चाहते हैं पर कह नहीं पा रहे हैं। एक उदाहरण के माध्यम से अपनी बात को स्पष्ट कर देता हूँ, क्यों कि यहाँ समय की बहुत कटौती है।

दो मिनिट इधर से लिया-

दो मिनिट उधर से लिया। इस तरह कटौती करते-करते आपको 10 मीनिट मिल जाते हैं। देखो! जब पड़गाहन के लिए खड़े रहते हैं। महाराज जी को बुलाना है तो शुद्धि की आवाज कैसी होती है। जब महाराज पास में आ जाते हैं तो ध्वनि और तेज हो जाती है। किसी-किसी की आवाज तो इतनी सुरीली वो भी तेज होती है। उसकी समय क्या भावाभिव्यक्ति होती

होती है, वही आपके सामने रख रहा हूँ।

इधर वाला व्यक्ति बहुत जोर से बोल रहा है, यह उतनी तेज नहीं बोल पा रहा है लेकिन भावाभिव्यक्ति क्या कम है। ध्यान रखो! भावों में बहुत दम है। बोल रहा है- मुनिराज धीरे-धीरे जा रहे हैं, अब वह नाड़ (गर्दन) को भी युं-युं करने लग जाता है। होता है कि नहीं। बोलो। ये भी कम पड़ जाये तो फिर कलशा को भी युं-युं करने लगता है। हम सोचते हैं कि कहीं भीतर का पानी बाहर नहीं आ जाये।

ऐसा होता है या नहीं?

ये सब भावों का खेल है। जैन धर्म भाव परक धर्म है। इसमें चाहे कोई छोटा हो या बड़ा हो सभी एक समान है। आप लोगों ने द्रव्य संग्रह में पढ़ा होगा - "अणुगुरु देह पमाणो" आत्मा के प्रदेश लोक के बराबर होते हैं। इसे जब केवली समुद्घात होता है, तब जान सकते हैं, और समय नहीं। जितने प्रदेश एक छोटे से जीव में उतने ही बड़े से बड़े जीव में भी होते हैं। खसखस के दाने से भी छोटा अथवा निगोदिया जीव भी क्यों न हो। संसार-दशा में यही होता रहता है।

जो आत्म प्रदेश यहाँ छोटे या बड़े जीव में है उतने ही प्रदेश सिद्ध परमेष्ठी के पास है। ये बात हमेशा ध्यान में रहे। दूसरा उदाहरण मात्र आधा मिनिट में दे दूं? एक थाली है, यात्रा करती हुयी आ रही है। इधर

भी पंक्ति है- उधर भी पंक्ति है। हम भी हाथ लगाना चाहते हैं- लगा लो। सबने लगा लिया। अब बताओ करंट कैसे पार हो रही है।

एक थाली में सबने हाथ लगाये, प्रत्येक के हिस्से में दो-दो चावल आयेंगे। फल तो सबको समान मिलेगा। ये है भावों का कमाल। इतना ही नहीं मान लो हाथ लगाने नहीं मिलता, ताली भी बजा दी तो हो सकता है उससे भी ज्यादा कमाई कर ले। इसीलिए कृत-कारित - अनुमोदन , मन - वचन - काय आदि कहा। इस प्रकार मन को विस्तार देओ। कितना? जितना बढ़ा सको। जैसे भोजन करते समय भूख बढ़ाते हो इसी प्रकार धार्मिक अनुष्ठान को देख उत्साह बढ़ायें। दिन - दुनी, रात-चौगुनी [कमाई होगी]।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

4-1-18 "डरना बन्द करो" प्रातः 9.20

ये आप जानते हैं अग्नि जलती है तो कहा जाता है कि अग्नि ईंधन को जला देती है। अग्नि कभी जलती नहीं, ज्वलनशील तो ईंधन है। वह उसे जलाकर खाक कर देती है। ये अग्नि का स्वभाव है। किन्तु वही अग्नि पानी के द्वारा बुझती भी है। ये उसकी कमजोरी है। यह कमजोरी कब तक रहती है। जब अग्नि को सुलगाते हैं तब हवा न लग जाये। और धीरे - धीरे फूंकनी अथवा मुख से हवा देता जाता है। एक बार जब वह प्रज्जवलित हो जाती है तो भागना ही पड़ेगा। पानी में भी रख दो तो भी वह

बुझती ही नहीं।

ऐसा क्यों? तो कहा गया वह अग्नि उसे जला रही है, जिसको जलना है। इस प्रकार यह आग्नि की क्षमता/समता है। अग्नि की तरह ही आप लोगों की दशा है। आप लोग जब तक डरते हैं तब तक सामने वाला भी डरता है। अब डरना बन्द कर दो। युक्ति से काम लेओ। युक्ति से काम लेने पर आपका काम निश्चित रूप से होता जायेगा।

अब एक ड्रम में पानी है। पानी गरम-गरम है। डालते ही एकदम वह उबल पड़ता है। जल जायेगा क्या आप जलाना चाहते हो क्या? जब दोनों का ताप (बाहरी ताप भी और भीतरी ताप भी) एक हो जायेगा तो फिर जलेगा नहीं। अब दोनों ताप एक कैसे हो? तो बाहरी ताप-भीतर प्रताप एक ही समय चालु होते हैं। यह प्राकृतिक चिकित्सा की बात है।

दूसरी बात उसी तबोले से ऊपर से धार छोड़ते हैं। गरम से गरम पानी भी क्यों न हो यदि घुटने पर डालेंगे तो जल जायेगा और पानी में डालोगे तो। वह गर्म पानी तो था ही उसका ताप बढ़ जायेगा। उस ताप के साथ-साथ हमारा प्रताप भी बढ़ता जाता है। ऐसे कैसे काम करते हो। तप ऐसी ही अग्नि है। जो

आपको तो नहीं जलायेगा किन्तु अन्य और जो कुछ भी है उसे जलायेगा।

इसीलिए आचार्यों ने कहा है- "कर्म क्षयार्थं तप्यते इति तपः"। कर्मों का क्षय करने के लिए तप का सहारा लेना चाहिए। जब आप दुनिया को तपा सकते हैं तो फिर अपनी आत्मा को क्यों नहीं तपा सकते हो। इसे तपाने से आपको अनंत सुख की प्राप्ति होगी।

समय कम था/इसलिए जल्दी-जल्दी में जो भी कहा उसे याद रखना। क्यों की आपके पास भी समय नहीं और हमारे पास तो रहता ही नहीं है। वैसे भी सर्दी का समय है। कर्म के कारण आपका प्रताप बाहर से नहीं दिखता भीतर से दिखता है। आपके पास भी वह अनंत प्रताप है, उसे उपयोग में लाना है/शुरु करदो। आज तक नहीं किया तो आगे भी नहीं करें ऐसा तो है ही नहीं।

बस उपयोग में लाना शुरु कर दो। आज तक कष्टकारक मानते रहे। जल्दी-जल्दी प्रताप को बाहर निकालो/जो अनंत सुख का कारण है। पहले अनंत सुख को पुरुषार्थ नहीं दिया गया था। इसी-इसी में ज्वर हो रहा है। पुराण ग्रन्थों के उदाहरण देखलो। स्वाभिमान जागृत होने पर ही इन सबको दूर कर सकते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

5-1-18 "हँस नहीं परम हँस बनो" प्रातः 9.20

हमने सुना था आप लोगों ने भी सुना होगा - पढ़ा होगा - देखा होगा ऐसा तो नहीं कह सकता। क्या है वो? सुनते हैं हँस पक्षी के सामने एक पात्र में दूध और पानी मिलाकर रखवा गया और आप लोगों ने सुना कि वह हंस पक्षी दूध-दूध पी लेता है और पानी-पानी छोड़ देता है। ऐसा भी तो कर सकता है कि पानी-पानी पी ले और दूध-दूध रह जाये। अब उस पक्षी ने दूध तो पी लिया और पानी रह गया।

यही वैचित्र्य देखना है। अपने को उच्च समता रखते हुये देखना है कि उस पक्षी ने पानी-पानी पी लिया और दूध-दूध छोड़ दिया। आप सोच रहे होंगे पक्षी भी पागल होते हैं। और दूध पीना चाहिए था। पानी पी लिया - दूध छोड़ दिया। कई व्यक्ति अपने-अपने ढंग से सोच रहे होंगे। आप लोग क्या कहेंगे? पक्षी भी पागल होते हैं। उसे दूध को पीना चाहिए था। लगता है प्रशिक्षण नहीं दिया होगा। ये कला किसी के सीखाने से आयी है, या स्वभाविक है।

कहाँ से पढ़ा। काव्य ग्रन्थों में पढ़ा है या फिर महाराज के कहने से लेख किया। उनसे सुन लिया। पानी पी लिया दूध छोड़ दिया ये पागलपन नहीं है तो और क्या है? मैं पूछना चाहता हूँ कि प्यास दूध से बुझती है या पानी से बुझती है। [पानी से] इतनी जल्दी ही कैसे इरादा बदल दिया। अभी अभी अभी

नो शत-प्रतिशत उत्तर मिला था कि वह पागल है। वह पक्षी कहता है- दूध भोजन है एवं पानी उसे पचाने के लिए आवश्यक/प्यास बुझाने के लिए है।

आप पानी छोड़कर दूध पी-पी कर शुगर की बिमारी फैला रहे हो। कोई नहीं कहता कि पानी पीओ। दूध को छोड़ नहीं रहे। अथवा रस ले आओ। उसे पानी मानना गलत है। अनार के रस के ज्यादा सेवन से पथरी की बिमारी - पथरीथा नहीं होगी ये शोध हुआ है। उसकी माता कभी-कभार दो प्रतिदिन नहीं। आप सभी एवं बच्चों को भी पी ले बेटा। फिर बिमारी भी आयेगी।

उसे दूर करने हेतु 50 हजार का नहीं 1/2 लाख का इंजेक्शन मंगायेंगे। ये सब रईस लोगों का काम है। बड़े लोगों की बिमारी भी बड़ी होती है। यहाँ नहीं होगा. विदेश में/महानगरी में होगा। आप खाने को ही महत्व देते हैं। हमें समझ में नहीं आता/आप जिसे नहीं जानते वह हँस कैसे जान गया। प्यास पानी से ही बुझेगी, अन्य से तो प्यास बढ़ेगी। उसमें कुछ भी मत डालो। शुद्ध पानी पीओ।

ये उदाहरण इसलिए दिया कि महाराज लोग बियों के बीच रहते हुये भी हंस की भांति रहते हैं। वह हंस दूध पी सकता था किन्तु पानी पीया/वह पागल नहीं था/प्यास लगी है, शुद्ध पानी पी लो, उसी से निरोग रह सकोगे। वह पक्षी

है आप तो मनुष्य है।

उनको कितनी भी अच्छी चीज क्यों न डाल दो। एकदम नहीं डूटेंगे। अनुकूल का ही सेवन करेंगे। आचार्य समन्तभद्र स्वामी कहते हैं- "यदनिष्टयेत्तदव्रतये" जो बाधक तत्व है उसका तो त्याग पहले होना ही चाहिए। आज तो एक स्थिति ऐसी आ गयी कि अब डाक्टर कहाँ से बार-बार लायेंगे, अतः अपने ही हाथ से इंसुलीन का इंजेक्शन लगाते हैं। जो खाना हो - खाते भी हैं। 2-2/3-3 बार भोजन करते हैं। भोजन के पूर्व यह जरूरी है नहीं तो भोजन नहीं कर सकता।

हँस को याद रखो। मुनि-महाराज को हँस नहीं परम हँस कहा है। वह मानसरोवर में रहता है। सोचो। आप चौके में जो कुछ भी लेकर खड़े हो परन्तु वे उतना ही लेंगे जिसके द्वारा जीवन का संरक्षण हो जाये, संयम का विकास हो, वैयावृत्ति कर सकें अथवा विहार की ताकत बनी रहे। इस प्रकार जो गृहस्थ लें वहीं महाराज भी लें ऐसा नहीं है। "लें तप बढ़ावन ...." बिमार हो जायेंगे तो श्रावकों को चिंता हो जायेगी।

क्या हो गया। बाधा आयेगी। सम्यग्दृष्टि भी विषयों को गौण करके इस तरह करता है। मुनिराज गोचरी वृत्ति (भ्रामरी वृत्ति से लेते हैं। गाय इधर-उधर को नहीं जो खाने योग्य है उसी को लेती है। विषय

बेल इत्यादि को छुयेगी भी नहीं।

बाधक से सदैव बचेगी। दूध में कमी हो या दूध विकृत हो उसे कभी नहीं लेगी। उसे बछड़े का स्वास्थ्य भी ध्यान में रखना है, उसे भी दूध पीलाना है। सुन रहे हो? [जी आ० श्री जी] बीच-बीच में हम पुछ लेते हैं। समझ में आ रहा है? [हव] समझते हुये हमें एक-एक कदम चलना है। उम्र-द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव की अपेक्षा/लिहाज से अपने शरीर को आगे बढाना चाहिए।

अब बोलो मुनि महाराज हँस है या परमहँस? [परमहँस]। 24 घण्टे में एक बार-ले तप बढावन.... । जो भोजन/आहार-पानी तप में सहायक है श्रावक के यहाँ वहीं लेते हैं। शरीर को बनाये रखने के लिए अथवा तपस्या के लिए। इसमें सब सार आ गया। श्रावक हो या श्रमण हो, सुनने वाला होया सुनाने वाला हो सभी का इसी में आ गया।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

संस्मरण -

(1) अशोक जी पाटनी ने श्रवणबेलगोला में आ० श्री की झांकियाँ (जीवन-वृतांत) बनवायी। उसके चित्र गुरुजी को दिखाने लाना था एक चित्र में नीचे लिखा था पाटनी परिवार (सबके नाम) आहार देते हुये। उन्होने अपने P.A. को तुरन्त बोला इसमें नाम क्यों लिखा? "आहार देते हुये श्रावक गण" ऐसा लिखे क्यों की आ० श्री सबके है, केवल हमारे ही नहीं। जयपुर एयरपोर्ट

पर यह बात बोली एवं संशोधन प्रति होंगरबाड़ पर हेलिकोप्टर से पहुँचते ही मिल गयी। ये है उनकी कार्यशैली एवं उदात्त दृष्टिकोण।

(2) सायंकाल वैयावृत्ति में उन्होंने आ० श्री के सामने पूर्व की थोड़ी सुनाई। हम 4-5 महाराज भी बैठे थे। जब विद्याधर किशनगढ़ पहुँचे उस समय अशोक जी की उम्र 15 वर्ष एवं सुरेश जी की 11 वर्ष थी। वैयावृत्ति के समय सुरेश जी भी उपस्थित थे। उन्होंने कहा - हमें वे सब बातें आज भी ज्यों की त्यों याद है। अशोक जी ने कहा जो हाथी पर बिन्दोरी निकली वैसी आज तक हमारे घर में कोई भी शादी - ब्याव में भी नहीं निकली। वो भव्य जुलुस न भूतो न भविष्यति। आ० श्री का ज्ञानसागर जी महाराज का प्रथम दर्शन किशनगढ़ की जैन हाई स्कूल में हुआ। वे दक्षिण से अजमेर आये। चातुर्मास का निवेदन करने अजमेर समाज को आ० ज्ञानसागर जी महाराज के पास जाना था जो उस समय किशनगढ़ में विराजमान थे। विद्याकुमार जी एवं भागचन्द जी सोनी के नेतृत्व में कुछ प्रतिनिधी को जाना था। विद्याधर की मुलाकात विद्याकुमार जी हुई। उन्होंने कहा - हम तो गाड़ी लेकर जा ही रहे है, आप को ज्ञानसागर जी से मिला देंगे। वहाँ से उनके साथ आ गये। फिर ज्ञानसागर जी का दूसरे दिन ही विहार अजमेर के लिए हो गया। अजमेर में चातुर्मास हुआ। फिर

किशनगढ़ में चातुर्मास हुआ। विद्याधर का कमरा अशोक जी पाटनी वो याद था। बोले सीढ़ीयों में चढ़कर बहुत छोटा सा कमरा, उसी में पढ़ते थे। सीढ़ीयाँ भी पुराने जमाने की थी। ज्ञानसागर जी महाराज नीचे के तल पर ही रहते थे। पड़गाहन घर-घर पर ही होता था। अतः पाटनी जी वगैरह रहते थे इधर भी चौकाहै- इधर भी चौका है। 5-6 चौके लगते थे।

[3] भागचन्द सोनी के बारे में बताया पाटनी जी ने कि वे इधा निवासी किशनगढ़ के ही थे बाद में अजमेर गये। आर्थिकस्थिति बहुत कमजोर थी। अतः लौटा-डोर एक [बड़बुंजा] बनेचने वाले के पास गिरवी रखकर अजमेर तक का भाड़ा लेकर गये। वहाँ व्यापार किया। 8-10 साल में ही अच्छा पैसा कमा लिया। वे किशनगढ़ आकर उस बड़बूंजा से बोले तुम्हारे पैसे ले लो और मेरा लौटा-डोर वापस दे दो। वह बड़बूंजा जान चुका था कि ये तो अब बहुत बड़े सेठ जी बन चुके है। उसने मना कर दिया। उन्होंने (सेठ जी) कहा तुम उसके बराबर सोना ले लो पर मेरा लोय-डोर दे दो किन्तु वह बड़बूंजा गरीब था फिर भी उसने सविनय कहा- सेठ जी वो अब मैं आपको वापस नहीं दे सकता। अन्ततः सेठ जी को ही अपनी हार माननी पड़ी। इसलिए कभी अहंकार नहीं करना है। ये सब ढाई-बाई आज है-कल नहीं।

6-1-18 "नारीयल से जाने रीयल को" प्रातः 9:20

आप लोग 5-6-8-10 मंजिल तक चढ़ते हैं, वहीं पर रहते हैं। काम के लिए जब कभी आ जाते हैं। जब कभी मतलब जल्दी करके नहीं। जल्दी करके यदि आ भी गये तो फिर जल्दी जा नहीं सकते हो। ये आश्चर्य की बात है आप वहाँ रहते हैं तो पानी को भी वहाँ ले जाते हैं। मरकर नहीं पाइपलाइन से। नल की व्यवस्था जब कभी बंद हो जाये तो क्या होगा। वहाँ तक ले जाने पर ज्ञात होगा कि पानी कैसे लाते हैं। अब सुनो!

प्रकृति में भी सहज रूप से ऐसे पेड़-पौधे होते हैं। जैसे- नारीयल का पेड़ है - सुपाड़ी का पेड़ है। नारीयल का पेड़ तो इतना ऊपर (ऊँचा) पहुँच जाता है। उसकी कोई शाखा-उपशाखा नहीं। और उसमें भी इतनी ऊपर में 200-200 नारियल गुच्छे के गुच्छे लग जाते हैं। बंदर भी आज तक वहाँ नहीं पहुँच/चढ़ पाया। हमने तो नहीं देखा, आपने देखा हो तो बता दो। बंदर कभी भी उस नारियल/रीयल के पेड़ पर नहीं चढ़ा।

चढ़ भी जाये तो ये फल मेरे लायक नहीं है - छोड़ देगा क्यों की वह इसको तोड़ ही नहीं सकता कोई भी प्राणी नहीं तोड़ सकता मात्र मनुष्य ही ऐसा है जो तोड़ देता है। लेकिन इतने ऊपर जाने के उपरान्त भी, पानी वहाँ तक कैसे गया? एक-दो नहीं 100-200 नारीयल, सबमें पानी भरा है। लिफ्ट से

भरा है क्या ?

वह नारीयल का वृक्ष कहता है - मैं जितना ऊपर दीख रहा हूँ उतना ऊपर हूँ उतना नीचे भी गया हूँ। मेरी जड़े पानी ढूंढकर ऊपर तक पहुँचाती रहती है। मनुष्य इस प्रकार के पानी पीले को लालायित रहता है। वह पानी कैसा है? खनीज पदार्थों से युक्त एवं पौष्टिक है। कभी-कभी कोई नारीयल में भी खारापन निकलता है।

ये किसके ऊपर है? तो वह पेड़ भी एक प्रकार से जीव है। जीव है तो उसके साथ नाम कर्म भी लगा है। नाम कर्म के होने के कारण अनेक प्रकार की विविधता है। इसी कारण कुछ का पानी बहुत मीठा तो कुछ का पानी खारा होता है। अब वह क्षीफल उस पेड़ पर लटकर अपनी शोभा बिखेरता रहता है। आप नीचे से ही उसकी फोटो लेते रहते है। ज्यों का त्यों छायाचित्र आ जाता है।

नाम कर्म क्या है? और कोई भी इतना ऊपर जा नहीं सकता है। जाता भी है तो ऐसे फल नहीं लगा सकता है। ऊपर गया है तो उस पेड़ की जड़ो के माध्यम से ही गया है। उस वृक्ष की टहनी - पत्तो - फूलो सब में गया है। पत्ते सूख जाते हैं किन्तु वृक्ष नहीं सूखता। कई बार फल देता है वह वृक्ष। मनुष्य खाली बड़ी-बड़ी बातें करता है। मैं ये करूँ - मै ये करूँ। कभी एक-आध ही सही ऐसा वृक्ष अपने आप उगाकर तो देख

ले/पता चल जायेगा।

इस प्रकार वह वृक्ष स्वयमेव ही जलदार भी एवं फलदार भी होता है। जब जल सूख जाता है तब वह अपने सहज स्वभाव की ओर आता है। उसमें जितने भी खनीज पदार्थ आदि थे वे सब उस सूखे नारीयल में आ जाते हैं। जिसे खोपड़ा बोलते हैं। माथे (सिर) को भी खोपड़ा बोलते हैं। अब उसके ऊपर दो प्रकार का कवच (कवर) रहता है। जब उसको भी छिलाछाली कर देते हैं तब भीतर का स्वरूप बाहर आ जाता है।

ये सारा का सारा परिवर्तन चंद दिनों/महिनों में हो जाता है। हमने आज तक नहीं सुना कि किसान आम अमरूद - चीकू की तरह उसे तोड़ लाया हो फिर "पाल विषै माली ...." ऐसा नहीं है। आपने देखा कभी? बूढ़े दादाजी को भी पुछ लें उन्होंने भी नहीं देखा होगा। क्यों की उसको गर्मी देने से पकाया ही नहीं जा सकता है। वह तो अपने आप ही पकता है।

पहले फल आकार बनता है फिर जालदार होता है फिर रस्सी जैसी फिर नरेठी सूखती है। और धीरे-धीरे उससे संबंध अलग हो जाता है। जब गीला रहता है तब तक पानी तो बजता है गोला नहीं। पानी सूख गया तो गोला अलग और नरेठी अलग। बन्दर कहता है - मैं इस नरेठी को नहीं तोड़ सकता

हूँ। बादाम तो खा लेता हूँ पर नारियल नहीं।

कभी बन्दर को श्रीफल खाते हुये देखा हो तो बता देना। पानी जब तक सूखता नहीं तब तक गोले की आवाज नहीं। जब सूख जाता है तभी निकाला जाता है। ये प्रक्रिया हाथ से नहीं होती स्वाभाविक है। ठीक इसी प्रकार से हमें अपने बारे में सोचना चाहिए। केवल मनुष्य पर्याय में ही वह स्वरूप प्राप्त कर सकते हो। मनुष्य में भी केवल मुनि अवस्था में ही, मुनि में भी आज वह अवस्था नहीं। क्यों? क्यों की पकाव का काल अभी नहीं है।

उसके लिए अलग रसायन- खाद इत्यादि डालना होता है। अभी इस क्षेत्र में वह संभव नहीं। विदेह से मंगाने पर भी पक नहीं सकोगे। पकने के लिए चतुर्थ काल चाहिए। अभी तो माला फेर लो। खनीज पदार्थ आदि-आदि से वह भरा रहता है। आप अनुमान भी नहीं लगा सकते हो। इस प्रकार आप भी प्रयोग करलो। दक्षिण में प्रायः कर नारियल का ही प्रयोग। दोनों खोपड़े मिल जाते हैं तो हण्डक देते हैं। शरीर बाहरी खोपड़ा है, आत्मा भीतरी जो रत्नत्रय आदि से युक्त रहे। अच्छे ढंग से पकाओ, तेल निकालो और मालिश करो।

ऐसा है यह हमारा भीतरी गोला। यदि रत्नत्रय से भूषित नहीं हुये तो तेल-चूरा-लकड़ी में लगे रहो। महाराज आशीर्वाद दे दो। कहो नहीं, अब दुबारा जब होगा तब होगा। यह आत्मा की गाथा है, जो हमें गुरुमुख से अथवा शास्त्रों से ज्ञात होती है। इतना ही पर्याप्त है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नैं

संस्मरण - [1] खजराहो में एयरपोर्ट बिल्कुल पास था। आवाज बहुत तेज आती थी। दिन में कई बार देखा। समाधीसागर जी महाराज ने कहा आहार के समय यह आवाज नहीं आती है जब कि इस समय भी विमान आते-जाते हैं। आर्यिकाश्री - आहार में इतनी एकाग्रता / तल्लीनता हो जाती है कि शेष सब बातें गौण हो जाती हैं। इसी प्रकार गृहस्थ निर्विकल्प होकर देता है एवं महाराज निर्विकल्प होकर लेते हैं। यह गृहस्थ के लिए बहुत बड़ी आय का साधन है। Source of Income.

[2] आर्यिकाश्री ईर्यापथ का बहुत अच्छे से ध्यान रखते हैं। डोंगरगढ़ में एक दिन हम और निष्काम सागर जी महाराज जंगल जा रहे थे। सहसा आर्यिकाश्री ने हम दोनों से कहा देखो राख में इधर से सर्प गया था। ये देखो उसकी लकीर बनी है। दूर तक वह लकीर स्पष्ट नजर आ रही थी। ये हैं गुरुजी की पैनी दृष्टि।

[3] प्रतिभास्थली की एक बहन उसकी आलमारी का ताला बंद हो गया और चाबी अन्दर रह गयी। अब क्या करे, ताला तोड़ना पड़ेगा किन्तु उस बहन ने सच्चे मन से आर्यिकाश्री का चिंतन किया। और उनका नाम स्मरण लेकर अपने सिर की विलप से उस ताले को खोलना चाहा, ताला खुल गया। उसके बाद उन्होंने कई बार प्रयास किया लेकिन विलप से ताला नहीं खुला।

8-1-18 "कैसी हो महिला शिक्षा" प्रातः 9.20

पहले के जीवन में शिक्षा का क्या रूप था, आप लोगो को ज्ञात नहीं। आज वर्तमान में भारत की अपेक्षा क्या स्वरूप है, धीरे-धीरे बदलता जा रहा है। पहले क्षत्रिय वंश में राजा-रानी जो भी होते थे पढ़ाई होते थे। इतिहास साक्षी है। किन्तु आज शिक्षा का स्वरूप बिल्कुल ही अलग हो गया है। महिलायें घर को चलाने की अपेक्षा काम करने को अच्छा मानने लगी है। इस मानसिकता से शिक्षा में/संस्कृति में कमी आ जाती है।

वह मान्य नहीं मानी जाती है फिर भी आज इसे मान्यता प्राप्त होती जा रही है। अभी एक छात्रा के बारे में कहा - तलवार बाजी में वह पुरे राष्ट्र में गोल्ड मेडल लायी है। इस हेतु युवाओं को आगे लाने की आवश्यकता है। धर्म की रक्षा अथवा आत्म रक्षा हेतु निषेध नहीं है परन्तु इसी में लग जाये बाकी सब भूल जाओ तो गड़बड़ हो जायेगा। प्राचीन इतिहास पढ़ो फिर अनुरूप निर्णय लेओ। छात्राओं को इस ओर प्रशिक्षण देना गलत नहीं पर घर की देखभाल पहले जरूरी है।

इन लोगो (पुरुष) का काम अलग है और आपका काम अलग है। ये तो कमाकर लाकर रखने वाले है पर उसका सदुपयोग इनके हाथ में है। क्या खाना, कब खाना, क्यों खाना ये सब घर की महिला की ही जिम्मेदारी रहती है। आज जिस शिक्षा में महिला/छात्राओं

शिक्षित किया जा रहा है तो वह केवल अपने अधिकार की ही बात करती है।

नेशनल तो बहुत दूर, स्टेट लेवल पर भी नहीं पहले अपने घर की सुरक्षा हो जाये। ऐसा शास्त्रों में आता है कि एक माँ 100 गुरुओं से भी अधिक होती है। पक्का है। भारत में यह गड़बड़ हो गया। अतः यह कहा गया - एक सुशिक्षित माँ 100 गुरुओं (शिक्षकों) से भी अधिक है। शिक्षा उसी का नाम है जिससे परिवार का संरक्षण हो। हस्ताक्षर आ जाने पर हस्तक्षेप भी बहने लग जाता है। पहले वह सभी को सीख देती थी घर के भीतर बैठे-बैठे ही इसी को शिक्षा कहते हैं।

बाहर की हवा अलग घर की हवा अलग होती है। वह घर की महिला (माँ) सभी का स्वास्थ्य ठीक रखती है। बरेलु औषधीयों के माध्यम से बच्चा-बड़े सभी ठीक हो जाते हैं। ये नहीं हो रहा अतः घर ही टूट जाते हैं। औषधी का स्वरूप ही नहीं जानती। यह सब सुशिक्षित महिला के अभाव में हो रहा है। आज यह समझ में नहीं आ रहा है। यह अध्ययन यहाँ पर भी किया जा सकता है। आप समझ लो - प्राथमिकता क्या रखना है। युग के साथ-साथ भी चलना है। अपना भी कर्त्तव्य होता है उसे करते हुए चलें, इन्हीं भावनाओं के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

9-1-18 "कैसे बदलें भीतरी रंग" प्रात: 9.२०

[आज के आनंद की जय] जब आनंद आ ही गया तो फिर प्रवचन की क्या आवश्यकता है। पर मानते नहीं हैं। किसान बहुत बुद्धिमान व्यक्ति है। आप कितना भी कर लो जो काम किसान कर सकता है, आप नहीं कर सकते। एक को हजार बनाने की क्षमता तो मात्र उस किसान के पास ही है। सहस्रगुणित करने वाला कोई बनिया देखने को नहीं मिला। और उस किसान के यहाँ कोई कुंची (चाबी) भी नहीं। ताला- कुंची की कोई जरूरत नहीं। वह उदारवादी दृष्टि रखता है। तभी तो उद्धार करने में ही अपना जीवन लगा देता है।

आप उधार लेते हैं। लोन। पहले से ही तय है। अब हमने ले लिया देने के अयोग्य हैं, दे नहीं सकते। ऐसा किसान नहीं हैं। वह तो केवल भगवान भरोसे रहता है। वह बुद्धिमान है, सहस्रगुणित करना वही जानता है। सबके लिए दे देता है। आप! इसका भी लेले- इसका भी ले ले फिर थोड़ा-थोड़ा दे देते हैं। बंदरबांट की भांति। इसलिए मैं कहना चाहता हूँ किसान की बुद्धि रखें। वह कौनसा फल कब कैसे कब अपने दिमाग में रखता है।

खरबुज / खरबुजा देखलेता है। वह बेल से जुड़ा होता है। इधर से उठाकर उधर रख देता है। ऐसा क्यों करता है? पहले बताता नहीं। गड़बड़ हो जायेगी। पुछा- ऐसा क्यों करते हो? वह कहता है-

बाबा! इसमें रहस्य है। कौनसा? खरबुजा को देखकर खरबुजा रंग बदलता है। नहीं समझे। इसको दूसरे के पास रख देंगे।

छोटे-मोटे का रंग नहीं बदलेगा जो बदलने योग्य होगा वही बदलेगा। इसका अर्थ यह हुआ कि एक व्यक्ति रंग नहीं बदलते। बाजार का रंग देखकर ही अपना रंग बदलते हैं। सही बोलो। बोलियाँ कब लगती हैं? बाजार देखकर ही बोलते हैं। जब बोलने वाला तैयार है। एक का रंग बदला वह औरों के रंग बदलने में कारण होता है। योग्य होता है तभी। जो कच्चा तो है पर पकाव की तरफ है, उसका रंग बदल जाता है।

स्वाद में भी बदलाव आता है। आज ऊपर से रंग तो बदल जाता है पर भीतर से स्वाद नहीं बदलता। इंजेक्शन के कारण तो ऐसा ही होगा। आम आदि फलों में होता है। रंग तो बदल जाता है पर अंतरंग नहीं बदलता। अंतरंग जिसको बदले उसी को कुछ कहा जाता है। देखलो! छलांग लेलो। ऐसी उसकी परिणति होती है भीतर से तभी कुछ कहा जाता है।

वह पीछे वालों से भी आगे निकल जाता है। इसलिए जिसके पास योग्यता रहती है उसी के पास वह किसान उस खरबुजा को रख देता है। इसीतरह हमें भी तीर्थंकर प्रकृति अथवा क्षायिक सम्यग्दर्शन

उन्हीं के पादमूल में होती है अन्यत्र नहीं।

मनुष्य के पास ही तीर्थंकर आदि प्रकृति का बंध संभव है अन्य गति में नहीं देवों को भी नहीं। धरती का लाल ही और लाल हो जाता है, वह गुदड़ी का लाल ही कर सकता है। इस प्रकार की विशुद्धि सम्यग्दर्शन अथवा तीर्थंकर प्रकृति जिसे बंध करना है वह अन्यत्र नहीं उन केवली / श्रुतकेवली के पादमूल में ही संभव है। ऐसे वह तीर्थंकर प्रकृति का बंध करता है जब वह लोभ-लालच छोड़कर अंतरंग को पहचानने में सक्षम होता है। अंतरंग को बदले बिना बाहर के रंग बदलने से काम नहीं होता।

गिरगिट भी रंग बदलता है वह 5 मिनिट भी नहीं होता अपना रंग बदल लेता है। गिरगिट की प्रकृति वाले कहते है बाजार के भाव हमारे हाथ में हैं। ज्यों ही इधर आया बस फोन पर कहता है ये भाव हो गया है। भाव क्या दुर्भाव हो गया है। ये शुद्ध सट्टा है। अन्यथा न लेना जैन लोग इस प्रकार के कार्य में खूब प्रवेश करते हैं। कुछ लोग तो ऐसे बैठ रहते है, बस कब रंग बदल दें।

अंतरंग क्या है भगवान जाने। इसलिये कहना है, जिनके सान्निध्य में तीर्थंकर प्रकृति का बंध, क्षायिक सम्यग्दर्शन आदि होना है। उनका समागम बड़ा दुर्लभ है। नहीं भी हो रहा है तो जिस देश में, जिसकाल में ऐसा वातावरण बना हुआ है उसका नामस्मरण करते हुये

अपने भीतर में परिवर्तन लायें।

इससे अंतरंग - बहिरंग सुगन्धी स्वयं ही फूटने लग जायेगी। इतना ही कहना है - हमारे इस उदाहरण को याद रखना। गिरगिट को भी एवं खरबूजा को भी। भूलना नहीं। और लोगों तक भी पहुँचा देना कि आज महाराज ने यह कहा है। सबको परिचय हो जायेगा। किसान की उदारता को मत भूलना। जिसके पास रंग है उसे यदि और रंग दे देंगे तो वह रंग बिगड़ जायेगा। होली पर देख लो। आने वाली है, सामने होली है। पहचानने में भी नहीं आयेगा।

अतः अपने रंग को बिगाड़ना नहीं, ज्यों का त्यों बनाये रखना। इतना ही कहना है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

संस्मरण - 1960-70 के आसपास की बात है। उस समय गुरुजी (ज्ञानसागर जी) अकेले ही थे। सोनगढ़ का बोलबाला था पर विरोध नहीं करते थे मतलब विरोध में बोलते नहीं थे। हमें प्रवचन हेतु कहा तो आराधना कथा कोष की एक कथा सुना दी। उसी समय सम्यक्त्व सार शतक लिखा। जैन गजट के सम्पादक अजितकुमार जैन उनके लेख निकालते रहते थे। आप्त मिमांसा का हिन्दी अनुवाद देख आकर्षित हो गये। कामताप्रसाद जी भी प्रभावित थे। तत्त्वार्थ सूत्र पर भी लेख निकाले। [लन्दन में गोम्मटसार का अंग्रेजी लेख] पत्र-पत्रिका वाले उनके लेख जरूर छापते थे।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
1.	31/10/2017	आओ लौटायें इतिहास	साकोली कॉलेज	1
2.	04/11/2017	समाप्त हुई प्रतिक्षा की घड़िया	ढोंगरगाँव	5
3.	05/11/2017	आओ बचायें समय		5
4.	05/11/2017	महापात्र चयन के दिन हुआ पात्र चयन		6
5.	06/11/2017	नदी की महानता		7
6.	07/11/2017	धन का ध्यान नहीं धर्म-ध्यान करो		8
7.	08/11/2017	चमत्कार भावों का		9
8.	09/11/2017	महिमा काल और पुरुषार्थ की		11
9.	09-11-2017	ढोंगरगाँव पंचकल्याणक : ध्वजारोहण : गंधवाही बनने का फार्मूला		12
10.	10/11/2017	गर्भकल्याणक (पूर्वार्ध) : एक सहारा बस तेरे नाम का	प्रातः	15
11.	10/11/2017	संस्कार बनायें भगवान	मध्याह्न	17
12.	11/11/2017	गर्भकल्याणक (उत्तरार्ध) : महिमा प्रभु की	प्रातः	25
13.	11/11/2017	गर्भकल्याणक की सार्थकता	मध्याह्न	26
14.	12/11/2017	जन्म कल्याणक : पर का वैभव - निज की प्राप्ति	प्रातः	40
15.	12/11/2017	जन्म कल्याणक	मध्याह्न	43
16.	13/11/2017	तप कल्याणक : कैसे बुझाये प्यास?	प्रातः	56
17.	13/11/2017	दीक्षा (तप) कल्याणक	मध्याह्न	58
18.	14/11/2017	ज्ञान कल्याणक (आहार-चर्या)	प्रातः	63
19.	14/11/2017	केवलज्ञान कल्याणक	मध्याह्न	71
20.	15/11/2017	मोक्ष कल्याणक : सही दिगम्बर कौन?	प्रातः	74
21.	15/11/2017	गजरथ फेरी	मध्याह्न	75
22.	17/11/2017	मोह से निर्मोह बनने का रास्ता		87
23.	18/11/2017	प्राकृतिक जीवन जीते है गांव वाले	कोलिहपुरी	88
24.	19/11/2017	प्राचीन श्री जी का प्रवेश	चंद्रगिरि - डोंगरगढ़	91
25.	20/11/2017	संघर्ष किससे?		92
26.	21/11/2017	वस्तु स्वतंत्रता का सिद्धान्त		94
27.	22/11/2017	सार्थक शिक्षा		97
28.	22/11/2017	जीवन शैली बदल देगा हथकरघा		99
29.	23/11/2017	दायित्व का भार		102
30.	24/11/2017	भानु ने कराया भान		105
31.	25/11/2017	आओं सीखें ध्यान बदलना		109
32.	26/11/2017	धर्म से विज्ञान में खुशबू आती		113
33.	27/11/2017	ध्वनि का प्रभाव		117
34.	28/11/2017	बुंदेलखण्ड का गढ़ है- टीकमगढ़		121
35.	29/11/2017	ठेका अनमोल का		125
36.	30/11/2017	अनुभवी का अनुभव		127
37.	01/12/2017	जान लेता-अजान फल (Fast Food)		130
38.	02/12/2017	शक्तिशाली कौन?		133

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
39.	03/12/2017	बिना परीक्षा-नहीं है सुरक्षा		137
40.	04/12/2017	बचना जरूरी विकृति की संस्कृति से		141
41.	05/12/2017	भारत से बात करो		146
42.	06/12/2017	जंगल में मंगल		147
43.	07/12/2017	आओं काम ले घोड़े से		152
44.	08/12/2017	नौ-दो ग्यारह मतलब फूटा गुब्बारा		156
45.	09/12/2017	इलाज से अच्छा बचाव		159
46.	10/12/2017	स्वास्थ्य का राज: नीम और गाय		164
47.	11/12/2017	याद रखो पूर्वजो का लेखा-जोखा		168
48.	12/12/2017	आओ जगायें संवेदना		173
49.	13/12/2017	आओ बनाये स्थायी फण्ड़		179
50.	14/12/2017	मत ड़ालो बोझ		183
51.	15/12/2017	हाथी ने दी शिक्षा		187
52.	16/12/2017	भूसा उड़ाओ-धान नहीं		192
53.	17/12/2017	कैसे दूर करें- अज्ञान रूपी अंधकार		196
54.	18/12/2017	संकल्प से आती दृढ़ता		200
55.	19/12/2017	आओं बनायें रिश्ता भगवान महावीर से		204
56.	20/12/2017	आओं कषाय करें		209
57.	21/12/2017	Fast Food नहीं Past Food करें		214
58.	22/12/2017	अगणित को पहचानों		222
59.	23/12/2017	झूठी दुनिया से मन को हटा लें		223
60.	24/12/2017	काला हुआ सफेद		227
61.	25/12/2017	अनिवार्य के साथ आवश्यक करो		231
62.	26/12/2017	स्वाद का आस्वादन		237
63.	27/12/2017	शरीर अलग, आत्मा सबकी एक		240
64.	28/12/2017	धार लगाये पार		244
65.	29/12/2017	सुधारो सिद्धान्त की भूल		251
66.	30/12/2017	जब जागे तभी सवेरा		253
67.	31/12/2017	कैसे चमकायें भीतरी मुखड़ा		258
68.	01/01/2018	प्रगति हो-दुर्गति नहीं		261
69.	02/01/2018	मोक्ष की चाबी		264
70.	03/01/2018	भावों का विस्तार		265
71.	04/01/2018	ड़रना बन्द करो		267
72.	05/01/2018	हँस नहीं परम हँस बनो		270
73.	06/01/2018	नारीयल से जाने रीयल को		276
74.	08/01/2018	कैसी हो महिला शिक्षा		281
75.	09/01/2018	कैसे बदलें भीतरी रंग		283